

西
江
天
下
同
江

一
四
四
四

同
天
下

Y W 9

151469

.fgr



151469

90
6



वार्षिक

दि

१



हितैष

Approved for distribution by the Government of India, U. P., Himachal, Pepsu & Bhopal.

& HYDERABAD (Deccan) Vide D.P.I.'s No.17 (29) 18/ 1952 dated 3.1.53.



वार्षिक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रातः ॥

26. 1. 53.



दिसम्बर

१९५२



सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी



* नोबल प्राईज विजेता

डा० एडवर्ड एम० पुसैल

Prof: of Physics at Harvard University Cambridge, Massachusetts who is a co-winner of the Nobel Physics Prize for 1952 for his discovery of the Nuclear resonance method of measuring certain nuclear properties.

डॉ० पी० एम० ए० एडवर्ड
नोबल प्राईज विजेता
२६-१-५३

THE

"Prakash"

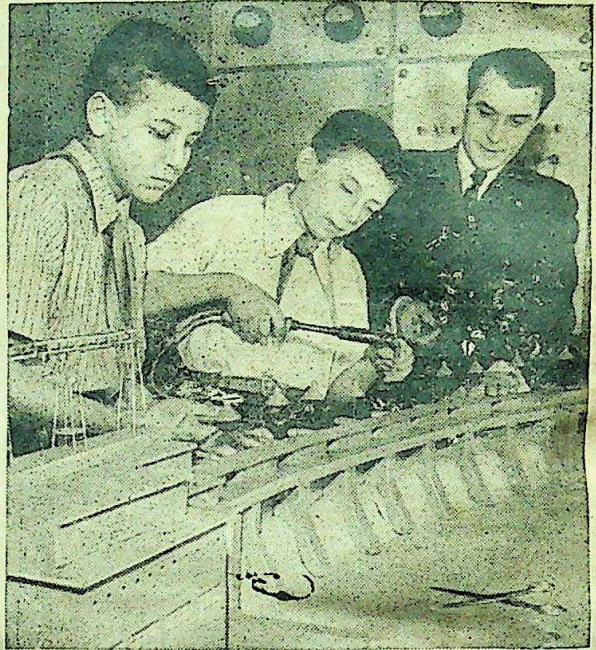
Editor: L.C. HITASHI

INDIAN CITY

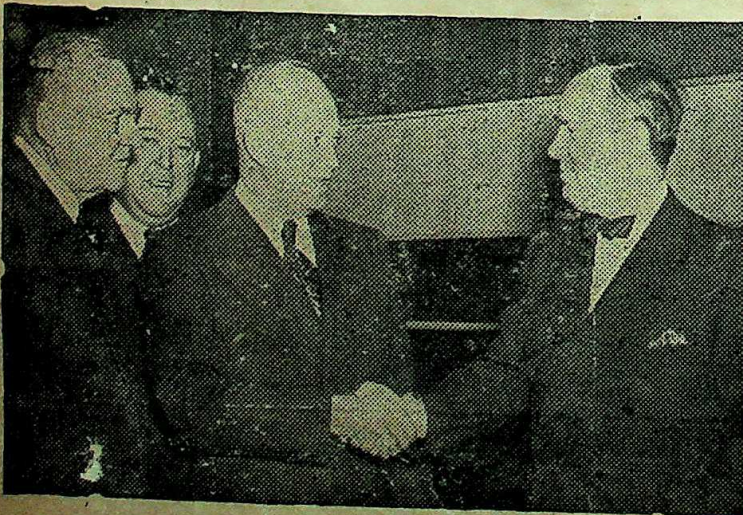


रूस में

मास्को में किशोर पाओनियर अध्ययन की देख रेख में जल विद्युत स्टेशन के एक माडल का निर्माण कर रहे हैं।



अमेरिका में



अमेरिका के नये प्रधान आईजन हौवर (मध्य में) निर्वाचन के पश्चात संयुक्त राष्ट्र संघ में गये। उनका जनरल असेम्बली के प्रधान लैस्टर पीयरसन. (दाएं हाथ) स्वागत कर रहे हैं। बाईं ओर पहले व्यक्ति हैं जाहन फोस्टर डुनेम नये सैक्रेटरी आव स्टेट और दूसरे हैं ट्रुवेली जनरल सैक्रेटरी संयुक्त-राष्ट्र संघ।

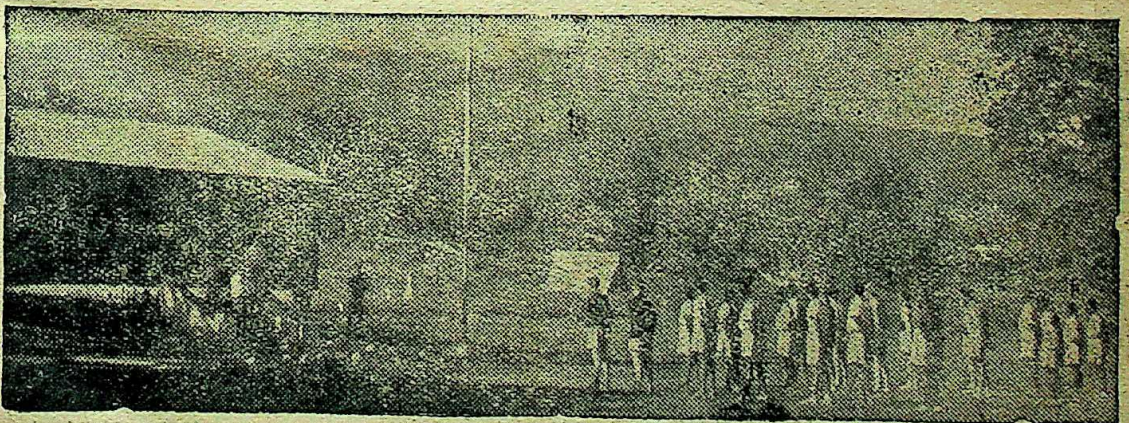


प्रकाश जालन्धर

कहां क्या है ?

दिसम्बर '५२

१	शिक्षा समाचार.....	४	१८	लहू और पानी (कहानी) चन्द्रकांत	२४
२	नया वर्ष (कविता) सोहन लाल द्विवेदी	५	१९	शार्दूल शावक (नाटक) विजय	२७
३	प्रणाम (कविता) उदय शंकर भट्ट	५	२०	यह भी खूब रही, उर्मिला	३०
४	सम्पादकीय विचार, सम्वाद दाताओं के पत्र	६	२१	स्वास्थ्य सुधार	२३
५	अपनी बोली 'च, फूल और कांटे	७	२२	चुटकुले, जब विधाता बांट रहा था...	३१
६	गणराज्य और हमारा कर्तव्य, मावलंकर	८	२३	आप नहीं जानते, आवश्यकता	३४
७	एक नया स्त्रीवाद जन्म ले रहा है। सुचेता	९	२४	गृह-विज्ञान	३६
८	बच्चों की शिक्षा का महत्व, नरेन्द्र देव	१०	२५	समाचार	३३
९	निर्दोष पलके (कहानी) कु० सुदर्शन	११		'प्रकाश' के उद्देश्य तथा नियम, पहेली, विज्ञापन, चित्र आदि	३५-४०
१०	फर्स्ट ईयर फूल, " "	१५			
११	मूक प्रतिमा (कविता) 'सरोज एम० ए०	१८			
१२	सच्चे मित्र " "	१८			
१३	भूलने में कितना आनन्द	२३			
१४	भारतीय बाल सभा-फुलकाड़ी	१६			
१५	पूर्वी अफ्रीका के प्राचीन राजे, पुष्पा	२०			
१६	करना हो तो काम करो (कविता)	२१			
१७	ऋषि-गान (ऋषि जीवनी, हितैषी)	२२			



किलिमंजारो (अफ्रीका) पर्वत पर कीनिया शिक्षा विभाग के संरक्षण में यूरोपियन, ऐशियाई और अफ्रीकन छात्र प्रातः का व्यायाम करते हुए।

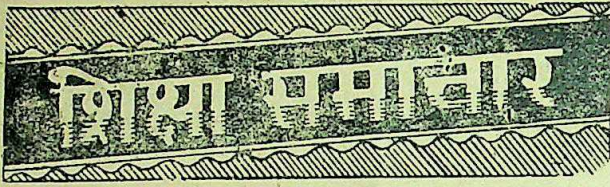
—पंजाब में ड०

बी० अध्यापक-अध्यापिकाओं की हड़ताल मौ० आजाद के हस्तक्षेप से समाप्त हो गई है और अब समझौते की बातचीत हो रही।

—लंदन की इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन की स्वर्ण जयन्ति पर ५७ देशों के ३५७ विद्यार्थी सम्मिलित हुए जिन में ३३ भारत से गये थे।

—एडिनबो (वुटेन) में भारतीय छात्रों की संख्या ४७ है। २७ देशों के कुल ४६० विद्यार्थी हैं।

—ब्रिटिश कौंसिल द्वारा अप्रैल से सितम्बर तक प्रीष्म कालीन विद्यालयों द्वारा लघु शिक्षाक्रम का आयोजन किया गया है। ये ३ सप्ताह तक चलते



हैं और वयस ३० पौण्ड उठता है।

—श्री भीमसैन सच्चर तथा लाला जगत नारायण को मौ० आजाद ने

२३-१-५३ को देहली टीचरों की मांगों के सम्बन्ध में निर्णय करने के लिए बुलाया है।

—कराची में फीसें कम कराने के लिए निकले छात्रों के जलूस पर गोली चलाई गई।

—१२ जनवरी को डा० राधाकृष्णन ने हैदराबाद में हुई टीचरों की एक मीटिंग में भाषण दिया।

—बालकां जी बाड़ी देहली ने सरकार से बच्चों के लिए बैल फेयर सेंटर खोलने की मांग की है।

—यूनेस्को ने प्रौढ़ शिक्षा का विश्व व्यापी कार्य कम बनाया है। विशेष जानकारी अगले अंक में प्राप्त करें।

ग्राम पञ्चायतों के लिए एकमात्र हिन्दी में सचित्र

पंचायत गजट

पहला अंक १ फरवरी, ५३ को प्रकाशित हो रहा है।

वार्षिक मूल्य ७ रुपये।

संपादक : हितैषी अलावलपुरी

प्रथम अंक में

माननीय श्री भीम सैन सच्चर प्रधान मन्त्री, श्रीमान श्रीराम जी मन्त्री (लोकल बाडीज) के सन्देश, पञ्चायतों के समाचार, नये पञ्चायत कानून की व्याख्या, पंचों के कर्तव्य आदि लेख तो होंगे ही, इनके अतिरिक्त, कहानियाँ, नाटक, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा ग्राम सुधार सम्बन्धी उपयोगी लेख और सुन्दर चित्र होंगे जिन से ग्रामवासी बहुत लाभ उठा सकते हैं।

पञ्चायतों को इस का ग्राहक अवश्य बनना चाहिए।

मैनेजर, 'पंचायत गजट' चहारबाग, जालन्धर नगर।

स्कूल लइब्रेरियों के लिए पञ्जाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पैपु, भूपाल और हैदराबाद में स्वीकृत



नया वर्ष शुभ हो

१९५२ चला गया और १९५३ आ गया।
जाने वाले वर्ष को विदा करते हुए हम आने
वाले वर्ष का स्वागत करते हैं। भगवान् करे
यह हमारे पाठकों के लिए शुभ, भारत के
लिए उन्नति-प्रद और संसार के लिए
शान्ति दायक हो। —द्वितैषी



नया वर्ष

कल निशीथ के अंधकार में गया विगत मर,
नवेल वर्ष आ रहा, हर्ष के रजत पंख वर;
तरु-तृण में है गया आज लावण्य नया ढर
आगत स्वागत करो, प्राण मृदुल पुलक भर,
यह स्वतंत्र भारत का स्वर्णिम प्रात उदित है!
फेरो मुख हेरो न, ढले तिमिरावृत वासर,
उदयाचल पर आज बज रहा है मंगल स्वर,
कनक रश्मियां सुमन सुमन का हृदय खोल
मधु सौरभ भर रहीं दे रहीं श्रीसुख का वर,
जन जन का जीवन विकसित है, आज मुदित है
—श्री सोहन लाल, द्विवेदी।

सौ बार देश तुम को प्रणाम !

सौ बार देश, तुम को प्रणाम !
शत शत प्रणाम, शत शत प्रणाम !

तुम आदि सभ्य तुम आदि देश, मानव के पहले स्वर विशेष,
नगराज हिमालय की अशेष, गौरव गथा के आदि धाम।

सौ बार राष्ट्र तुम को प्रणाम !
सौ बार देश तुम को प्रणाम !
शत शत प्रणाम, शत शत प्रणाम !

धोते सब सागर नित्य चरण, ऋतुएं करती सब तुम्हें वरण,
यौवन बन जाते जरा-मरण; गंगा यमुना के पुण्य नाम,

सौ बार राष्ट्र तुम को प्रणाम !
सौ बार देश तुम को प्रणाम !
शत शत प्रणाम, शत शत प्रणाम !

मेघों के जल से चिरस्तात, पावन मलयज से पुण्यगात,
रागिनी अलापते नित प्रभात, यश गाते पंखी सुबह शाम,

सौ बार राष्ट्र तुम को प्रणाम !
सौ बार देश तुम को प्रणाम !
शत शत प्रणाम, शत शत प्रणाम !

: —उदय शंकर, भट्ट।

वर्ष ४८] जालन्धर दिसंबर, १९५२. [भाग ४ अंक १२
क्रमांक ४१ हिन्दी

१ जनवरी को
डी० बी० स्कूलों के
टीचरों और टीचरों ने
पंजाब भर में हड़ताल
कर दी। कुछ दिन तक
एक ओर हड़ताल जारी

सम्पादकीय विचार

अध्यापकों की हड़ताल

रही और दूसरी ओर समझौते की बातचीत, किन्तु वह
असफल रही। इस पर एक अध्यापक और एक अध्या-
पिका ने अनशन आरम्भ कर दिया। मौलाना आज़ाद
के अध्यापकों को उनकी मांगों पर सहानुभूति पूर्ण वि-
चार करने का आश्वासन दिलाए जाने पर यह हड़-
ताल समाप्त हो गई। यह अच्छा ही हुआ क्योंकि वार्षिक
परीक्षाएं समीप हैं। ऐसे अवसर पर हड़ताल का जारी
रहना छात्रों के लिए बड़ा हानिकर होता। आशा करना
चाहिए कि जिन मांगों के लिए हड़ताल की गई थी
वे सभी बहुत हद तक पूरी कर दी जायेंगी।

‘प्रकाश’ हैदराबाद में भी स्वीकृत

हमारे हैदराबाद राज्य के पाठकों को यह जान
कर प्रसन्ना होगी कि ‘प्रकाश’ को डायरेक्टर पब्लिक
इंस्ट्रक्शन हैदराबाद ने अपने सरक्युलर नं० १७।

[दिसम्बर के अन्तिम
सप्ताह में हुए हिन्दी
सम्मेलन का विवरण
नीचे दिया जाता है ।]

२६। १८। १६५२ ति० ३. १. ५३ के अनुसार हाई
स्कूलों की लाइब्रेरियों के लिए स्वीकार कर लिया है।
स्वीकृत पत्रिकाओं की सूची में केवल मात्र ‘प्रकाश’
ही एक हिन्दी पत्रिका है अतः हैदराबाद के हाई
स्कूलों को ‘प्रकाश’ के ग्राहक बन जाना चाहिए।

इन्हें भी यह अधिकार दो

जिस प्रकार हाई स्कूलों के हैडमास्टर्स और
हैडमिस्ट्रेसों को यूनियन फण्ड से स्वीकृत पत्र-पत्र-
काएं खरीदने का अधिकार है वैसे ही मिडल स्कूलों
के अध्यापक-अध्यापिकाओं को भी होना चाहिए।
उन्हें D. I. S. से स्वीकृति लेने पर कौन बाध्य
किया जाये ? हमने शिक्षा विभाग का ध्यान इस
ओर दिलाया है। देखें क्या परिणाम निकलता है ?

२७, २८ दिसम्बर को पंजाब
प्रांतीय हिंदी साहित्य
सम्मेलन का द्वितीयाधि-
वेशन हिसार में हुआ
प्रबन्ध प्रचार तथा उत्साह
की दृष्टि से यद्यपि यह
सम्मेलन फीका था।

शिकायतें और सुझाव

पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन

परन्तु असम्बन्धी के स्पीकर डा० सत्यपाल जी तथा
श्रेय टंडन जी की उपस्थिति ने हिन्दी सेवकों को
स्ववचनानुसृत से अवश्य कृतार्थ किया। मा० डाक्टर
सत्यपाल जी ने देवनागरी लिपि में पंजाबी के लिखे
जाने का अनुरोध कर हिन्दी-पंजाबी के झगड़े को
मिटाने तथा सर्व साधारण की समझ में आ सकने
योग्य हिन्दी के प्रयोग की हिन्दी सेवियों से आशा

कठिनाइयों से हिन्दी राष्ट्र भाषा बनी
है। उसे इस पद पर बनाए रखने के लिए निरन्तर
सांस्कृतिक बनने की आवश्यकता है। हिन्दी हमारी
सांस्कृतिक भाषा है। अंग्रेजी या उर्दू के पोषक
असांस्कृतिक कार्य कर देश को हानि ही पहुंचाते
हैं। देवनागरी लिपि के साथ रोमन अक्षरों को देश
का दुर्भाग्य बतलाया।

तथा अनुरोध किया।
श्रेय टंडन जी ने सरका-
री कामों में हिन्दी के प्रयोग
पर बल देते हुए कहा
कि किस प्रकार
संस्कृतिक बनने की आवश्यकता है। हिन्दी हमारी
सांस्कृतिक भाषा है। अंग्रेजी या उर्दू के पोषक
असांस्कृतिक कार्य कर देश को हानि ही पहुंचाते
हैं। देवनागरी लिपि के साथ रोमन अक्षरों को देश
का दुर्भाग्य बतलाया।

प्र० आप काम्युनिज्म को अच्छा समझते हैं या बुरा ?-शांतिदेवी, देहली ।

फूल और कांटे

केवल उसे संभव बनाने का, जो अमेरिका और रूस के हाथ में है, जो वे बना नहीं रहे और यह संभवतः इस लिए कि

—सं०

उ० काम्युनिज्म की थ्युरी को तो बुरा नहीं समझते, हां उस के क्रियात्मक रूप को हम पसन्द नहीं करते । —सं०

प्र० जम्मू में चल रहे सत्याग्रह के बारे में आप की क्या सम्मति है ? —राम किशोर, जम्मू ।

उ० सत्याग्रह के अभीष्ट में तो कोई अनौचित्य नहीं, हां उसकी सिद्धि के लिए सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग वर्तमान अवस्था में कहां नक उचित है— यह हम से अधिक सरकार जानती है । —सं०

प्र० कोरिया में शान्ति संभव है क्या ?

—शाम लाल, अमृतसर ।

उ० संभव तो दुनिया में सब कुछ है, प्रश्न है

यह आग उनके अपने घरों में नहीं ।

प्र० पाकिस्तान का वह गेहूँ क्या हुआ जिस के बल बूते पर वह अकड़ रहा था ?

—इन्दिरा, पठानकोट ।

उ० उस गेहूँ को पाकिस्तान में शेष रहे अल्पमत वाले खा गये, तभी तो उन्हें वहां से बाहर निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है । —सं०

प्र० क्या भारत को अमेरिका या किसी अन्य देश से आर्थिक सहायता लेनी चाहिए या नहीं ?

—निर्मला महाजन, गुरुदास पुर ।

उ० सहायता लेने में तो कोई हरज नहीं यदि 'केवल' सहायता ही हो और with-out strings हो

साड़ी एह मानव देह की ए ? इक मशीन ही तां है ! इस विच दिल, जिगर, मेहदा, हथ, पैर, अख, कन वगैरा कई कल पुरजे

अपनी धोली च

थुहाडी देह दा कोई पुरजा ठिल्ला ते नहीं ?

हन । इन्हां चों इक पुरजा भी खराब जां ठिल्ला हो जावे तां साडी देह रूपी मशीन खड़ी हो जांदी ए ते आदमी मज्जे पुर लम्मां पै जांदा है ।

सँसदान चिर तो ऐस गल दी खोज कर रहे सन कि किसे तरहां होरनां मशीना वांगर मानस देह दे कल पुरजे भी बिगड़न ते बदले जा सकन । ओह किसे हद तक इस मन्तव्य 'च सफल भी हो गए हन । हुन तोड़ी दिल, गुरदा, दन्द, अखां, जिगर वगैरा दा अदला बदली दे सफल तजरवे कीते जा चुके हन ।

एह मानस देह दे कल पुरजियां दी अदला बदली है तां फौदेमन्द पर किधरे मामला छल्दा न

हो जावे । जिवे इक गालां कठन वाले दी जीभ जे किधरे तेज मजाज आदमी दी घर वाली दी जीभ नाल बदलनी पै जावे तां

ओस घर विच की होबेगा ? जां ताँ ओस जनानी नूँ गूँगी करौना पयेगा ते जां फेर दूजे घर वालियां नूँ कन कटवा देने पैनगे । ऐसे तरहाँ किधरे मूर्ख दा दिमाग मिल जाये किसे बड़े लीडर नूँ ते ओह अपने भाषण विच कुम्ह दा कुम्ह कह जाने ते फुल्लां दे हारां दे थां जुतियां दा पै जाना मुशकिल नहीं ।

फेर हुन तुहाडी की राय है मानस देह दे कल पुरजियां दी अदला बदली दे बारे 'च ? इस बारे 'च साडी राय तां कुम्ह चंगी नहीं । असीं तुहाडी राय वी जानना चाहदे हां ।

—भाइसा रेलू ।

गणराज्य दिवस और हमारा कर्तव्य

धार्मिक वृत्ति के साथ हमें देश सेवा में जुट जाना चाहिए

(लेखक—श्री जी० वी मावलंकर स्पीकर भारतीय पालियामेंट)

हमारा जनतन्त्रात्मक गण राज्य एक महान और निराला प्रयोग है। हमारा देश इतना विशाल है, भौगोलिक दृष्टि से वह इतने प्रदेशों में बंटा हुआ है और हमारी जनसंख्या, भाषा, धर्म और जीवन-स्तर के भेद-प्रभेद के कारण इतने भागों और उप-भागों में बंटी हुई है और हमारे यहां साधारण तथा राजनैतिक शिक्षा का बहुत अभाव है। गण-राज्य के निर्माण का कार्य हमने आरम्भ कर दिया है और हम चाहे किसी भी भूल कों न करें जैसे-जैसे समय बीतता जाएगा हम अपने कार्य में अधिक दक्ष होते जाएंगे और कुछ ही वर्षों में एक वस्तुतः जनतन्त्रात्मक गण राज का निर्माण कर लेंगे।

हमें जो काम करना है वह साधारण नहीं है, हमारे गण राज्य के संगठन का कार्य बड़ा ही कठिन और विशाल है।

इसके लिए आवश्यक है कि देश के आर्थिक और सामाजिक ढांचे का पहले से ही और साथ-साथ पुनर्निर्माण किया जाए। यदि हम यह क्रांति शांति पूर्वक और देश में कोई संकट लाए बिना करना चाहते हैं तो हमें यह परिवर्तन धीरे-धीरे और क्रमशः करना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण हमारे काम में बड़ी जटिलता आ गई है और उस का हमारे घरेलू मामलों पर बड़ा गहरा असर पड़ रहा है। संसार के अधिक भाग में जीवन सम्बन्धी आवश्यक पदार्थों की कमी पड़ गई है और प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति के लिये जीवन का संघर्ष अत्यन्त कठिन बन गया है। उत्पादन के साधन हमारी आवश्यकताओं के लिये पर्याप्त नहीं

हैं और भिन्न-भिन्न राष्ट्रों की राजनीतिक महत्वा-कांक्षा स्थिति को और भी जटिल बना रही है। काश्मीर का प्रश्न और पाकिस्तान के साथ हमारा सम्बन्ध हमारे लिए निरन्तर चिन्ता का कारण बना हुआ है। इङ्ग्लैण्ड की वर्तमान परिस्थिति के कारण संसार के आर्थिक संतुलन को भी संकट उत्पन्न हो गया है। खाद्य पदार्थों की दृष्टि से हम अपने जीवन के एक बहुत ही चिन्ताजनक समय से होकर गुजर रहे हैं। यही दशा हमारा आन्तरिक शान्ति और अर्थ-व्यवस्था की भी है। अतः अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने और शासन व्यवस्था को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल करने के लिये अभी हमें बहुत कुछ करना है।

अच्छी से अच्छी सरकार से भी आशा नहीं की जा सकती कि वह इतने कम समय में देश की सारी समस्याओं का सफलता-पूर्वक सामना करके गणराज्य की जड़ जमा लेती। सच पूछिए तो सरकार सारी समस्याओं को सुलझा भी नहीं सकती। असल में यह तो राष्ट्र के नागरिकों का कर्तव्य है कि वे अपने को जन हित के कार्य में प्राण-पण से संलग्न कर दें। इसी लिए हमें स्वर्गीय गोपालकृष्ण गोखले की उस नेक सलाह का अनुसरण करना चाहिए जो उन्होंने ने हमें आज से अड़तालीस वर्ष पूर्व सन् १९०५ में दी थी। उन्होंने ने कहा था—

“जनहित के लिए देशवासियों को बहुत बड़ी संख्या में कमर कस कर आगे बढ़ना चाहिए और ठीक उस भावना के साथ जिससे धार्मिक कार्य किए (शेष १४ पृष्ठ पर देखें)

गणराज्य और भारतीय स्त्रियां

एक नया स्त्रीवाद जन्म ले रहा है

(लेखिका - श्रीमती सुचेता, कृपलानी)

इस जनवरी की छव्वीस तारीख को हमारे गणराज्य को स्थापित हुए पूरे तीन वर्ष हो जायेंगे। ठीक तीन वर्ष पहले, इस दिन भारत का संविधान अपनाया गया था, और हमारा देश गणराज्य घोषित किया गया था। भारत के राजनैतिक इतिहास में यह संविधान विशेष महत्व रखता है क्योंकि पहली बार प्रत्येक नागरिक को चाहे वह किसी भी जाति का हो नागरिकता के सम्पूर्ण अधिकार दिए गए हैं। पहली बार स्त्री को, सब भेद भाव मिटा कर, पुरुष के बराबर अधिकार दिये गये हैं। इस प्रकार सब स्त्री पुरुष, बिना किसी भेद-भाव के समान रूप से हमारे संविधान के अनुसार, अधिकार का और राज्य से सम्पूर्ण सुरक्षा का दावा कर सकते हैं।

स्वतन्त्र भारत में स्त्रियां ने ऊँचे से ऊँचे जिम्मेदारी के पद ग्रहण किये हैं, विधान सभाओं में प्रतिनिधित्व किया, विदेशों में राजदूत का कठिन काम निभाया, पर इतना क्या हमारे सन्तोष का कारण बन सकता है? कुछ स्त्रियों की यह सफलता और गौरव क्या भारतीय नारी वर्ग के सन्तोष के लिये काफी है? हमें यह देखना है कि इन तीन वर्षों में भारतीय नारी जाति ने कितनी प्रगति की, भविष्य के लिये क्या काम किया? मुझे विश्वास है कि इस का उत्तर हम सन्तोषजनक नहीं दे सकते। कतिपय नारियों की सफलता इस बात की द्योतक नहीं है कि हमारे नारी वर्ग ने सचमुच उन्नति के मार्ग पर कदम बढ़ाया है। सामान्य नारी को लीजिये। उस के अपने, अपनी सन्तान, या अपने परिवार के जीवन में कौन सी उन्नति हो सकती है? हमारा

नारी वर्ग एक दोराहे पर पहुँच गया है। जागृत और प्रगतिशील स्त्रियों का वर्ग किस प्रकार की संस्कृति को अपने घर या समाज में बढ़ने दे? वह अपने भारतीय संस्कारों को जीवित रखना चाहती है, साथ ही पश्चिम के प्रभाव से भी वह अछूती नहीं है; प्रगतिशील है, सब दिशाओं में पुरुषों से होड़ लेने और अपनी योग्यता का सिक्का जमाने को तैयार है, साथ ही घर और सन्तान के प्रति अपने कर्तव्य के विषय में पहले से भी अधिक जागृत है। वह कौन सी राह पकड़े? नारी के सामने और तरह का समस्याएँ हैं। कुछ बातें जानते हुए भी वह असमर्थता के कारण कुछ नहीं कर पाती, और कुछ को अभी बहुत सीखना बाकी है। निम्न वर्ग का तो कहना ही क्या? सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा देने से पहले उन को कर्तव्य सुझाना एक व्यंग्य है। उन की सन्तान की जिम्मेदारी भी अधिक मजबूत और संपन्न कंधों पर आ जाती है। इस प्रकार एक नये प्रश्न, एक नये स्त्रीवाद का जन्म हो रहा है, जो केवल अधिकारों की मांगों की अपेक्षा कठिन है।

यह समस्या सामान्य नारी की, दूसरे शब्दों में गृहिणी और माता की है। उस की समस्याओं के हल के लिये हमारी अधिक शिक्षित वर्ग की बहनों ने क्या परिवर्तन किया है? समाज में सब से महत्त्वपूर्ण स्थान माँ का है। क्योंकि उस के कंधों पर भावी राष्ट्र के निर्माण की जिम्मेदारी है। इस कारण माँ की समस्याओं को सुलझाना, सन्तान-पालन का

(शेष पृष्ठ १४ पर देखें)

बच्चों की शिक्षा का महत्व

(लेखक - आचार्य नरेन्द्र देव, वाइस चांसलर, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी)

बच्चों की शिक्षा का महत्व इस देश में लोग प्रायः नहीं समझते। उन का विचार है कि कोई भी साधारण शिक्षक इस कार्य को सरलता से कर सकता है, पर बात ऐसी नहीं है। बच्चों का सफल शिक्षक बनना बड़ा कठिन काम है। प्रत्येक बच्चे का अपना एक व्यक्तित्व होता है। उस का आदर करना शिक्षक का काम है। बच्चे क्रिया शक्ति होते हैं और इसी लिए उनकी शिक्षा भी क्रिया द्वारा होनी चाहिए। कोई एक नियत पाठ्यक्रम सब बच्चों के लिए समान रूप से काम नहीं देगा। प्रत्येक बच्चे की अभिरुचि देख कर उसके लिए विशेष पाठ तैयार करना चाहिए। शिक्षा का कार्य बच्चे की अन्तर्हित शक्तियों को पहचानना और उन्हें विकसित होने का पूरा अवकाश देना है। इसी कारण बच्चों की शिक्षा के लिए बच्चों में प्रेम रखने ऐसी शिक्षा और अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता है।

अब राष्ट्र समझने लगे हैं कि बच्चे ही राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति हैं। इसी लिए उन्नतिशील देशों में बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। उन के लिये नर्सरी स्कूल तथा चिल्डरन पार्क खोले जाते हैं। उन की सर्वांगीण उन्नति करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। इंग्लैण्ड में इस समय बच्चों पर बड़ा ध्यान दिया जाता है और राज्य की ओर से उन पर बड़ा व्यय होता है। बच्चों के स्वास्थ्य की दृष्टि से राज्य की ओर से प्रति सप्ताह पौष्टिक पेय और सन्तरो का रस प्रत्येक बच्चे को मुफ्त मिलता है। चौदह वर्ष तक के बालकों की शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य है। स्कूल की ओर से दूध भी मुफ्त दिया जाता है। मजदूर

सरकार ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है।

हमारे समाज में बालकों का कोई स्थान नहीं है। माता पिता उन से अपना मिण्ड छुड़ाने के लिये भेज देते हैं और समझते हैं कि हमने अपना कर्तव्य पालन किया है। उठना, बैठना, शिष्टाचार तो घर पर ही सिखाया जाता है। बच्चे के चरित्र की रू-रेखा बहुत छोटी अवस्था में बन जाती है केवल रंग भरना ही रह जाता है। इसी दृष्टि से देखा जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि माता पिता का बहुत बड़ा कर्तव्य है। नर्सरी स्कूल भी नहीं के बराबर हैं। अन्यथा वह भी इस कार्य में सहायक हो सकते हैं। बच्चे के लिये केवल पुस्तक ज्ञान हानिकर है। इस से पाठ रोचक नहीं हो सकते। खेल द्वारा ही बच्चों की शिक्षा होनी चाहिए। आज तो विज्ञान द्वारा अनेक नये साधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग शिक्षा कार्य के लिए होना चाहिए। बच्चे का क्रियात्मक रूप से यह भी बताना चाहिये कि समाज के साथ उसका क्या सम्बन्ध है जिस में आगे बढ़ कर अपनी प्रवृत्ति समाज के विरुद्ध न बन पावे। बालकों को अपने देश का ज्ञान कराने के लिए स्कूल की ओर से पर्यटन की व्यवस्था होनी चाहिये। प्रत्येक स्वतन्त्र देश में युवक आन्दोलन पर बड़ा जोर दिया जाता है और राज्य की ओर से उन को प्रोत्साहन मिलता है। हर तरह की रिश्वतें भी दी जाती हैं जिस से अधिक से अधिक संख्या में बालक घूम फिर सकें और अपने देश के ऐतिहासिक स्थान और प्राकृतिक स्थान देख सकें। शिक्षा की जो व्यवस्था की जाये उस में बालक का मुख्य स्थान होना चाहिए।

समाज की ओट से एक सच्ची कहानी—

निर्दोष पलकें

(लेखिका: कु० सुदर्शन खोसला, पटोदी)

एक दिन अनायास मैंने सामने वाले मकान के द्वार पर खड़ी एक सुन्दरी को देखा, जो कि एक टुक़ नेत्रों से मेरी ओर देख रही थी। उसके अरुण कपोलों में श्यामलता की रेखा एक तीर बन कर मेरे हृदय में जा लगी। उसके उर की तपन उसके होंठों से दो वृंद आंसू और उसके कम्पित अधरों से एक निःश्वास बन कर निकल गई। हम दोनों अपरिचित थीं परन्तु फिर भी विचारों के अथाह सागर में खो गईं। सहसा मेरी चेतना लौटी और मेरी दृष्टि उसके घुंघराले बालों से उलझती हुई उसके मैले-फटे वस्त्रों पर पड़ी—जो उसके निर्मल प्रसून से शरीर पर कराह रहे थे। वह शरमा गई और अचकचा कर भाग गई।

दिनों का चक्कर चलता ही रहा और समय पाकर वह मेरे जीवन में समा गई। उस का नाम था विद्या। पर विधाता ने उसके लेख नि-विडान्धकार में लिखे थे—अर्थात् वह शिक्षिता न होकर अत्याचारों के भार से बोझित एक भारतीय कन्या थी। उसकी भाभी उसे एक मात्र घर की दासी ही समझती थी। उसकी मां स्वयं वह पुत्र के क्रोध का शिकार होती रहती और सदा बहू की सेवा में उपस्थित रह कर अपने महान अस्तित्व, अधिकार और बहुमूल्य स्वतंत्रता का मूल्य भूल कर एक मात्र गुलाम बनी रही। उसका क्रोध भी वि-। तक ही सीमित था। पिता थे कि चार २ दिन तक घर नहीं घुसते। बस उन का कार्य था अपने इकलौते पुत्र के इंगित पर चलते हुये ग्राहकों को अपने कपट जाल में

फँसाते रहना।

एक दिन विद्या ठीक बारह बजे हमारे घर आई—भाई की चार वर्षीया कन्या को उठाये हुये। कहने लगी—“बहन जी ! आप तो सदा उलाहना ही दिया करती हैं परन्तु मैं सचमुच विवश हूँ। आज भाभी जी किसी कार्य-वश बाहिर गई हैं और मैं लड़की को खिलाने के बहाने चली आई। सच मानना ! मैं उषा काल की प्रथम किरणों के साथ ही उठी हूँ। आप मेरा कार्य क्रम सुन कर चकित होंगी। आपके घर में दया है, हमारे घर में कठोरता। आपके घर में शायद कार्य की बाँट होगी परन्तु हमारे घर का निर्णय देखो मुझी पर सारे घर का उत्तरदायित्व है—मैं निस्सहाय हूँ—कार्य न करने में असमर्थ रहने पर मुझे सब के क्रोध का शिकार होना पड़ता है। क्या ही अच्छा हो कि मैं रजनी के काले आवरण के पीछे सदा के लिये छिप जाऊँ। और कोई चाहे न दूँ दे पर...सम्भव है आप उषा की रक्तिम किरणों में मुझे खोजने की असफल चेष्टा करेंगी।” और वह रो पड़ी। मेरी आँखें भी सजल हुये बिना न रह सकीं और मैंने उसे विश्वास दिलाया—प्रिय विद्या ! समय आपका साथ देगा। और नहीं तो ईश्वर सर्व व्यापी है न्याय कारी है। वह दिन दूर नहीं जब कि आपकी शान्ति, सन्तोष और सहनशीलता आपको वह स्वर्णित आसन भेंट करेंगी जिसकी अद्भुत किरणें अन्योयी समाज को न्याय के मार्ग की ओर अप्रसर करेंगी।” विद्या ने लुब्ध होंठों से मेरी ओर देखा। वह कुछ कहने ही जा रही थी कि भाभी की

कर्कश वाणी से सिहर कर भाग गई।

दूर वृत्तों के झुरमुटों से भन २ कर भास्कर की सुनहरी किरणें उषा देवी के ममतामय और शीतल आँचल में से छन कर—रजनी के आवरण को चीरते हुए—एक बार उसे भकभोर देती और वह एक शीतल समीर के साथ उठ बैठती। एक मधुर मिलाप का दूटा—फूटा गान उस के अधरों से अठखेलियां करने लगता। द्वार पर...थप...थप...का शब्द मुझे सपनों के अदूर देश से लौटा लाता और मैं भाग कर उस से जा मिलती। दूसरे ही क्षण हम बाजार पार कर...वृत्तों के झुरमुट पार कर दूर हरित खेतों के पार जा पहुँचतीं। वह देर तक किंकर्तव्य विमूढ़ सी शून्य को घूरा करती।

मुझे जोर का ज्वर हो आया। माता जी शहर गई थीं! मैं एकान्त में पड़ी दिन भर ज्वर-पीड़ित रोती रही। न जाने कब मेरी छोटी बहन प्रेमलता ने जा बताया। वह घबराई सी भागी आई और पूरे अनुरोध से दूध पिला कर मेरा दिल बहलाती रही। उस के निःछल प्रेम ने रोग पर विजय पाई और एक सप्ताह के कठोर ज्वर से रहित मुझे पूर्ण स्वस्थ पाकर वह मुझ से लिपट गई।

उस दिन उसकी भाभी ने मक्खन मँगवाया। अपना और पतिदेव का भोजन उसी में बनाया फिर दाल की ओर संकेत करते हुए बोली—'विद्या यह सब तुम्हारे लिए है।' विद्या लजा कर भीतर चली गई। वह इतनी तुच्छ नहीं थी कि मुझे इतनी छोटी २ बातों से परिचित कराती। मैं ने दांतों तले अँगुली दबा ली और समाज का खोखलापन देख कर मेरे हृदय को धड़कन भर खर हो उठी और दबे अधरों से न जाने कब एक आह निकल गई।

फटे वस्त्रों में लसका एक सप्ताह निकल गया। फिर भी उस देवी के अधरों पर एक मुस्कान थी। दूसरे सप्ताह का श्रीगणेश हुआ। वस्त्रों की धजियाँ हो चलीं...वह चीत्कार कर उठे...मेरे हृदय में एक आँधी और उठती ही रही और फिर...एक काले घन की भयानक टुकड़ी मेरे दगों से जा टकराई...दूसरे ही क्षण अमूल्य मोती पृथ्वी के धड़कते उर पर बिखर रहे थे...—'विद्या! अब सहा नहीं जाता...मैं अन्याय सहन नहीं कर सकती। अत्याचार करना पाप है परन्तु अत्याचार सहना भी महापाप है। तुम कह दो न अपने माता-पिता से। अपने अधिकार की मांग करो। चाहे मुझे लोग घर में फूट डलवाने वाले की उपाधि दे' चाहे पगती की। मैं तुम्हारे साथ हूँ।' और मैं ने कह ही तो दिया—'भाभी कितना चुरा लगता है। कम से कम आप उच्च समाज के सदस्य हो। विद्या के वस्त्र...' 'हां! कह दिया है इस के भैया को। यह बहुत कपटी है दिल में इस के मैल भरा है। यदि जरा सी लगाम ढीली कर दूँ तो देखना कैसे सारे ग्राम भर में भागी फिरती है। अभी तो कुछ पढ़ी नहीं, नहीं तो देखते रंगीन पच्ची सी कहां तक उड़ती जायेगी! मेरी पाँच वर्षीया कन्या को देखो कैसे भागी भागी पाठशाला जाती है पर यह तो चित चुराती है सभी कार्य से।' और उस ने घृणा से मुँह बना लिया। मेरे लिए असह्य था यह सब। ठउ खड़ी हुई। बैठो न! और देखना यह अपनी सुन्दरता का अभिमान करती है, भला कौन थूकेगा इस पर। कार्य-चतुर नहीं चलना तक आता नहीं, विवश है। नहीं तो काल का ग्रास हो जाए तो कौन सी संख्या घटती है देश की?' आरोपन करने के दृष्टिकोण से यह सब वह कह गई।' विद्या लुब्ध हो उठी और निर्दोष पलकों से भाभी को देखा? मेरी सजल आँखों को कोई न देख

सका। निकट ही आंगन के निर्बल बाहों से भी धान कूटने में संलग्न थी। दूमें भाभी के बच्चे रोटी के एक टुकड़े पर कुत्ते के समान टूट पड़े और चिल्ला चिल्ला कर नोच डाला एक-दूसरे को। भाभी नन्हें को चटाई पर पटक चिल्लाती हुई उधर बढ़ चली एक न्यायकर्तृ के रूप में।

रजनी की कालिमा धीरे धीरे बढ़ चली थी। एक अबला के अभाग्य की तरह। अपनी धीमी लालिमा छोड़ते हुये सितारे मुस्करा पड़े और भूला पथिक उन्हें आशा के दीप समझ कर उन्हें पाने को ललचा उठा। विद्या की भी यही दशा थी। वह खोई खोई उन कपटी सितारों को ताकती रही... उस की विचार शृङ्खला... “पिता जी अभी आते ही होंगे, आज शहर गये थे—शायद कपड़ा लेते आयें... पर नहीं, जैसा बहिन जी ने सूट सिलवाया है वैसा ही सिलवाऊँगी... लोग कहेंगे कैसी सुन्दर जोड़ी हैं.. बहने हैं दोनों।” न जाने अम्बर पर खिलते सितारों से कितने ही अरमान उसके हृदय-क्षितिज पर बिखरते रहे। पर... दूर एक सितारा टूट चला। अपनी एक लम्बी रेखा—स्मृति मात्र छोड़ता हुआ। आह भर कर रह गई वह हृदय में एक तूफान छिपाते हुये। न जाने वह कब तक चित्रित रहती कि अचानक उसे द्वार पर हुई आहट ने चौंका दिया। “पिता जी आ गये। मैं कब से आप की बाट जोह रही थी, सब भोजन कर ऊपर (छत पर) जा चुके हैं।” उसने एक चटाई बिछा दी परन्तु सिर पर आँचल लेते ही फटी—सहमी सी कई धजियाँ भस्त्रक पर अन्यन्त्र सी बिखर गईं। वह लज्जा गई, कई स्थान पर जोड़ लगे होने पर भी वस्त्रों से कई जगह छेद हो चले थे। पिता बेटी की दयनीय दशा देख कर अवाक रह गया। एक हल्की सी चीख निकल गई उस के उर से। “बेटी! मैं अत्याचारी हूँ, जीवन के बोझों से बोझिल—मेरा किस जन्म भला होगा? तुम्हारी दशा—पाप का पैसा—।” और वह अधीर

हो चला—एक पागल की भांति चीख पड़ा। न जाने उस रात उस ने भी भोजन किया कि नहीं।

एक दिन उर में नन्ही बगिया लहलहा उठी, जबकि उसे मैंने एकदिन सुन्दर छींट के वस्त्रों में लिपटी देखा। उषा की रक्तिम किरणों जैसी चुन्नी उस के गौर-मुख पर खिल उठी। कितनी सुन्दर थी वह उस दिन? दूर बंठी भाभी चोट खाई सर्पिणी सी ईर्ष्या से भरी बेचारी पर अग्नि बाण छोड़ती रही। आखिर उसे एक बाण लग ही तो गया, दूसरे ही क्षण वह उ्वर पीड़ित थी। “भाभी! जान पड़ता है इसे मले-रिया हो गया है, थोड़ा दूध लाओ, कुनैन है मेरे पास।” मैंने भाभी को सम्बोधन किया “क्या करूँ? मेरी लड़की को स्वयं बुखार हो गया है।” दूर कोई गा रहा था—“भगवान् दो घड़ी इनसान बन के देख, धरती पे चार दिन कभी महमान बन के देख।” वह मुस्करा दी परन्तु वातावरण रो रहा था। मेरे आँसू भी विद्या के दमकते मुख पर सहम कर जा गिरे। विद्या की मधुर हँसी भाभी क्योंकर सहन करती, बोली—“सनेभा के गाने खूब भाते हैं। लज्जा कर, डूब मर चुल्लु भर पानी में। मेरा बस चले तो चुटिया पकड़ कर निकाल दूँ बाहिर। चाटती रहे लोगों के जूते।” मेरा दिल पुकार उठा—“यही है दुनिया-यह समाज है... और यही तो हैं समाज के कोड़े... घुन की तरह...।” और मेरी विचारधारा यहाँ रुक गई... मैं आगे सोच न सकी और एक अश्रु-धारा बरबस फूटने को विवश हो गई—इस से पूर्व ही मैं द्वार पार कर चुकी थी।

प्रातः प्रकृति ने एक अङ्गड़ाई ली और जाग उठी। विजयी युवक की तरह समीर अपनी विजय पताका फहराते हुये बह चली। हरित वृक्षों की सक्रोमल मंजारयाँ धड़कता हृदय लिए प्रखर अनिल के कठोर प्रहार सहता रहा। नन्हें पुष्प उर में विरह की तपान लिए हुए सहमी मंजारयाँ स भिन्न ह। दूर जा गए आर आन्तन स्या तक सिसकत रहे।

नन्ही सरिता ने उनके सहस्रों अश्रु बटोरे और चल दी, दूर परन्तु अज्ञात देश को। उसी करुणा से भीगी भीगी सी प्रकृति में करुणा की देवी विद्या मैले वस्त्रों का एक गट्टा लिये बढ़ चली सरिता की ओर। उसने शीतल जल में हाथ डाला और चौंक पड़ी... फिर कपड़े गर्म जल में से निकाल कर कूटने लगी—मैंने दूर से उसे देखा और धीरे धीरे पीछे जाकर उस की भीगी पलकें बन्द कर दीं। “ऊँह—छोड़ो भी।” और मैं सहम कर हट गई। वह निर्दोष पलकें उठाये क्रोध से काँपते सूर्य को देख रही थी और मैं देख रही थी उन लाल आँखों को।

“विद्या! हमारा परिवर्तन हो गया। पिता जी चले भी गये।” मैंने उदास हो कर उसे बतलाया। “कुछ ही क्षण उपरान्त वह सिसक रही थी। बोली—“बहन! मुझे कोई नहीं चाहता? और आप का मुझ निर्धन से मिलना किसी को एक आँख भी नहीं भाता था। अब वे दुष्ट, द्वेषी, पापी, क्रूर संतोष की सांस लेंगे। मैं तो सिसककर जोही लूँगी आप विदेश जाओ—मेरे परदेसी साथी” संक्षेप में

(८ पृष्ठ का शेष)

जाते हैं। सार्वजनिक जीवन में आध्यात्मिकता अवश्य आनी चाहिए। नवयुवकों को चाहिए कि मातृभूमि की सेवा के लिये वे सब कुछ न्योच्छावर कर दें। अब वह समय आ गया है जब देश के हित के लिए नवयुवक धार्मिक वृत्ति के साथ अधिक से अधिक संख्या में आगे बढ़ें। देश-प्रेम से प्रेरित होकर जब हम में से काफी लोग अपना जीवन जन सेवा में लगाने के लिये आगे बढ़ेंगे तभी हमें उस कीर्ति की झलक दिखाई दे सकेगी जिसे एक बार देख चुकने के बाद हम कभी दृष्टि से ओझल नहीं होने देना चाहेंगे। उस समय हमारे सारे भ्रम और हमारी सारी आशंकाएँ दूर हो जायेंगी, हमारा सारा ओझापन जाता रहेगा और हमारा देश उस परम लक्ष्य की परिपूर्ति की ओर बढ़ेगा जिसका

इतना ही कह वह चली गई। मैं ठहर न सकी और उसके पीछे ही उसके घर जा पहुँची। भाभी डांट रही थी—“रोईक्या? क्या कष्ट है तुम्हें। लोग क्या कहेंगे? लोगों में शोर मचा दे आन्वी बन कर फिर जा ग्राम भर में। लज्जा नहीं आती।” उसका भय स्पष्ट उभर आया—उसके आँसू थम गये, आँहें दबी रहीं और अरमान बिखरे रहे। मैं सोच रही थी—“आँसुओं पर भी प्रतिबंध हो गया आज समाज में—।”

रजनी के काले आँचल में लाखों टिमटिमाते दीपक उभर आए, चारों ओर से प्रफुल्लता के फुआरे छूट चले—आज दीवाली थी न। पर उस की दीप शिखायें उसे जलाने लगीं। मैंने अतुरोध किया और उसे घुमाने ले गई। उस के पाँव के पास से एक पटाख छूट गया पर वह भयभीत नहीं हुई। मार्ग भर मेरा हाथ थामे मेरी ओर देखती रही—। फिर एक दिन मैं उस से अन्तिम विदा लेने गई उस के अश्रु तो कभी के शब्द हो चुके थे—वह रोई नहीं। एक बार उसकी निर्दोष पलकें उठीं और मुझे अपने में समेटती हुई झुक गई ॥

हम रात भर स्वप्न देखते रहना और दिन भर चिन्तन करते रहना चाहिए।”

(९ पृष्ठ का शेष)

काम अधिक आसान और सुखकर बनाना हमारी जिम्मेदारी है। इस कार्य में और अपने अन्य नागरिक कर्तव्यों में हम कहाँ तक सफल हो पाये हैं? केवल एक पूर्ण नागरिक के अधिकारों को पा जाना ही हमारा ध्येय नहीं है, और न ऊँचे पद पने या नौकरी की दौड़ में पुरुषों से होड़ लेना। माँ होने के नाते हम अपनी सन्तान के लिए नागरिक सुरक्षा और सुविधाएँ चाहती हैं और इस दिशा में यत्न करना हमारा पहला कर्तव्य है।

यह दिन हमारे लिए आत्म-परीक्षा का दिन होना चाहिए और यही हमारी सच्ची देशसेवा होगी।

एक हास्यपूर्ण कहानी—

फर्स्ट ईयर फूल

(लेखिका : कुमारी पुष्पा चेतन बी० ए०)

वार्डन ने सुरेश को कमरा दिखाते हुए कहा — “यह रहा तुम्हारा कमरा । तीन और लड़के भी तुम्हारे साथ इसी कमरे में रहेंगे । अभी तो तुम अकेले ही हो, परन्तु घबराना मत, वे भी एक दो दिनों में आने ही वाले हैं । अब तुम यहाँ अपना सामान लगा लो, और आराम करो । किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो मुझे बता देना ।

यह कह कर वह उसे वहीं छोड़ कर दूसरी ओर चल दिया ।

सुरेश प्रथम वर्ष में प्रविष्ट हुआ था । होस्टल से उसका प्रथम ही परिचय था । कुछ थकान सी प्रतीत होने के कारण उसने सोचा कि बिस्तर लगा कर तनिक आराम किया जाए । परन्तु इतने में ही तीन चार बड़े बड़े लड़के झटपट उसके कमरे में घुस आये और आते ही उनमें से एक बोला—“देखिए नए साहिब, मैं इस होस्टल का Luggage Inspector हूँ और ये हैं मेरे साथी । हमें यह कार्य सौंपा गया है कि जो भी नया लड़का होस्टल में आए उस के सामान की भली भाँति तलाशी ली जाए और देखा जाये कि किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति-जनक वस्तु उसके पास न हो ।”

प्रथम इसके कि सुरेश कुछ बोले दो लड़के तो उसका बिस्तर खोलने लगे और दूसरों ने उसके हाथ से तालियाँ लीं और लगे ट्रंक खोलने । बेचारा सुरेश भौंचक्का सा खड़ा देखता रहा । अभी दो मिनट भी न गुजरे होंगे कि सहसा एक लड़का बोल उठा— “वाह, वाह, कितना सुन्दर डिब्बा है यह क्यों मिस्टर इस में क्या छुपा रक्खा है ?”

सुरेश, जो हकबकाया सा खड़ा सारा काण्ड देख रहा था, यह सुनते ही चौंक कर बोला—“कृपया

यह मुझे दे दीजिये । इस में आप के देखने योग्य कोई वस्तु नहीं है ।”

परन्तु वे भला ऐसे कब मानने वाले थे, बोले —“अजी आप घबराएं नहीं, हम अभी देख कर तुम्हें वापिस किए देते हैं । केवल एक नज़र देख ही तो लेंगे । कोई ऐसा खाद्य-पदार्थ तो होगा ही नहीं जो ‘automatically’ मुँह में चला जाएगा ।

यह कह कर वह लड़का डिब्बा खोलने का प्रयत्न करने लगा । डिब्बा अभी पूरा खुला भी न था कि दूसरे लड़के चिल्लाये ‘देखें, देखें, इस में क्या है ?’ बस डिब्बे के लिए छीना झगटी होने लगी । परिणाम-स्वरूप डिब्बा उसके हाथ से छूट कर पृथ्वी पर गिरा और टुकड़े टुकड़े हो गया । और उस में से निकल कर कुछ गुलाब की सूखी पत्तियाँ इधर उधर बिखर गईं ।

सुरेश ने यह देखा तो आहत सा होकर बोला —“हाय यह आपने क्या किया ?” इस पर बजाए इसके कि वे अपनी भूल पर पश्चाताप करते, उल्टा उसकी अश्रुपूर्ण आंखें देखते ही ठठ्ठा कर हंस पड़े । तभी उनमें से एक बोला—“बेचारा अभी है तो बच्चा ही न, काँच का खिलौना टूट गया सो रोएगा ही” दूसरे ने भी झट से व्यंग कसा—“वाह तू भी अजीब बेवकूफ है, देखता नहीं ये फूल की पत्तियाँ ? मालूम होता है किसी प्रेमिका की स्मृति-चिह्न हैं ।” तीसरा भी झट से बोला—“ओहो ! तभी जनाब बच्चा साहिब इस प्रकार रोनी सूरत बनाये खड़े हैं ।”

इस पर वह पहला लड़का बोला—“अरे मैंने तो इसका भोला-भाला मुखड़ा देख कर ही कहा था, लेकिन क्या खबर थी कि आप हैं पूरे four twenty (चार सौ बीस) क्यों जी छुपे रुस्तम ?” तथा लगा

खिलखिला कर हंसने ।

तीसरे ने फिर व्यंग्यात्मक सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में कहा—“भई, उदास क्यों होते हो ? एक पत्र लिखने भर की देरी है कि ऐसे देरों फूज तुम्हारी सेवा में उपस्थित हो जाएंगे ।”

इस पर एक दूसरे साहिब ने फरमाया—“भई तुम भी बुद्ध ही निकले । भला इन मुरझाई सूखी पत्तियों के लिए क्या रोना ? अब नये ताजे पुष्प ढँढ़ना ।”

पहला लड़का शरारत से, सुरेश के सुन्दर चेहरे पर नजरें गड़ा कर बोला—“ढँढ़ने की आवश्यकता न पड़ेगी, फूल स्वयमेव चले आएंगे ।” और कमरा हँसी से गूँज उठा ।

सुरेश जो अब तक चुपचाप खड़ा उनका यह वर्ताव सहन किए जा रहा था, घृणा तथा रोष से पूर्ण हो उठा । लड़के भी लड़ गये । अतः Luggage Inspector बोला—“न बेटा गुस्सा मत करो । लो यह हम तुम्हें सर्टिफिकेट दिए जाते हैं, कि इस लड़के के पास से कोई भी आपत्तिजनक वस्तु नहीं पाई गई ।” और एक कागज के टुकड़े पर कुछ लिख कर उसकी जेब में ठूँस कर चलते बने । जाते जाते एक स्वर से बोले—

“यह तो पहली छेड़ है, रोता है क्या, आगे आगे देखना होता है क्या ?”

परन्तु सुरेश इन बातों से दूर अपनी ही दुनियाँ में विचरण कर रहा था । अब से कोई दो वर्ष पूर्व की बात—

सुरेश सिविल सर्जन रमेश का इकजौता बेटा था । लाड चाव में पल कर इतना बड़ा हुआ था । उस समय सुरेश की आयु १३ वर्ष के लगभग थी जब डा० रमेश बदल कर शाहपुर आए । परन्तु यहाँ आकर सुरेश को साथियों का अभाव बुरी तरह से खटकने लगा । उसका सरल स्वभाव और बचपन शीघ्र किसी और को भी साथी बनाने में सहायक

सिद्ध हो सकते थे, परन्तु कोठी शहर से दूर होने के कारण वह अपने रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए किसी और को पा ही न सका ।

थोड़े दिवस पश्चात् जब उनका नया माली आया तो उसके साथ अपनी माता की अँगुली पकड़े हुए सात-आठ वर्ष की एक भोली-भाली पुष्प सी कोमल मृग-शावक के समान कौतूहलपूर्ण नेत्रों से इधर-उधर ताकती हुई एक सुन्दर बालिका भी थी, जिसे देख कर सुरेश का नन्हा हृदय प्रसन्नता से खिल उठा, मानों बहुत देर से खोई हुई कोई प्रिय वस्तु उसने पा ली हो ।

उसका नाम था चन्दा । शीघ्र ही आपस में खूब हिलमिल गए । अब सुरेश का अभाव दूर हो चुका था । खेलने पढ़ने और खाने में भी चन्दा सदैव उसका साथ देती । दिन में कई बार दोनों भगड़ते, एक दूसरे को पीटते, रूठते और रोते । परन्तु बाद में फिर मान-मनौती होती और चन्दा के लिये उसे पीटने वाला सुरेश ही “सुरेश भैया” बन जाता । इसी प्रकार हँसते-खेलते पाँच मास व्यतीत हो गये ।

एक दिन सुरेश ने चन्दा से कहा—“भरी चन्दा, सुनती हो, कल हमारा जन्म दिवस है; खूब मज़ा रहेगा । मेरे बहुत से मित्र सुन्दर सुन्दर उपहार मेरे लिये लेकर आएंगे । मिठाइयाँ उड़ेंगी—परन्तु यह समझ लो कि मैं मिठाई उसे ही दूंगा जो मेरे लिए सुन्दर सुन्दर वस्तुएं लायेगा । यदि तुम भी अनुपम सा उपहार लाओगी तो, सच कहता हूँ, तुम्हें बहुत सी मिठाई दूंगा । कितने ही दिन खाने पर भी संपाप्त न होगी ।

यह सुनकर चन्दा चुप सी होकर कुछ सोचने लगी । सुरेश ने सोचा था कि वह मचलेगी और कहेगी मुझे अवश्य बुलाना; परन्तु अपनी बात का उलटा असर होता देख कर वह कुछ विचलित सा हो उठा और घबरा कर बोला—“यह क्या

चन्दा, तुम चुप क्यों हो गईं ? नाराज मत हो, मैं वैसे ही मिठाई दे दूंगा। लेकिन देखो—कल आना अवश्य।”

थोड़ी देर की चुप्पी के पश्चात् वह फिर बोला—“बताओ भी, आओगी न ?” चन्दा ने अनमनेपन से स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया और भाग गई।

आज सुरेश की कोठी में बहुत चहल-पहल है। तीन बज चुके हैं। नौकर लोग इधर-उधर भाग रहे हैं। चार बजते बजते सब मेहमान पहुँच गये। परन्तु चन्दा, जो प्रतिदिन सुबह से ही आ धमकती थी; सुरेश को अभी तक कहीं दिखाई न दी। वह कुछ उदास सा हो गया। साथ ही उसे गुस्सा भी आ रहा था कि इतना कहने पर भी उसने मेरी तनिक परवाह न की। “खैर देखूँगा” उसने मन ही मन में कहा।

ज्यों त्यों करके पार्टी समाप्त हुई और सभी मेहमान उसके लिए शुभ-कामनायें करते हुए अपने अपने घर चल दिये।

सुरेश को बहुत से उपहार मिले थे परन्तु उसने सोचा कि पहले चन्दा को मना लाऊँ, फिर आकर इकट्ठे ही इन्हें देखेंगे। उसने थोड़ी सी मिठाई रुमाल में बांधी और उसके घर की ओर चल दिया। रास्ते भर वह सोचता रहा कि कैसे पिटा कर मिठाई दूँगा। भिन्नतें करेगी तो बोलूँगा। परन्तु जब वहाँ पहुँचा तो मामला ही बेइय नजर आया। वह धक् से रह गया। उसने देखा कि चन्दा आँखें बन्द किये पृथिवी पर पड़ी थी और पास बैठी उसकी माँ बुरी तरह रो रही थी। उसे देखते ही वह चिल्ला कर बोली—“बेटा तुम्हारी बहिन को तो साँप ने काट खाया—भगवान् जाने क्या होने वाला है।”

सुरेश ने अचम्भे से पूछा—“साँप ने काट खाया है ? कैसे ?”

मालिन बोली—लाख बार समझाया था कि

देखो संध्या-समय उस क्यारी में फूल तोड़ने मत जाया करो। पर मानी नहीं। भगवान् की इच्छा ही ऐसी थी। आज गई और चीख कर गिर पड़ी। मैं भागी भागी वहाँ गई तो देखा यह फूल उस के हाथ में था। तभी तुम्हारा माली भी वहाँ पहुँचा तो पता चला कि इसे साँप काट गया है। तभी से ऐसे पड़ी है। एक दो बार आँखें खोल कर तुम्हारा नाम लिया है, बस।”

इसके पूर्व कि सुरेश कुछ बोले चन्दा ने आँखें खोलीं और मुस्करा कर ऐसे बोली मानो बहुत दूर से बोल रही हो। उसने सुना, वह कह रही थी—“जन्म-दिवस उपहार” और साथ ही अपना फूल वाला हाथ ऊँचा कर दिया। लेकिन सुरेश अभी पकड़ भी न पाया था कि उसने फिर आँखें बन्द कर लीं और साथ ही उठा हुआ हाथ पृथिवी पर गिर पड़ा।

तभी माली डाक्टर रमेश को साथ लिये वहाँ पहुँचा। उसने नन्त्र देखी और सिर हिला कर कहा—“बहुत देर हो चुकी है।”

सब के चीत्कार में सुरेश का रोना भी खो गया। फिर वह इतना भी न जान सका कि कब और कैसे उस के पिता उसे घर ले गए। सम्भलने पर उसने देखा कि वह बिस्तर पर पड़ा था। पास ही वह फूल मुरझाया पड़ा था। उसे देखते ही वह फिर रोने लगा। परन्तु माँ-बाप के बहुत ढारस बंधाने पर वह उठा और फूल लेकर उसी ओर चल दिया जहाँ दूसरे उपहार पड़े थे। वहीं उसे काँच का डिब्बा मिला जिस में उसने अपनी नन्हीं बहिन के इस अमूल्य उपहार को सम्भाल कर रखा।

तभी जोरों से बजती चाय की घण्टी ने होस्टल को गुँजा दिया। सुरेश ने चौक कर शीघ्रता से अपने को सम्भाला। उस की आँखों में अश्रु-धारा बह रही थी। उसे पोंछने को जेब से रुमाल निकालने के लिए उसने हाथ डाला। तभी वह पुर्जा

सच्चे मित्र

मित्रों को नहीं दोष दीखते
 उन से हम कुछ भी न सीखते
 वे गुण गाते नहीं अघाते,
 दोष तनिक भी नहीं बतते ॥
 उन को प्रिय न मानो भाई,
 जो मुँह पर कर रहे बढ़ाई ॥
 दोष बढ़ाई से न सुधरते,
 उल्टे आ आ कर घर करते ॥
 निन्दक दोष बताते भाई,
 हमें राह पर लाते भाई ॥
 प्रिय उन्हें हम सच्चा मानें,
 दूँद दूँद जो दोष भवानें ॥
 फूलो मत सुन बड़ी बढ़ाई,
 भूलो मत मन की अधम भाई ॥
 भूठी अधिक प्रशंसा होती,
 निन्दा अधिक सत्य ही होती ॥
 जो केवल निज गुण सुनते हैं,
 वे नित ही जलते भुनते हैं ॥
 जो अपनी चाहते भलाई
 धीरज रख कर सुनो बुराई ॥

उसके हाथ आया जो उसके अनजाने में शरारती लड़के उसकी जेब में डाल गए थे। उस पर लिखा था "First year fool"। 'फूल' शब्द मस्तिष्क में आते ही एक ठण्डी आह उस के अन्तर से निकल कर शून्य में विनील हो गई। उसने टूटे दिल स कांच के टुकड़ों को उठाया और बाहर Dust bin में फेंक दिया। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था मानो किसी अज्ञात कोने से कोई कह रहा हो—“तेरी प्रिय बहिन चन्दा वास्तव में आज तुझ से सदैव के लिये बिछुड़ गई है।” उसने पृथिवी पर बिखरी हुई गुलाब की पंखाड़ियों की ओर देखा जो हल्की वायु से हिलती हुई ऐसे प्रतीत हो रही थीं मानो हाथ हिला हिला कर उस से विदा मांग रही हों।

मूक प्रतिमा

[रचयिता : श्री राम चन्द्र 'सरोज' एम. ए.]

यह अधर का हास है विष दग्ध दंशन,
 बँध गया संतप्त साँसों का प्रभंजन,
 और नयनों की सरल निर्मूर्क चितवन,
 बँधती उर के अतल का मर्म पावन,
 जिन्दगी का सामने रक्खा हलाहल
 आज उसमें शाप के मधु बिन्दु ही
 कुछ घोल दो, ना
 मूक प्रतिमे बोल दो ना ।

तड़ित की द्युति में उफनता रूप तेरा
 खीज लेगा नील-नीरद-नीरद प्राण मेरा,
 साधना के नैश-तम में डूबता सा,
 छू न पाएगा हृदय-पंखी सबेरा,
 और तेरे केश के अभिशप्त विषधर
 डस रहे हैं मुक्ति का शृंगार
 बंधन खोल दो, ना ।
 मूक प्रतिमे बोल दो ना ।

तुम अचल निस्पन्द पत्थर की शिला सी
 सोख लोगी क्या विजन वन की उदासी,
 ज्योति के कुछ पुष्प पद तल पर चढ़ा कर,
 वेदना चिर घेरती काली अमा सी,
 हिल उठेंगे निल अम्बर के सितारे
 यदि शिशिर की वायु सी
 चल डोल दो, ना ।
 मूक प्रतिमे बोल दो, ना ।

आज अन्तर में भरी उन्मत्त ज्वाला
 डाल ही देगी गले में अश्रु माला,
 और फिर विक्षिप्त नस नस का प्रकम्पन,
 खींच पद तल पर धरेगा मेघ काला,
 मिट न पायेंगे निशा के दग्ध सपने
 यदि ऊषा की ज्योति में मुख
 खोल दो, ना ।
 मूक प्रतिमे बोल दो, ना ॥

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र० वनस्पति घी खाने से क्या हानि होती है ?

—राम लाल रोहतक

उ० शुद्ध घी खाने से शरीर को जो शक्ति मिलती है उस से वनस्पति घी खाने वाला वंचित रहता है ।

—दी०

प्र० क्या अमेरिका में शिक्षा मुफ्त है ?

उ० हां, हाई स्टैण्डर्ड तक शिक्षा वहां सर्वथा निःशुल्क है ।

प्र० हमारे स्कूल में 'प्रकाश' क्यों नहीं आता, इसका क्या कारण है ?

—प्रेमनाथ जम्मू ।

उ० इसलिए कि आपका स्कूल 'प्रकाश' का ग्राहक नहीं है ।

—दी०

प्र० यदि ऐसी स्थिति हो जाय कि माता एक काम करने को कहती हो और पिता कोई दूसरा तो किस का कहा मानना चाहिए ।

—हरवीन्द्र, जालन्धर ।

उ० दोनों में से जो काम अधिक

आवश्यक हो उसे करना चाहिए, चाहे उसे माता कह रही हो या पिता ।

—दी०

प्र० क्या वसन्ती हल्वा खयेंगी आप ?

—चन्द्रकांता, बम्बई ।

उ० भेज कर देख लिया होता न ।

—दी०

प्र० झूठ बोलना क्यों पाप है जबकि इसके बिना काम ही नहीं चलता ?

—कुन्दन लाल, कलकत्ता ।

उ० झूठ बोल कर किसी कार्य की सिद्धि करने का अर्थ है किस को और अपने आप को धोखा देना, और धोखा देना कभी अच्छा नहीं ।

—दी०

प्र० क्या अमेरिका और रूस के बच्चे हमारे यहां के बच्चों से अधिक बुद्धिमान हैं ?

—केदारनाथ, कानपुर ।

उ० जन्म से तो अधिक बुद्धिमान नहीं होते किन्तु उनकी शिक्षा और पालन पोषण अधिक उत्तम रीति से होने के कारण उनका साधारण ज्ञान भारतीय बच्चों से कहीं अधिक होता है ।

—दी०

जहां स्वातन्त्र्य आन्दोलन चल रहा है—

★ पूर्वी अफ्रीका के प्राचीन राजे ★

(लेखिका :- श्रीमती पुष्पावती, पी० शंकर दास, नेरोबी, पूर्वी अफ्रीका ।)

आज प्रत्येक देश स्वतन्त्रता चाहता है, और होनी चाहिए। हर एक देश का अपना ही राज्य होना चाहिए। तब ही वहां सुख और शांति हो सकती है। यदि कोई देश पराधीन है तो वह थोड़े वर्षों के पश्चात स्वतन्त्र हो जायेगा। परन्तु स्वतन्त्रता तब ही रह सकती है जब उस के देश की अपनी ऐतिहासिक सभ्यता हो। वीर, योद्धा और बुद्धिमान राजे गुजर चुके हों। अफ्रीका एक बड़ा महाद्वीप है जिसे (Black Continent) कहते हैं। आज उस के आदिवासी अपना राज्य चाहते हैं। अब तो वह कुछ पढ़े लिखे भी हैं। कम्पाला, युगांडा प्रांत की राजधानी है। वहां एक मकरेरे कालेज (Makerare College) अफ्रीकन लोगों में कई अफ्रीकन ग्रेजुएट भी बन गए हैं और के लिए इंग्लैण्ड से कई परीक्षार्थी पास करके आये हैं। परन्तु किनिया प्रांत, जिस में आजकल गड़बड़ हो रही है, और आदिवासी अंग्रेजों के विरुद्ध हो रहे हैं, और अपना राज्य चाहते हैं, अब तक इन बातों में बहुत पीछे है। पच्चास लाख की आबादी में से आधी दर्जन से भी ज्यादा ग्रेजुएट नहीं हैं।

अंग्रेजों के जाने से पहले बिल्कुल जंगल था। कोई पुराना इतिहास नहीं है। कोई सभ्यता नहीं थी, फिर भी वह अपना राज्य चाहते हैं। अब मैं युगांडा प्रांत के एक राजा का हाल लिखती हूँ :—

युगांडा का राजा मटीसा

राजा मटीसा अपने वंश का ३५वां राजा था। उस का ठाठ : बाल खूब नोकदार संचारे जाते थे। वस्त्र एक चुगा था, जो खुला हुआ लटका रहता था और जिसे कन्धे के पास तांबे, पीतल और ऐसी धातुओं के बने हुए सुन्दर भूषणों के साथ बांध दिया जाता था।

एक अङ्गरेज यात्री स्पिक्स नामक के आने पर राज दरबार लगाया गया, वह इस प्रकार से कि राजा की एक ओर सब कर्मचारी गण खड़े हुए और दूसरी ओर जादूगरनी (Sorcerers) स्त्रियों का झुण्ड था, और राजा को केले की शराब बराबर देने वाली विवाहिता स्त्रिये तथा अन्य सेविकार्ये एक ओर उनके पीछे खड़ी थीं।

—० * ०—

★ करना हो तो काम करो ★

(रचयिता : श्री लक्ष्मीचन्द्र 'सरोज')

करना हो तो काम करो
वरना यों ही जीवन लेकर,
जीवन मत बदनाम करो ।

समय खेलने का हो जब तुम
जो भी खेलो प्रयत्न कर तुम
समय काम करने का हो जब,
तब तुम तन्मय काम करो ।

समय पाठ जब पढ़ने का हो
रटने और समझने का हो
समझो, रट कर कहो-शारदे !
जिह्वा पर विश्राम करो ।

यदि छोड़ोगे काम अधूरे
निश्चय होंगे कभी न पूरे
आज सुबह पा, व्यर्थ न
आशामय कल की शाम करो ।

करना हो तो अभी आज कल
कहो न श्रम से हो कर बेकल
कर ही डालो इसी समय तुम,
फिर जी भर आराम करो ।

इस शरीर का क्या होना है
काम बिना बोझा होना है
जब तक जीना जग में तुम को,
तब तक कर्मठ काम करो ।

जैसा कह सकते ज्ञानी जन
एक कंठ होकर एकहि मन
एक समय में भले एक ही,
पर सर्वोत्तम काम करो ।

यदि न करोगे समय याद तुम
पछताओगे खूब बाद तुम
समय काम का कभी न भूलो,
जीवन नहीं हाराम करो ।

कर्म करो सुन्दर अभिलाषा
छोड़ो फल मिलने की आशा
यही कहा गीता में हरि ने,
अर्जुन, निशिदिन काम करो ।

करो काम का मत विज्ञापन
कह लिख कर मत करो प्रकाशन
काम सफल जब जग देखेगा,
तुम तो अपना काम करो ।

यही प्रेरणा बने चेतना
जिससे तुम को हो न खेदना
सुन्दर सत्य सुभाषित समझो,
ठीक समय पर काम करो ।
करना हो तो काम करो ।

* नया वर्ष शुभ हो ! *

'प्रकाश' के नन्दे मुन्ने पाठकों को नया वर्ष
—हितैषी ।

★ ऋषि-गान ★

ऋषि दयानन्द की जीवनी दोहों में
[रचयिता: हितैषी अलावलपुरी]

(३०४)

बालक सारे पकड़ कर, पुलिस सामने लाय
लड्डू लालच दे गुरु, हम से बह करवाय

(३०५)

दे ना दे वह देत मैं, कहा ऋषि पुचकार
दे लड्डू मंगवाय कर, शुरू किया प्रचार

(३०५)

ईसा मत प्रवेश से, ४० युवक बचाय
मिशन स्कूलों में पढ़े, उलटा रस्ता पाय

उन्नीसवां अध्याय

[ब्रह्मचर्य की शक्ति]

(३०६)

गुरुदासपुर से फिर ऋषि, जालन्धर में आय
विजयसिंह सरदार के, आसन पास लगाय

(३०७)

ब्रह्मचर्य की वार्ता, छेड़ी पास बिठाय
विजयसिंह जी ने कहा, महिमा दो बतलाय

(३०८)

शास्त्रों में जिक्र है, सच्चा उसको मान
ब्रह्मचारी में तेज बल, बुद्धि होत महान

(३०९)

आप बाल ब्रह्मचारी, बल दीखे न सोय
इसका उत्तर फिर कभी, दूँगा निश्चय होय

(३१०)

चढ़ फिटन पर एक दिन, गए सैर सरदार
चले न घोड़े यद्यपि, खाये चाबुक मार

(३११)

वे पकड़ पहिया खड़े, देखा आँख उठाय
'ब्रह्मचर्य का बल यही', स्वामी जी फरमाय

(३१२)

पिंडी औ जेहलम गये, गुजरांवाला आय
पोठो-हर मुलतान में, घूमे और चलाय

(३१३)

खण्डन चक्र सब जगह; ईंटे पत्थर खाय
पीछे फिर भी न हटे, बिल्कुल न घबराय

(३१४)

राजपूताने भ्रमण औ, करके यू० पी० आय
दौरा सी० पी० का किया, राजों के हां जाय

(३१५)

ठहरे सज्जनसिंह के, आप उदयपुर आय
सम्वत उन्तालीस में, निज प्रण दियो निभाय

बीसवां अध्याय

[शाहपुर नरेश को दीक्षा]

(३१६)

महाराज सत्संग से, अवगुण दिये त्याग
शास्त्र और मनुस्मृति, संग बढ़ा अनुराग

(३१७)

पढ़ पातंजल योग वा, सीखा योगभ्यास
दिनचर्या अनुकूल वह करने लगे निवास

(क्रमशः)

भूलने में कितना आनन्द

गत का खुलता जब इतिहास,
 चुटकियाँ लेते कुछ परिहास ।
 परिहास कहूँ या शूल,
 बंध देते जो उर के कूल ।
 पने की बुझती है उमँग,
 सदाशा के मिटते सब रंग ।
 खता फीका सा संसार,
 अरे हो उठता जीवन भार ।
 कल होते तब मन के कूल,
 बनाने को अतीत इक भूल ।
 ग कर विस्मृति की हाला,
 भ्रम उठता मन मतवाला ।
 ग होता नूतन उत्साह,
 प्रबल होती जीवन की चाह ।
 खता छवि रंजित संसार,
 उमड़ता कण कण से फिर प्यार ।
 क उठती जीवन की चाह,
 मलिन होती भविष्य की राह ।
 रता में करुणा का वास,
 रुआं सा हो उठता हास ।

ता अन्तरतम में दाह, उठा करती धूमिल सी आह
 के ये जलते अंगारे, सदा करते मानव सुख छार ।
 ता से होते मृदु मेल, खेलती आशाएं नव खेल,
 स्वर भरते सुने प्राण, मचल उठते जीवन में गान ।
 की संसृति से हो दूर, हृदय होता सुख से भरपूर
 ताते दुख के सब फंद, भूलने में कितना आनन्द ।

—कुं सुदेव 'साधना' बी० ए०

यह भी खूब रही !

गूँगी पत्नी

एक व्यक्ति की पत्नी गूँगी थी । वह
 डाक्टर के पास गया और कहा कि किसी
 प्रकार आप्रेशन द्वारा उसे बोलने के योग्य
 बना दो । डाक्टर ने आप्रेशन करके गूँगी
 को बोलने के योग्य बना दिया । किन्तु एक
 ही सप्ताह पश्चात् वह आदमी पुनः उस
 डाक्टर के पास गया और शिकायत की कि
 उसकी पत्नी अब इतना बोलने लगी है कि
 वह उस से तंग आ गया है । इस से तो अच्छा
 था कि वह गूँगी ही रहती । उस ने
 डाक्टर से कहा कि उसे पुनः गूँगी कर दे ।
 किन्तु डाक्टर ने कहा; वह तो अब गूँगी
 नहीं हो सकती, प्रत्युत उस के कानों का
 आप्रेशन किया जा सकता है जिस से वह
 सुनने की शक्ति से वंचित हो सकता
 है । वह अपनी पत्नी की लम्बी जुवान से
 इतना तंग आया हुआ था कि
 अपने कानों का आप्रेशन करवाने को तैयार
 हो गया । डाक्टर जब आप्रेशन कर चुका
 तो उस ने उस आदमी से अपनी फीस मांगी ।
 उस ने हाथ हिला दिया जिस से उस का
 अभिप्राय यह था कि अब उसे कुछ
 सुनाई नहीं देता ! डाक्टर के मुँह से अनायास
 निकल गया—यह भी खूब रही !

—उर्मिला चौपड़ा बी० ए० बी० टी०

कवि दिलगीर की एक पंजाबी कहानी हिन्दी में :-

★ लहू और पानी ★

[कु० चन्द्रकला सुपुत्री स० निरंजन सिंह, हैडमास्टर डी० बी० हाई स्कूल कोटाला ।]

गाँव में साईं के पांव रखते ही चारों ओर शोभा फैल गई। दूर २ से लोग जादू ताबीज़ करवाने आते। जिन के घर संतान हीन होते, जिन के पति उन से लड़ा करते, जिन का बच्चा बीमार होता, उनका तो साईं जी के पास तांता ही लगा रहता। ज़मींदार भी इस समय को सौभाग्य जान कर उन से पूरा २ लाभ प्राप्त करना चाहते थे। यदि किसी के सिर पर ऋण होता तो वह साईं जी की सेवा में जाता और प्रार्थना करता कि यदि इस फसल में ऋण चुका दूँ तो आप के चरणों में यह भेंट करूँगा। किसी का बैल बीमार हो जाता तो वह भी उन्हीं के पास जाकर नाक रगड़ता, हर प्रकार के मनुष्य ने उन से पूर्ण लाभ प्राप्त करने की ठान रखी थी।

साईं जी भी किसी से कुछ न लेते थे। बस रोज़ किसी न किसी के घर खाना खा लिया करते और सब की मुरादे मुफ्त में पूरी कर दिया करते। नर, नारी सभी आधी आधी रात तक उनकी सेवा में तत्पर रहते। गाँव के नवयुवक अपनी प्रेमिका

की प्राप्ति के लिए उन के आगे अपना सर झुकाते।

पाखर, जो कि आस पास के सब गाँवों में माना हुआ पहलवान था, उसे भी एक रात उन के पांव दबाते हुए देखा गया वह बड़े दुःख भरे शब्दों में कह रहा था :-

“साईं जी ! आप से कौन सी बात छिपी हुई है। आप मेरे बारे में सब कुछ जानते हैं। मैं ३० वर्ष का हो गया हूँ। आज तक किसी की बेटी की ओर आँख उठा कर भी नहीं देखा किन्तु... किन्तु... साईं जी ! आप से क्या छिपाऊँ ? आप जब सवेरे हमारे यहाँ गए थे तो आपने वह लड़की देखी थी जो मेरी माँ से छान्छ मांगने आई थी ?

साईं जी ने बड़े अभिमान पे कहा ‘हूँ’ ‘वह लड़की’ पाखर ने फिर कहना आरम्भ किया—‘वह लड़की हमारे पड़ोस में रहती है। उसका नाम है ‘जैना’। सुन्दर भी है, जवान भी। पहले भी वह ऐसी ही थी परन्तु येरे मन में कभी कोई विचार उत्पन्न न हुआ था। अब... अब मैं चाहता

हूँ...'' पाखर कहते २ थोड़ा रुक गया। साईं जी ने एक बार फिर उसी तरह 'हूँ' कहा और पाखर ने कथा छोड़ दी :-

‘एक दिन मैं व्यायाम शाला से लौट रहा था कि सामने वाले कुएँ पर ‘जैना अकेली पानी का घड़ा भर कर किसी की प्रतीक्षा में गाँव जाने वाली पगडण्डी को देख रही थी। मैं ने पास से जाते हुए हँसी में कह दिया ‘क्या बात है जैना ! ऐसे खड़ी हो ?’ उसने मेरी बात का उत्तर देते हुए कहा—‘किसी की प्रतीक्षा कर रही हूँ कि कोई घड़ा उठवा दे।’

मैं ने कहा—‘तो लाओ मैं ही उठवाए देता हूँ।’

मैं ने उस के पास हो कर घड़े को हाथ डाला। वह भी घड़े को हाथ डालने के लिए इस प्रकार झुकी कि दोनों के गाल एक दूसरे से छू गए। मैं ने उस के सिर पर घड़ा रखा वह वहाँ से चल दी। मैं ने पहली बार किसी नवयुवती को इतना समीप से देखा था।’

साईं जी ने एक कण्वट ली और कहा—‘अच्छा जाओ पाखर कल आना।’

‘पाखर’ की आंखों में पानी छलक रहा था, सजल नेत्रों से साईं जी की चरण रज माथे पर लगा भारी मारी डग भरता हुआ घर

आ पहुँचा।

इसी प्रकार दिन प्रति-दिन साईं जी की शोभा बढ़ती ही गई। गाँव की नवयुवतियां भी कभी कभी घर वालों से चोरी उन के पास आकर अपने दवे अरमान छोड़ जातीं। गाँव काले भगवान के पश्चात दूसरी पदवी साईं जी को ही देते थे।

इतना कुछ होने के पश्चात भी एक मनुष्य ऐसा भी था जिसे साईं जी की शोभा एक आँख न भाती थी, वह था गाँव का नम्बरदार ‘चौधरी खैरदीन’। वह कभी २ लोगों को खुल्लम खुल्ला कह देता कि यह जादू वादू कुछ नहीं। वह बाँवरा साईं तुम को क्या देगा जिस के अपने पास कुछ नहीं। किसी वस्तु की इच्छा हो तो खुदा से मांगो। परन्तु चौधरी ने साईं जी को कभी कुछ नहीं कहा था। ऐसा करने से वह सारे गाँव को विरुद्ध कर लेता।

एक दिन साईं जी पास वाले गाँव में गए हुए थे, तो चौधरी जी ने ग्रामीणों को भाषण देते हुए कहा :-

‘तुम लोग व्यर्थ में अपनी सम्पत्ति का नाश कर रहे हो। यदि संसार में जादू तबीज कोई वस्तु होती तो मसजिदों की क्या आवश्यकता थी ? भगवान की क्या जरूरत थी ? हमें केवल उसी की ज्ञात पर विश्वास है और रखना चाहिए।’

चौधरी का भाषण सुन कर लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा। परन्तु सांझ ढले जब साईं जी नगर में वापिस पहुँचे तो उन के काले बालों और लाल आंखों को देख सभी उनके प्रभाव तले आ गए।

समय बीतता चला गया पौष का महीना था, सदीं अपने पूरे यौवन पर थी। इस सदीं में बाहर निकलना मानों मृत्यु को निमन्त्रण देना था। लोग रूई के लिहाफ ओढ़ निद्रा का आनन्द ले रहे थे। परन्तु चौधरी के घर आज की रात बेचैनी की रात थी। इसका लाडला बेटा मृत्यु शय्या पर पड़ा था। ज्वर बढ़ता ही जाता था। चौधरी चुप बैठा उस के माथे पर हाथ फेर रहा था। सारी रात उन्होंने ने आंखों में काट दी। दिन चढ़ने को था। उषा की लाली बिखर रही थी। अधिक ठण्ड के कारण कोई बाहर नहीं निकलता था। माँ बार २ कह रही थी—‘तुम ने क्यों साईं जी को बुरा भला कहा। वह तो बड़े दर्वेश हैं, फकीर हैं। उन्होंने ने गांव का क्या कुछ नहीं सँवारा? चौधरी चुप था। माता ने फिर कहा—‘अब भी कुछ नहीं विगड़ा, जाओ उन के चरण छू लो। फकीर किसी से भी द्वेष नहीं रखते। वह अब भी हम पर कर्म करेंगे। जाओ मेरे लाल की खातिर जाओ ...’।

पुत्र की बेचैनी और बीबी की आंखों

में आंसू देख चौधरी चुपके से उठा। मट्टी के बर्तन में से चावल और गुड़ निकाल पगड़ी के पन्तू में बांध, बाहर मसजिद की ओर, जहां साईंजी रहते थे चल दिया। अभी वह मसजिद में घुसने ही लगा था कि अन्दर से निकलते ‘फतहदीन’ ने पहचानते हुए कहा ‘ओह ! आप !! चौधरी जी !!!’ इस समय ? चौधरी चुप खड़ा था। फतह दीन, जो कुछ दिन पहले इन की बातें सुना करता था आज इन्हें इस समय साईं जी के द्वार पर देख कर अनमना हो कर रह गया।

“चौधरी जी आज आप सवेरे २ इस ओर ?” थोड़ा रुक कर उस ने हाथ में थामे हुए पगड़ी के पन्तू की ओर हाथ कर के कहा—“क्या ले आये पगड़ी में बांध कर चौधरी जी ! खैर तो है ?

चौधरी जी ने अपनी आंखें धरती पर गाड़ दीं। ‘फतह दीन !’ मेरा लाल तीन दिन से बीमार है। वनफशा दे चुका हूँ, कई औषधियां सेवन कराईं परन्तु सभी निष्फल गईं। तुम तो जानते हो ‘नूरा मेरा एक ही बेटा है। ऐसा न करता तो क्या करता ? बीबी और पुत्र की दशा देखी नहीं जाती। ‘नूरा’ मेरा ही तो लहू है। बताओ मनुष्य अपने लहू के लिए क्या कुछ नहीं करता ?” चौधरी की आवाज़ में दर्द भरा हुआ था। (शेष पृ० २७ पर)

ऐतिहासिक एकांकी नाटक—

★ शार्दूल शावक—बभ्रुवाहन ★

[लेखिका :- कु० विजय हितैषी, प्रभाकर (छात्रा) जालन्धर]

पात्र--परिचय

बभ्रुवाहन= अर्जुन पुत्र तथा मणि पुर का नरेश

अर्जुन= महाभारत के विजेता

उलूपी= बभ्रु की विमाता

चित्रा= राज माता-बभ्रु की माता

अन्य: वैद्य-दासियां तथा सिपाही आदि ।

पहला दृश्य

[स्थान :- मणिपुर के अंतःपुर का देव मन्दिर, समय सुबह ६ बजे उलूपी तथा चित्रा दोनों देव मन्दिर में बैठी देवता पर फूल चढ़ा रही हैं । इसी समय बभ्रु के प्रवेश से उनकी पूजा भंग हो जाती है । वे दोनों प्रश्न सूचक दृष्टि से उसकी ओर देखती हैं । वह दोनों के चरण छूता है । वे आशीर्वाद देती हैं ।]

बभ्रु :- माता ! भारत सम्राट युधिष्ठिर

का अभी २ राज्यभिषेक हो के चुका है न । उन्होंने ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया है । उसी के अनुसार उनका अश्व यहां भी आया है । अर्जुन तथा उनके वीर साथ आये हैं । आप मुझे युद्ध की आज्ञा दें । (उलूपी से) माँ ! आशीर्वाद दो ।

उलूपी :- (चिन्तित सी) बेटा ! पिता पुत्र का युद्ध कैसा ? भला ऐसा भी कहीं हुआ है ? हमारे बड़े भाग्य जो वे यहां पधारे हैं । जाओ उनका घोड़ा अनुरोध तथा आदर पूर्वक लौटा आओ ।

(बभ्रु अभी वैसे ही खड़ा है और चित्रा की ओर देख रहा है ।)

चित्रा :- पुत्र ! बहिन ने ठीक हो तो कहा है । जाओ उनकी आज्ञा का पालन करो । आज तो हमारी अर्चना सफल हुई । उन्हीं के दर्शनों के लिए तो हम पूजा किया

(पृष्ठ २६ का शेष)

फतहदीन ने चौधरी के हाथों में पकड़ी हुई वस्तुओं की ओर संकेत करते हुए कहा :-

“चिन्ता न करो नम्बरदार जी, सार्द फकीर किसी को निराश नहीं करते । यही

ठीक है, जो ले चले हो । अवश्य लाभ होगा । खुदा तुम्हारी मुराद पूरी करे ।”

खुदा का नाम सुन कर चौधरी ने आंखें ऊपर उठाईं, उन में लहू और पानी की मिली जुली झलक दिखाई पड़ रही थी ।

करती हैं ।

बभ्रुः—अच्छा माँ ! आपकी आज्ञा शिरोधार्य है ।

उलूपी—चलो बेटा ! मैं भी साथ चलती हूँ मुझे उन से एक बात पूछनी है ।

(दोनों का प्रस्थान)

[स्थान-महाराज अर्जुन का शिविर समय दोपहर, अर्जुन कुछ सोच विचार में मग्न हैं । सहसा मातृ-भक्त बभ्रु का अश्व के साथ प्रवेश । बभ्रु अर्जुन के चरणों को छूता है । अर्जुन अश्व को आये देख आग बगूला हो उठते हैं । उसे आशीर्वाद देना भी भूल जाते हैं ।]

अर्जुन—(फटकारते हुए) बभ्रु ! तुमने किस साहस से घोड़ा बांधा था ? अब कौन सा मुँह लेकर वापिस देने आये हो ? मुझे अब कोई शक नहीं रहा कि तुम कायर हो । संभवतः तुम क्षत्रिय भी नहीं हो अतः तुम वीर-पुत्र भी नहीं हो ।

(बभ्रु लज्जा से गड़ा जा रहा है । उलूपी इस फटकार को अपने सतीत्व पर अघात समझती है ।)

उलूपी—(उन्नेजित होकर) बेटा ! सिर नीचा करना वीरों को शोभा नहीं देता । पुत्र के लिए पिता पूज्य अवश्य है, पर माँ का गौरव उस से कहीं बढ़ कर है । माता की मान-रक्षा पुत्र का सर्वोपरि धर्म है । माता

के अपमान का बदला पुत्र को लेना ही होता है, फिर वह चाहे किसी ने भी क्यों न किया हो । इस समय जहाँ तुम्हारे सामने माँ की मान-रक्षा का प्रश्न है वहाँ तुम्हारी अपनी वीरता का भी । अतः तुम्हें अपने पिता को पराजित कर उन के गर्व को चूर्ण करना होगा । वे महा समर विजयी होने के कारण गर्व से अन्धे हुए जा रहे हैं । धर्म अधर्म का भी विचार न कर हमें अकारण ही लांछित बिया चाहते हैं । आज इन्हें दिखा दो कि तुम्हारी रगों में अर्जुन का ही रक्त है ।

बभ्रु—(गर्व से मस्तक ऊँचा कर के गरजते हुए) पिता जी ! क्षत्रिय के लिए मान अपमान का प्रश्न जीवन व मृत्यु का प्रश्न हुआ करता है । वह युद्ध के लिए ललकारे जाने पर यमराज से भी भयभीत नहीं होता । मेरी वीरता पर आपको सन्देह है । आप परीक्षा लेना चाहते हैं तो मैं तैयार हूँ ।

(घोड़ा वृत्त से बांधते हुए) अब आप युद्ध करके ही यह घोड़ा मुझ से ले सकेंगे ।

(युद्ध का शंखनाद करते हुए प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

[स्थान:- युद्ध-भूमि, समय सायं ४ बजे चारों ओर से हृदय विदीर्ण करने वाली घायलों की चीखें चिंघाड़े सुनाई पड़ रही हैं । आकाश पर गिधे मँडरा रही हैं चारों दिशाओं में एक कोलाहल सा मच रहा है ।

अर्जुन रणक्षेत्र में आहत पड़े हैं । सारी जनता उनके पास इकट्ठी हो गई है । बभ्रु भी शोकातुर हो एक ओर खड़ा अश्रु बहा रहा है । उलूपी तथा चित्रा दोनों रो रही हैं ।]

उलूपी:—(अर्जुन को सम्बोधित कर)
प्राणेश ! अपराध मेरा है । मैं ने ही दुराग्रह किया था, क्षमा कर दो नाथ ! हाय मुझ अभागिन का दुर्भाग्य । हाय ! मेरी दुबुद्धि ! प्रियतम ! क्या क्षमा माँगने पर भी न दोगे । नाथ ! बोलते क्यों नहीं ? स्वामी ! प्राणेश्वर !! आप का यह हाल ? (मूर्च्छित हो जाती है दासियां सम्भालने लगती हैं ।)

चित्रा:—(अर्जुन की ठोड़ी को पकड़ कर कहती है) प्रियतम ! तुम मौन क्यों हो ? प्रेम भरे दो शब्द तो कहो । हम दोनों के आंसू क्यों नहीं पोंछते । मेरे किस अपराध पर यों रुठ गए ? उठकर सांत्वना क्यों नहीं देते ? प्रिय इस पापी हृदय में वर्षों से जो अग्नि धधक रही थी वह तो बुझ भी न पाई थी और आप चल दिये । प्राण नाथ ! मेरी जीवन नौका के कर्णधार ! भग्न हृदय को छाती से लगा कर इस के उत्ताप को क्यों नहीं हरते ? मेरे जीवन धन ! जिस के सामने बड़े बड़े यादवा भी कांपते थे वे आज स्वयं एक तुच्छ बालक से आहत होकर इस संसार से विदा हो रहे हैं । इस अधम कोख

से ऐसा नर पिशाच पितृ कृतघ्न कुपूत क्यों पैदा हुआ, जिस ने मेरा सिन्दूर सदा के लिए पोंछ डाला । मेरा सर्वस्व लूट लिया । मुझे मालूम होता तो इस नाग को कभी भी अपनी गोद में न पालती । प्राणेश ! प्राणेश !! जागो अब ! (सिसकते २ हिचकियां बन्ध जाती हैं । इस के आगे उस के कण्ठ से शब्द नहीं निकलते)

(वैद्यराज अर्जुन का शरीर टटोल कर प्रसन्न मुद्रा में)

वैद्य—देवी, शान्त हो ! अर्जुन अभी जीवित हैं । मैं उपचार करता हूँ । ईश्वर करेंगे तो शीघ्र ही ये जाग्रित हो उठेंगे ।

उलूपी—(होश में आकर) वैद्यराज ! इन्हें जल्दी ठीक करदे । हाय ! मैं ही मर जाऊँ !

वैद्य—शांत हो जाओ देवी ! सब ठीक होगा । मैं संजीवनी बूटी सुंघाता हूँ (वैद्यराज बूटी सुंघाते हैं और अर्जुन आंखें मलते हैं । सब ओर से जय २ की ध्वनि गूँज उठती है ।)

अर्जुन—शांत हो जाओ सज्जनो ! बभ्रु बेटा ! मेरे पास आओ, रो क्यों रहे हो ? मैं तो ठीक हूँ । (बभ्रु को कण्ठ से लगा कर) बेटा ! तुम ने मुझे गौरवान्वित कर दिया । मेरे वीर पुत्र ! तुम जैसा वीर पुत्र पाकर कौन पिता रूप में आप को भाग्यशाली

★ बालक ★

तुम अग्नि की भीषण लपट
जलते हुए अंगार हो
तुम चञ्चलाकी द्यति चरल
तीखी प्रखर असि धार हो
तुम खौलती जल निधि लहर
गति मय पवन उनचास हो
तुम राष्ट्र के इतिहास हो।

तुम क्रान्ति की आख्याइका
भैरव प्रलय के गान हो
तुम इन्द्र के दुर्दम्य पति
तुम चिर अमर बलिदान हो
तुम कालिका के कोष
पशु पति रुद्र के भ्रूलास हो
तुम राष्ट्र के इतिहास हो।

—बद्री प्रसाद गुप्त।

—❀—

बड़े और छोटे

बड़े बड़ों ने वम बनाये
तोपें और विमान
एक किसी को जीत न पाये,
ले कर लाखों प्राण ॥

हम हम छोटों का छुटपन देखो
जीता सकल जहान
होठों से बिखरा कर केवल
हल्की सी मुसकान ॥

स्वास्थ्य सुधार

फल खाइये फल !

यदि आप अपना स्वास्थ्य स्थिर रखना चाहते हैं तो महात्मा गांधी की सम्मति मानिये और अधिकाधिक फल खाइये। फलों में न श्वेत सार होता है, न चिकनाई, प्रोटीन की मात्रा बहुत कम होती है पर उन में विटामिन, प्राकृतिक लवण और प्राकृतिक मिठास की मात्रा अधिक रहती है। इस मिठास के कारण फल पचा हुआ भोजन कहलाता है। फलों के रस कृमि नाशक होते हैं। सुटापे और पित्त दोष में फल बहुत लाभकारी हैं।

१ नींबू—पेट के पाचन को ठीक करता है और मन्दाग्नि नहीं होने देता। इसको पानी में मिला कर कुल्ले करने अथवा मसूड़ों पर मलने से दान्त ठीक रहते हैं। प्रातः काल गर्म जल के साथ सेवन करने से कब्ज दूर होती है।

२. संगतरा - विटामिन ए० बी० सी० और डी० पाये जाते हैं। विटामिन सी के अभाव में तिरदद बेचैनी, पाचन की खराबी दान्तों के विकार और जोड़ों में कमजोरी होती है। संगतरे का रस इन रोगों में लाभ पहुँचाता है।

(पृष्ठ २६ का शेष)

न समझेगा । तुम जैसे शादूल शावकों की वीरता से ही भारत माँ का मस्तक ऊँचा है । तुम से सिंहों के रहते उसे किसी के आगे झुकने की क्या आवश्यकता है ? ईश्वर करे यह वीर प्रस्विनी तुम से शावक ही पैदा करे । तुम ने अभिमन्यु की मृत्यु का आघात भर दिया । तुम अर्जुन के ही पुत्र हो । (मुख का चुम्बन लेकर) तुम सच्चे शादूल शावक हो ।

सब जन—वीर अर्जुन की जय !

अर्जुन—नहीं बोलो 'शादूल शावक वभ्रु वाहन की जय !'

सब जन—(एक ध्वनि से) शादूल शावक वभ्रु वाहन की जय ! अर्जुन पुत्र की जय !

जब विधाता बांट रहा था...

जब विधाता ने बुद्धि और पौरुष का भण्डार पुरुष को छुटा दिया तो विधाता की पत्नी ब्रह्माणी ने कहा—“महाराज ! पुरुष पर विजय पाने के लिए स्त्री को भी तो कोई अजेय अस्त्र दीजिए । स्त्री को आप ने दिया ही क्या है ? जिस से वह पुरुष का मुकाबला कर सके । उस पर कृपा कीजिए !” फिर विधाता ने पत्नी की बात रखने के लिए स्त्री के आंसुओं की अजेय शक्ति प्रदान कर दी ।” सीता जोशी कोर्थ ईयर

चुटकुले

१. अध्यापक—तुम्हारे सवालों में बड़ी अशुद्धियाँ हैं । कोई छात्र अकेला इतनी अशुद्धियाँ नहीं कर सकता ।

शिष्य—निस्सन्देह मैं ने सवाल अकेले ने नहीं किये, उनकी हल करने में माता जी ने सहायता की थी ।

२. पिता—तुम अपनी श्रेणी में सब से नालायक लड़के हो, क्यों ?

पुत्र—मैं अपनी श्रेणी में सब से अधिक नालायक हूँ क्योंकि मुझ से अधिक नालायक लड़का स्कूल छोड़ कर चला गया है ।

३. एक चोर को आमों के बाग़ में आम तोड़ते हुए उस बाग़ के मालिक ने पकड़ लिया ।

मालिक—तुम बाग़ में कैसे आये ?

चोर—मुझे आन्धी उड़ा कर यहां ले आई !

मालिक—और पेड़ पर तुम कैसे चढ़े ?

चोर—मैं खुद नहीं चढ़ा बल्कि शाखें खुद नीचे झुक गईं ।

मालिक—और ये आम तुम्हारी जेब में कैसे आ पड़े ?

चोर—आपकी सौगन्ध यही सोच कर मैं परेशान हो रहा हूँ ।

गृह-विज्ञान

लड़कियों को क्या कुछ सीखना चाहिए ?

आज जो बालिकाएं स्कूलों में पढ़ रही हैं उन्हें कल गृहिण्यां बनना है। उन्हें माता पिता के घर में रहते हुए बहुत सी बातें सीखनी होती हैं।

भोजन बनाना; कपड़े धोना व रंगना, सीना-पिरोना, उनना आदि बातें तो वे सीखती ही हैं। इन के अतिरिक्त और भी कई आवश्यक बातें ऐसी हैं जो उन्हें सीखनी चाहिए। उदाहरणार्थ घर की सजावट उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि घर की वस्तुएं किस ढंग से यथा स्थान पर रखनी चाहिए जिस से वे सजी हुई जवें। उन्हें कपड़े धो कर लोहा करना (प्रेस करना) भी आना चाहिए। धुले हुए कपड़े को प्रेस कर दिया जाय तो उस में जान आ जाती है। इस के अतिरिक्त कपड़ों पर पड़ जाने वाले स्याही, सब्जी आदि के धब्बे दूर करने, अचार-मुरब्बे डालने के तरीके भी मालूम होने चाहिए। बड़ों के फटे कपड़ों से बच्चों के कपड़े बना कर उन बेकार कपड़ों का सदुपयोग भी एक बड़ा भारी गुण है। फिर घर में होने वाली छोटी मोटी बीमारियों का घर में ही कम व्यय

★ माँ वन्दे....! ★

जय जय भारत भूमि के
जय हे ! मातृ भवानी,
नत मस्तक हो रहे आज हैं
तेरे आँचल वासी ।

अन्न पूर्णा, सुखद दायिनी
जय हे ! माँ हे ! जननी,
शस्य शामला भव भयहरणी
नमो नमः नमामी ।

तब सुख छाया जीवन पावें
कोटी कोटी मानव प्राणी,
जय २ जय हे ! भारत जननी
जय हे बहु बल धारिणी। -मनमोहन, नीरव
द्वारा स्वयं इलाज कर लेना उन्हें मालूम होना
आवश्यक है। इस से भी अच्छा यह है कि
उन्हें प्रायः होने वाले रोगों से बचने के
तरीके मालूम हों ताकि रोग उनके घर में
घुसने ही न पाये और यदि हो जाये तो
उसका उपचार और रोगी की सेवा और
एहतियात बरतना उसे मालूम होना जरूरी
है। श० हि०

चन्द्र लोक की यात्रा

जो कि २,४०,००० मील ऊँची होगी,
३ राकेटों द्वारा होगी, जो १६५०० मी प्रति
घंटा उड़ेंगे। २५ वर्ष के पश्चात् यह स्वप्न
पूरा हो जायेगा।

समाचार-सार

कांग्रेस का अधिवेशन २० जनवरी को
हैदराबाद में पं० नेहरू की अध्यक्षता में हुआ।

कोरिया में युद्ध चल रहा है।

जम्मू प्रांत में प्रजा परिषद् द्वारा
सत्याग्रह जारी है। कई स्थानों पर पुलिस द्वारा
गोली चलाई गई है। बहुत से सत्याग्रही
पकड़े गये हैं।

काश्मीर के भगड़े में संयुक्त राष्ट्र संघ
के मध्यस्थ डा० फ्रांक ग्राहम ने भारत तथा
पाकिस्तान के प्रति-निधियों से अशस्त्री-
करण के विषय में बात चीत आरम्भ कर
दी है।

ईरान के तेल के भगड़े का अभी तक
कोई फैसला नहीं हुआ।

मिश्र में जनरल नजीब की सरकार के
विरुद्ध षड़-यन्त्र रचने के अपराध में कई
सैनिक अधिकारी तथा अन्य सम्भ्रान्त व्यक्ति
पकड़े जा चुके हैं।

स्टालिन के उत्तराधिकारी रूसी नेता
को एक यहूदी डाक्टर ने मार डाला है।

जर्मनी में पुनः नाज़ीवाद को जन्म
देने का प्रयत्न करने के अपराध में
हिटलर के समय के कुछ विश्राम प्राप्त
अधिकारी पकड़े लिए गए हैं।

★ भारत संतान ★

सुनो सुनो भारत संतान।

भारत माँ की हो तुम शान॥

तुम्हारे होते माँ बेहाल,

आज पकड़ लो तुम करवाल।

शत्रु दल को मार भगाओ,

खोया वैभव प्राप्त कराओ॥

कृत कृत्य हो मात महान,

सुनो सुनो भारत***

आज छाई भयानक बलाएं,

चहुँ ओर रोती अबलाएं।

आज पड़ा सब ओर अकाल,

वीर पुरुष बन गए कंकाल॥

ब्रह्मचर्य का हुआ अवसान,

सुनो सुनो भारत****

छोड़ी निद्रा के तुम सपने,

याद कर लो पूर्वज अपने।

प्रताप, गोविंद, शिवा महान,

प्रह्लाद, हकीकत के बलिदान॥

राम, अर्जुन, कृष्ण, बलराम,

सुनो सुनो भारत****

—राम कृष्ण, राकेश, प्रभाकर।

Get your
QUESTION PAPERS

printed at
The Prakash Printing Press
Chahar Bagh, JULLUNDUR
at Competitive Rates

आप नहीं जानते

बोलती पुस्तकें

लन्दन के बर्मिन्गहम बरी में बच्चों के लिए पढ़ने की शिबा को अधिक सरल बनाया जा रहा है। बरी के सार्वजनिक पुस्तकालय बच्चों की पढ़ाई के लिए ऐसी पुस्तकें दे रहे हैं जिन के ढक्कनों में ग्रामोफोन रिकार्ड लगे होते हैं। जबकि बच्चा पढ़ता है तो, रिकार्ड चला दिये जाते हैं जिस से वह पढ़ते हुए सारी कहानी सुनता रहता है। एक विभाग पाँच से कम आयु वाले बच्चों के लिए है जिन्हें रिकार्ड पर संगीत के साथ बजाया जाता है। बड़े बच्चों से सम्बन्धित दूसरे विभाग में कहानियाँ सुनाई जाती हैं। रिकार्ड-पुस्तकें पुस्तकालयों के ग्रामोफोन उधार देने वाले विभागों के द्वारा दी जाती हैं और यदि यह स्कीम लोकप्रिय सिद्ध होगी तो अधिकारीगण इन्हें अधिक परिमाण में प्राप्त करने की सोच रहे हैं।

नया श्रव्य यन्त्र

सोनोटोन कौर्पोरेशन ने विश्व का सब से छोटा श्रव्य यन्त्र बनाया है। यह

★ आवश्यकता ★

है-गवर्नमेंट सेंट्रल वर्कशाप अमृतसर ट्रेनिंग स्कूल में निम्नलिखित कारीगर सिखलाये जाने के लिए १०० उम्मीदवारों की आवश्यकता है :-

(१) टर्नर (२) मशीनिस्ट (३) टूलमेकर (४) मिलरार्डिट (५) स्टक्चरल फिटर्ज (६) हीट टरलेटर्ज (७) ब्लैक स्मिथ (८) मोल्डर्ज एण्ड कोर मेकर्ज (९) पैटर्न मेकर्ज (१०) इलैक्ट्रीशियन्ज (११) वैल्डर्ज।

उम्मीदवार कम से कम मैट्रिक या कोई बराबर की परीक्षा पास होने चाहिए और आयु १६ से २२ साल तक होनी चाहिए।

दौरान ट्रेनिंग उम्मीदवारों को ३०) रु० मासिक वज्जीफा दिया जावेगा। सफल उम्मीदवारों को अपने माता पिता या दूसरे गार्डियन से दाखिल होने से पूर्व बांड लिखवाना होगा रिहायश आदि के लिए उम्मीदवारों को अपना प्रबन्ध आप करना होगा। इन्टरव्यू के लिए मार्ग व्यय नहीं दिया जाएगा। सभी इच्छुक उम्मीदवारों को चाहिए कि ६ फरवरी ५३ को प्रातः १० बजे गवर्नमेंट सेंट्रल वर्कशाप अमृतसर में इन्टरव्यू के लिए अपने प्रमाण पत्रों और प्रार्थना पत्रों को साथ ले कर पहुँच जावे।

493 | D/17/1/53

-:~:-

यन्त्र वजन में ३ औंस और आकार में दियासलाई की डिब्बी से थोड़ा बड़ा होता है तथा इस में पेन्सिल की मोटाई के वैकम ट्यूबों की व्यवस्था रहती है।

प्रकाश

३

School Registers & Forms REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper The prices are as follows:—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register	... 1/12
8. Library Issue Reg.	... 1/12
9. Library Stock Register	... 1/12
10. Class Lib. Issue note Book	-/12
11. Sports Issue Reg.	... 1/12
12. Sports Stock "	... 1/12
13. Correspondence Register	... 1/12
14. Admission and Withdrawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg	... 1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register	... 1/12
19-20. Provident Fund " Ledger A. & B.	2/12
21-23. School Discharge Certificate file	... 2/12
24-26. School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. Pbi.	-1/12
27. Provincial Certificate forms per 100	... 2/12
28. Log Book	... 2/12
29. Statistical Register	... 2/12
30. Cash Book	... 2/12
31. Grant-in-aid forms per set	3/8
32. Fee Account Reg.	... 2/12
33. Fund Register	... 2/12
34. Letters Despatched Reg.	... 2/12
35. Letters Received "	... 2/12
36. Stock Register	... 2/12

For other items write to us.

Note:- 50% surcharge will be charged on each item on % of rise in paper prices

Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार-विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना। (७) प्रगति शीघ्र साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहाँ से भेजा जाता है। कारणवश देर सवेर सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० याप्रिम निषत है। बी० पी० से ७॥) है। विदेशों में बी० पी० नहीं जाता। पेशगी १२ शि० भेजें।

(३) नमूना सुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥२॥ के डाक टिकट भेजें।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकेगी।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जाने चाहियें। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे

५) रु० ब्लाक के लिए भेजें और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जाते।

(७) विज्ञापन केवल वही होंगे जो अक्षरों में न हों और जिन के दाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार हैं।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)

याद आप चाहते हैं

कि

आप के बच्चे

गली कूचों, स्कूल और कालिजों के दुष्ट विद्यार्थियों के कुसंग, सिनेमाओं के जीवन नाशक प्रचार एवं इस प्रकार के अन्य दूषित वातावरण के शिकार न हों। तथा वो

कर्तव्य परायण नव युवक, आप के कुटुम्ब के नाम को उज्ज्वल करने वाले, देश के सच्चे नागरिक, समाज के गौरव शाली सदस्य एवं ईश्वर के दृढ़ उपासक बन सकें तो उन्हें आज ही

सयोग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा निम्न लिखित पुस्तकों को बहु संख्या में खरीद कर, इन का प्रचार करके सात्विक दान के यश एवं पुण्य के भागी बनिए।

आचार्य भगवान् देव जी द्वारा लिखित पुस्तकें:-

- १ ब्रह्मचर्यामृत [तीसरा संस्करण] =॥
- २ हमारा शत्रु, तम्बाकू का नशा [दूसरा] =॥
- ३ पापों की जड़, शराब ["] =॥
- ४ व्यायाम का महत्व ["] =
- ५ राम राज्य कैसे हो ? ["] =
- ६ नेत्र रक्षा ["] =
- ७ स्वप्न दोष और उसकी चिकित्सा ["] =
- ८ बाल विवाह से हानियां ["] =
- ९ ब्रह्मचर्य के साधन भाग १, २, १)
- १० ब्रह्मचर्य के साधन भाग ३ [द्वितीय रत्ना] =
- ११ ब्रह्मचर्य के साधन भाग ४ [स्तन संख्या द्वय] ॥

नोट:- हमारा विस्तृत सूची पत्र मुफ्त प्राप्त करें।

वैदिक साहित्य सदन

आर्य सामाज मन्दिर, सीता राम बाजार, देहली।

क्या आप प्राचीन आर्य संस्कृति में विश्वास रखते हैं ? क्या आप श्री कृष्ण के उपासक एवं भगवद् गीता के प्रेमी हैं और उसका वास्तविक मर्म जानना चाहते हैं ? यदि हां तो आज ही

★ वैदिक गीता ★

[तीसरा संस्करण]

जो कि प्रसिद्ध विद्वान श्री स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा लिखी गई श्री भगवद् गीता पर सर्व सुन्दर एवं अद्वितीय भाष्य है। मँगा कर पढ़िए

सुन्दर दुरंगी छपाई परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण, गत्ते की आकर्षक जिल्द, द्वितीय संस्करण की अपेक्षा अधिक सुन्दर होने पर भी कागज की इस मंहगाई में मूल्य केवल ३) ही रखा गया है। डाक व्यय ॥) पृथक है। तुरन्त मूल्य भेज कर अथवा बी० पी० से मँगवाईए। शीघ्रता कीजिए

पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा लिखित

मनोविज्ञान तथा शिव संकल्प मूल्य २॥)

वर्तमान द्वितीय संस्करण की थोड़ी सी प्रतियां ही शेष रहती हैं। कागज की इस अत्यन्त मंहगाई में न जाने तीसरा संस्करण कब छपे और कितना मंहगा पड़े। वर्तमान पुस्तकों पर मोहर लगा कर मूल्य बढ़ाने की हमारी नीति नहीं है। अतः इस से लाभ उठाएं। और आज ही डाक व्यय सहित ३) भेज कर, ३) की बी. पी. से अथवा स्वयं आकर दुकान से २॥) में अपनी प्रति प्राप्त कीजिए। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की अगली पुस्तक

“संख्या के तीन अंग”

होगी, जो शीघ्र छप रही है।

नये वर्ष की भेंट

‘प्रकाश-वर्ग पहेली (नं० २) हल करके

★ २५ रुपये के पुरस्कार प्राप्त करें ★

✽ अन्तिम तिथि १५ जनवरी १९५३. ✽

उद्देश्य:- ‘प्रकाश-वर्ग पहेली’ का उद्देश्य बच्चों की हिन्दी के नये २ शब्दों के सम्बन्ध में जानकारी बढ़ाना और उनमें ‘प्रकाश’ को लोक प्रिय बनाना है।

नियम:- १. हल स्याही से साफ भरे। २. हल केवल ‘प्रकाश’ में छपे कूपन पर ही आने चाहिए। जिन्हें कूपन दरकार हो वे ॥=) के टिकट भेज कर मंगा लें या स्थायी ग्राहक बन जायें। ३. एक से ज्यादा हल भी भेजे जा सकते हैं। ४. सर्वथा शुद्ध हल वाले को १२) रु० एक अशुद्धि वाले को ८) रु० और दो अशुद्धि वाले को ५) रु० पुरस्कार नकद, पुस्तकों अथवा ‘प्रकाश’ की ग्राहकता के रूप में दिये जायेंगे। ५. प्रत्येक हल के साथ १) के टिकट आने आवश्यक हैं। ६. शुद्ध हल वही है जो सम्पादक प्रकाश से मिलेगा।

1 सं	2 र	7 ल
		6 रं
		5 मा
3 बा	4 क	8 द
10 स		
	9 ग	

मुझे सभी शरते मान्य हैं।

नाम.....आयु.....

पता.....

ऊपर से नीचे

संकेत

बाएं से दाएं

१. इसी का नाम जीवन है। २. इस से भीरु डरते हैं। ३. विवाहिता का यही सब कुछ है। ४. ऐसी पुकार में दर्द हाता है। ५. वर्ष में कई आते हैं। ६. की कौन सुनता है? ७. ऐसे स्थान में स्वाभाविक है। ८. यह अब कौन सन करता है? ९. १०. सब का ऐसा दाना अतन्मय है।

१. यात्रा में किसी का—हो जाय तो क्या कहना। २. इस से सभी को डरना चाहिए। ३. इस से कोई वंचित नहीं। ४. यह हृदय में हो तो नींद किसे आती है? ५. शराब—न होती तो इसे बुरा कौन कहता? ६. ७. यह उलझे तो सुन्दरता बढ़ जाती है। ८. ९. दुनिया में बहुत हैं। १०. युद्ध में शत्रु को—करना कायरता है।

पता:—

सम्पादक प्रकाश चहारबाग, जालन्धर शहर।

केवल एक मास के लिए १२½ % की

★ विशेष रिआयत ★

हमने अपना वर्तमान स्टॉक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों के निम्न लिखित दरों पर १२½ % की रिआयत देने का निश्चय किया है। इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आपको निराश होना पड़े:-

* फुटबाल कवर *

१ टी शेप श्वेत कुर्म चमड़ा इङ्गलिश डिजाइन नं० ५ कवर	... १३ ८०
२ टी शेप कानपुर लैडर	... १२ ८०
३ उत्तम प्रैक्टिस नं० ५ कवर १३ नग	११ ००
४ मस्ता प्रैक्टिस नं० ५	... ६ ८०
५ टी शेप नं० ४ फुटबाल कवर	... ११ ००
६ उत्तम प्रैक्टिस नं० ४ १३ नग	... ६ ००
७ चीप (मस्ता) प्रैक्टिस नं० ४	... ६ ००
८ टी शेप नं० ३ यूथ फुटबाल कवर	६ ००
९ उत्तम प्रैक्टिस नं० ३ यूथ.,	... ५ ००
१० बलैडर नं० ५, ४, ३ फर्स्ट क्वालिटी	२ ००
११ बलैडर नं० ५, ४, ३, सैकंड "	१ १२ ०
१२ टी शेप, थार्न-प्रूफ कुर्म लैडर वाली बाल कवर	... १० ००
१३ पेटेंट रोज कलर वाली बाल कवर	... ६ ००
१४ उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर	... ८ ००
१५ यूथ साइज नं० ३,, ,	... ७ ८०

१६ वाली बाल नैट वाटर प्रूफ रेग्युलेशन साइज डबल टेप	... ६ ००
१७ वाली बाल नैट काटन रेग्युलेशन साइज डबल टेप	... ८ ८०
१८ यूथ साइज वाली बाल नैट काटन	७ ८०
१९ इन्फलेटर (बहुत बड़ा साइज)	... ५ ८०
२० इन्फलेटर (बड़ा साइज)	... ५ ००
२१ लैडर लेसिज (प्रति नग)	... ० २०
२२ विस्ल (ऊँची आवाज)	... १ ००

* हाकियां *

३३ ३६" फुल साइज इंगलिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक	... ८ ००
२४ ३६" फुल साइज ओलैम्पिक	... ७ ८०
२५ ३३" मिडिल साइज इङ्गलिश रबड़ बाऊंड	... ४ ८०
३६ हाकी बाल स्पेशल काऊन	... ४ ००
२७ हाकी बाल मैच	... ३ ८०

नोट:- (१) इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है (२) प्रत्येक प्रकार के बूट, शूज, पुल ओवर, मफलर; जुराब भी तैयार होते हैं। (३) वजून करने की मशीनें और रबड़ की मोहरे भी तैयार होती हैं।

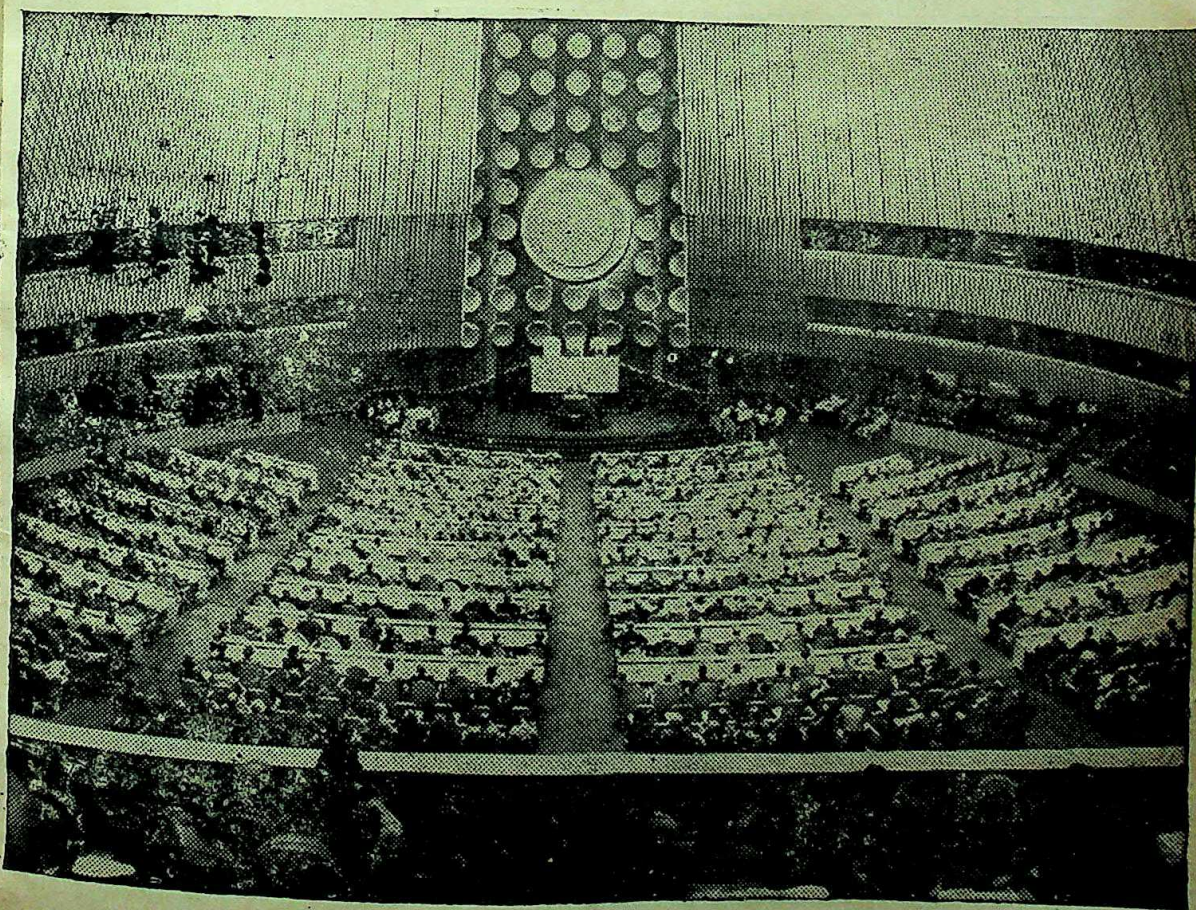
प्यारा लाल एण्ड सन्ज स्पोर्ट्स डीलर्स

जालन्धर शहर (पूर्वी पञ्जाब)



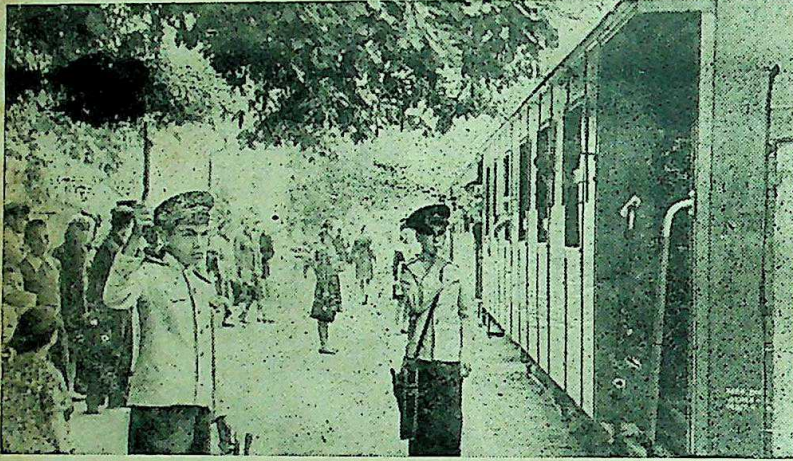
चार्लिस ईर्विन, अमेरिका के नये
सक्रेटरी आब डिप्टी ।

डा० रौल्फ बुच, नोबल प्राईज विजेता, जो अभी २ भाग्य आये थे । प्रधान के निजी प्रतिनिधि ।



* संयुक्त राष्ट्र-संघ की जनरल असेम्बली के अधिवेशन का एक दृश्य । *

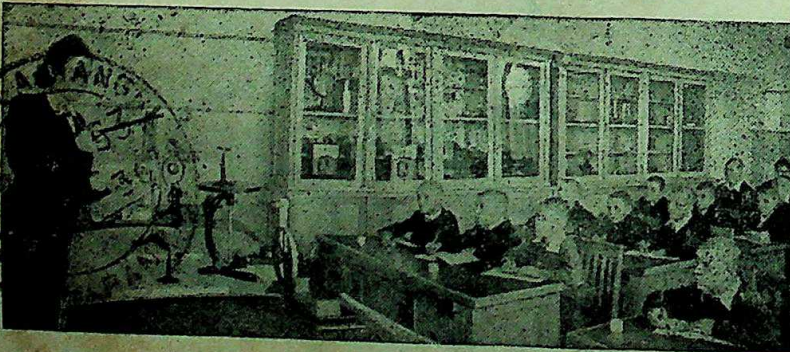
★ रूस में बच्चे ★



* रूस में *
बच्चों की रेल यह रूस
रेलवे का एक दृश्य है।
स्टेशन मास्टर, ड्राइवर तथा
सब के सब बच्चे ही हैं।
को चलने का सिगनल दिया
रहा है।



★
बातूमी में स्थित बच्चों के प
भील में पात्रोनियर, बोट
पड़ रही है। इस बोट को
बच्चे ही चलाते हैं।



★
मास्को में लड़कों के स्कूल
३५ में छठे दर्जे के छात्र
विज्ञान की क्लास में बैठे
अध्यापिका पाठ पढ़ा रही है



वार्षिक मूल्य ७) रु०

पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका

| एक प्रति 1/-)



जनवरी

१९५३



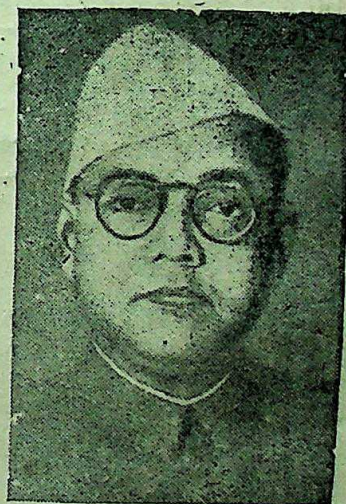
सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी



16. 2. 53.

भारत मां के लाडले सपूत



* सुभाषचन्द्र बोस *

जिनका जन्म दिवस 23 जनवरी को मनाया गया।

१ अपनी बात सं० ३

२ आवाहन 'पन्त' ३

३ अपनी बोली 'च ४

४ सम्पादकीय विचार

५ शिक्षा समाचार

६ शिकायतें और सुझाव

७ समाचार सार

८ प्लेटो के विचार (शिक्षा के सम्बन्ध में)

९ पिता का पिता बालक माण्टेसरी

१० डा० माण्टेसरी की प्रार्थना

११ धरती और आसमान 'सरोज' एम० ए०

१२ विवाह की बेटो

१३ राष्ट्र की सब से बड़ी सम्पत्ति, अमृतकौर

१४ भारतीय शिशु (कविता) ओम् स्वरूप

१५ सर्वश्रेष्ठ कौन "

१६ घर वाली से डरना सीखो (कविता) शालिहास

१७ आपके खेत दस गुना उपज दे सकते हैं

१८ लाखों निरक्षर पढ़ने लगे !

१९ अपराधी (कहानी) सुदेश कालिया

२० वीरांगना विद्युलता (कहानी)

२१ चाँद खोता जा रहा है (कविता) सुदर्शन

कहां क्या है ?

२२ बड़े चलो (कविता) २३

२३ यह भी खूब रही २३

२४ कासाबिआनका २४

२५ भारतीय बाल सभा (फुलवाड़ी) २१

२६ बालको तुम भी महान बन सकते हो २२

२७ थर्ड ईयर फूज (कहानी) विजय २५

२८ समय पालन (लेख) राजन २५

२९ हमारा भारत वर्ष (कविता) २६

३० किस से क्या सीखो " २७

३१ क्रोध (कविता) २७

३२ सर फिलिप सिडनी (कहानी) २८

३३ चाचा जी, चाचा जी ! नरेन्द्र २८

३४ पहेलियां कु० सन्तोष २९

३५ मुसाफिर टैगौर २९

३६ ऋषि-गान (हितैषी) ३०

३७ स्वास्थ्य सुधार ३१

३८ चरण अपना आगे बढ़ाता चला जा ३१

३९ जहां छात्र अध्यापकों की परीक्षा लेते हैं ३२

४० आप नहीं जानते ३२ गृह-विज्ञान ३३

४१ चुटकुले, प्राचीन शिक्षा स्टूडेंट सरकार ३४

४२ वे क्या कहते हैं ? ३५



पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पैप्सु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत।

प्रकाश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४६
क्रमांक २]

★ जालन्धर जतवरी १९५३ ★

[भाग ५ अङ्क १
हिन्दी]

★ अपनी बात ★

‘प्रकाश’ के नये जीवन की आयु एक वर्ष और बढ़ गई। जुलाई १९४६ तक उर्दू में ४४ वर्ष तक छपने के पश्चात् इसे एक दम हिन्दी में छापना आरम्भ कर दिया गया था, इस बात की परवाह किये बिना कि इस परिवर्तन से आर्थिक हानि होगी, और वह हम ने उठाई भी।

जून '५३ में छपते इसे पूरे चार वर्ष हो जायेंगे। इन साढ़े तीन वर्षों में केवल एक नम्बे को छोड़ ‘प्रकाश’ प्रतिमास छपता रहा है। हां कुछ महीनों से इसके प्रकाशन में एक माम की देरी होती आ रही है जिसे हम ने अपने नये प्रबन्ध के द्वारा जून तक दूर कर देने का हृदय निश्चय कर लिया है। फरवरी अङ्क १६ मार्च को, मार्च अङ्क ६ अप्रैल को, अप्रैल अङ्क २७ अप्रैल को, मई अङ्क १८ मई को और जून अङ्क ८ जून को छपेगा। इसके पश्चात् ‘प्रकाश’ प्रतिमास के पहले सोमवार को यहां से ग्राहकों को भेज दिया जाया करेगा।

आशा है कि ‘प्रकाश’ के प्रेमी पाठक अपना सहयोग निरन्तर प्रदान करते रहेंगे। हम भी इसे अधिकाधिक उन्नत, रोचक और शिक्षा-प्रद बनाने का प्रयत्न जारी रखेंगे।

१०-२-५३

—हितैषी।

★ आवाहन ★

नव प्रकाश बन आओ !
जीवन के घन अन्धकार को
ज्योति द्रवित कर जाओ !
अंतःस्मित हो मानव का मन
शांत विश्व जीवन-संघर्षण,
नव स्वर-लहरी में जन-भू का
कंदन करण डुवाओ !
छाया मृत आदर्शों का तम,
छाया जड़ भौतिकता का भ्रम
अंध वीथियों में जनमत को
नव किरणों बरसाओ !

घृणा-द्वेष को प्रीति द्रवित कर
महानाश में अमृत स्रवित कर
अविश्वास को चिर प्रतीति में
परिणत कर मुसकाओ !
विश्वग्लानि में नवल रूप धर
श्री शोभा स्वर्णिम समत्व भर,
जन-धरणी में जन-जीवन में
मन का स्वर्ग बसाओ !
शून्य वेणु उर में नव स्वर भर;
अंतरतम का सूनापन हर,
नव श्री सुषमा में, गरिमा में
धरणी को लिपटाओ !

—सुमित्रानन्दन पंत

पंजाब सरकार के
शिक्षा विभाग द्वारा
राज्य के हाई
स्कूलों के हैडमास्टर्स
तथा हैडमिस्ट्रेसों

सम्पादकीय विचार

मैट्रिक की नई शिक्षा योजना

की सम्मतियों के आधार पर मैट्रिक के लिए एक नई शिक्षा योजना बनाई गई है। इस योजना पर २३ फरवरी को हो रही 'स्कूल बोर्ड' की बैठक में और विचार होगा। यह योजना १९५४ से कार्यान्वित की जायेगी और इसके अन्तर्गत पहली मैट्रिक परीक्षा १९५६ में होगी।

इस नई योजना की विविध विशेष बातें ये हैं:—(१) वर्तमान समाजिक और आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए Curricula ऐसे ढंग पर निर्धारित किये जायें कि छात्र समय की नई आवश्यकताओं को पूरा कर सकें (२) अनिवार्य और सांझे विषयों की संख्या आधा से अधिक न हो तथा (३) दो से अधिक भाषाओं को अनिवार्य न बनाया जाये।

उपरोक्त सिद्धान्तों पर निम्न योजना आश्रित है:—(१) सांझे और अनिवार्य विषय (क) मातृ भाषा (हिन्दी, पंजाबी, उर्दू अथवा अंग्रेजी) (ख) उपरोक्त में से एक के अतिरिक्त भाषा (हिन्दी पंजाबी, अंग्रेजी, उर्दू, सिन्धी, बंगाली पश्तो) (ग) भारत का इतिहास तथा सिप्रिक्स। (घ) दैनिक विज्ञान तथा हाईजीन।

(२) उपरोक्त अनिवार्य विषयों के अतिरिक्त

प्रत्येक छात्र को निम्न
लिखित में से कोई
एक ग्रुप लेना होगा
(क) साहित्यिक तथा
सामाजिक विज्ञान

ग्रुप (ख) विज्ञान ग्रुप (ग) कृषि ग्रुप (घ) शिल्प
ग्रुप (ङ) कामर्स ग्रुप (च) गृह विज्ञान ग्रुप
इस शिक्षा योजना का उद्देश्य यह है कि छात्रों को
उनकी रुचि के अनुसार समाज की शिक्षा सम्बन्धी
आवश्यकताओं की पूर्ति के योग्य बनाया जाये।

पहेली के सम्बन्ध में

प्रकाश के पिछले अङ्कों में जो पहेली छपती
रही है; जान पड़ता है कि वह बहुत कठिन थी।
केवल तीन हल प्राप्त हुए। वे सब के सब अशुद्ध
थे। हम अगले अङ्क में एक और पहेली प्रकाशित
करना आरम्भ करेंगे। वह अविक सुगम होगी।
जिन तीन बच्चों ने पहले हल भेजे थे उनकी
चार आने की टिकटें नयी पहेली के प्रवेश
शुल्क में गिन ली जायेंगी वे अपना नया हल
बिना टिकटों के भेज सकते हैं।

हिन्दी टीचरों की ट्रेनिंग

जालन्धर में गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज स्थित
है जहाँ बी० ए० लड़के लड़कियों को बी० टी०
की ट्रेनिंग दी जाती है ज़रूरत है कि हिन्दी और
संस्कृत के टीचरों की ट्रेनिंग के लिए भी क्लासें
खोली जायें?

शिक्षा समाचार

डी० पी० आई पंजाब ने recognised
स्कूलों के लिए बिना D. I. S. की मंजूरी के
किसी प्राइवेट छात्र को प्रविष्ट न करने के नियम
को खीला करने का आश्वासन दिलाया है।

14 से 24 फरवरी तक जालन्धर में एक
शिक्षा मेला गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज में हो रहा है।

पंजाब असैम्बली के इस बजट अधिवेशन में
निःशुल्क अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा का बिल पेश
किया जा रहा है। (शेष पृ० ५ कालम २ के नीचे)

निम्न
कोई
होगा
तथा
प्राज्ञान
शिल्प
प्रप
को
बन्धी
।

पुत्ती
थी।
शुद्ध
शत
गी।
नकी
पवेश
हत

स्थित
टी०
और
गासें

एक
है।
में
पेश
चे)

पच्छमी बङ्गाल की
असैम्बली 'च' शिक्षा
मंत्री ने आखिया कि
पिंडां दे प्राइमरी
स्कूलों दे अध्यापकों

अपनी धोली 'च'

उतजी आमदनी

दी तनखाह पंजीह रुपये काफी ए। इस ते कुम्ह
मैम्बर हस पये। मंत्री होरां दी समझ 'च' न
आई कि ओह हस्से क्यों ? हस्सन वालियां दा
ख्याल ए कि जे इक अध्यापक लई पंजीह रुपये
काफी ने ते मंत्री होरां लई ५०० क्यों थोड़े ने
सच्ची गल ते एह बे कि मंत्री जे तनखाह न भी
लैन तां ओह टी० ए० तों ही तनखाह तों वध
कमा सकदे ने। ऐसे तरहां कचहरियां दे नाज़र
जीन्हां नू थोड़ीआं थोड़ीआं तनखाहां मिलदियां
ने कदी रोदे नहीं बेखे गये, रोदे हन ते हमेशा
अध्यापक ई। क्योंकि ओन्हां नू 'उतली' आमदनी
कोई नहीं न ई हो सकदी ए।

मैट्रिक अध्यापक-
अध्यापिकाओ की
ट्रेनिंग के लिए जिन
केन्द्रों की घोषणा
की गई है उन में

जालन्धर को स्थान नहीं दिया गया हालांकि
यहां गवर्नमेंट गर्ल्स नार्मल तथा हाई स्कूल भी
हैं और गवर्नमेंट वायज़ हाई स्कूल भी।
हमारी समझ में नहीं आता कि जालन्धर को
केन्द्र क्यों नहीं बताया गया। जालन्धर की
लड़कियों को धर्मशाला अथवा किसी अन्य स्थान
पर जाना जहां असुविधा जनक है वहां
खेचीला भी।

क्या पंजाब का शिक्षा विभाग इस ओर ध्यान
देगा और जालन्धर को भी वेन्द्र बनाने की

असैम्बली दे मैम्बरां
नू ते खैर तिन सौ
महीने दे मिलदे भी ने
पर म्यूसिपल कमेटी
दी मैम्बरी चों की

लभदा ए ? सानू तां पता नहीं भर लभदा
जरूर कुम्ह होना ई ए, नहीं तां दस्सो रोपड़ दा
इक राशन डिपो वाला, डिपो छड़ के
मैम्बरी वल क्यों दौड़दा ? भर खोटी उसदी
किस्मत नरिहा डिपो ते न मिली मैम्बरी !

कई असामियां अजहियां ने जिन्हां ते लगे
होये तनखाह लभे बिना ही सारी उमर सरकार ते
जनता दी सेवा करदे रहन नू तयार हन।

जरा पुछ वेखो, ओह ते तैयार ने, सरकार
दा सानू पता नहीं है कि नहीं।

—बाबा निहाला।



शिक्षा समाचार

जालन्धर क्यों नहीं

कृपा करेगा।

—एक अभिभावक

जालन्धर
पाकिस्तान ने भारत
की यूनिवर्सिटियों की

सभी डिगारियों को इस शर्त पर स्वीकार
करना मान लिया है कि भारत की यूनिवर्सिटियां
भी पाकिस्तानी यूनिवर्सिटियों की डिगारियों को
स्वीकार कर ले।

कटक के २०,००० प्राइमरी अध्यापकों का
वेतन ४ रुपये मासिक बढ़ा दिया है। (उन्हें २२
रु० मासिक वेतन मिलता था)

भारत सरकार ५ वर्षीय टेक्निकल एजुकेशन
योजना बना रही है।

'प्रकाश' का अगला अंक १५ मार्च को
प्रकाशित होगा।



—उत्तर प्रदेश में हाई स्कूलों में हिन्दी को अनिवार्य विषय बना दिया गया है।

—जनेवा में काश्मीर के मामले में संयुक्त राष्ट्र के मध्यस्थ डा० फ्रांक प्राहम भारत और पाकिस्तान के प्रतिनिधियों से अशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में बात चीत कर रहे हैं।

—कोरिया में युद्ध चल रहा है। प्रेजिडेंट आइजन हावर इसे समाप्त करने के लिए एक योजना बना रहे हैं। सम्भव है कि चीन की समुद्री नाकेबन्दी की जाए। फार्मोसा के समुद्र से अमरीकी बेड़ा हटा लेने की घोषणा की गई है। जनरल च्यांग काई शेक चीन पर आक्रमण करने की बात कर रहे हैं।

—ईरान से इटली के दो जहाज कच्चा तेल ले गए हैं।

—यूरोप के समुद्र में तूफान आने से बृटेन तथा आयरलैंड के दो हजार व्यक्ति मारे गये हैं और

प्र० दुःख में मनुष्य का सभ से बड़ा सहारा क्या है ?

—आशा शर्मा, प्रयाग
उ० धैर्य, यदि मानव रख सके तो।

प्र० नेता जो उपदेश दूसरों को देते हैं उस पर स्वयं अमल क्यों नहीं करते ?

—रामलाल वेहली

उ० इसलिये कि वे नेता हैं; उनका काम ही दूसरों को उपदेश देना है।

—सं०

प्र० तलाक अभिशाप है या वरदान ?

—सुरीला मेरठ

उ० न तो यह वरदान है और न ही अभिशाप, हाँ जिस रूप में यह पश्चिमी देशों में प्रचलित है उसकी देखते हुए इसे अभिशाप का नाम भी दिया जा सकता है।

सं०

प्र० वैशभक्त में कौन से गुण होने चाहिए ?

—नत्थूराम, देहली

उ० सबसे बड़ा गुण यह होना आवश्यक है कि वह

समाचार-सार

बहुत से बेघर हो गये

—जम्मू में प्रजा परिषद

सत्याग्रह जारी है।

सम्बन्ध में पंजाब में

सभा और जन-संघ

नेताओं को पकड़ कर नजरबन्द कर दिया गया है

—श्री राजेश्वर प्रसाद सिंह, जो पहले नेपाल में तीसरा राजदूत थे, पंजाब के नये गवर्नर नियुक्त गये हैं।

—हिमाचल प्रदेश में १ मार्च से पंचायतें स्थापित जाएंगी जो ४५० के लगभग होंगी।

—सम्राज्ञी ऐलिजबेथ के राज्याभिषेक की तैयारी बड़े जोर शोर से हो रही है।

—५०० जापानी परिवारों को भारत आकर बस और भारतीयों को जापानी तरीके से चावल बोखाने को निमन्त्रित किया गया है।

फूल और कांटे

पाठकों के प्रश्नों के उत्तर

उ० भारतीय समाज में सह-शिक्षा के प्रचलन हित की अपेक्षा अहित की सम्भावना अधिक है।

प्र० सिनेमा अच्छी चीज है या बुरी ?

—आत्माराम, कानपुर

उ० सिनेमा तो बुरा नहीं। इसका प्रयोग अच्छा हो चाहिए। किसी चीज को उसका दुरुपयोग बुरा बना देता है।

प्र० आज के युग में धर्म की मनुष्य को आवश्यक नहीं रही क्या ?

—देशबन्धु, नागपुर

उ० मनुष्य रोटी और कपड़े की आवश्यकताओं चक्कर में कुछ ऐसा बुरी तरह फँस गया है वह धर्म को भूल गया है।

(सच्चे पाठक प्रश्न भेज सकता है)

प्लेटो के विचार

[बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में]

बच्चे की शिक्षा का प्रारम्भ धर्म शास्त्र से होना चाहिये। धर्म का अर्थ यह है कि बच्चे के कोमल हृदय तथा मस्तिष्क के समस्त शिवत्व, उच्चता तथा पवित्रता के उदाहरण आने चाहिए, जिनके संस्कार उसके अन्तर्मन पर पड़ सकें। वह अच्छाई, पवित्रता के आदर्शों में पनपता रहे। परमेश्वर की दैवी सम्पदाओं का विस्तृत मनोहारी वर्णन उनके सामने पुनः पुनः करने से उन्हें अनुकरण के लिए एक आधार प्राप्त हो सकेगा। अतः परमेश्वर नाम की उच्च सत्ता में किन २ गुणों का आराध होना चाहिये यह प्रारम्भ में ही निश्चित हो जाना चाहिए। बच्चों का शिक्षण पौराणिक धार्मिक नीति कथाओं तथा पवित्र गाथाओं से आरम्भ होता है। यह कहानियां सरल सुबोध कविताओं में भी हो सकती हैं। देवताओं के उच्चतम गुणों, अनुहरणीय स्वरूपों से प्रारम्भ होकर शिक्षा धीरे २ ऐतिहासिक, वीरों जोधाओं मानवत्तों तथा सर्वश्रेष्ठ स्वरूपों तक आ जानी चाहिए। महानता वीरता, सेवा, सहायता अपने उच्चतम आदर्शों के रूप में निरन्तर उनके सामने रहने चाहिये।

('रिपब्लिक' पुस्तक से)

डा० माण्टेसरी की प्रार्थना

Help us, O Lord, to penetrate into the secrets of the CHILD so that we may know him, love him and serve him according to Your Laws of Justice and following your Divine Will.

प्रभो ! बाल जीवन के रहस्यों को समझने में हमारी सहायता करो। जिससे कि हम बालक के रूप को जान सकें, उसे प्यार कर सकें और तुम्हारे नीति नियमों के अनुसार और तुम्हारे दिव्य संकल्प के अनुकूल उसकी सेवा कर सकें।

पिता का पिता-बालक

[डा० मारिया माण्टेसरी]

प्रकृति ने प्रत्येक बालक को मानव निर्माण का काम उसके जन्म के साथ ही सौंप रखा है। सृष्टि की सारी रचना में मनुष्य का अपना अद्भुत स्थान है और हमें समझना यह है कि बालक इसी मनुष्य नाम धारी प्राणी का पिता है। हमें यह कभी न भूलना चाहिये कि हम में से हर एक व्यक्ति की, फिर वह मजदूर हो या शासनाधिकारी हो, सज्जन हो या दुर्जन हो, मनोरचना बालक ने ही की है। सब कुछ इस बात पर निर्भर है कि बालक को अपने विकास के लिये वातावरण किस प्रकार का मिला है—वह प्रेम और शक्ति के वातावरण में पला है या अशान्ति और विरोध का शिकार बना है। अतएव बालक का विकास समाज एवं सरकार की अपनी पहली जिम्मेदारी समझी जानी चाहिये।

मैट्रिक अध्यापकों की ट्रेनिंग

सैकण्ड तथा फर्स्ट डिवीजन मैट्रिक अध्यापक-अध्यापिकाओं की जूनियर बेसिक ट्रेनिंग फरवरी के तीसरे सप्ताह में इन स्थानों पर आरम्भ होगी—
गवर्नमेंट स्कूल फाजिल्का (रोहतक, गुड़गांव जालन्धर जिलों तथा होशियारपुर तहसीलों के ८० पुरुष के लिए)
(२) गवर्नमेंट स्कूल फाजिल्का (फिरोजपुर तथा हिसार जिलों के ४० पुरुषों के लिए)
(३) गवर्नमेंट बेसिक ट्रेनिंग स्कूल जगराओं (लुधियाना जिला के पुरुषों तथा जालन्धर डिवीजन की स्त्री अध्यापिकाओं के लिये, कुल संख्या ४०)
(४) गवर्नमेंट स्कूल गुरदासपुर (अमृतसर, गुरदासपुर और कांगड़ा जिलों तथा दसूहा और ऊना तहसीलों के ८० पुरुषों के लिए)
(५) गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल धर्मशाला जालन्धर डिवीजन की ४० स्त्रियों के लिये)
(६) गवर्नमेंट नार्मल स्कूल करनाल (अम्बाला, करनाल और शिमला के ४० पुरुषों के लिये)
(७) गवर्नमेंट गैज स्कूल हिसार (अम्बाला डिवीजन की ४० स्त्रियों के लिये)

★ धरती और आसमान ★

[लेखक :—श्री रामचन्द्र 'सरोज' एम० ए०]

रोती रोज रात भर धरती,
हँसता उस पर आसमान है ।

पीकर किरणों के प्यालों में
धरती का रस रोज शाम को
जलती सूरज की तरुणाई,
दूर धुएँ के बादल घिरते
आसमान में लेकर सतवन्ती
दिग परियों की अरुणाई;
तम की चादर डाल धरा पर
आती रजनी नभ के आंगन
में तारों का दीप जलाने,
आता मरघट का सन्नाटा
विकल-विश्व के विगत स्वप्न के
स्पन्दन का तूफान सुलाने,

क्रन्दन करता वर्तमान है,
रोती रोज रात भर धरती
हँसता उस पर आसमान है ।

किरणों का शृंगार सजा कर
प्राची का पट खोल रात को
चाँद निकलता पर्व मनाने,
दिन की तृष्णा से पागल हो
चीर उदासी खगकुल कलरव
कर उठता ले स्वप्न सयाने
जब वीणा के तार सजा कर
नभ को रजनी तारों की धड़कन
पर अपना गीत सुनाती,
चिंतिज छोर से शिथिल हवाएं
बसुधातल के दग्ध हृदय पर
चल मलयज का लेप लगाती,
रंवेद ही समाधान है,

रोती रोज रात भर धरती
हँसता उस पर आसमान है ।

तृण-तरु पर छाए धरती के
अश्रु-विन्दु को अरुण हास से
मुक्ताहल के मोल बनाती,
तमहर किरणों से रजनी का
स्वप्न मिटा कर रोज प्रात को
उषा प्रभा के बोल सुनाती,
मंद मलय का परस विहंगों के
कलरव को विकल विश्व के
स्वप्न तरंगों में फैलाता,
दिन कर किरणों की जरतारी
पहन लहरिया धरा विहँसती
आसमान का गात लजाता,

नई सृष्टि का उवाख्यान है,
रोती रोज रात भर धरती
हँसता उस पर आसमान है ।

विवाह की बेटी

हालीवुड की फिल्म ऐक्ट्रेस रिता-हेवर्थ ने
(जिसका ४ वर्ष हुए अगाखां के शौकीन मिर्जा
पुत्र अली खां से पहली पत्नी को तलाक देकर
विवाह हुआ था) रेनो (नेवदा—अमेरिका
में तलाक प्राप्त कर लिया । अदालत में केवल
१० मिनट लगे। जब वह अदालत से बाहर निकली
तो कोई पूछ बठा—यास्सीन (उनकी पुत्री) कि
की बेटी है—अली खां की या तुम्हारी तो हँस
वह बोली, न अली की न मेरी वह तो व्याह
बेटी है मैं तो कु० हेवर्थ हूँ । इस पर वह हँस
हुए बोला—यह भी खूब रही !

बच्चों के प्रति माता-पिता का कर्तव्य

★ राष्ट्र की सब से बड़ी सम्पत्ति ★

(राजकुमारी अमृतकौर स्वास्थ्य मंत्रिणी)

राष्ट्र की सब से बड़ी सम्पत्ति है—इसके बच्चे । आज के बच्चे ही कल के नागरिक हैं । वे भविष्य की आशा हैं और उन्हें ही आगे चल कर राष्ट्र का निर्माण करना है ।

बच्चे मजबूत और पुष्ट बनें इसके लिए उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है । माता पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को स्वस्थ नवयुवक बनाएं । न केवल माता पिता को बल्कि राष्ट्र को भी स्वस्थ बच्चों पर गर्व होता है । लेकिन हम देखते हैं कि अधिकतर बच्चों की सेहत असावधानी के कारण गिर जाती है और उन में से कई नीरोग नहीं होने पाते ।

अधिकतर बच्चों की मृत्यु चेचक, कुक्कुर खांसी खसरा, कण्ठरोग, मियादी बुखार, ज्वर, और मलेरिया वगैरह रोगों से होती हैं । ये बड़ी भयंकर बीमारियां हैं लेकिन अगर सावधानी बरती जाय तो इस में सन्देह नहीं कि हम इन बीमारियों से बच्चों की रक्षा कर सकेंगे ।

सफाई सब से जरूरी है । बच्चों में स्वच्छ रहने की आदत डालनी चाहिए । उनका आचार व्यवहार सुन्दर होना चाहिए । वे रोज़ दान्तों को साफ करें, स्नान करें; बालों में कंघी करें, नाखून साफ रखें, साफ कपड़े पहनें और अपने पास रुमाल रखें । उन्हें सिखाया जाय कि शौच के लिए नितय स्थान ही इस्तेमाल करें । भोजन करने से पहले हाथ धोएं । खाने की चीजों पर मक्खियां न बठने दें । जिन वस्तुओं पर मक्खियां बैठी हों उन्हें न खाये । व्यायाम अवश्य करें । माता पिता को चाहिए कि बच्चों

को पौष्टिक तत्व वाला भोजन दें । उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें और बीमार होने पर गफलत न करें ।

कहने का अभिप्राय यह है कि बीमारी के प्रति सजग रहने और बच्चों को साफ रखने से बीमारी से बहुत कुछ रक्षा हो सकती है । न केवल यही बल्कि शरीर स्वस्थ रहने से मानसिक उन्नति भी होती है । मन स्वस्थ होता है अगर शरीर स्वस्थ रहे ।

भारतीय शिशु

राम कृष्ण भीष्म भीम पार्थ जैसे वीर बनें
रन्तिदेव; हर्गिश्नर जैसे उपकारी हों
व्यास वाल्मीकि जैसे ज्ञानी कलाकार बनें
ध्रुव प्रह्लाद जैसे प्रभु के पुजारी हों
अंकुश सरल, शील सत्य सद्भाव लिए
चन्द्र की कला से सब ही को सुखकारी हों
केशव शिवा जी राणा बांदा हरिसिंह जैसे
प्रभु ! भारतीय शिशु धनुधारी हों ।

— ओम स्वरूप 'अंकुश' ।

सर्वश्रेष्ठ कौन ?

गाली सुन कर भी जो मन में,
जुरा नहीं दुख पाता है ।
क्रोध दिलाने पर भी जिसको,
क्रोध नहीं कुछ आता है ।
कड़वे वचन कदापि न कहता,
मर्म बेध करने वाले ।
वचन सत्य हित मधुर बोलता;
अमरित बरसाने वाले ।

‘हिन्दू कोड’ पर व्यंग्य कविता

घर वाली से डरना सीखो

(रचयिता : पं० रामेश चन्द्र शान्त शास्त्री ‘शालिहास’)

हो रहा ‘कोड बिल’ पास अरे,
घर वाली से डरना सीखो ।
बाबू जी ! आफिस में जाना छोड़ो,
अब सीखो काम काज ।
कुछ घर का, कुछ घर वाली का,
कुछ बच्चों की रखवाली का ।
‘वे’ खुद सम्भाल लेंगी दफ्तर,
तुम भी घर सम्भालना सीखो । हो रहा०

ए मिस्टर ! छोड़ो मटर गश्त,
मोटर की छोड़ो सैर सखे ।
जब मूँछ सफाचट कर वाली,
लगते हो जैसे घर वाली ।
तो हैट - कोट - व पैट त्याग
अपना घर संवारना सीखो । हो रहा०

“चकला-बेलन” लो हाथों में,
अब कलम उठाना भूल चलो ।
ये मेज—कुर्सियाँ छोड़ अरे !
खाना दारी का ढंग करा ।
बन “क्लर्क” रखेंगी “वे” फायल,
तुम “फायल” गुण गाना सीखो । हो रहा०

भाजी में हल्दी नमक मिरच,
ढाला जाता कितना ? कैसे ?
“हलवे” में घी चीनी कितनी ?
हां चाय बबलती है कैसे ?
अब कर लो जल्दी “इमतिहान”
ये पास, जमाना बदला है ।
नारी, नर बनने वाली है,
तुम नारी के नखरे सीखो । हो रहा०

उपदेशक जी ! घर वाली से,
उपदेशों का नव-पाठ पढ़ो ।
अब कान दबा कर सुना करो जी !
“उन से” अब मत लड़ा करो ।
“वे” मारें भी तो चुपके से,
सब सहलो और चरण पकड़ो ।
अर्धांग मालिकन हैं “वे” भी,
वैधानिक समाधिकार ‘उन्हें’
अब नहीं दवेंगी अबलाएं,
मर्दों तुम ही झुकना सीखो । हो रहा०

यदि “उनका” हुकम न मानोगे ?
तो भूट “तलाक” मिल जायेगा ।
डिगरी—दावे का खर्च सभी,
तुम्हारे ही सिर पड़ जायेगा ।
घर वाली औ बच्चों से,
धोने ही पढ़ेंगे हाथ तुम्हें ।
इस लिए अभी से गृह—लक्ष्मी,
को हाथ जोड़ना भी सीखो । हो रहा०

हो “फीकी दाल” कहो जी तुम !
स्वादिष्ट ५५० क्या आज दल ?
हो रोटी जली, साग खारा,
तुम इन को भी दो सहज टाल ।
“वे” आज गईं थी किधर ? कहाँ ?
क्या खर्चा ? पूछो यह न हाल ।
जो कुछ भी करें, करने दो,
उन की आजादी में दो न दखल ।
यदि उठा लिया ‘उन ने’ जूता,
तो आ आयेगी तुम्हें अकल ।
(शेष पृष्ठ २० पर पढ़ें)

अन्य देशों में प्रति एकड़ ७० मन तक अन्न कैसे पैदा किया जाता है ?

आपके खेत भी दस गुना उपज दे सकते हैं

किन्तु कैसे ? यह मि० रिचर्ड ब्रैडफील्ड के निम्न लेख में पढ़ें

भूमि के ऊपर की तीन-चार इंच मिट्टी ऐसी निर्जीव वस्तु नहीं है जो कृषि करने से पहले बनी हो और बाद में न बन सकती हो। यह एक जानदार गतिशील प्रणाली है जिस में रचनात्मक एवं विनाशक क्रियाएं निरन्तर साथ-साथ होती रहती हैं। यदि भूमि में उत्पन्न होने वाली समस्त वनस्पतियों को भूमि पर गिर कर सड़ने दिया जाय तो प्राकृतिक दशाओं के समान ही यह सड़ा हुआ खाद भूमि को उर्वरा बनाता रहता है। जैसे जैसे यह सड़ा हुआ पदार्थ इकट्ठा होता जाता है वैसे वैसे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती जाती है। जब भूमि में खेती बोई जाती है तो विनाशक कार्य तीव्र हो जाता है और रचनात्मक कार्य धोमा पड़ जाता है।

यदि भूमि की उर्वरा शक्ति को कम करने वाली मक्की तथा गेहूं आदि की फसलें, बिना रासायनिक खाद डाले लगातार बोयी जाएं तो ऐसा तो नहीं होगा कि फसलें बिल्कुल ही न हों पर उनकी पैदावार बहुत घट जायेगी। ऐसी स्थितियों में मक्की तथा गेहूं की पैदावार प्रति एकड़ आम तौर पर ७॥ मन से ६ मन तक रह जाती है। अनेक बनी आबादी वाले ऐसे देशों में यह स्थिति देखने में आई है जो कृषि की दृष्टि से कम उन्नत हैं।

हमारे सामने केवल यही एक मार्ग नहीं है। हम अनेक दशाओं में भूमि को उपजाऊ बनाने के तरीकों में इतनी वृद्धि कर सकते हैं, जो क्षतिपूर्ति से भी अधिक उर्वरा शक्ति प्रदान कर सकें। यह प्रमाण कि यह कार्य राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सकता है पश्चिमी यूरोप के कृषि सम्बन्धी इतिहास में मिल

सकता है। १५० वर्ष पूर्व पश्चिमी यूरोप में गेहूं की औसतन उपज ७ से ६ मन प्रति एकड़ के करीब थी। इस समय वह उपज २२ से ३० मन प्रति एकड़ तक पहुँच गई है। पूर्वी अमेरिका के अनेक प्रदेशों में जहाँ १५० वर्ष पूर्व फार्मों की स्थापना की गई थी, ऐसे ही प्रमाण मौजूद हैं कि भूमि को उपजाऊ बनाने के लिये व्यावहारिक एवं सस्ते उपाय मालूम किये जा चुके हैं।

फसल के पौधों में संचित होने वाली समस्त शक्ति सूर्य से प्राप्त होती है। आम तौर पर सूखे पौधे में शुष्क पदार्थ का ६५ प्रतिशत भाग वायु एवं जल से प्राप्त होता है और शेष ५ प्रतिशत भाग भूमि से। इस ५ प्रतिशत भाग में नाइट्रोजन भी शामिल है, और अन्य द्रव्य हैं कैल्सियम, मैग्नेसियम, पोटेशियम, गन्धक तथा फास्फोरस। शुष्क पौधों को जलाने पर भस्म में उपर्युक्त पदार्थ रह जाते हैं और नाइट्रोजन हवा में मिल जाती है। पौधों को कई अन्य तत्वों की भी बहुत थोड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है। इनके कुछ पौण्ड ही एक एकड़ भूमि के लिये काफी होते हैं। ये द्रव्य हैं :—ताँबा, मैंगनीज, जिस्त, लोहा, बोरॉन तथा मौलिब्डोनीम। यद्यपि फसलों को उन की अत्यल्प मात्रा चाहिये परन्तु उन की वृद्धि के लिये ये द्रव्य परमावश्यक हैं।

सभी पौधे जड़ों द्वारा भूमि से जल प्राप्त करते हैं। अधिकांश फसलों के प्रत्येक एक पौण्ड शुष्क द्रव्य (सूखे पौधे) के लिये ३०० से ८०० पौण्ड तक जल की आवश्यकता होती है। चूंकि वर्षा अक्सर समय पर नहीं होती इस लिये वर्षा न हाने

के दिनों में पौधों की वृद्धि के लिये भूमि में जल-संचित करने की पर्याप्त क्षमता होनी चाहिये।

निःसंदेह, भूमि पौधों के लिये आवश्यक पौष्टिक तत्वों का भंडार भी है। पौधे भूमि में से २ फुट से ५ फुट की गहराई तक से अपनी खुराक ग्रहण कर सकते हैं। आम तौर पर भूमि की सतह से नीचे तीन फुट तक की मिट्टी में पर्याप्त नाइट्रोजन तथा फास्फोरस रहता है जो ५० से १०० फसलों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये काफी होता है और उस में १००० फसलों के लिये काफी पोटाश मौजूद रहता है। शुष्क एवं रेतीले प्रदेशों की मिट्टी में पोषक तत्व कम मात्रा में पाये जाते हैं। रासायनिक विश्लेषण से यह मालूम हो जाता है कि अमुक भूमि में पोषक तत्वों की कितनी मात्रा मौजूद है। यह देखा गया है कि केवल रासायनिक विश्लेषण से ही उपजाऊ और अन्न-उपजाऊ भूमियों का अन्तर पता नहीं चल सकता, क्योंकि इन विश्लेषणों से यह जानकारी नहीं मिल पाती कि एक से पौष्टिक तत्वों के होते हुये भी कौनसी भूमि पौधे को तत्व प्रदान करती है और कौनसी नहीं।

फसल की वृद्धि पोषक-तत्वों के अधिक संचित मात्रा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विभिन्न पोषक तत्वों की उस मात्रा पर निर्भर करती है जितनी फसल के लिये आवश्यक है। ये आवश्यकताएं किसी भी दशा में एक एकड़ पर २ या ३ पौंड प्रतिदिन से अधिक नहीं होती। थोड़े से समय में भूमि के संचित पोषक तत्वों की मात्रा में परिवर्तन करना सरल तथा सस्ता कार्य नहीं है। किन्तु फसलों से सम्बन्ध रखने वाली आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उपलब्ध पोषक तत्वों को प्राप्त करना कृषक के लिये आसान एवं लाभप्रद है।

उदाहरण के तौर पर कृषक नाइट्रोजन प्राप्त करने के लिये 'क्लोवर' के समान लेसदार पत्तों वाली फसलों उत्पन्न कर सकता है जो वायु में से नाइट्रोजन

प्राप्त करके बाद की फसलों में पौधों की वृद्धि के लिये भूमि में छोड़ सकती हैं। एक एकड़ भूमि में लगी हुई लूमन घास से १ वर्ष में २५० पौण्ड नाइट्रोजन भूमि को प्राप्त हो सकती है। नाइट्रोजन की यह मात्रा किसी फसल (गेहूँ, मक्की आदि) के लिये एक वर्ष के लिये काफी होती है। लूसन जैसी कोई भी फसल उत्पन्न करके उसके ऊपरी भाग को सूखी घास के लिये काट लेने के बाद भूमि में बची उस की जड़ों से भूमि को इतनी नाइट्रोजन मिल जाती है जो अनेक फसलों के लिये वर्ष भर के लिये काफी होती है। कृषक फसलों के बचे हुए घास फूस, सामान्य खादों तथा रासायनिक खादों को काम में लेकर अपनी पैदावार बढ़ाने के लिये अतिरिक्त पोषक तत्व उपलब्ध कर सकता है।

भूमि को उपजाऊ रखने के लिये विविध प्रकार की भूमि तथा विभिन्न प्रकार की कृषि पद्धतियों के अनुसार पूर्व कथित तरीकों को प्रयोग में लाया जाता है। भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखने के लिये पशुपालन बहुत उत्तम है। कम खर्च पर अनेक प्रकार के पशुओं को पालने के लिये घास के बड़े २ चरागाहों की आवश्यकता है। चारे के काम में न आने वाले घास फूस को पशुओं के नीचे बिछा कर गोबर के साथ भूमि में खाद के रूप में डाला जा सकता है।

चिरकाल से किये जा रहे परीक्षणों से पता चलता है कि मक्का रुई तथा क्लोवर को ३ वर्ष तक बारी बारी से बो कर तथा भूमि में चूना एवं सुपरफास्फेट डाल कर आज से ५० वर्ष पूर्व की उपज में ३० से ४० प्रतिशत तक की वृद्धि की जा सकती है, परन्तु भूमि में पर्याप्त रासायनिक खाद डाल कर तथा आधुनिक कृषि प्रणालियों की सहायता से पैदावार में आज ५० वर्ष की अपेक्षा ५० प्रतिशत अधिक की वृद्धि की जा सकती है।

(शेष पृष्ठ १४ पर पढ़ें)

निरक्षरता कैसे दूर हो ?

प्रत्येक व्यक्ति एक अनपढ़ को पढ़ाये !

लाखों निरक्षर पढ़ने लगे

प्रौढ़ शिक्षा का विश्वव्यापी कार्यक्रम

अन्तर्राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग १ करोड़ ५० लाख व्यक्तियों ने पढ़ना सीखा है। इसका श्रेय प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से डा० लौबाक को ही है। इस समय उन की आयु ६७ वर्ष की है। उन्होंने २६६ भाषाओं एवं बोलियों में पाठ तैयार किये हैं। उन्होंने बड़े चार्टों पर उन भाषाओं के अक्षरों के ध्वनि-संकेत छपवा रखे हैं जिन्हें वे पढ़ा रहे हैं। इन नक्शों में पदच्छेद तथा शब्दों को चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार, जब इथियोपिया वासियों ने एक बार ध्वनियों के अनुसार अक्षरों के संकेतों को समझ लिया तो वे दैनिक संभाषण में प्रयुक्त होने वाले हर शब्द को पढ़ने लग गये।

डा० लौबाक की धारणा है कि प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग शिक्षा देनी चाहिये। यह कार्य व्यापक साक्षरता प्रसार की दृष्टि से बहुत लाभप्रद नहीं है। प्रौढ़ शिक्षा के सम्बन्ध में उनका सब से महत्वपूर्ण कार्य यह है कि उन्होंने नवशिक्षित लोगों को ऐसी प्रेरणा दी है जिससे कि वे अन्य लोगों को पढ़ना लिखना सिखाने लगते हैं।

डा० लौबाक जहाँ जाते हैं, वे वहाँ के अध्यापकों तथा भाषा विज्ञों की सहायता प्राप्त करते हैं। जब वे एक बार आवश्यक सामग्री तैयार कर लेते हैं तथा कार्य आरम्भ हो जाता है तो फिर लोग उस कार्य को स्वयं सम्भाल लेते हैं। पढ़ना सीख लेने के बाद, अधिकांश लोग अन्य लोगों को पढ़ाने के लिये तैयार हो जाते हैं। डा० लौबाक की इस पद्धति का निष्कर्ष है, “प्रत्येक व्यक्ति एक व्यक्ति को

पढ़ाये।”

१९४८ से डा० लौबाक प्रतिवर्ष आरम्भ के ६ महीनों में प्रौढ़ लोगों को लिखना और पढ़ना सिखाते हैं और शेष ६ महीनों में, संसार से निरक्षरता का अन्त करने वाली समिति के लिये धन एकत्र करते हैं। वह एक गैर सरकारी संस्था है जिसका प्रधान कार्यालय न्यूयार्क में है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के दिनों तथा युद्धोत्तर काल में डा० लौबाक ने लैटिन अमेरिका के देशों में निरक्षरता दूर करने का कार्य आरम्भ किया। उस समय के शिक्षा मन्त्री डा० जेम्स टोरेस बोडे के सहयोग से अकेले मैक्सिको में ५० लाख व्यक्तियों ने पढ़ना सीख लिया है।

लैटिन अमेरिका में कार्य करने के पश्चात् डा० लौबाक ने अन्य देशों के लोगों को शिक्षा प्रदान की। १९४८ के बाद उन्होंने थाइलैंड, भारत, पाकिस्तान, न्यूगिनी, कोरिया, अल्जीरिया, ट्यूनिशिया, लीबिया, मिस्र, लेबनान, अफ़ग़ानिस्तान, बर्मा, इन्डोनेशिया तथा अन्य देशों में निरक्षरता का अन्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

डा० लौबाक ने यह अनुभव कर लिा है कि निरक्षर लोग पढ़ने-लिखने के लिये बड़े उत्सुक हैं। उनका कहना है कि “वे निर्धनता, रोग तथा उत्पीड़न से मुक्ति पाने के लिये उत्कण्ठित हैं। वे जानते हैं कि उन से छुटकारा पाने का एकमात्र स्थायी उपाय शिक्षा है।”

संयुक्त राष्ट्र-संघ का भी यह मत है कि गरीबों, रोगों तथा अत्याचारों से मुक्ति प्राप्त करने का

एकमात्र स्थायी उपाय शिक्षा है। द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद ७ वर्षों में संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा विज्ञान-संस्कृति संवहन (यूनेस्को) ने बहुत से देशों में निरक्षरता का अन्त करने के कार्य में महत्वपूर्ण योग दिया है।

१९४६ में यूनेस्को ने हैटी-सरकार की प्रार्थना पर हैटी की मारबियल घाटी में अपनी प्रथम याचना प्रारम्भ की थी। १९५० में मारबियल में एक केन्द्र की स्थापना की गई जिसमें १०० छात्रों के लिये एक शिक्षण-पाठशाला तथा १० स्कूल हैं।

यूनेस्को ने अपने कार्य को “आधारभूत शिक्षा” कहा है। इसका उद्देश्य संसार से निरक्षरता का अन्त करना है।

इस योजना का प्रथम मुख्य उद्देश्य संसार के ६ क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्रों की स्थापना करना है। मई १९५१ में स्पेन तथा पुर्तगाली भाषा बोलने वाले लैटिन अमेरिकियों के लिये पेटजक्वाटो (मैक्सिको) में प्रथम प्रादेशिक केन्द्र की स्थापना हुई। अरब देशों के लिये शीघ्र ही सरसुल लायान (मिस्र) में दूसरा केन्द्र खुलने वाला है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत, भूमध्य रेखावर्ती अफ्रीका प्रदेश तथा दक्षिणपूर्वी एशिया में भी ऐसे केन्द्र खुल रहे हैं।

सम्बन्धित देशों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं

(१२ पृष्ठ का शेष)

अमेरिका के पूर्वी भागों में जहाँ आलू तथा बाजारू सब्जियों की फसलें बहुतायत से होती हैं, वहाँ गोबर आदि की सामान्य खाद के स्थान पर रासायनिक खादें काम में लाई जाती हैं। उन क्षेत्रों की भूमि में फास्फोरस तथा पोटासियम की मात्रा बढ़ती जा रही है और उनमें नाइट्रोजन भी प्रचुर मात्रा में मौजूद है। गत १० वर्षों में उन क्षेत्रों की उपज में जितनी वृद्धि हुई है उतनी अमेरिका के इतिहास में इस से पूर्व शायद कभी नहीं हुई होगी। यह सोचने

की पूर्ति तथा प्राकृतिक साधनों के विकास के लिये प्रादेशिक केन्द्रों में प्रशिक्षण की व्यवस्था की जायेगी। प्रत्येक प्रादेशिक केन्द्र में उस क्षेत्र के अध्यापकों को २१ महीनों के पाठ्यक्रम द्वारा आधारभूत शिक्षा के सम्बन्ध में प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा। वे अध्यापक अपने-अपने देशों को लौट कर उन राष्ट्रीय केन्द्रों की स्थापना में सहायता देंगे जहाँ वे अन्य अध्यापकों को अपने ज्ञान से लाभान्वित करेंगे।

यदि शिक्षक विद्यार्थी को यह नहीं बताता है कि नये ज्ञान से उसे अपने दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने में किस प्रकार सहायता मिलेगी तो उसे पढ़ने लिखने की शिक्षा देना व्यर्थ है। “हम विद्यार्थियों को यह दिखाना चाहते हैं कि उन उपायों द्वारा जिन्हें मैं आधारभूत शिक्षा के चार महत्वपूर्ण उद्देश्य कहना पसन्द करूंगा, देहाती लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। प्रथम मनुष्य को अपने स्वास्थ्य की रक्षा करनी चाहिये, दूसरा, उसे स्थानीय प्राकृतिक साधनों से अवश्य लाभ उठाना चाहिये, तीसरा, उसे भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप में अपने गृहस्थ जीवन को उज्ज्वल बनाना चाहिये। तथा चौथा, उसे अधिकार है कि वह अवकाश के समय का पूरा आनन्द उठाए और उसे ऐसा करने का अवसर दिया जाना चाहिये।

का कोई कारण नहीं है कि उन की उत्पादन-क्षमता घटती जा रही है।

यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है : क्या प्रति एकड़ उपज बढ़ जाने से भूमि की उत्पादन क्षमता अधिक तेजी से कम नहीं होती ? एक प्रकार से इस का उत्तर हाँ में दिया जा सकता है। अगर एक भूमि में मक्का की फसल ७६ मन प्रति एकड़ हो तो उसकी उर्वरा शक्ति उस भूमि की अपेक्षा जिस में १६ मन प्रति एकड़ फसल हुई है, कहीं अधिक नष्ट होती है,

(शेष पृष्ठ १८ पर पढ़ें)

कहानी—

अपराधी

(लेखिका : कु० सुदेश कालिया, क० म० वि० जालन्धर)

संध्या का समय था । चांद अपनी अधखुली खिड़की से बड़ी आतुरता के साथ अपनी प्रेयसी रजनी की प्रतीक्षा कर रहा था । दिन भर के परिश्रम से पत्नी अपने घांसलों की ओर प्रस्थान कर रहे थे । सब के जीवन में प्रतीक्षा थी । पहाड़ी प्रदेश था और पथ बीहड़ ! संध्या की उदासीनता और जीवन का एकाकीपन ! परन्तु फिर भी वह पथिक अपनी आंखों में प्रतीक्षा और हृदय में हृद निश्चय लिए चलता ही जा रहा था । “कहाँ रुकोगे पथिक ?” उसकी अन्तरात्मा ने पूछा । “तुम्हारी हार तो निश्चित ही है” फिर क्यों निष्फल प्रयत्न में अपने जीवन के अमूल्य क्षण नष्ट कर रहे हो, यहीं रुक जाओ ।” पथिक शायद बहरा हो गया था । चलना उसके जीवन का ध्येय बन गया था । उसकी आत्मा न उसकी यह लापरवाही देखकर फिर पुकारा, “पथिक ! जीवन में बहुत खा चुके हो—आन्धों आ रही हैं बादल गरज रहे हैं, अभा धुआंधार वर्षा आरम्भ हो जाएगी । तब इस निर्जन प्रदेश में कहाँ अपना सिर छिपाओगे ! अब भी समय है संभल जाओ ।” अब पथिक कुछ होश में आ गया था और बोला—“जीवन ही प्रतीक्षा है और जिस वस्तु को आसाना से प्राप्त करने की संभावना न हो वही मानव जीवन का सब से बड़ा आकर्षण । मुझे रोको नहीं मैं रुक कर बहुत खो चुका हूँ ।”

जब इधर पथिक तथा उसकी अन्तश्चेतना में यह संघर्ष हो रहा था उसी समय उधर धुआंधार वर्षा आरम्भ हो गई । बादलों की भयंकर गरजना तथा बिजली का तर्जन पथिक के हृद हृदय को भी दहलाने लगी और उसका

उठा । इतने में उसकी दृष्टि बीच वाली घाटी पर पड़ी । वहाँ पर कुछ प्रकाश था । उसके हृदय को सात्वना मिली और उसने अपने कदम शीघ्रता से उधर बढ़ाए ।

इष्ट स्थान पर पहुँचते ही पथिक ने देखा कि वह प्रकाश एक भोंपड़ी में जल रहे दीपक का था । भोंपड़ी चारों ओर से सुन्दर फूलों तथा फलों के वृक्षों से घिरी थी और उसकी बनावट तथा स्थिति यह बता रही थी कि उस का निर्माण किन्हीं सुचारु तथा कलापूर्ण हाथों द्वारा हुआ है । पथिक दबे पांव भोंपड़ी के दरवाजे के निकट चला गया । वहाँ पहुँचते ही वह स्तब्ध सा रह गया । उसकी अपनी आंखा पर अविश्वास होने लगा । जागते ही जागते यह स्वप्न कैसा ! दीपक के धुंधले प्रकाश में एक पावन सौंदर्य की प्रतीक कोमलांगी नारी, जिसके बाल फर्श पर लटक रहे थे, कूची हाथ में लिए एकाग्र मन से एक चित्र बनाने में व्यस्त थी । और दूसरे कोने में एक प्रौढ़ा स्त्री बैठी कुछ सी रही थी । कुछ देर स्वप्नावस्था में खड़े रहने के पश्चात्, पथिक ने धीरे से आवाज दी,—“बहिन !” परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला । कलाकार अपनी कला में व्यस्त होकर अपनी सुधबुध भी खो बैठता है । उसने फिर पुकारा—“बहिन ! बहिन ! बहिन !” इतने में उस प्रौढ़ा स्त्री ने आँखें उठाईं तो सामने पथिक को पाया । उसकी मूक दृष्टि इस प्रश्न की सूचक थी, “विश्राम चाहते हो पथिक ?” उत्तर मिला, “हाँ बहिन विश्राम चाहता हूँ ।” वह युवती अब भी अपना चित्र बनाने में व्यस्त थी । अपनी कला के साथ एक रूप हो जाना ही सच्चे कलाकार का गुण है । उस प्रौढ़ा स्त्री ने उस तरुणी

को पथिक के आगमन की सूचना दी और उसने चित्र पर अपनी दृष्टि भुकाए हुए ही उसे अन्दर लाकर बिठाने की स्वीकृति दे दी।

पथिक—“यह किसका चित्र बना रही हो बहिन?” नवयुवती ने अपनी कूची तनिक ठहरा कर और “बहिन” शब्द का धीरे से पुनः उच्चारण करके बड़ी ही रहस्यमयी तथा मार्मिक भाषा में कहा, “किसी अपराधी का। संसार न जाने अपने अपराधियों के प्रति क्यों इतना क्रूर है। मानते हो न पथिक?”

पथिक—हाँ, मानता हूँ। मगर अपराधियों को दण्ड तो मिलना ही चाहिए।

युवती ने मलिन हंसी मुख पर लाते हुए कहा—मैं कब कहती हूँ कि नहीं मिलना चाहिए। परन्तु इस विषय में अपराधी की परिभाषा क्या है?

पथिक—जो मनुष्य सत्य के विरुद्ध चलता है वह अपराधी है।

नवयुवती ने कूची को रङ्ग में डुबोते हुए तनिक जोरदार आवाज में कहा, “परन्तु क्या सत्य है और क्या असत्य, इस बात का निर्णय करना कितना कठिन है। जिस बात को मैं सत्य कहती हूँ उसी को कोई अन्य असत्य कह देता है। यह जीवन कितना जटिल तथा रहस्यमय है।” जब वह यूँ बातें कर रही थी, उसी समय वह प्रौढ़ा स्त्री तश्तरी में कुछ फल ले कर आ गई। “खाओगे ना?” यह पूछते हुए उसने तश्तरी आगे रख दी। नवयुवती ने बिना चित्र से आँखें उठाए उसका समर्थन करते हुए कहा, “हाँ हाँ अवश्य खाएंगे। दिन भर चल कर थक गए होंगे। इनके सोने का प्रबन्ध कर दो माँ।”

पथिक मौन था। सोच रहा था और साथ खाने का प्रयत्न कर रहा था। उसने अपनी जेब में से एक चित्र लिकावा। एक बार वह उस चित्र की ओर देखता और दूसरी बार उस नवयुवती की ओर, जैसे दोनों में समानता की रेखाएँ ढूँढ़ रहा हो। ‘यह

चित्र बीस साल पुराना है। तब वह बहुत ही छोटी थी। जब मैं विलायत गया था तो इस चित्र को स्मृति चिन्ह के रूप में अपने साथ ले गया था। अब तो वह जवान हो गई होगी। मैं उसको कैसे पहचान सकता हूँ। इन पर्वतों की कन्दराओं में, एक पहाड़िन युवती के वेश में यदि वह मेरे सामने से लाखों बार भी गुजर जाए, तो भी मैं उसे न जान सकूँगा। कितनी दयनीय है मेरी स्थिति, यह सोचते सोचते उस ने तनिक झिझकते हुए पूछा “बहिन, तुम यहां इतने एकान्त में क्यों रहती हो? तुम्हारे माँ बाप कहां हैं?”

नवयुवती—“मानव-जीवन की उलझनों को सुलझाने के लिए एकान्त ही मनुष्य का सर्वप्रिय सहायक है। माँ बाप भी किसी परिस्थिति में.....

...पथिक, तुम सो जाओ, थक गए होंगे।” पथिक ने आतुरता से कहा—“मैं सोना नहीं चाहता। मेरे जीवन में विश्राम कहां? मैं सुनना चाहता हूँ।” उसने स्नेह से पूछा—“क्या सुनना चाहते हो?” पथिक ने चित्र की ओर संकेत करते हुए कहा—“इस अपराधी की गाथा सुनना चाहता हूँ।”

नवयुवती—“रोचक नहीं है। आदर्श-पूर्ण नहीं है। समाज का नाम चित्र है, पथिक! इस को न सुनने ही में सुख है।”

पथिक और भी आतुर हो उठा।

दुःखी व्यक्ति सदैव अपने दुःख को सुनाने के लिए आतुर रहता है। शायद इस लिए कि कहने से उसका भार तनिक हल्का हो जाता है। उसने आरम्भ किया—“वह व्यक्ति जिसके रेखांकित चित्र में मैं रङ्ग भर रही हूँ, संसार की आँखों में एक अक्षम्य अपराधी है, क्योंकि उसने... उसने एक निर्बल धराते में उत्पन्न हो कर एक धनवान पिता की पुत्री से प्रेम करने का दुस्साहस किया था। उसके पास केवल हृदय था और थी कोमल भावनाएं। बड़ा विद्वान

था, पथिक ! सुन्दर भी था और अपने प्रिय जनों में सर्वप्रिय भी। उसके पास सब कुछ था, केवल धन नहीं था। और यदि धन नहीं था तो दुनियाँ की आँखों में कुछ भी नहीं था। वह जानता था कि वह उसकी नहीं हो सकती। उस पर उसका अधिकार नहीं हो सकता। परन्तु वह अधिकार की कलुषित कामना रखता ही कब था ? संसार ने उसे समझा ही कब था। उसका प्रेम त्याग चाहता था। वह अपनी सीमाओं से भली भान्ति परिचित था, परन्तु फिर भी वह...”

पथिक ने उत्सुकता से पूछा—“ तो क्या वह लड़की उससे प्रेम नहीं करती थी ? ”

नवयुवती ने व्यंगपूर्ण हंसी हंसते हुए कहा—“ प्रेम ? प्रेम को कहते हो पथिक ? वह उससे केवल प्रेम ही नहीं, अपितु उसकी आराधना भी करती थी। उसकी पावन भक्ति और अपनी अयोग्यताओं का स्मरण आते ही वह उसकी श्रद्धा पर संशय करने लग जाता और इस असुन्दर विचार से प्रेरित होकर प्रायः कह उठता, ‘तुम इतनी धनवान हो, मैं इतना निर्धन। मैं तुम्हारे इस सम्मान का उचित पात्र नहीं हूँ।’

पथिक तनिक अधीर होकर, और फिर उस चित्र की ओर देखकर बोला, “यदि दोनों एक दूसरे से स्नेह करते थे तो फिर अड़चन ही क्या थी ? ” नवयुवती की आँखों में अब आंसू थे—“ पथिक, दुनियाँ में क्या अड़चनों की कोई कमी है ? इस पावन प्रेम के बीच समाज था, जाति थी और था सब से बड़ा धन का प्रश्न। मां-बाप की वह इकलौती बेटी थी। वे उसके लिए सब कुछ कर सकते थे, परन्तु समाज बड़ी शक्ति है मेरे भाई ! इस की मर्यादा का उल्लंघन करने के लिए बड़ा साहस चाहिए। वे इकट्ठे पढ़ा करते थे। एक साथ पढ़ने से दोनों में बड़ा मेल हो गया था। एक दूसरे के घर इनका आना जाना था। देख कर लोगों ने लड़की

के पिता से उसकी शादी करने की सम्मति दी। अच्छा वर खोजा गया। उसके समुराल वाले बड़े धनी थे। लड़की को जब यह समाचार विदित हुआ तो उस पर वज्रात हो गया। उसने माँ से लिपट कर कहा, ‘मां, मेरी प्यारी मां, मैं शादी नहीं करूँगी।’ भोली माँ अपनी बेटी की कोमल भावनाओं की सूक्ष्मता को न अनुभव करके, उसे पुचकारते हुए बोली—‘बेटी, भले घर की लड़कियाँ ऐसी बातें नहीं किया करती।’

वह लड़की चित्रकार थी। और जब वे इकट्ठे पढ़ा करते थे, तो उसने उसका चित्र बनाने के लिए उस लड़के से अनुमति किया था और वह उसका चित्र बना रही थी। जब वह दूसरे दिन चित्र की सिटिंग Sitting देने के लिए उसके यहां आया तो उसने सभी बातें उसको कह दीं। उसकी बातें सुन कर लड़के की आँखों में आंसू भर आए और चेहरे का रङ्ग उड़ गया। उसकी बातें सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ और धीरे से बढ़बड़ाया, प्रेम त्याग चाहता है।’ जैसे अपने भावना-जगत को कर्तव्य की पाँव गाथा सुना रहा हो। परन्तु दिल ही तो है। यह कहते ही उसके हृदय का बांध टूट गया।

भावनाओं ने कर्तव्य पर विजय पाई, और वह लड़की उसके आँसू पोंछने को लपकी। उसने हाथ बढ़ाया ही था, कि ऊपर से उसके पिता आ गए। हा दुर्भाग्य ! यह कैसा अनर्थ ! वह पहले भी आया करते थे। परन्तु वह सदैव पुत्री को चित्र बनाने में व्यस्त पाते और लड़के को वहां बैठे। समाज अनेकों बातें इस विषय में बनाता था परन्तु एक तो उनका पितृ-स्नेह और दूसरे उन दोनों के परस्पर व्यवहार की पावनता, सदैव उन्हें अपना मुँह बन्द रखने के लिए बाधित रखते थे। परन्तु आज यह आँसू पोंछने का दृश्य देखकर उनकी दबी हुई भावनाएं जागृत हो उठीं। वे क्रोध से पुकार उठे, ‘कलंकिनी, तुमने मेरा नाश कर दिया। मैं समाज की बातें सुनकर अनसुनी

कर देता हूँ, परन्तु अब देखा अनदेखा कैसे कर सकता हूँ ?' वह पिता जी के बदले हुए तेवर देख कर शिला की भान्ति मूक तथा स्पन्दहीन खड़ी थी । अरुण उठा और उसने पिता जी के चरणों पर अपना सिर रख दिया, 'मैं अपराधी हूँ, मुझे क्षमा कीजिए ।' पिता जी ने बड़ी निर्दयता से अपने पैर खींच कर उसके सिर पर लात मारी । अरुण ने सब कुछ चुपचाप सह लिया । सच्चे प्रेम में बड़ी सहन-शक्ति होती है, पथिक ! वह चुपचाप नीची आँखें किए घर लौट गया । हाय, ऐसे कोमल लणों का इतना कड़वा अनुभव !"

इन बातों को सुन कर पथिक का संशय निश्चय में परिणत होता जा रहा था, और उसकी आँखों में आंसू उमड़ आए थे ।

नवयुवती अपनी धुन में कहती ही जा रही थी—
"वह बड़ी नावुक थी । अपने पवित्र आचरण पर यह झूठा आरोप न सह सकी । उसकी आत्मा ने उस घर में रहना अस्वीकार कर दिया । जब वह छोटी थी तो अपनी दादी से सुना करती थी कि यहां दूर पहाड़ में उनके एक सम्बन्धी रहते हैं । आरम्भ से ही प्रकृति के प्रति अनुराग होने के कारण, उसने अनेकों बार वहाँ जाने की इच्छा प्रकट की थी । इस दुःख के समय में उसे बार बार यही ध्यान आता था और वह घर त्याग कर साथ में एक नौकरानी को ले कर, जो उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय

सम्भती थी, वहाँ चली गई । अपने पिता की विशाल सम्पत्ति में से यदि वह कुछ साथ लाई थी तो केवल रेखांकित चित्र । वही उसकी सम्पत्ति थी । वह घर छोड़ कर चली गई ।" पथिक ने घबरा कर उस चित्र की ओर देखा और गुनगुना उठा, "राजू"

उसने सुना नहीं और कहती गई— "अब उसे वहाँ कोई दुःख नहीं है, क्योंकि प्रेम त्याग चाता है । परन्तु जब उसके भैया, जिनको उसने अभी देखा भी नहीं है । आएंगे और यह दुःख समाचार सुनेंगे तो कैसे सह सकेंगे ? वह तो उस घर में पानी पीना भी स्वीकार नहीं करेंगे । यदि मेरे भैया इंग्लैंड में और कुछ दिन न रुकते, और निश्चित समय पर पहुँच जाते तो ऐसा अनर्थ कभी न होने पाता । माता-पिता को पुत्र वधू के आने पर बेटी मिल जाएगी । पर तु भैया को वहिन न मिल सकेगी । वह कहने ही वाली थी कि वर उसे "राजू" का कर बुलाते थे कि इतने में पथिक अपनी इस खोज का सफलता पर प्रफुल्लित हो कर आनन्द से पुकार उठा, "राजू !"

राजेश्वरी यह शब्द सुनते ही पुकार उठी, "भैया और इन के कन्धे पर सिर रख कर, समक्ष पड़े हुए चित्र की ओर देखकर, फिर अपने भैया की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखने लगी, जैसे पूछ रही हो, "क्या भैया ! मैं सबकुछ ही झलंकिनी हूँ और वह अपराधी ?"

(पृष्ठ १४ का शेष)

किन्तु चौगुनी शक्ति नष्ट नहीं होगी । प्रतिमन का हिसाब लगाने पर तो अधिक होगी ही नहीं । किन्तु यदि दीर्घकालीन दृष्टि से इस पर विचार करें तो इसका उत्तर नहीं है । जब एक एकड़ भूमि में १६ मन मक्की के स्थान पर ७६ मन मक्की उत्पन्न की जाती है तो ३ एकड़ भूमि खाली रह सकती है और उसमें अन्य फसलें बोई जा सकती हैं । यदि खाली भूमि में १ या २ एकड़ में लेसदार पत्तों वाली फसलें लगाई जायें तो आगामी फसलों के लिये वह भूमि अधिक उत्तम हो जायेगी ।

किसी को इस सम्बन्ध में चिन्तित नहीं होना चाहिये कि कृषि उत्पादन में वृद्धि हो जाने से सड़े हुए पदार्थों तथा नाइट्रोजन की कमी हो जाती है । अधिक उत्पादन तभी होता है जब अत्यन्त कुशलता के साथ खेती करने का अर्थ उपभोक्ताओं के लिये सस्ता भोजन तथा उत्पादकों को अधिक लाभ हो । और इस के साथ साथ भूमि की अधिक उर्वरा शक्ति बची रहती है । चिन्ता का समय तो वह होता है जब पैदावार दिनों दिन घटना शुरू हो जाती है । कोई भी उन्नत देश इस स्थिति को नहीं पहुँचा है और न ऐसा होने की सम्भावना है ।

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र० मैं भी 'प्रकाश' में छपने के लिए रचनाएं भेजना चाहता हूँ क्या आप छाप देंगे। —मधु, द्वादश कक्षा, सहारनपुर।

उ० यह बताना तभी सम्भव होता यदि रचनाएं सम्पादक के पास भेज दी होतीं ?

—दी०

प्र० मेरी कविता कब छपेगी ?

—सोम प्रकाश, कुरुक्षेत्र।

उ० इसी अंक में कहीं अन्यत्र छपी है।

—दी०

प्र० आजकल छात्र अध्यापकों का मान क्यों नहीं करते जितना पुराने जमाने में किया करते थे ?

—वेदवती, अमृतसर।

उ० शिक्षा को उन्होंने ने आजीविका का साधन बना लिया है-इस लिए। —दी०

प्र० संसार की सब से बड़ी शक्ति क्या है ?

—दीना नाथ अम्बाला।

उ० पैसा भई पैसा !

—दी०

प्र० मूर्ख कौन है ?

—सतीश कुमार, लुधियाना।

उ० वह जो हित और अहित में पहचान न कर सके।

—दी०

प्र० छात्रों को क्या करना और क्या नहीं करना चाहिए ?

—सुधा पूना।

उ० अच्छे काम करने और बुरे काम नहीं करने चाहिए।

—दी०

प्र० असफलता का सब से बड़ा कारण क्या होता है ?

—दुर्गा, लखनऊ।

उ० अपनी क्षमता पर सन्देह, परिश्रम की कमी और समय को व्यर्थ गँवाना। —दी०

प्र० क्या सचमुच चन्द्रलोक में पहुँचना संभव हो जायेगा ?

—सुनीति, पूना।

उ० कम अज कम ब्रिटेन के वैज्ञानिक ऐसा ही विश्वास रखते हैं।

—दी०

(सभी बच्चे प्रश्न भेज सकते हैं)

— : ★ : —

* बालको ! तुम भी महान बन सकते हो *

जीवन-संग्राम में थक कर बैठ जाना कायरता है !

(लेखक—श्री रामनन्दन प्रसाद सिंह जी एम० ए०)

Life is an uphill journey
And at the top rests glory.

अर्थात् जीवन एक उत्तुङ्ग पर्वत माला सदृश है और उसकी उच्चतम चोटी पर पहुँचना तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिए ।

बालको ! बड़े चलो । जीवन-संग्राम में थक कर बैठ जाना कायरता है, क्योंकि प्रगति जीवन है और अगति मृत्यु । इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो कर्मवीर अपने कर्त्तव्य पथ पर बढ़ता गया है, जिसने विपदाओं का सामना किया है, संकट की ऊँची घाटियों को लाँघने का प्रयास किया है, उसे ऊँचे से ऊँचा यश और सम्मान मिला है । तुम्हारी मंजिल में निर्धनता पहली रुकावट है जिसके नीचे सारा भारत कराह रहा है, किन्तु क्या यह निर्धनता तुम्हारा मार्ग अवरुद्ध कर सकेगी ? कदापि नहीं । अगर तुम्हारा मनोबल दृढ़ है, अगर तुम्हारा साहस प्रबल है, तो कोई भी बाधा तुम्हारे सामने टिक नहीं सकती । तुम्हें राह बताने के लिए अनेकों उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनकी राह पर चल कर तुम भी महान

बन सकते हो । अंग्रेजी साहित्य का प्रसिद्ध साहित्यकार गोल्डस्मिथ कभी पैसे पैसे का मुहताज था और भिक्वाटन द्वारा ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति किया करता था, किन्तु उसका मनोबल और मस्तिष्क भिन्न नहीं था । अपनी साधना में वह लगा रहा और एक दिन गरीबी उसके मार्ग को रोक नहीं सकी । 'डेजर्टेड विलेज' और 'विकार आफ वेकफील्ड' लिख चुकने के बाद साहित्यकार के रूप में वह विख्यात हुआ । मृत्यु के उपरान्त उसका शव वहाँ दफनाया गया, जहाँ राजा महाराजाओं के शव दफनाए जाते हैं । उन्नति के साधनों से वंचित फर्गुसन गडरिये का पुत्र था और बड़ी गरीबी के साथ जीवन-यापन करता था, आर्कराइट हजामत बना कर अपना निर्वहण करता था और गारफील्ड तो पायजामे में पिन लगा कर पढ़ने जाया करता था, किन्तु आगे चल कर वही फर्गुसन आकाश में तारों की दूरी नाप सकने में सफल निकला, आर्कराइट ही रेल का आविष्कर्ता सिद्ध हुआ

(शेष पृष्ठ ३० पर देखें)

★ बढ़े चलो ★

(ब्र० सोम प्रकाश, गुरुकुल, कुरुक्षेत्र)

मृत-भूमि के लिए
नये स्वदेश के लिए
वीर-रत्न जल उठो
भिड़े चलो बढ़े चलो ॥१॥

अमरत्व वायु-यान पर
स्वतन्त्रता की आन पर
वीर 'सोम' कट मरो
बढ़े चलो मिटे चलो ॥२॥

स्वतन्त्र दीप देश के
स्वदेश प्रेम के लिए
अखंड ज्योति जल उठो
बढ़े चलो कटे चलो ॥३॥

प्रचण्ड वायु वेग से
अमेघ अन्धकार में
अमर ज्योति जल उठो
बढ़े चलो बढ़े चलो ॥४॥

स्वतन्त्र प्रेम गेह से
बना चिराग देह से
'प्रेम से गले मिलो'
बढ़े चलो मिटे चलो ॥५॥

द्विखण्ड माता हो चुकी
तुम सो रहे हो अब तलक
ऐक्य के लिए बढ़ो
'सोम' आगे बढ़ चलो ॥६॥

यह भी खूब रही !

अमेरिका के नीग्रो शान्ति नोबल
प्राईज़ विजेता डा० रॉल्फ बुँच ने अपने
एक भाषण में बताया है कि जब सम्वाद
दाता पुरस्कार मिलने का समाचार लेकर मुझे
मिलने और वधाई देने आये तो उन में से एक
ने मेरे ७ वर्षीय पुत्र से प्रश्न किया—'तुम्हारे
पिता शान्ति के संस्थापक हैं-तुम जानते
हो क्या ?'

वह बोला—'मैं तो उन्हें Peace Maker
(शान्ति का संस्थापक) नहीं समझता।'।
सम्वाद-दाता ने विस्मय से बालक से पूछा
—'क्यों ?' बालक ने उत्तर दिया कि
वह जब मुझे और मेरी बहिन जोन को
लड़ने से नहीं रोक सकते तो उन्हें मैं
पीस मेकर कैसे जान लूँ ?'

यह सुन कर डा० बुँच हंस पड़े और
उनके मुँह से निकल गया—यह भी खूब रही !

'शमशीर एक हाथ में-
अशोक चक्र साथ में'
आन के लिए मरो
कटे चलो मरे चलो ॥७॥

स्वतन्त्र देशी आन पर
मृत-भूमि शान पर
'समाप्ति अपनी कर चलो
वीर ! आगे बढ़ चलो ॥८॥

★ कासाविआनका ★

लोहे का दिल रखने वाले एक आज्ञाकारी बालक की कहानी

लगभग डेढ़ सौ वर्ष की बात है। अफ्रीका महाद्वीप के मिस्र देश में नील नदी के किनारे अंग्रेजों और फ्रांसीसियों में बड़े ज़ोरों से लड़ाई चल रही थी। फ्रांसीसी फौज के एक बड़े अफसर के साथ उसका बेटा भी था जिसका नाम था कासाविआनका। कहने को वह दस बरस का बालक था किन्तु अपने पिता की आज्ञा तुरन्त मानता था। पिता की आज्ञा टालना वह जानता ही न था। इसलिए उस का पिता उस से बहुत प्रसन्न रहता था।

एक दिन जब उसका पिता लड़ाई पर जाने लगा तब कासाविआनका से बोला—‘देखो बेटा! जहाज़ पर बड़ी होशयारी से रहना पड़ता है। ऐसी न हो कि मैं तो लड़ाई पर चला जाऊँ और तुम यहां ऊधम मचाओ इधर उधर उछलते फ़िरो। बस आराम से अपनी जगह पर रहना, इधर उधर न जाना।’ यह कह कर उसका पिता लड़ाई पर चला गया और कासाविआनका अपने कमरे में बैठ कर किताबों के पन्ने उलटने लगा।

उधर लड़ाई में उसका पिता मारा गया पर कासाविआनका को उसकी सूचना न मिली। इधर बड़े धमाके से तोप का गोला

आकर गिरा और जहाज़ में आग लग गई। देखते २ धायँ २ कर जहाज़ जलने लगा। चारों ओर लाल लपटें उठने लगीं और सारे आकाश पर धुआँ ही धुआँ भर गया। सब लोग अपनी २ जान लेकर भाग निकले पर वह बालक अपने कमरे के सामने रेलिंग पकड़े खड़ा ही रहा, उस से मस न हुआ।

यह देख कर लोगों ने आवाज़ें देनी शुरू कीं—‘भाग, भाग! अरे लड़के भाग वहां खड़े होकर अपनी जान क्यों देता है?’ परन्तु कासाविआनका ने हर बार एक ही उत्तर दिया—‘भागना कैसा? मैं यहां से हिल भी नहीं सकता। मेरे लिए पिता जी यही आज्ञा दे गये हैं।’

इस के साथ २ वह अपने मन में सोचता था—पिता जी मुझे यहीं ठहरने की आज्ञा दे गये हैं उनकी आज्ञा के बिना कहीं आना जाना ठीक नहीं, यदि वह आ गये और मुझे यहां न पायेंगे तो अप्रसन्न होंगे। जब वह आज्ञा देंगे तभी यहां से हटूँगा।

और लपटें बढ़ती गईं। यहां तक कि देखते देखते कासाविआनका के पास आ पहुँची परन्तु वह सपूत वहां से न हिला।

★ थर्ड ईयर फूल ★

[लेखिका :— कु० विजय हितैषी, प्रभाकर (छात्रा) जालन्धर]

हमारे चाचा जी ने इसी वर्ष एफ० एस० सी० की परीक्षा फर्स्ट डिवीजन में पास की। आगे उनका विचार रुड़की इंजिनियरिंग कालेज में दाखिल होने का हुआ। और जाकर जनाव ने टेस्ट दे दिया। टेस्ट में अच्छे रहे, क्योंकि लायक काफ़ी हैं। पर आज

जब आग से उसका शरीर झुलसने लगा तब उसने धवरा कर आवाज़ लगाई—'पिता जी ! पिता जी !! आप कहाँ हैं। देखिये न आग मेरे शरीर को जलाने के लिए झपटती आ रही है। सब लोग अपनी जान ले कर भाग रहे हैं। अकेला मैं ही इन लपटों में घिर गया हूँ। अब मेरे लिए आपकी क्या आज्ञा है ? हाय ! हाय !! आप उत्तर क्यों नहीं देते ? क्या आप यही चाहते हैं कि इस आग में जल कर भस्म हो जाऊँ।

किन्तु उसे आज्ञा देने वाला वहाँ कौन था ? उसका पिता तो पहले ही संसार छोड़ चुका था, अन्त में उस कोमल बालक को आग की लपटों ने चारों ओर से घेर लिया। बेचारा थोड़ी देर में तड़प तड़प कर वहीं जल मरा। राख का ढेर हो गया परन्तु वह अपनी जगह से तिल भर भी न हटा। ऐसा था लोहे का हृदय रखने वाला वह बालक !

के युग में मनुष्य की योग्यता कहीं साथ नहीं देती। किसी भी काम को बनाने के लिए या तो मुट्ठी गरम करने के लिए पैसा चाहिए या फिर किन्हीं बड़ों की सिफारिश। उन्होंने भी जमाने की रीति निभाई और किसी तरह सिफारिश से सीट को पाने में सफल हो गए। डेली पेपर्स में भी जब नाम निकल गया तो निश्चय हो गया और मित्रों को वायदे के अनुसार फीस्ट भी उसी दिन खिला दी, जिस दिन कि अखबारों में नाम निकला। नाम पढ़ कर सम्बन्धियों आदि व मित्र जनों की बधाइयाँ भी आने लगीं। हम भी बधाई पहुँचा आये। अब जब १०-१५ दिन तक बुलावे का कोई पत्र इनके नाम न पहुँचा तो उन्हें कुछ चिन्ता हुई और जाकर पता लेने का विचार किया। वहाँ पहुँच कर पता चला कि आपकी सीट आपसे किसी बड़े सिफारिशी को मिल गई है तो आप पर घड़ों पानी पड़ गया। बेचारे बड़े उदास हो गए और दुखित भी हुए अपनी समाज की दशा पर हम सब ने कहा—आप यही समझ कर सबर करो कि आप का थर्ड ईयर फूल बना है। इस बात को अब कई मास बीत गए हैं। अब तो वह स्वयं ही इस बात को स्मरण करके हंसते हैं।

★ समय पालन ★

मनुष्य उन्नति पथ पर बढ़ना चाहता है परन्तु उन्नति पथ पर बढ़ना कोई बच्चों का खेल नहीं है। इस के लिए परिश्रम की आवश्यकता है। और वह आवश्यकता तभी पूर्ण हो सकती है जब कि समय का पालन हो।

आप मुझ से पूछ सकते हैं कि समय पालन से क्या अभिप्राय है? तो इसके उत्तर में आप से यही कहूँगा कि समय पालन कोई फल नहीं है जो वृत्त पर चढ़ कर प्राप्त कर लिया जाय। जो लोग समय पालन करते हैं उनके लिए यह कीर्ति का कारण है। एक दिन का कार्य क्रम बना लें और यह निश्चय कर लें कि किस समय पढ़ना है और किस समय खेलना है और किस समय सोना है तो बस यह समय पालन हो गया। वास्तव में समय पालन ही जीवन है।

यदि हम अपने प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि जिस किसी ने भी उन्नति की है उस ने समय पालन ही से की है। इसी प्रकार प्राचीन समय में जिस किसी ने भी शत्रु पर विजय प्राप्त की है उसने समय पालन ही से है।

कैसा भी कठिन कार्य क्यों न हो, हम उस पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि हम अपने समय का ठीक प्रकार से पालन करें तो वही हमारे लिए धन है जैसे कि अंग्रेजी की

हमारा भारतवर्ष

प्यारा प्यारा भारतवर्ष हमारा

हम सब का यह जन्म स्थल है,
यही हमारा पुण्य स्थल है।
यहीं बहती है गंग की धारा,
प्यारा २ भारतवर्ष हमारा। १।
उत्तर में सुशोभित हिमचल,
शिविर का काम भी देता है।
अकथनीय है दृश्य न्यारा,
प्यारा २ भारतवर्ष हमारा। २।
यहीं हुए थे 'राघव' अपने,
'बुद्ध' ने देखे अलौकिक सपने।
शीश इसी पे 'गुरु पुत्रों' ने वारा,
प्यारा २ भारतवर्ष हमारा। ३।
यहीं हुए 'कृष्ण' वनमाली,
यहीं विचरे अर्जुन धनुःधारी।
यहीं लड़े ऊदल अरु आल्हा,
प्यारा २ भारतवर्ष हमारा। ४।
वीरों की हां खान यही है,
हम सब की हां शान यही है।
यहीं धधकी थी जौहर ज्वाला,
प्यारा २ भारतवर्ष हमारा। ५।
—'राकेश' प्रभाकर, आदमपुर।

एक कहावत में लिखा है 'Time is Money'
इस लिए समय के मूल्य को जानते हुए हमें
समय का पालन करना चाहिए।

—राजन 'भास्कर' गुड़गाँव।

★ किस से क्या सीखो ? ★

(१)

फूलों से नित हंसना सीखो
भौरों से नित गाना ।
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना ॥
सीख हवा के झोंकों से लो
कोमल भाव बहाना ।
दूध तथा पानी से सीखो
मिलना और मिलाना ॥

(२)

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना ।
लता तथा पेड़ों से सीखो
सब को गले लगाना ॥
वर्षा की बूँदों से सीखो
सब को सरस बनाना ।
मेंहदी से सीखो सब पर ही
अपना रंग चढ़ाना ॥

(३)

मछली से सीखो स्वदेश के
लिये प्रेम नित करना ।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो
दुख में धीरज धरना ॥
दीपक से सीखो जितना

हो सके अन्धेरा हरना ।

पृथ्वी से सीखो प्राणी की
सच्ची सेवा करना ॥

(४)

जलधारा से सीखो आगे
जीवन पथ में बढ़ना ।
और धुएँ से सीखो हरदम
ऊँचे पर ही चढ़ना ॥
सत्पुरुषों के जीवन से तुम
सीखो चरित्र गढ़ना ।
अपने से गुरु सीखो उत्तम
ज्ञान-तत्त्व का पढ़ना ॥

क्रोध

क्रोध है बहुत बड़ा शैतान ।
क्रोध से मारा जाता ज्ञान ।
क्रोध करता नरको बेभान ।
क्रोध खो देता सब मान ।
क्रोध में आँखें होतीं लाल ।
क्रोध में मुँह होता बिकराल ।
क्रोध में खूब बजाता गाल ।
क्रोध में सभी बिगड़ती चाल ।
क्रोध में नोच डालता बाल ।
क्रोध कर देता है बेहाल ।
क्रोध से जल्दी आता काल ॥

एक संक्षिप्त और शिक्षा-प्रद कहानी —

★ सर फिलिप सिडनी ★

एक समय की बात है कि फिलिप सिडनी लड़ाई में बहुत घायल हो गए। उनके शरीर पर कई गोलियां लगीं और वह निढाल होकर गिर पड़े। शरीर से रक्त स्राव के कारण निर्वलता बढ़ रही थी। सिपाही उन्हें स्ट्रेचर द्वारा उठ कर युद्धक्षेत्र से हस्पताल की ओर ले जा रहे थे। उन्हें बड़ी प्यास लग रही थी। उन्होंने ने पानी मांगा परन्तु समीप कहीं पानी न था। वे स्ट्रेचर को एक वृक्ष के नीचे रख कर पानी की खोज में निकले बहुत दूर से एक सिपाही पानी का एक प्याला लाया। अब उनकी अवस्था प्यास के कारण ऐसी हो चुकी थी कि यदि कुछ क्षण और उन्हें पानी न मिलता तो उनकी मृत्यु अवश्यम्भावी थी। जूँ ही पीने के लिए उन्होंने ने पानी का प्याला मुँह की ओर किया एक और ज़रूमी सिपाही की 'पानी' 'पानी' की आवाज़ उन के कानों में पहुँची वह पानी के बिना तड़प रहा था। सर फिलिप सिडनी ने पानी लाने वाले सिपाही से कहा—'उस सिपाही की आवश्यकता मुझ से अधिक है अतः यह पानी उसे पिला दो' वह सिपाही तो बच गया लेकिन सर फिलिप

सिडनी स्वयं मर गया !

बच्चो! मरते दम तक नेकी करो।

★ चाचा जी ! चाचा जी !! ★

शाम का समय था, पिता जी काम समाप्त कर के ही आये थे। मेरी छोटी पाँच वर्षीया बहिन चित्रा खड़ी थी। इतने में मेरे ताऊ के लड़के के पुत्र मेरे पिता जी के पास आये और खेलते हुए चाचा जी ! चाचा जी !! कह कर पैसा माँगने लगे। मेरे पिता जी ने उन्हें प्यार से एक २ पैसा दिया। सब खुशी खुशी लौट गए। अचानक मेरी बहिन चित्रा ने पिता जी को उस समय पाजामा पहने हुए देखा। दूसरे दिन नहा धोकर जब उसे मेरे माता जी कपड़े पहनाने लगे तो वह कहने लगी 'मैं नहीं अज कच्छी कुच्छी पौनी, मैं तां पजामा पौना।' इस पर माता जी ने उसको पाजामा पहिना दिया। शाम को आगे की तरह वे लड़के आए और पैसा लेकर जाने लगे तो वह कहने लगी—'देखो मैं भी पजामा पा के चाचा जी बन गई। कल तों पिता जी कोलों पैसे न मँगया करो। हुन तो मैं तुहाडा चाचा जी ऐं।' इस पर सभी को हँसी आगई।

—नरेन्द्र हितैषी।

★ पहेलियां ★

(ले० कु० सन्तोष पाँचवीं श्रेणी पालमपुर ।)

१. वह कौन सी चीज़ है जो हमारी है परन्तु लोग इसका ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं।

उत्तर= नाम।

२. वह कौन सी चीज़ है जिसे हम खाते हैं पर पेट या मुँह में नहीं डालते।

उत्तर= चपत या मार।

३. वह कौन सी चीज़ है जो हमारे सिर पर पड़ती है पर चोट नहीं लगती।

उत्तर= धूप।

४. बताओ वह कौन सी वस्तु है जो सदा बढ़ती रहती है।

उत्तर= लोभ।

५. बताओ वह कौन सी वस्तु है जो सदा घटती रहती है।

उत्तर= आयु।

६. एक नगर में आग लगी है दूसरे नगर पानी, तीसरे नगर में बांस लगे हैं। चौथे नगर में धुआँ।

उत्तर= हुक्का।

फ्लोरेन्स नाईटिंगेल

का नाम सुना है आप ने ? नहीं सुना होगा किन्तु रैडक्रास का नाम तो सुना होगा। यह संस्था उसी की स्थापित की हुई है। स्त्री अबला नहीं है।

★ मुसाफिर ★

मेरा सफर बहुत लम्बा है और मेरा रास्ता दूर दराज़। रोशनी की पहली किरण के रथ पर सवार होकर आया और बहुत से वीरानों का सफर करता हुआ गुज़रा। मेरे पैरों के चिह्न कई सितारों पर बाकी हैं।

अपने आप तक पहुँचने के लिए तुम्हें बहुत लम्बा सफर करना पड़ेगा। एक सीधा सादा नगमा निकालने के लिये बहुत सी पेचीदा रागिनियां सीखनी पड़ेंगी।

मुसाफिर अपने घर पहुँचने की कोशिश में हर बेगाने के दरवाज़े पर दस्तक देता फिरता है और मनुष्य को अपने आन्तरिक तीर्थ पर पहुँचने के लिए तमाम बैरूनी दुनियाओं में मारे मारे फिरना पड़ेगा।

मेरी आंखें दूर व नज़दीक के तमाम दृश्य देख चुकीं, तब जाकर मैं ने आंखें बन्द कीं और मैं कह उठा—“यहां मैं ने तुम्हें पा लिया।”

—टैगोर

साईकल पर संसार यात्रा

दो जर्मन युवक गत सितम्बर '५२ में जर्मनी से साईकलों पर संसार यात्रा पर चले थे। वह दो मास तक पाकिस्तान की यात्रा कर के अमृसर से होते हुए जालन्धर पहुँचे। उन में से एक बनारस में संस्कृत पढ़ेगा।

★ ऋषि-गान ★

ऋषि दयानन्द की जीवनी दोहों में

[रचयिता: हितैषी अलावलपुरी]

(३१८)

राजपूतों के लिये, चाहा दे' खुलवाय
एक गुरुकुल इस जगह, जाहिर की निज राय

(३१९)

हिन्दी को वह मिल गया, जो उर्दू को मान
कहा श्यामल दास से, सुनो बात धर कान

(३२०)

किसी खेत में डालना, जो मम अस्थि होय
मरने पर न बन सके, चिह्न समाधि कोय

(पृष्ठ २२ का शेष)

और गारफील्ड ने अमेरिका का प्रेसीडेंट बन
कर अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल
दिया। वही महान शेक्सपियर, जिस पर
अंग्रेजी साहित्य को नाज़ है, कभी दर-दर
मारा फिरता था, किन्तु अपनी लगन और
कर्तव्यनिष्ठा के कारण यही बालक विलियम
शेक्सपियर के रूप में संसार के सामने आया।
उसकी गणना यूरोप के सर्वश्रेष्ठ कवि और
नाटककार के रूप में हुई। इस लिए
बालको ! स्मरण रखो, निर्धनता तुम्हारा
रास्ता रोक नहीं सकती, किन्तु तुम में महान
बनने की, उत्कट लालसा तो होनी ही
चाहिए।

(३२१)

शाहपुर आ चित्तौड़ से, नाहिरसिंह नरेश
ठहरे आकर प्रेम से, पा उनका सन्देश

(३२२)

मनुस्मृति के पठन का, किया शुरू अभ्यास
एक ब्राह्मण को दिया, स्वामी जी सन्यास

(३२३)

था ईश्वरानन्द वह, मासिक वृत्ति पाय
चला गया प्रयाग को, करने को स्वाध्याय

(३२४)

वेद भाष्य करते रहे, तथा वेद उपदेश
जोधपुर महाराज का, मिला वहीं सन्देश

(३२५)

भक्त जनों ने मिल कहा, वहां आप न जायं
कुटिल वृत्ति जीव हैं, दुःख न वे पहुँचायं

(३२६)

अंगुलियों की वृत्तियां, समझे यदि जलायं
फिर भी सत्य कथन से, कभी बाज़ न आयं

इकीसवां अध्याय

[वेश्यागामी नरेश को फटकार]

ऋषि बुलाने के लिये, रथ हाथी भिजवाय
शय्या गाड़ी ऊँट भी, चार सिपाही आय

(३२७)

फैजुल्ला उद्यान में, आसन ऋषि जमाय
किया स्वागत धूम से, राजन प्रेम दिखाय

(३२८)

रक्षा को निश्चित किये, सैनिक पहरेदार
राव राजा तेज सिंह, लीनो सेवा भार

रक्त रक्षक

चने के गुण और लाभ

चना परमात्मा की एक अद्भुत देन है। इसकी तासीर सर्द है। यह रक्त और पित्त के विकारों को दूर करता है। न केवल कफ नाशक है बल्कि कोढ़ भी इस से दूर हो जाता है।

रक्त शोधक

चना रक्त शोधक भी है और बल वर्धक भी और पित्त को भी दूर कर देता है। किन्तु भोजन तत्व के विचार से बहुत उपयोगी चीज़ है। बल वर्धक होने से व्यायाम प्रेमी चने की दाल भिगो कर खाते हैं। वीर्य सम्बन्धी सभी रोग जैसे सृजाक, स्वप्न-दोष और जरियान आदि को दूर करने के लिए चना बहुत उपयोगी है। यदि त्रिफले में भिगोए हुए चने को इन रोगों का रोगी प्रति दिन प्रयोग में लाये तो यह चना अमृत है।

फुलबहरी और कोढ़

यदि चने के दो सौ के लग भग देसी दाने लेकर उन्हें डेढ़ तोला त्रिफला के साथ १२ तोले पानी में २४ घण्टे भिगो रखने के अनन्तर २१ दिन दो, दो करके यही चने चबाये जायं तो स्वप्न-दोष जाता रहता है।

चरण अपना आगे बढ़ाता चला जा !

चरण अपना आगे बढ़ाता चला जा ।
सदा प्रेम के गीत गाता चला जा ॥
तेरे मार्ग में वीर ! काँटे बड़े हैं ।
लिये तीर हाथों में वैरी खड़े हैं ॥
बहादुर तू सब को मिटाता चला जा ।
तू है वीर-वंशी ऋषी-कुल का बालक ॥
प्रतापी यशस्वी सदा दीन पालक ।
तू सन्देश सुख का सुनाता चला जा ॥
भले आज तूफान उठ कर के आये ।
बला पर चली आ रही हों बलाएं ॥
युवा वीर है दनदनाता चला जा ।
जो विछुड़े हुए हैं उन्हें तू मिलाता चला जा ॥
जो सोये पड़े हैं उन्हें तू जगाता चला जा ।
तू आनन्द डंका बजाता चला जा ॥



—आनन्दमुनि

★ रक्षा मन्त्री का अवसान ★

भारत के रक्षा मंत्री श्री गोपाल स्वामी
आयंगर की १० फरवरी को प्रातः ३ बजे
७१ वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई। उनका
शोक सारे देश में मनाया गया।

दिल की खुशकी और गरमी के लिए भीगे
हुए चने राम बाण हैं। चूँकि चने रक्त
शोधक हैं इस लिए कोढ़, फुलबहरी और
आतशक आदि रोगों की अवृक औषधि
सिद्ध होते हैं। केवल चने को प्रति-दिन खाने
से कोढ़ और फुलबहरी के रोगी स्वस्थ हो

जहां छात्र अध्यापकों की परीक्षा लेते हैं

ड्यूक यूनिवर्सिटी (उत्तरी कारोलिना-अमेरिका) के प्रोफैसर्सों के कार्य सम्बन्धी रिपोर्ट उनके छात्रों द्वारा ली गई परीक्षा के आधार पर तैयार की जाती है। छात्रों से अपने अध्यापकों के बारे में ये बातें बताने को कहा जाता है (१) क्या तुम्हारा अध्यापक अपने विषय को युक्ति युक्त और स्पष्ट तौर पर पढ़ाता है? (२) क्या सारी कक्षा ध्यान से सुनती है? (३) क्या उस में उपयोगी और काल्पनिक उदाहरण देने की क्षमता है? (४) क्या कक्षा के बाहिर कमजोर छात्रों को अतिरिक्त समय प्रदान करता है? (५) क्या उसे अपने विषय पर पूरा अधिकार प्राप्त है? (६) क्या वह अपने काम में पूरी दिलचस्पी लेता है?

छात्रों को कहा गया था कि वह उन्हें ० से १० तक अंक दें और आवश्यक समझे तो अंक देने के पक्ष में युक्तियां भी दें। गणित के एक प्रोफैसर को उस के एक छात्र की यह रिपोर्ट प्राप्त हुई—“मेरी सम्पत्ति में मि० ‘क’ उच्च गणित पढ़ाने के अयोग्य है। वह केवल साधारण योग्यता के छात्रोंको सन्तुष्ट कर सकता है। यद्यपि वह कक्षा के बाहिर समय देने को सदैव तत्पर

रहता है। तथापि वह अपनी बात स्पष्टता और सरलता से समझा सकने में अस्मर्थ दीखता है। वह कुछ अधिक योग्य छात्रों से रिशायत करता है। प्रारम्भिक गणित पढ़ाने के लिए उपयुक्त सिद्ध होगा।”

एक दूसरे छात्र ने लिखा—‘जो कुछ मैंने सीखा है वह अपनी कक्षा में नहीं अपितु अपनी पुस्तकों से।’

★ आप नहीं जानते ★

पानी से कोयला

खानों के इंजीनियरों का कहना है कि उन नदियों में से जो कोयले की खानों के समीप बहती हैं कोयला निकाला जा सकता है। मनमौथशायर (ब्रिटेन) की नदी रिमनो से प्रतिवर्ष ५० हजार टन कोयला निकाला जाता है।

‘गणेश’ का जन्म

इन्दौर का समाचार है कि एक निकट वर्ती ग्राम में एक हरिजन स्त्री ने एक ऐसे लड़के को जन्म दिया है जिसकी नाक हाथी जैसी है और दो दान्त भी बाहिर निकले हुए हैं। लोग इसे गणेश जन्म समझ कर भारी संख्या में दर्शनों को आ रहे हैं।

—टोकियो में एक ३ मास की लड़की लड़का बन गई है।

गृह-विज्ञान

घरों में छोटी मोटी बीमारियां बिना डाक्टरों को फीसें दिये और उनकी महंगी दवाएं खाये ठीक हो सकती हैं। नीचे हम कुछ एक का वर्णन करते हैं :-

१. आंखों का दर्द

सेंधा निमक, गेरु, रसौन्त और हरड़ को लेकर पानी में धिसें फिर किसी बर्तन में गर्म करके पलकों पर लेप करें। इस से आंखों का दर्द और सुरखी दूर होती है।

२. बच्चों का बुखार

नागर मोथा, हरड़, नीम की छाल पेरल के पत्ते, मलहठी सब को एक-एक रत्तो घोट कर काढ़ा पिलाने से बच्चों का बुखार दूर हो सकता है।

३. बच्चों के दांत निकलना

धाम के फूल, पीपल के चूर्ण और आम के रस को सगुड़ों पर मलने से दान्त शीघ्र निकल आते हैं।

बाल उगाने के लिए

हाथी दांत को जला कर उसकी राख और रसौन्त को बकरी के दूध में पीस कर

Court Notice

In the Court of Shri Sham Lal Sahib
Senior Sub Judge, Jullundur
Appeal No. 13 of 1952

M/s. Amin Chand Bhola Nath, Tanda
Road Jullundur City through:- Bhola Nath
Prop: of the Firm Appellants.

Versus

M/s. Data Ram Bulaqi Ram, Hardware
Merchants Gandhi Road, Jhansi.

—Respondents

Appeal against the order of Shri Inderjit
Sub Judge Jullundur dated 28. 3. 52.

In the appeal above cited M/s Data Ram Bulaqi Ram respondents wilfully evade the service of the summons and their whereabouts are not known, therefore this notice is issued to M/s Data Ram Bulaqi Ram that if they donot appear in this Court on 4. 2. 53. at Jullundur, exparte proceedings will be taken against them and appeal decided in their absence.

Given under my hand and seal of the
this 21st day of Jan. 53

Seal of the court sd
Senior Sub Judge Jullundur.

No. 5437 D/ 17. 1. 50,

लड़की लड़का बन गई

टोकियो का समाचार है कि उसके एक निकट वर्ती ग्राम में एक तीन मास की लड़की लड़का बन गई है। डाक्टर का कहना है कि कोई आप्रेशन नहीं करना पड़ा।

लेप करें इस से बाल अवश्य उगेगे। २. पेखरु और तिल के फूल को पीस कर लेप करने भी बाल उग आते हैं।

चुटकुले

- १ दो देहाती एक बार मोटर लारी पर चढ़े। एक ऊपर जा बैठा किन्तु शीघ्र ही नीचे उतर आया। दूसरे ने उस के भयातुर चेहरे को देखकर पूछा—‘कहो क्या बात है तुम इतना घबरा क्यों गए ? दूसरा बोला—अजी वहां डाइवर तो है ही नहीं।’
- २ राजनैतिक नेता के सैक्रेटरी ने कहा—‘आप के नये विचारों से आपके निर्वाचकों में से कुछ आपके विरुद्ध हो रहे हैं।’ ‘कोई हरज नहीं, जब विरोधियों की संख्या ज्यादा हो जाय तब तुम मुझे बताना मैं अपने विचार बदल दूंगा।’ नेता ने कहा,
- ३ दो लड़के सड़क पर टहलते जा रहे थे कि मार्ग में उन्हें एक पैसा पड़ा मिल गया दोनों परस्पर लड़ने लगे। इतने में एक पुलिस-मैन आ गया और बोला—‘मैं दोनों का सड़क पर दंगा करके शान्ति भंग करने के अभियोग में चालान करूंगा।’ उन में से एक झटपट बोल उठा—‘हम लड़कब रहे थे। हम तो एक दूसरे को अलग कर रहे थे।’
- ४ वर्षा नहीं होती थी। गाँव वालों ने शहर से एक पण्डित जी को बुला कर वर्षा के लिए यज्ञ करवाया। दैवयोग से इतनी

वर्षा हुई कि बहुतों की फसल ही नष्ट हो गई। गाँव के एक बुद्धिमान ने कह ही तो दिया—कृषि के नियम न जानने वाले से यज्ञ करवाने का ही यह परिणाम है।

प्राचीन शिक्षा

गौरव मय भव्य भूति पूज्य पूर्वजों की स्वर्णिम भविष्य की मंजुल अरुणिमा ज्ञान मार्तण्ड ध्वंसकारी, अज्ञानतम, निहत है वेदों की ईश्वरीय-वरिमा। बुद्धिका विकास, सदाचार का प्रकाश मन-मलिनता विनाश, शुचि आर्यों की महिमा गुरुकुलीय शिक्षा दीक्षा पूर्व ऋषियों की शान्ति का सन्देश शुभ साम्य की मधुरिमा।

स्टूडेंट गवर्नमेंट

अमेरिका के कई विश्व विद्यालयों में ‘छात्रों की सरकार’ स्थापित है। छात्र अध्यापकों की रपीक्षा लेते हैं विश्व विद्यालय के प्रबन्ध के बारे में सम्पत्ति देने का उसे अधिकार है।

Get your

QUESTION PAPERS

printed at

The Prakash Printing Press
Chahar Bagh, JULLUNDUR
at Competitive Rates

वे क्या कहते हैं ?

मैं ने आपकी प्रकाश पत्रिका को पढ़ा। परिणाम—पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल है। आपकी पत्रिका छात्रों को शिक्षा प्रदान करने में सफल है और जिस उद्देश्य को लेकर पत्रिका का प्रकाशन हुआ है वह पूरा हो रहा है।

—कृष्ण चन्द्र मधु, एच० ए० वी० इंटर कालेज, सहारनपुर (यू० पी०)

‘आपकी पत्रिका को मेरे स्कूल की छात्राएं बहुत ही पसन्द करती हैं।’

—ई० ज्योवेटी प्रिंसिपल से० एन्नीस, गर्ल्स स्कूल पालमपुर।

कवि विनोद, वैद्यभूषण पं० ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य द्वारा निर्मित।

★ कुछ आवश्यक औषधियां ★

अमृतधारा—जेब में या घर में ‘अमृतधारा’ का न रखना भयंकर भूल है। मूल्य बड़ी शीशी 2½ रुपये, आधी शीशी 1½ रुपया तमूना 8 आने।

अमृतधारा मंजन—दान्तों और मसूढ़ों के लिए सर्व-श्रेष्ठ मूल्य 8 आने।

अमृतधारा अंजन—नेत्र रोगों को दूर करने और दृष्टि बढ़ाने के लिए मूल्य 1 रुपया।

किरण जवानी—वसन्त ऋतु का उपहार। बुढ़ापे और जवानी की सारी कमजोरियां दूर। मूल्य ३२ गोली 2 रुपये, दर्जा अक्वल की ३२ गोली 4½ रुपये।

तिलाई क्रीम—बाहर बरतने के वास्ते मूल्य 2 रुपये।

खार पाऊंडर—हृदय और मस्तिष्क दोनों बलवान, वीर्य पुष्ट हो। मूल्य ३२ तोला 3 रुपये।

सोमावती—स्त्रियां प्रदर (ल्यूकोरिया) से छूट कर स्वस्थ और जवान बनें। मूल्य ‘अनारी’ औषध सहित 2½ रुपये।

मीठाफल—गर्भ के तीसरे मास में केवल एक दिन खा लेने पर पुत्र ही उत्पन्न होता है। हजारों के घर पुत्र रत्नों से उज्ज्वल। लड़की उत्पन्न हो तो मूल्य वापिस। मूल्य 8 रुपये।

शोधक—स्थायी कब्ज का इलाज। आमाशय अंतर्द्वियों, नेत्र, मस्तिष्क और गर्भाशय के विकार दूर। मूल्य ३२ गोली 2 रुपये।

सारसारिष्ट-मिश्रित—उत्तम रक्त शोधक। त्वचा और लहू के सारे विकार दूर। वसन्त ऋतु में सेवन करने योग्य मूल्य 2 रुपये।

जीष्ट रस—कृमियों की पीड़ाओं, सिर दर्द, दाँत दर्द आदि को लाभकारी। निर्बलता नाशक बलकारक। मूल्य 1 रुपया।

अन्य गुणकारी औषधियों के विस्तृत वर्णन का बड़ा सूचीपत्र पारसल में भेजा जाता है।

पत्र और तार का पता—अमृतधारा, देहरादून।

विज्ञापक :—

मैनेजर, अमृतधारा फार्मसी लिमिटेड, अमृतधारा भवन,

अमृतधारा डाकघर, देहरादून, (उ० प्र०)

केवल एक मास के लिए १२॥ प्रतिशत की

विशेष रिश्नायत

हमने अपना वर्तमान स्टाक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों के निम्न-लिखित दरों पर १२॥ प्रतिशत की रिश्नायत देने का निश्चय किया है। इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आप को निराश होना पड़े।

* फुटबाल कवर *

१ टी शेप श्वेत कुर्म चमड़ा इङ्गलिश डिजायन नं० ५ कवर	१३-८-०
२ टी शेप कानपुर लैडर	१२-८-०
३ उत्तम प्रैक्टिस नं० ५ कवर १३ नग	११-०-०
४ सस्ता प्रैक्टिस नं० ५	६-८-०
५ टी शेप नं० ४ फुटबाल कवर	११-०-०
६ उत्तम प्रैक्टिस नं० (४१३ नग)	६-०-०
७ चीप (सस्ता) प्रैक्टिस नं० ४	६-०-०
८ टी शेप नं० ३ यूथ फुटबाल कवर	६-०-०
९ उत्तम प्रैक्टिस नं० २ यूथ,	५-०-०
१० बलैडर नं० ५, ४, ३ फास्ट क्वालिटी	२-०-०
११ बलैडर नं० ५, ४, ३, सैकंड ,,	१-१२-०
१२ टी शेप, थार्न-प्रूफ कुर्म लैडर वाली बाल कवर	१०-०-०
१३ पेटेंट रोज कलर वाली बाल कवर	६-०-०
१४ उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर	८-०-०
१५ यूथ साइज नं० ३ ,, ,,	७-८-०

१६ वाली बाल नैट वाटर प्रूफ

रैग्युलेशन साइज डबल टेप	६-०-०
१७ वाली बाल नैट काटन रैग्युलेशन साइज डबल टेप	८-८-०
१८ यूथ साइज वाली बाल नैट काटन	७-८-०
१९ इन्फ्लेटर (बहुत बड़ा साइज)	५-८-०
२० इन्फ्लेटर (बड़ा साइज)	५-०-०
२१ लैडर लेसिज (प्रति नग)	०-२-०
२२ विस्त (ऊंची आवाज)	१-०-०

* हाकियाँ *

२३ ३६ फुल साइज इंगलिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक	८-०-०
२४ ३६ फुल साइज औलैम्पिक	७-८-०
२५ ३३=मिडल साइज इंगलिश रबड़ बाऊंड	४-८-०
२६ हाकी बाल स्पेशल काऊन	४-०-०
२७ हाकी बाल मैच	३-८-०

नोट:—(१) इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है (२) प्रत्येक प्रकार के बूट, शूज, पुल ओवर, मफलर, जुराब भी तैयार होती हैं। (३) वजन करने की मशीनें और रबड़ की मोहरें भी तैयार होती हैं।

प्यारा लाल ऐण्ड सन्ज़ स्पोर्ट्स डीलर्ज

जालन्धर शहर (पूर्वी पंजाब)

यदि आप चाहते हैं

कि

आप के बच्चे

गली कूचों, स्कूल और कालिजों के दुष्ट विद्यार्थियों के कुसंग, सिनेमाओं के जीवन नाशक प्रचार एवं इस प्रकार के अन्य दूषित वातावरण के शिकार न हों।

तथा वे

कर्तव्य परायण नव युवक, आप के कुटुम्ब के नाम को उज्ज्वल करने वाले, देश के सच्चे नागरिक, समाज के गौरव शाली सदस्य एवं ईश्वर के दृढ़ उपासक बन सकें तो उन्हें आज ही सुयोग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा निम्न लिखित पुस्तकों को बहु संख्या में खरीद कर, इन का प्रचार कर के सात्विक दान के यश एवं पुण्य के भागी बनिये।

आचार्य भगवान् देव जी द्वारा लिखित पुस्तकें:—

- | | |
|--|----------------------|
| १ ब्रह्मचर्यामृत | [तीसरा संस्करण] (=)॥ |
| २ हमारा शत्रु, तम्बाकू का नशा | [दूसरा "] (=)॥ |
| ३ पापों की जड़, शराब | ["] (=)॥ |
| ४ व्यायाम का महत्व | ["] (=) |
| ५ राम राज्य कैसे हो ? | ["] (=) |
| ६ नेत्र रक्षा | ["] (=) |
| ७ स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा | ["] (=) |
| ८ बाल विवाह से हानियां | ["] (-) |
| ९ ब्रह्मचर्य के साधन भाग १, २, | 1) |
| १० ब्रह्मचर्य के साधन भाग ३ [दंत रक्षा] | (=) |
| ११ ब्रह्मचर्य के साधन भाग ४ [स्नान संध्या हवन ॥] | |

नोट:—हमारा विस्तृत सूची पत्र मुफ्त प्राप्त करें।

वैदिक साहित्य सदन

आर्य समाज मन्दिर, सीता राम बाजार, देहली।

क्या आप प्राचीन आर्य संस्कृति में विश्वास रखते हैं ? क्या आप श्री कृष्ण के उपासक एवं भगवद्गीता के प्रेमी हैं और उसका वास्तविक मर्म जानना चाहते हैं ? यदि हाँ तो आज ही

वैदिक गीता

(तृतीय संस्करण)

जो कि प्रसिद्ध विद्वान श्री आत्मानन्द जी द्वारा लिखा गया श्री भगवद् गीता पर सर्व सुन्दर एवं अद्वितीय भाष्य है। मंगा कर पढ़िये।

सुन्दर दुरंगी छपाई परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण, गत्ते की आकर्षक जिल्द, द्वितीय संस्करण की अपेक्षा अधिक सुन्दर होने पर भी कागज की इस मंहगाई में मूल्य केवल ३) ही रखा गया है। डाक व्यय ॥) पृथक है। तुरन्त मूल्य भेज कर अथवा वी० पी० से मंगवाइये। शीघ्रता कीजिए

पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा लिखित मनो विज्ञान तथा शिवसंकल्प मूल्य २॥)

वर्तमान द्वितीय संस्करण की थोड़ी सी प्रतियां ही शेष रहती हैं। कागज की इस अत्यन्त मंहगाई में न जाने तीसरा संस्करण कब छपे और कितना मंहगा पड़े। वर्तमान पुस्तकों पर मोहर लगा कर मूल्य बढ़ाने की हमारी नीति नहीं है। अतः इस से लाभ उठाएं। और आज ही डाक व्यय सहित ३) भेज कर, ३) की वी० पी० से अथवा स्वयं आकर दुकान से २॥) में अपनी प्रति प्राप्त कीजिए। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की अगली पुस्तक

“संध्या के तीन अंग”

होगी, जो शीघ्र छप रही है।

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	-/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and with drawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices
Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार देना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार-विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना। (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को वहां से भेजा जाता है। कारणवश देर से देर सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आग्रिम नियत है। बी० पी० से ७॥) है। विदेशों में बी० पी० नहीं जाता। पेशगी १२ शि० भेजे।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥२) के डाक टिकट भेजे।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की आवश्यकता में मूल्य में भी कमी वा वृद्धि की जा सकेगी।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जावे चाहिये। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे

५) रु० ट्वाक के लिए भेजे और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जावे।

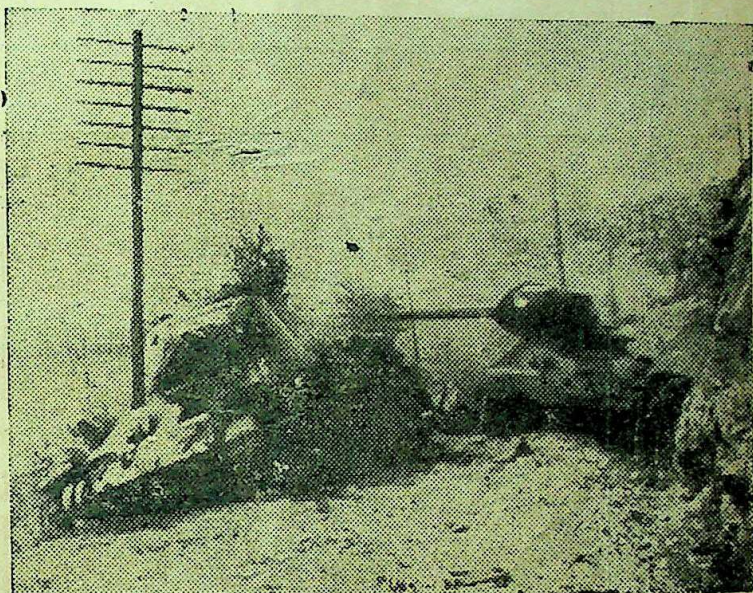
(७) बिज्ञापन केवल वही होंगे जो अरबीज त हों और जिन के दाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार है।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)



* बिजली से खेती *

भारत में तो पुराने ढर्रे पर ही फसलें बोई और काटी जाती हैं किन्तु कनेडा में सारा काम बिजली से होता है। सामने के चित्र में इसी का एक दृश्य है।



लगाडन में

ब्रिटेन में सम्राज्ञी एलिजबेथ के राज्याभिषेक की तैयारियां बड़े जोर शोर से हो रही हैं। सामने के चित्र में कुछ उन गाऊनों के नमूनों का प्रदर्शन किया गया है जो उस अवसर के लिए आवश्यक हैं। यह अभिषेक इसी वर्ष जून में होगा।





कोरिया में

दक्षिणी कोरिया के किसी हवाई अड्डे पर प्रधान आईजन हौवर सेना कमांडर मेजर जनरल सॉंग-यू० चान से तीन दिन के निरीक्षण के पश्चात विदा ले रहे हैं।



भू० पू० प्रधान ट्रूमैन की धर्मपत्नी नये प्रधान आईजन हौवर की धर्म-पत्नी का व्हाईट हाउस में स्वागत कर रही हैं। व्हाईट हाउस में नये प्रधान के साथ अब वह रहेंगी।





वार्षिक मूल्य ७) रु०

पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका

| एक प्रति ॥=)



३० मार्च

१९५३

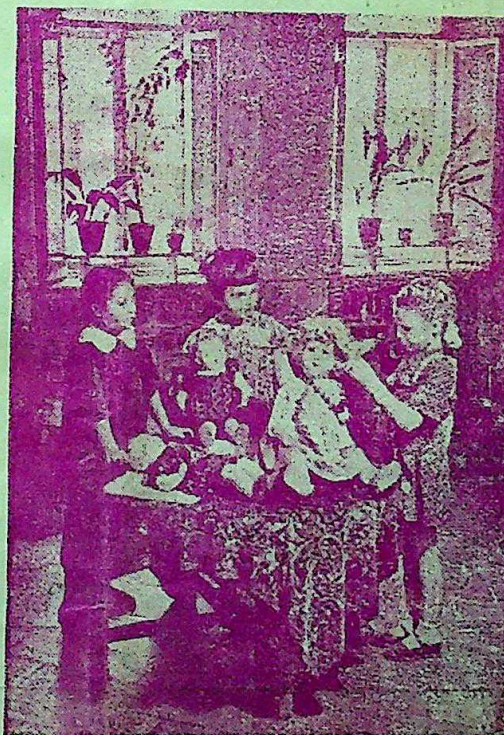


सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी



किंडर गार्टन शिक्षा प्रणाली



मास्को के एक किंडर गार्टन स्कूल में बच्चे
खिलौनों से खेलते हुए पढ़ना सीख रहे हैं।



THE

"Prakash"

Editor: L.C. HITASHI

JULLUNDUR CITY

कहां क्या है ?

- १ अपनी बात स० ३
२ याद करलो, प्रेमी ३
३ संपादकीय विचार ४
४ अपनी बोली 'च ६

१७ एक एकड़ में
७० मन मक्की १५
१८ अनोखा नेता
(कहानी) देवेन्द्र १५

५ शिकायतें और सुझाव	५ १६ जाने क्यों (कविता) सुषुमा	१८
६ सम्वाद-दाताओं के पत्र	५ २० फुलवाड़ी (प्रश्नोत्तर)	१६
७ समाचार सार	६ २१ मीठी मुसीबत विजय	२०
८ फूल और कांटे	७ २२ जौसेफ स्टालिन	२०
९ शिक्षा समाचार	७ २३ बचपन (कहानी) उषा	२१
१० जब होगा 'हिन्दू कोड पास' शालिहाम	८ २४ बालकों से (कविता)	२३
११ महान गन्तव्य (कहानी)	९ २५ भिखारिन " सरोज	२४
१२ प्रभो मुझे अपने में मिला लो 'टैगोर' १०	२६ पूर्वी अफ्रीका के राजे, वेद मंगल	२५
१३ मनुष्य पाप क्यों करता है ? (हितोपी) ११	२५ मर्यादा पुरुषोत्तम राम आत्माराम	२६
१४ काले बादल (कहानी) सीता १२	२६ उर्मिला (नाटक)	२७
१५ टगों का जादू (कविता) सुदर्शन खोसला १३	२७ यह भी खूब रही ! राजन	३०
१६ स्त्रियों की उन्नति का मार्ग श्रीमती विजय	२८ आप नहीं जानते; चुटकुले	३१-३२
लक्ष्मी पण्डित ★ १४	२९ स्वास्थ्य रक्षा ★	३३



'बोल्ड पात्रोनीयर' नामक टर्बाईन डीजल फास्ट बोट, यह ब्रिटेन का नया आविष्कार है।
यह बहुत तेज स्फ़तर है।



पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पैप्पु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत ।

प्राक्काश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४६
क्रमांक ४३

जालन्धर, फरवरी १९५३

[भाग ५ अंक २
हिन्दी]

अपनी बात

हमें इस अंक के प्रकाशन में फिर दो सप्ताह का विलम्ब हो गया, इसका हमें खेद है। किन्तु फरवरी और मार्च के दो महीनों में प्रेसों में स्कूली पुस्तकों और वार्षिक परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों के मुद्रण का इतना काम रहता है कि सभी अन्य काम रुक जाते हैं। हमारे तो खैर साधन हैं ही सीमित सरकारी पत्रिकाएँ तक, जिनको न धन की कमी है न अन्य 'कसी चीज की, वे भी लेट हो जाती हैं। उदाहरणार्थ 'प्रदीप' जो पञ्जाब सरकार की पत्रिका है; का जनवरी और फरवरी का इकट्ठा अंक हमें मार्च के दूसरे सप्ताह में मिला है। इस से हमारी विवशता आसानी से समझ में आ सकती है। किन्तु हम दो मास का अंक इकट्ठा छाप कर ग्राहकों को शिकायत का अवसर नहीं देंगे। थोड़ा विलम्ब चाहे हो जाय, छपेंगे बारह अंक ही वर्ष में। हम प्रेस स्टाफ में वृद्धि कर रहे हैं ताकि जो विलम्ब हो गया है उस से हुई क्षति की पूर्ति की जा सके और भविष्य में विलम्ब की संभावना न रहे।

आशा है हमारे कृपालु पाठक हमारे साथ सहयोग करेंगे।
—हितैषी



याद कर लो

गड़ गये जो नींव में उन पत्थरों को याद कर लो,
जो नहीं देते दिखाई।

मुक्ति का मन्दिर खड़ा है, जो कि रत्नों से जड़ा है;
आज जिसके आंगनों में, लग रहा मेला बड़ा है।
जो मिटे इसको बताते, उन कर्ों को याद कर लो।
जो नहीं देते दिखाई।

शीश है ऊँचा हमारा, खूब ऊँचा है सितारा।
हम गुँजाते जा रहे हैं, जीत का उन्मत्त नारा
कट गये जो आन के हित, उन सिरों को याद कर लो।
जो नहीं देते दिखाई।

गर्व से फूले नगर हैं गर्व मय गलियाँ डगर हैं।
दीपमाला से समुज्ज्वल सज रहे अभिराम घर हैं।
आन के हित मिट गए जो उन घरों को याद कर लो।
जो नहीं देते दिखाई।

स्वर्ण सिंहासन सुहाता, और शासन मन लुभाता।
राज करने के लिए, दल बांध कर नेतृत्व आता।
पीठ पर जिनके खड़े उन अनुचरों को याद कर लो॥
जो नहीं देते दिखाई।

—हरि कृष्ण, 'प्रेमी'।



सम्पादकीय विचार

परिवर्तन, किन्तु कब ?

कोई शिक्षा से सम्बन्धित अवसर हो, उस पर होने वाले भाषणों में शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन किये जाने का सुझाव रखा जाता है। यही नहीं कि यह सुझाव देने वाले जन-नेता ही हैं—सरकारी अधिकारी और मन्त्री भी इन में सम्मिलित हैं। किन्तु प्रश्न यह है कि यह परिवर्तन, जिस पर इतना बल दिया जाता है, कब लाया जायेगा और कौन लायेगा ? सरकार ही तो लायेगी और अब सरकार तुम्हारी, जनता तुम्हारी, संस्थाएँ तुम्हारी अपनी, फिर विलम्ब क्यों ?

लज्जास्पद !

पिछले सप्ताह इंग्लैण्ड से समाचार आया कि आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के छात्रों ने किसी समारोह के लिए अपनी सह-छात्राओं की उपेक्षा कर पैरिस विश्वविद्यालय की छात्राओं को निमन्त्रित किया। इसे ब्रिटिश छात्राओं ने अपना अपमान समझा और विरोध में प्रदर्शन किया किन्तु वह प्रदर्शन था लज्जास्पद ! वे अर्धनग्न अवस्था में लण्डन में डाऊनिंग स्ट्रीट में (जो प्रधान मंत्री का निवास स्थान है) परेड करती फिरीं। और इस तरह उन्होंने अपने सहपाठियों द्वारा किये गये अपमान से अधिक अपना अपमान आप किया।

उत्तर प्रदेश में भी

उत्तर प्रदेश में प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों का सत्याग्रह चल रहा है अध्यापक लखनऊ में कौंसिल हाउस के समीप प्रदर्शन करते हैं और पकड़े जाते हैं। सरकार का कहना है कि वह

अध्यापकों की मांगों स्वीकार नहीं कर सकती। सरकार की अपनी मजबूरियाँ हो सकती हैं किन्तु मांगों की सर्वथा अस्वीकृति से तो स्थिति सुधरनेकी अपेक्षा बिगड़ती जायेगी और विवश हो कर

सरकार को झुकना पड़ेगा क्यों न वह उस से पहले ही अध्यापकों की उचित मांगों को अभी स्वीकार कर ले ताकि छात्रों की पढ़ाई का हर्ज न हो।

५ वर्षीय शिक्षा योजना

भारत सरकार ने एक ५ वर्षीय शिक्षा योजना बनाई है। इस के अन्तर्गत सारे देश में शिक्षा सम्बन्धी समुचित सुधारों को कार्यान्वित करना अभीष्ट है।

एक शिशु केन्द्र देहली में इसी योजना के अन्तर्गत निर्मित होगा जो अपने ढंग की एक ही संस्था होगी।

सत्य बात यह है कि भारत में बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा के सम्बन्ध में जितनी उपेक्षा बरती जाती है उतनी किसी अन्य देश में नहीं। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात भी यदि हम राष्ट्रनिर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर ध्यान न देंगे तो कब देंगे ?

इनका क्या बनेगा ?

इस वर्ष भी लगभग १०,००० नव युवक मैट्रिक की परीक्षा में बैठे होंगे। इन में से २०-२५ हजार तो पास हो ही जायेंगे। मुश्किल से २५ % कालेजों में प्रविष्ट हो पायेंगे। शेष १५-२० हजार युवकों का क्या बनेगा ? प्रति-वर्ष इतने युवक बेकारों में वृद्धि करते हैं। सरकार इनके लिए कुछ सोचे ! और उन्हें अपनी आजीविका कमाने के योग्य बनाने का प्रबन्ध करे। आशा है कि हमारी यह अपील बहरे कानों पर न पड़ेगी।

हीं कर
जबूरियों
सर्वथा
अपेक्षा
हो कर
से पहले
स्वीकार
हो।

योजना
में शिक्षा
करना

योजना के
की एक

क्यों के
बन्ध में
किसी
होने के
महत्त्व-
को कब

युवक
में से

मुशकिल
में। शेष
प्रति-वर्ष
सरकार
जीविका
आशा है
गी।

इस बार मैट्रिक के
अंग्रेजी पेपर (ए)
के अनुवाद में जो
पंजाबी भाग दिया
गया था उस में
बहुत अशुद्धियां थीं।

वाक्यों की रचना भी ठीक न थीं। ऐसा जान
पड़ता है कि पेपर सैट करने वाले को पंजाबी
का प्रारम्भिक ज्ञान भी नहीं। न जाने यूनिवर्सिटी
के अधिकारियों ने भी क्यों उसे शुद्ध छापने पर
ध्यान नहीं दिया ?

अम्बाला।

—एक हैडमास्टर

ड्राइंग और मैथेमैटिक्स के परचे

इस बार पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिक की
परीक्षा में मैथेमैटिक्स और ड्राइंग के परचे
असाधारण योग्यता के थे। इस के फल स्वरूप

ठाकुर दत्त शर्मा
धर्मार्थ ट्रस्ट ने गो-
रक्षा पर २०१० में
प्रकाशित सर्वोत्तम
हिन्दी या अंग्रेजी

पुस्तक पर १२०० रु० का पुरस्कार देने का निश्चय
किया है। पुस्तक की ६, ६, प्रतियां वैशाख २०११
तक ट्रस्ट कार्यालय में देहरादून में पहुंचनी
चाहिये।

—मन्त्री ठाकुर दत्त शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट।

गुरुकुल रायकोट

३४वां वार्षिक उत्सव सफलता पूर्वक मनाया गया।
३०० यात्री बाहिर से आये। ५००० रुपये प्राप्त
हुए। ४ नये छात्र प्रविष्ट हुए। डा० हरदेव
प्रसाद महता राहों की माता ने स्वामी गंगा गिरि
से वानप्रस्थ की दीक्षा ली। माता जी ने ५००

शिकायतें और सुझाव

मैट्रिक इंगलिश पेपर

नरसी का व्यवहार करेंगे ?

जालन्धर।

—एक परीक्षार्थी

हड़ताल और उसके पश्चात

पंजाब के अध्यापकों ने हड़ताल की और इस
आश्वासन पर कि उनकी मांगें पूरी कर दी जाएंगी
इसे समाप्त कर दिया गया किन्तु केवल थोड़ी सी
वृद्धि के अतिरिक्त उनकी अन्य मांगों को पूरा
नहीं किया गया क्या यह उचित है।

अमृतसर।

—एक अध्यापक



सम्वाद-दाताओं के पत्र

१२०० रु० का पुरस्कार

रु० विभिन्न संस्थाओं
को दान दिया।
स्तातक मण्डल ने
आयुर्वेद विशालप के
उद्घाटन का प्रस्ताव

स्वीकार किया। अधिकारी इस ओर उचित ध्यान
दे रहे हैं। महन्त श्याम गिरि जो तथा भाई
गुरुदयाल सिंह के निधन पर शोक प्रस्ताव
स्वीकार हुए। दानियों का धन्यवाद।

—परमानन्द शास्त्री, मुख्याधिसाता।

दो बार क्यों नहीं ?

दूसरी परीक्षाओं की भान्ति मैट्रिक की परीक्षा
भी क्यों नहीं वर्ष में दो बार ली जाती ?
यूनिवर्सिटी को इस मांग को पूरा करना चाहिए।

—एक छात्र



दिल्ली दे इक अख-
बार ने एह आन्दोलन शुरू
कीता ए कि स्कूलां ते कालि-
जां विच पढ़न वालीयां
कुड़ीयां लई लिपस्टिक वर-

तन दी मनाही कर दिती जावे । साडा जिल्हे तोड़ी ख्याल
ए स्कूलां ते कालिजां विच पढ़न वालीयां कुड़ीयां लिप-
स्टिक वरतदीयां ही नहीं । पौडर, क्रीम, नेलपालिच
वगैरा जरूर वरतदीयां ने । एस लई एन्हां चीजां दी
मनाही कर देन दी मंग क्यों नहीं कीती गई । जे किधरे ओह
अखबार एह मांग करदा कि स्कूल ते कालिजां विच
पढ़ीन वालीयां लिप-स्टिक आदि वरत के स्कूलां ते कालि-
जां विच ना आन तां ते गल बी बनदी ।

इस सिलसिले विच एह खबर दिलचस्पी नाल सुनी
जावेगी कि पाकिस्तान दी बहावलपुर रियासत दी सरकार

अपनी धोली 'च'

लिपस्टिक दी मनाही

ए । इस दा मन्तव्य ए वे कि विद्यार्थी जीवन सरल ते
सादा होना चाहीदा ए । एह गल ज चदी भी ए ।

किन्ना चंगा होवे जे साडे देश दे स्कूलां ते कालिजां
विचों फैशन नू दफा कर दिता जावे ते इसदे थां ते साद-
गी त्याग ते तपस्या दे भाव लियां दे जान । गल असल
विच एह वे कि साडी अजकल दी शिक्षा बड़ी खर्चीली ते
मँहगी ए । जे सरकार देश नू उन्नत करना चाहदी ए
तां सब तों पहले शिक्षा नू सस्ता ते विद्यार्थियां नू सास
बनोन दा यत्न बरे । इसदे बिना देश दा उन्नति व
वधना सम्भव नहीं ।

—भाईय रेलू ।

—जनेवा में पाकिस्तान तथा
भारत के प्रतिनिधियों तथा
डा० ग्राहम में काश्मीर में
ग्रहस्त्रीकरण सम्बन्धी जो

बातचीत हो रही थी वह असफल रही । अब डा० ग्राहम
सुरक्षा समिति में अपनी रिपोर्ट पेश करेंगे ।

—पाकिस्तान में अहमदियां को पृथक अल्पमत घोषित
करते और विदेश मंत्री सर जफरल्ला को पृथक करने
की मांग अस्वीकृत होने पर जनता उपद्रव मचा रही है ।
लाहौर और लायलपुर में मार्शल ला लगा हुआ है । कई
व्यक्ति मारे गए हैं । कई सौ पकड़े गए हैं ।

—स्टालिन की मृत्यु के कारण मालेनकोव को रूस का
मुख्य मन्त्री बनाया गया है ।

—कोरिया में युद्ध चल रहा है । च्यांग काई शेक के
गुरिल्ले चीन के कुछ द्वीपों में उतर कर इक्का दुक्का
आक्रमण कर रहे हैं । भारत से कोरिया में शान्ति कर-
वाने का प्रयत्न जारी रखने को कहा गया है ।

समाचार-सार

—मिसर और ब्रिटेन में

सूडान के सम्बन्ध में सम-
झौता हो गया है । वहाँ

चुनाव होने वाले हैं । भारत

के चुनाव कमिश्नर श्री सुकुमार सेन चुनाव कमिशन के
प्रधान बन कर गए हैं । जनरल नजीब ने ब्रिटिश सर-

कार को नहर स्वेज से सेनाएँ हटा लेने को कहा है । शाह

फारूक को उनकी दूसरी पत्नी नारीमान ने छोड़ दिया
है । उनका पुत्र फवाद द्वितीय रोम में फारूक के पास है ।

—ईरान में डा० मुसद्दक (प्रधान मन्त्री) के पक्ष और
विपक्ष में प्रदर्शन हुए । बहुत से सैनिक अधिकारी पाक

लिए गए हैं । तेल का बर्तानियाँ के साथ जो जगड़ा है

वह अभी वैसे ही है ।

—भारत की रेलों को १६ अप्रैल को सौ वर्ष पूरे
जाएँगे । ३० रु० का एक तीसरे दर्जे का टिकट जा

किया जा रहा है । जिससे आप चाहे जहाँ आ
सकते हैं ।

प्र० पाकिस्तान में जो गड़बड़ हो रही है उस का रहस्य क्या है ?

—अमरनाथ, देहली

८० पाकिस्तान में एक फिरका अहमदियों का

[पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर]

है जो मुसलमानों के इस विश्वास के विरुद्ध कि हजरत मुहम्मद साहेब के पश्चात् कोई और नबी नहीं आयेगा, मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी को, जो कि इस फिरके के बानी थे, भी नबी मानता है। बस यही है सारे भगड़े की जड़। मुसलमानों की मांग है कि इन अहमदियों को मुसलमानों में सम्मिलित न करके पृथक् एक अल्प मत घोषित किया जाये। और सर जफरुल्ला को, जो इसी मत से संबंध रखते हैं, उन्हें विदेश मन्त्री न रहने दिया जाए। चूंकि पाकिस्तान सरकार ये दोनों मांगे स्वीकार नहीं कर रही इसलिए जनता उपद्रव मचा रही है। प्र० रूस के प्रधान मंत्री स्टालिन की मृत्यु के पश्चात्

फूल और कांटे

नए उत्तराधिकारी से क्या यह आशा करनी चाहिए कि वह कोरिया का युद्ध समाप्त कर देने की चेष्टा करेगा।

—मोहनलाल, बम्बई

—३० स्टालिन हो या मालेनकोव रूस के प्रधान मन्त्री को तो अपनी पार्टी द्वारा निर्धारित नीति पर चलना होता है। कोरिया में युद्ध बन्द करने के सम्बन्ध में जो शर्तें रूस ने पेश कर रहीं हैं, हमें आशा नहीं कि उन्हें ढीला किया जाएगा। —सं०

प्र० हमारे यहां एक युवती ने इसलिए आत्महत्या कर डाली कि जिस लड़के से उसकी सगाई की बातचीत हो रही थी उसने उसे देखने की मांग की थी जिसे पिता ने आपत्तिजनक समझा। उसने अच्छा किया या बुरा ? —रजनी, होशियारपुर

३० जीवन संघर्ष से डरकर आत्महत्या कर लेना किसी अवस्था में भी उचित नहीं। उसने बहुत बुरा किया। सं०

—बम्बई प्रांत में प्राइमरी स्कूलों की संख्या २७३२६ और उनमें विद्यार्थियों की संख्या ४३ लाख ७८ हजार है।

—बम्बई प्रांत सरकार शिक्षा पर १३ करोड़ रुपये वार्षिक व्यय करती है।

—उत्तर प्रदेश सरकार शिक्षा पर ८ करोड़ ५४ लाख रुपये खर्च करती है।

—यू. पी. के प्राइमरी स्कूलों के टीचर हड़ताल करने वाले हैं। सरकार ने कहा है कि यदि हड़ताल हुई तो स्कूल बन्द करने पड़ेंगे।

—लाहवा का मैट्रिक परीक्षार्थी ओम्पकाश ६ मार्च को परीक्षा केन्द्र को जाने के लिए चलते हुए तांगे में चढ़ने के प्रयत्न में उसी तांगे के नीचे आ कर मर

शिक्षा समाचार

गया।

—बोर्ड आफ हाई स्कूल ऐण्ड इंटरमीडिएट एजुकेशन, उत्तर प्रदेश ने हायर

सैकेंडरी स्कूलों को तोड़ देने का निर्णय किया है।

—उत्तर प्रदेश के प्राइमरी स्कूलों के अध्यापक वेतन वृद्धि के लिये आन्दोलन कर रहे हैं ६ मार्च को कौंसिल हाऊस के सामने अनशन करने के लिए आये ५ प्राइमरी टीचरों को पकड़ लिया गया।

—विनोबा भावे की सम्मति में छात्र स्कूलों और कालजों से कुछ ग्रहण नहीं करते।

—२७ जुलाई से ४ अगस्त तक आक्सफोर्ड में विश्व अध्यापक सम्मेलन हो रहा है इसमें २०० के लगभग प्रतिनिधियों के सम्मिलित होने की आशा है। भारत के प्रतिनिधि भी जाएंगे।

सन १९५४-५५ के पति पत्नी पर व्यंग्य

★ जब होगा 'हिंदू कोड' पास ★

[श्री रमेश चन्द्र शान्त शास्त्री 'शालिहास']

जब होगा 'हिन्दू कोड' पास—

बाबू जी बैठेंगे घर में,

'बीबी जी' दफ्तर जाएंगी ।

'वो' तो चाय बनाएंगे 'उनकी'

'वे' फायल आप उठाएंगी ।

जब चार बजे बीबी जी के

घर आने का होगा सुसमय

बाबू जी चूल्हा फूँकेंगे

वे 'टी' में 'शुगर' मिलाएंगी

घर बार संभालें बाबू जी

'वे' तो अब 'पैन' संभालेंगी ।

क्योंकि वे होंगी बी० ए० पास ।

जब होगा 'हिन्दू कोड' पास—

कलश में जाने से पहले

'वे' यूँ डांटेंगी 'घर वाले' को

'धोबी को कपड़े दे देना,

ये बटन टांकना कुर्ते में,

और आज न कल की तरह

नमक ज्यादा होवे जी ! 'भुर्ते' में'

बच्चों के कपड़े मैले हैं

कुछ इनका रखना ख्याल करो ।

बाबू जी ! अब युग बदला है

यों ही न आंखें लाल करो ।

अबला न कहना भूल मुझे

'जूती न समझना पांवों की ।

अधौंगी-शिक्षित नारी हूँ

न समझ बैठना गाँव की

पत्नी प्रतधारण कर सीखो

पत्नी पूजन पत्नी सेवा

पत्नी की आज्ञा पालन कर

खाओ फिर नव युग का मेवा

अब होना सीखो 'बीबी पास' ।

जब होगा 'हिन्दू कोड' पास—

'मेरे कमरे में बच्चों को बिल्कुल

मत आने दो जी ! तुम ।

यदि कार्य व्यस्त मैं बैठी हूँ तो

मत बोलो जी ! मुझ से तुम

कुछ देर बैठ कर बच्चों को घर में

'अ आ' सिखलाया करो ।

यदि जाना हो बाहिर, मुझको

सूचित कर के ही जाया करो ।

और बैठ गली की 'नुकड़' पर

मत भल्ले रोज उड़ाया करो ।

इस मंहगाई का ख्याल करो

मत 'घी' का 'झोंक' लगाया करो ।

पैसे दो पैसे जितना भी हो सके

अवश्य बचाया करो ।

खेला न करो बस बैठ 'ताश'

जब हो 'हिन्दू कोड' पास—

'शलवार हो गई है छोटी'

'सैंडल' भी हुआ पुराना है ।

इस बार मुझे लानी साड़ी है ।

जैम्पर भी तो सिलवाना है ।

'पोमेड' 'लिपस्टिक' खता हुआ

'पाउडर' का डिब्बा लाना है ।

साबुन तुम बहुत खरचते हो,

हेयर आयल तो भल गई । (शेष पृ० ३३ पर)

पाकिस्तान में अपहृता एक
नारी के उद्धार की कहानी ।

महान गन्तव्य

लेखिका : कुमारी सुदर्शन खोसला, पटौदी

“वही अमराइयों का झुरमुट—वही सुन्दर उपवन—जिस में लाल-पीले पुष्प दूर तक झुलते चले गये हैं। क्यारियों के गोल वृत्त, कई गोलाकार रेखाएं खींचते दूर तक तिरछी दृष्टि से झुकते चले गये हैं। उनके गिर्द लगी नोकीली ईंटें, जतनी आकर्षक लगती थीं, किसी दिन...पर आज ही हृदय-चुभन सी बन कर रह गई। आज शीतल सीर का भौंका भी—एक तपन सी ला कर विक्षिप्त करता है तन को, और भावनायें बिखर जाती हैं सर-उपर, कली की टूटी पंखड़ियों की तरह। मैं कुछ सोच नहीं पा रहा—यह लाल फूल एक शिखा सी बन कर जल उठे और पीले पुष्प भानों अन्तिम अवस्था में पहुँच कर कराह उठे—हा ! कुछ समझ नहीं आता उपवन—मेरी लाडली ‘कुसुम’ का उपवन, जिस पर एक एक पत्र आज मेरे हृदय को चार रूप कर रहा है... अब नेत्र भी जल उठे...और यह क्या ? यह गोल क्यारियां काले काले भयानक घेरे बन कर बराने लगीं—यह सुन्दर बेलें सर्प रूप दीखती पाँव तले से पृथ्वी निकलती जा रही है। क्या नहीं इस भयानक स्थान में कभी खेला करता था ? और इन्हीं गोलाकार वृत्तों के गिर्द भागती हुई होती थी—“पापा पकड़ो न”। और मैं भी अनजान बालक सा उसे पकड़ने दौड़ता—और वह खिलती हुई भागे जाती...मैं हार जाता। वह मुझसे कहती—“मैं पत्नी बन उड़ जाऊँ तेरे हाथ न दूँ” और मुझ से लिपट जाती—मैं मुस्करा उठता। दिनों के अद्भुत चक्कर के साथ वह नव-रंग के रूप में रंगमंच पर आई। उसकी वेणी भी पाँव तक लटकती—वह कुसुम सी कोमल और नाम भी यही रखता था मैंने स्नेह पूर्वक ! जब भी उपवन में आती तो गुलाब की गुलाबी आभा

उसकी मुखश्री पर से बलिहार जाती। फिर एक दिन वह मुझे रुला कर चली गई दूर देश—जिसे किसी हृदय-हीन ने समुराल का नाम देकर रचना की है। मेरा इसी से हृदय शीतल था—परन्तु नाश हो मुसलमानों का उसकी मांग का सिन्दूर एक अट्टहास से पोंछ डाला...मेरी हृदय शीतलता—मुझ बूढ़े की टेकनी कुसुम को भी छीन ले गये—मेरे सब संबंधी पाकिस्तान की धूल में—” न जाने वह कब तक विचार-सागर में गोते खाता रहता कि किसी के कोमल स्पर्श ने उसे चौंका दिया—देखा तो एक नन्हा बालक फूलों के सेहरे से मुँह छिपाए—अपने सुन्दर स्वरूप पर—मुस्करा रहा था। कड़ने लगा—“बाबा ! मैं लाजा हूँ न ! तुम पहचान भी नहीं सकते।” बालक ने धीरे से सेहरा उठा दिया। वृद्ध ने देखा कि उसके पड़ोसी का बालक था रामू। बूढ़ा गम्भीर सा भावुकता को भूल-भुलइयाँ में क्रमशः खो गया। कुछ सोच कर-निश्चयता का उर चौरता हुआ वह अट्टहास कर उठा और नन्हे का चुम्बन लेकर फीकी हँसी में निरर्थक हँसता ही रहा। नन्हा सहमा सा-भयभीत दृष्ट से ताकता रहा; उसे क्या पता कि उससे वृद्ध ने क्या कुछ पा लिया है ? वृद्ध ने पाँच का नोट धीरे से उसकी जेब में डाल दिया और वह तालियाँ बजाता-हँसता हुआ दूर भाग गया—अमराइयों के भी पार ! धीरे धीरे उपवन के सुकुमार दृश्य को रजनी-बाला ने अपने काले शाल से छिपा लिया।

“यह पाकिस्तान है ! समझो, और तू है कि अपने हिन्दुत्व को शान अभी तक अपने आँचल में लपेटे बैठी है। कहाँ है हिन्दू-काफ़िरों का मान ? पटक पटक कर मारा उन कुत्तों को। तू है कि उनकी जान को अभी तक रोये जा रही है। उठ ! खाना

बना नहीं तो तुम्हें कुत्ते की मौत मरना होगा। पता है, मैं कौन हूँ ? थानेदार ! और उस बेरहम ने उस अबला की कमर पर एक लात धम से जमा दी, और गालियों की बीछार छोड़ता हुआ चल दिया। कुसुम जली-कटी सुन सुन कर पाषाण हो चली थी परन्तु न जाने क्यों आज फिर उस की आँखें भर भर आ रही थीं। उस के पवित्र 'कुसुम' नाम पर "कातिमा" ने अधिकार जमा लिया था। रोने पर तो प्रतिबन्ध नहीं—वह रोयेगी—और खूब रोयेगी। क्या प्रबल अनल शीतल करने का कोई अधिकार नहीं। फिर वह तो अपनी जलन इस खारे पानी से दूर करेगी। यहाँ मेरा है ही कौन—? हे भगवान् ! आज वह जरूर अन्त करेगी इस पापी शरीर का। परन्तु...क्या वह पिता को न देख सकेगी?...एक बार...केवल एक बार। यही उसकी विचार धारा टूट गई। द्वार पर 'अल्लाह रहम करे' का हल्का स्वर सुन कर चौंक पड़ी और कुछ फल लेकर द्वार पर आई देखा एक लम्बा, खुला चोला पहने—कानों में बड़ी बड़ी मुद्रायें पहने—दाढ़ीधारी फकीर, अश्रुमय नेत्रों से कुसुम की लाल आँखों में झाँक रहा था। कुसुम सड़चाई सी लौटी। फिर सिहर कर आई, एक लीण स्वर कानों में पड़ा, 'कुसुम' ! और इसके साथ ही फकीर ने कृत्रिम दाढ़ी खींच ली। कुसुम 'पापा' कहती हुई पिता के ममतामय पाश में बंध गई। वृद्ध को सुध बुध भूल गई और कुसुम कृतार्थ हो गई। 'आज मेरा कर्तव्य पूरा हुआ' वह चिल्लाया। कुसुम एकदम हटी 'यह पाकिस्तान है'। उस के हगों में प्रगाढ़ अन्धकार भर गया। स्वस्थ होने पर वह कुछ खोजने में तन्मय थी परन्तु बिल्वरे फल ही दृष्टिगोचर हुए।

...

...

...

फिर एक दिन पाकिस्तान की सड़क पर दौड़ती हुआ भारतीय सैनिकों से लदित एक ट्रक एक द्वार पर रुक गया। एक वृद्ध व्यक्ति टेकनी थामे उतरा
[शेष ३४ पृष्ठ पर]

प्रभो ! मुझे अपने में मिला लो

आँखें तुम्हें देख नहीं सकतीं, मगर तुम सब की आँखों में रहते हो। दिल तुम्हें पहचान नहीं सकता लेकिन फिर भी तुम हर दिल में छिपे हुए हो। मेरा मन तरह तरह की इच्छाओं में फंसा हुआ दीवानों की भाँति हर तरफ दौड़ता फिरता है। परन्तु तुम्हारी सदैव देखती रहने वाली आँखें दिन रात जागती हुईं मुझे सोते और जागते देखती रहती हैं।

जिसे सभी ने छोड़ दिया है और जिसका कोई नहीं तुम उसे भी नहीं छोड़ते। उसे तुम्हारा ही भरोसा है क्योंकि तुम ही निराश्रय के आश्रय बेपनाह की पनाह हो। जिसका घर नहीं उसका घर तुम्हीं हो।

तुम्हारे सिवा मेरा इस दुनियाँ में कोई साथी नहीं परन्तु जीवन का असीमित समुद्र खामने फैल रहा है। तुम्हारे सिवा मुझे इस समुद्र से कौन पार कर सकता है ? मैं तुम्हारे सिवा किसी अन्य को नहीं जानता। केवल यही जानता हूँ कि जब तक तुम मेरे साथ हो तब तक सभी मेरे साथ हैं।

तुम ही मेरे प्राण हो, इसालिये मैं जीवित हूँ। तुम्हारे द्वार स मैं जितना भी पाता हूँ उतना ही बार माँगता हूँ। बल्कि बहुत से पदार्थ तो तुम बिना माँगे ही दे देते हो।

मैं जितना भी तुम्हें जानने का यत्न करता हूँ उतना ही मुझे यह मालूम होता है कि मैं तुम्हें कुछ नहीं जानता और न कभी जान सकूँगा, लोक पर लोक और युग-युगान्तर में भी तुम और मैं सदैव ही साथ साथ रह कर फिर भी हम एक दूसरे से पृथक् क्यों हैं ?

हे प्रभो ! क्या मैं तुम से कभी भी न मिल सकूँगा ? मेरे लिये तो बेशक रुकावटें मौजूद हैं पर तुम्हारे लिए तो कोई भी रोक टोक नहीं इस लिए तुम ही कृपा करके मुझे अपने में मिला लो।

—टैगोर

मनुष्य पाप क्यों करता है ?

(हितैषी अलावलपुरी)

बहुत दिन पहले एक फ्रेंच नावल में पढ़ा था । एक बार एक अपराधी जज के सामने लाया गया । जज ने पूछा “ तुमने पाप क्यों किया । ” अपराधी ने कहा “ जज साहेब ! यदि आप मेरे स्थान होते तो यही प्रश्न पूछता । ” भाव यह कि जो कुछ भी अच्छा बुरा मनुष्य करता है परिस्थितियों से विवश होकर ही करता है । आज जो हमें भले आदमी दिखाई देते हैं यदि उनके हालात बदल जायं तो उनके बुरा बनने में देर न लगेगी और ऐसे ही उनका उलट समझना चाहिए ।

पिछले दिनों सिलोन के इन्स्पेक्टर जनरल प्रिन्सने ने अपनी Crime Report में बतलाया था कि गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष लगभग दो हजार अधिक अपराधी कैद हुए । इसका मुख्य हेतु देश की आर्थिक बुरी अवस्था और व्यापारिक अवनति ही है । प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति जानता है जिस समय पेट को भूख लगी हो और जेब में पैसा न हो तो वह या तो आत्महत्या के लिये सोचेगा या चोरी आदि का विचार करेगा । बुद्धिमान लोग कहते हैं कि पाप प्रायः हालात का परिणाम होता है और यदि हम Circumstances में उचित परिवर्तन ला सकें तो अपराधियों की संख्या बहुत कम हो जाए । यूरोप के विद्वानों और दार्शनिकों ने “मनुष्य पाप क्यों करता है ?” इस विषय पर खूब विचार किया है । उनकी सम्मति में तीन कारण हैं (१) खानदानी (Heridity) (२) मानसिक दोष Organal Inferiority (३) बाह्य अवस्थाएं (Circumstances) । यह निश्चित है कि जिस प्रकार माता पिता के शारीरिक रूप व आकार सन्तान में दिखाई देते हैं, उसी प्रकार मानसिक दोष और गुण भी प्रायः सन्तान में पाये जाते हैं । प्रायः देखा गया है कि मधुरी और व्यभिचारी माता पिता के बच्चे भी प्रायः इन दोषों से युक्त होते हैं । इसी प्रकार चोरी

और दुश्चरित्रता के संस्कार भी प्रायः ऐसे बच्चों में पाये जाते हैं । पिछले दिनों डाक्टर अग्रम्बर्ग ए. डी. की लिखी हुई किताब “ Emotion and Delinquency ” हमें पढ़ने को मिली । इसमें अनुभवों डाक्टर ने हजारों पापियों के जीवन का अध्ययन करके कुछ परिणाम निकाले हैं । उनका कहना है कि प्रायः देखा गया है कि पारिवारिक दोष के कारण अधिकतर पापियों की बुद्धि एक साधारण मनुष्य से न्यून होती है । यदि एक साधारण व्यक्ति जितनी बुद्धि भी मान ली जाए तो अपराधियों के केस में यह प्रायः ५०, ६० या ७० के लगभग पाई जाती है । कम बुद्धि और बुद्धि वाले व्यक्तियों में बड़ा अन्तर यही है कि जहां कम बुद्धि वाला अपनी विचार धारा में शीघ्र बह जाता है वहाँ अच्छी बुद्धि वाला हालात के अनुसार उचित और अनुचित का विचार करके काम करता है । वह पशु की भांति केवल वासना का दास नहीं होता । योग्य डाक्टर ने अपनी पुस्तक में ऐसी ऐसी घटनाओं का वर्णन किया है जिनमें बताया है कि किस प्रकार कम बुद्धि वाले युवक और युवतियां पाप के गढ़े में गिरते हैं । फिर यदि कम बुद्धि के साथ पाप की प्रेरणा करने वाले हालात भी मिल जाएं तो पतन आवश्यक है । पारिवारिक और हालात के अतिरिक्त तीसरा कारण गन्दी मनोवृत्ति का शारीरिक दोष भी है । शरीर और हृदय का परस्पर कितना निकट सम्बन्ध है यह बताने को आवश्यकता नहीं । जहां शरीर के दोष दिल पर प्रभाव डालते हैं वहां मानसिक गुण और दोष भी शरीर को अच्छा नहीं छोड़ते हैं । पाठकों को यह सुनकर अश्चर्य होगा कि माताओं को काम क्रोध की बलवती वासनाओं का परिणाम कभी कभी इतना भयंकर होता है कि दूध पाते बच्चे रोगी हो जाते या मर जाते हैं । यदि हम चाहते हैं कि मानव निष्पाप बने तो खुशहाली को लाना आवश्यक है ।

कहानी

काले बादल

(लेखिका : कु० सीता जोशी, फोर्थ ईयर, जालन्धर)

“जानते हो रीगल में “काले बादल” तीन सप्ताह से चल रही है। और आज आखिरी दिन है..” दिनेश के कमरे में प्रवेश करती हुई कमला बोली। परन्तु दिनेश ने, जो कि पुस्तकों के ढेर में उलझा बैठा था, कोई उत्तर न दिया। विजय आज रात को साढ़े आठ की गाड़ी से आने वाला था। “सुनते हो जी, मैं लता के साथ जाना चाहती हूँ। उस का बर्थेडे है न, उसी के उपलक्ष्य में—अजी आप का ध्यान कहाँ है ? मैं पागलों की तरह प्रलाप किये जा रही हूँ और जनाब हैं कि मौन साधे बैठे हैं बताओ मैं जाऊँ कि न ?”

“अजी मरजी देखो” दिनेश ने लापरवाही से उत्तर दिया।

कमला तिलमिला उठी, ज़बान के रेकार्ड पर सूई चढ़ चुकी थी। “हूँ, तो वह सब तुम ढोंग ही रचा करते थे। देख लिया तुम्हारा प्रैक्टिकल जीवन भी—पब्लिक-प्लेटफार्म पर जा कर तो सभी चिल्ला सकते हैं—खूब मेज़ पर हाथ पटक पटक कर। ‘जब पुरुष अपनी मरजी से जो चाहे करे तो नारी क्यों अपने द्वार से बाहिर पैर रखने की आज्ञा भी पुरुष से ले—क्या उस का कोई अधिकार नहीं है ? देवी पर अत्याचार—’ हाँ, ठीक यही शब्द थे तुम्हारे, जो तुमने एक दिन स्टेज पर खड़े हो कर जोरों से कहे थे। और मैं ? मैं मन्त्रमुग्ध सी, चकित सी तुम्हारी ओर देख रही थी। मैं तो कहती हूँ पुरुष बाहिर सब कुछ है, नेता भी, सुधारक भी और न जाने क्या क्या। परन्तु घर में पाँव रखते ही पुरुष केवल पुरुष रह जाता है। सुनते हो समाज-सुधारक ?”

वाक्-पटु कमला लैक्चर दिए जा रही थी

और दिनेश अपना काम कर रहा था। “मेरी सुन लो ध्यान से, सुधारक-देवता, यह उथल-पुथल फिर कर लेना। बताओ मैं सिनेमा जाऊँ कि न ?”

इस बार दिनेश पुस्तकों का ढेर छोड़ खड़ा हो गया और बोला “कहिए श्रीमती जी, क्या चाहती हैं आप ?”

“अभी तक सुना ही नहीं ! कितनी कहूँ, मैं सिनेमा जाऊँ कि न, मैं सिनेमा जाऊँ कि न, मैं सिनेमा जाऊँ कि न ?” कमला मुस्कराती बोली।

“हां सोच बो, रसोइया चार दिन से बीस है और खाना—

“अरे वाह ! खूब है। तो क्या आप पिछले हफ्ते खाद्य-समस्या पर परिणत जी की स्पीच कर भूठमूठ ही प्रतिज्ञा कर बैठे थे कि हम इतके दिन रात को भोजन नहीं किया करेंगे। कम है। आज इतवार है, कल शनिवार था। तभी आधी छुट्टी पर आफिस से घर आ गए थे और आफिस नहीं गए। यह देखो ‘सन्डे ट्रिव्यून’—

परन्तु दिनेश अपनी भूल पर बिल्कुल लज्जित न होता हुआ बोला “जानता हूँ, श्रीमती जी। पर तुम भी जानती हो कि रात को विजय रहा है—क्या उसने भी व्रत ले रखा है ?”

इस बार कमल जरा झुंझलाई और बोली “तो क्या हुआ ? तुम दोनों मिल कर...या बाँट लो—

“ग़ज़ब कर रही हो कमला !” हँसता हुआ बोला, “सुबह विजय का पेपर शुरू और आज आते ही खाना बनाने बैठे, खूब है

मैंने भी यह भारी भूल की जो विजय का यहाँ सेंटर रखवाया। उस बेचारे को क्या पता था कि भाभी के घर रोटी खुद पकानी पड़ेगी—क्या तुम रुक नहीं सकती? कल चली जाना और पिक्चर का नाम क्या है? 'कैसे बादल' हैं? हाँ 'काले बादल' क्या लेना है काले बादलों से?"

"हां क्या लेना है," कमला फिर तमक उठी, "चूल्हा भोंकने को पैदा हुई हूँ। चूल्हा जलाने से जा सब कुछ मिल जाता है, शेष रह ही क्या गया है जो लूँ और कहीं से? लता भी कहेगी, बड़े अच्छे हैं इस के पति-देवता। मिस्टर सुरेश को देखो, लता के लिए—सदा आपकी सह लेती हूँ न, इस लिये—लो नहीं जाती, नहीं जाऊँगी।" यह कहते कहते कमला ने पर्स जमीन पर पटक दिया और वह सैंडल उतार डालने लगी। सैंडल खोलते खोलते उस के दो बूंद आंसू टप से फर्श पर गिरे।

पुरुष ने नारी से हार बहुत कम मानी है। अगर मानी है तो उस के आंसू देखकर। ऐसा जान पड़ता है कि जब विधाता ने बल और पौरुष का भण्डार पुरुष को लुटा दिया तो विधाता की पत्नी ब्रह्माणी ने कहा "महाराज! पुरुष पर विजय पाने के लिए स्त्री को भी तो कोई अजेय अस्त्र दीजिये। स्त्री का आप ने दिया ही क्या है जिस से वह पुरुष से मुकाबला कर सके? उस पर दया कीजिए।" और विधाता ने पत्नी की बात रखने के लिये स्त्री के आंसुओं को अजेय शक्ति प्रदान कर दी।

हाँ तो अब दिनेश बोला, अरे मैं कब कहता हूँ कि न जाओ। उठो आओ समय हो रहा है।" यह कह कर उसने फर्श पर पड़ा हुआ पर्स कमला की गोद में रख दिया। आखिर कमला ही की विजय हुई।

रात को नौ बजे जब कमला सिनेमा-हाल में 'काले बादल' के एक दृश्य से प्रभावित होकर आंसू भरे बैठी थी तो दिनेश आर विजय धुएँ के काले बादल पड़ते हुए चूल्हे के आगे बैठे आंखें मल रहे थे।

दृश्यों का जादू

(कु० सुदर्शन, खोसला)

अस्फुट कली से इन दृश्यों की,
ज्योति का आधार क्या है?
सीतार के चंचल पगों की,
वेदना का वह भार क्या है?

प्रतिबिम्ब उर में देखो इसका,
जलन या झटकार लेकर!
उगती तरंगें वेदना की,
उर है जलता श्वास लेकर!

धूमिल वाष्प उर में भरते,
नयनों में चपला चमकती।
मृदु मोतियों का रूप लेकर,
आंसुओं की धार क्या है?

अभिशाप से वरदान बन कर,
हास का उपहार पाया।
पलकों ने तब पंख बन का,
नयनों को भौरा बनाया॥

स्वतन्त्र होने को तालाबित,
श्रमिक पग उनके बिचारे—
थके, वे सहमें, अश्रु-बिखरें,
तारों का आकाश क्या है?

स्मित चांदनी बन नयन में,
रश्मियों का भार बन के।
हास छाया नैनो में तब,
जीव का आधार बन के॥

ज्ञान दे कर नैनो में ही,
हृदय में कुछ जान पाया।
पथ अपरिचित दृश्यों हैं मेरे,
भगवान् का आकार क्या है?

स्त्रियों की उन्नति का मार्ग

(लेखिका श्रीमती वज्रय लक्ष्मी पंडित)

पत्रों के सम्पादक तथा अन्य मुक्त से स्त्रियों की समस्या पर सम्मति माँगते हैं। मुक्त से जब कभी भी यह प्रश्न किया जाता है तो मैं सोचती हूँ कि स्त्रियों की समस्या वास्तव में क्या चाज है? जैसे हमारा देश है उसकी केवल एक ही समस्या है और वह है आर्थिक और इसी लिये वह लड़ रहा है। यहाँ पर इसके अतिरिक्त कोई अन्य बात होनी नहीं चाहिए परन्तु प्रश्न तो पैदा होता ही है और मुझे इसका उत्तर देना है। सबसे बड़ा प्रश्न है कि संसार में स्त्री का स्थान कहाँ है? वास्तव में स्त्री के जीवन का उद्देश्य क्या है और यह अपने देश व जाति के लिये किस प्रकार उपयोगी हो सकती है? यह एक ऐसी समस्या है जिस पर विभिन्न व्यक्तियों के आदर्श पृथक् २ होते हैं।

अब वह समय तो बीत गया जब हम कबीलों और प्रोहों के रूप में रहते थे और स्त्रियाँ कैम्प में रहती थीं और बच्चों की देखभाल और खाने पीने का प्रबन्ध करती थीं यह प्रथा अब नहीं रही। वास्तव में स्त्रियों पर अब किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है मगर फिर भी बहुत सी रुकावटें जो प्राचीन समय में थीं उग्र रूप धारण करके अब भी हमारे सामने आती हैं और हमारे उन्नति के मार्ग में रुकावट पैदा कर देती हैं। मैं यहाँ केवल भारतवर्ष की समस्या पर विचार करती हूँ। शिक्षा ने यहाँ क्या किया? स्त्रियों की शिक्षा ने बजाय इसके कि उन्हें वह देश और समाज की सेवा के लिए एक उपयोगी साधन बनाती एक ऐसी वस्तु बना दिया है जो वे भूषण का कार्य ही सम्पादन कर सकती है अन्यथा देश और समाज के लिये इसका अस्तित्व नहीं के बराबर है।

आजकल जब कि सभ्यता बहुत आगे बढ़ चुकी है और संसार की बागडोर का बड़ा भाग पुरुषों के हाथ में है स्त्रियों के सम्मुख यह समस्या है कि जब वह पुरुष की भाँति संस्कृति के बनाने और बिगाड़ने में समान रूप से उत्तरदायी है तो क्यों न पुरुषों की भाँति संस्कृति असहयोगिता का अन्त कर दें और पूर्ति की चेष्टा में क्यों पुरुषों से पीछे रहें। स्त्रियों के लिए कुटुम्ब बढ़ाने के लिए बच्चे पैदा किए जाना ही आवश्यक नहीं है। उनका कर्तव्य यह भी है कि वह सोचें कि इन बच्चों को उत्पन्न करने का रहस्य क्या है? बच्चों के पालन पोषण और उनकी शिक्षा का सिद्धांत समझना भी तो उनका कर्तव्य है। माताओं को चाहिये कि वे बच्चों को ऐसी शिक्षा दें कि उनकी सन्तान परख पैदा कर ले और उनमें शौर्य और तेज उत्पन्न हो जाय। वह चाहे किसी भी अवस्था में हो अपनी सहायता आप कर सके। घर-गृहस्थी का मार्ग पहले स्त्रियों के जीवन का उद्देश्य था परन्तु अब शासन करने का कार्य सम्मुख आया है तो प्रश्न यह है कि वे क्यों न इस क्षेत्र में अपनी उन्नति का प्रमाण दें। पहले स्त्रियाँ केवल कल्पना की दुनियाँ में बसने वाली वस्तु होती थीं परन्तु अब समय आ गया है कि वह कुछ स्थायी और ठोस काम करके दुनिया को दिखा दें कि स्त्रियाँ सब कुछ कर सकती हैं। उनको गृह प्रवास के साथ २ बाह्य प्रबंध भी धीरे २ अपने हाथ में ले लेना चाहिए। भविष्य इस बात का निर्णय करेगा कि स्त्रियों की बुद्धि और प्रतिभा केवल कला, कौशल की सुन्दर दुनिया तक सीमित नहीं है।

‘प्रकाश समय पर मिलता है और बच्चों के लिए बहुत अच्छा है।’ — सावित्री महता, हेडमिस्ट्रेस, मोगी

एक एकड़ में ७० मन मक्की पैदा करो

किन्तु कैसे ? यह निम्न लेख में पढ़िये

इस समय दक्षिण अमेरिका में कृषक अपने खेतों में ७० मन प्रति एकड़ के हिसाब से मक्की उत्पन्न कर रहे हैं जब कि अब से दस वर्ष पूर्व वहां लगभग १६ मन प्रति एकड़ उपज होती थी।

अमेरिकी कृषि-विभाग तथा विभिन्न राज्यों के कृषि-विशेषज्ञों के संयुक्त अनुसंधान-कार्यों के परिणामस्वरूप ही उपज में इतनी अधिक वृद्धि संभव हुई है।

१९४० में वर्जिनिया राज्य में लगभग १६ मन प्रति एकड़ की उपज हुई थी। यह १९५० में ३४ मन प्रति एकड़ तक पहुँच गई। इसी अवधि में कैरोलाइन में १२॥ मन प्रति एकड़ की वृद्धि हुई।

भारत के कृषक भी निम्न उपायों को कार्यान्वित कर अपनी उपज इतनी ही मात्रा में बढ़ा सकते हैं।

मक्का की उपज बढ़ाने के लिये यहाँ ७ उद्देश्यों का एक कार्यक्रम दिया जात है, जिस पर थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ अमल करके भारत तथा अन्य देशों के लोग लाभ उठा सकते हैं।

(१) ऐसा अच्छा बीज काम में लाओ जो उस कृषि-क्षेत्र के लिये उपयुक्त हो।

(२) एक एकड़ भूमि में ७० मन मक्का उत्पन्न करने के लिये पौधों को पास पास बोओ, वे एक एकड़ में कम से कम १० हजार अथवा उससे भी अधिक होने चाहिए।

(३) बीज को अधिक गहराई में मत बोओ-एक इंच से अधिक गहराई न हो।

(४) बोते समय खेतों में काफी रासायनिक खाद डालनी चाहिये। सम्भव हो तो चूने तथा रासायनिक खाद सम्बन्धी आवश्यकताओं की जाँच कर लेनी चाहिए। अधिक रासायनिक खाद

डालने की क्यों आवश्यकता है ? आपको विदित है कि ७० मन मक्का प्रति एकड़ पैदा करने के लिये भूमि की कितनी शक्ति खर्च होती है ? अमेरिकन सोसाइटी औव एग्रोनोमी के अनुसार ऐसा करने में १६० पौण्ड नाइट्रोजन, १२५ पौण्ड पोटासियम, ४० पौण्ड फास्फोरस, ५५ पौण्ड मग्नेशियम, ५० पौण्ड मैग्नेशियम तथा अन्य तत्वों के साथ ५० पौण्ड चूना दरकार है।

(५) बीज को अधिक गहराई में मत बोओ तथा आरम्भ में ही नलाई कर दो। ऐसा करने से पौधे खूब बढ़ने लगते हैं।

(६) पौधों के ऊपर अथवा आसपास नाइट्रोजन डालनी चाहिए। एक एकड़ में ७० मन या उस से अधिक पैदावार करने के लिये एक एकड़ में बीज बोने के ३५ अथवा ४० दिन बाद १६ प्रतिशत नाइट्रेटयुक्त ४६५ पौण्ड खाद डालनी चाहिए।

(७) पानी को नष्ट न होने दो, खेतों में गढ़े बनाकर पानी को बहने से रोको।

हर तरह की जलवायु में पनपने की क्षमता के कारण दोगली मक्की उन क्षेत्रों की खाद्य समस्या को हल करने में सहायक हो सकेगी जहाँ अब मक्की नहीं बोई जाती।

कई वर्षों के परीक्षणों के पश्चात् दोगली मक्की ने अमेरिका के कृषि उत्पादन में योग देना शुरू किया है। १९१७ के बाद अनेकों राज्यों में दोगला क्रिस्में मालूम करने के लिये विशेष कार्यक्रम चालू किये गये थे। सैकड़ों क्रिस्में मालूम की गईं और आज दोगले बीजों का उत्पादन अमेरिका का एक विशाल एवं उन्नत व्यवसाय है।



आजाद हिन्द सेना के एक वीर सैनिक की कहानी

अनोखा नेता

(लेखक : श्री देवेन्द्र प्रताप, नई दिल्ली)

वह स्तब्ध रह गया ऐसा मौन वातावरण देख कर, जब उसे होश आई। उसने लेटे ही लेटे इधर उधर ताकना आरम्भ किया। बिस्तर ही बिस्तर, नौकर, चाकर, नर्स, डाक्टर। उसके लिये अनुमान लगाना कठिन हो गया कि वह यहाँ क्यों और कैसे पहुँचा ?

उसके सिर में बहुत पीड़ा हो रही थी। स्थान स्थान पर पट्टियाँ बंधी थीं, अङ्ग अङ्ग से वेदना भरी कराह निकल रही थी। उसका शरीर छलनी हो चुका था। उसे स्मरण हो आया कि वह लड़ते समय गोली खाकर गिरा था और तत्पश्चात् ही हस्पताल में लाया गया होगा। तभी पास ही कुछ धीमे धीमे स्वर में किसी ने कहा “नर्स उसे होश आ गई है।” दीपक ने यह सब कुछ सुना, परन्तु वह अब भी न था। दीपक ने एक आह भरी और फिर आँखें मूँद ली और जब दूसरी बार आँखें खुलीं तो उसने अपने हाथ को एक नर्स के हाथों में पाया। वह उठने का प्रयत्न करने लगा परन्तु नर्स ने उसे लिटा दिया।

दीपक ने घबरा कर पूछा “नर्स, यह कौनसा हस्पताल है ?” मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा। “यह आजाद हिन्द फौज का हस्पताल है” उत्तर मिला। “लेकिन...” दीपक ने कुछ कहना चाहा। “लेकिन क्या ? हमारे सिपाही तुम्हें उठाकर ले आये हैं।” दीपक शांत था अब उसे पूर्णतया चेतनता आ चुकी थी। उसने एक टुक नर्स की ओर देखा, नर्स ने उसे दवाई पिला कर पूछा “सैनिक तुम्हारा नाम ?”

“दीपक” उसने कहा।

“मैं एक बात पूछूँ ?”

“पूछो”

“तुम देशद्रोही हो या देशभक्त ?”

दीपक के पास कुछ उत्तर न था। प्रश्न भी कुछ टेढ़ा ही था। कुछ देर चुप रहकर वह बोला “नर्स पेड के लिए सब कुछ करना पड़ता है। देशद्रोह हो या देशभक्ति, मैं समझता हूँ कि मैं देश को स्वतन्त्र कराने वालों के बीच रुकावट था। परन्तु प्रथम तो यह कि मैं लैफ्टिनेन्ट बन चुका था और ब्रिटिश राज्य की आज्ञा का उल्लंघन पाप समझता था और दूसरे यह कि मुझे मरने का डर था। क्या करता और क्या न करता ?” दीपक की बात सत्य थी, उसके मुख पर तेज था।

नर्स ने कहा, “परन्तु दीपक ! जब तुम जानते हो कि देशद्रोह और देशभक्ति में क्या अन्तर है तो क्या तुम अब अपना कर्तव्य नहीं निभा सकते ?”

“लेकिन मैं तो बन्दी हूँ।”

“तुम मुक्त हो सकते हो।”

“हाँ यदि, मैं मुक्त हो सकता हूँ तो मैं प्रण करता हूँ कि मैं सर्वस्व अर्पण कर दूंगा, राष्ट्र के लिए” दीपक ने गम्भीरता पूर्वक कहा।

“दीपक तुम कितने अच्छे हो।”

“अच्छी तो तुम हो जिस ने अन्धे को लाठी दी।”

दोनों ने एक क्षण एक दूसरे को देखा, आँखें झुक गईं और फिर नर्स चली गई।

दीपक पर नर्स का बहुत प्रभाव पड़ा। वह तुलना करने लगा इंग्लिश हौस्पिटल की इस

हस्पताल के साथ। उसे स्मरण हो आया—जब वह पहले जखमी होकर एक बार हस्पताल ले जाया गया था तो तीन दिन तक किसी ने पट्टी नहीं बदली थी। कोई पूछता न था। यदि किसी को कहते भी तो कोई सुनता न था और यहां पर शत्रु की भी इतनी सेवा? धन्य हैं नेता जी जिन्होंने सेना के साथ साथ हस्पताल का कैसा अच्छा प्रबन्ध कर रखा है। धन्य हैं वे सैनिक जिन्होंने सुभाष को नेता चुना। काश! मैं भी इस सेना का तुच्छ सैनिक ही होता” दीपक ने ऐसे ही विचारों में मग्न रह रात्रि जाग कर काटी।

सुबह के लगभग चार बजे थे। बाहर वीर बालाएँ परेड कर रही थीं। बेंड बड़े जोर जोर से बज रहा था। सहसा वीरांगनाओं ने रण गीत गाना आरम्भ किया—कदम मिलाकर चलना होगा... दीपक सौनक था। ऐसा वारंता पूर्ण गीत सुन कर उसका मन भी उछलने लगा। तभी नर्स ने आकर सूचना दी कि नेता जी हस्पताल का निरीक्षण करने आ रहे हैं। दीपक का हृदय गदगद हो उठा। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा मानो वह आज साक्षात् भगवान् के दर्शन करेगा। उसका मन पुलकित हो उठा। तभी उसने नर्स को उधर से आते देखकर पुकारा। “नर्स...!” नर्स भागी भागी आई। “दीपक, नेता जी आ गये हैं, पिछले वार्ड में हैं, मैं तुम्हारे बारे में बात करूंगी” यह कह कर वह चली गई।

नर्स के साथ साथ नेता जी ने वार्ड में प्रवेश किया। वे सीधे दीपक के विस्तर के नजदीक आकर बैठे। दीपक ने प्रणाम किया, झुक कर।

उन्होंने कहा—“सैनिक! तुम भारतीय हो और तुम्हारा भारत परतन्त्र है। तुम्हें तुम्हारा कर्तव्य क्या कहता है?” उसके मुख से निकला, “मैं आपको आज से नेता मानता हूँ।” “तो अच्छा होने पर तुम भी आजाद हिन्द सेना में भरती हो सकोगे।” नेता जी को अगले वार्ड में छोड़ कर नर्स

फिर दीपक के पास आई, “दीपक, अब तुम भी मेरे नेता बन चुके हो।”

दीपक नर्स की आंखों में न जाने क्या खोज रहा था? सहसा चौंकर बोला, “हैं? नहीं नर्स, यह सब तुम्हारी कृपा से हुआ है। नेता तो वास्तव में तुम हो जिसने मुझे सन्मार्ग दिखाया।” वह फिर बोला, “लेकिन नर्स क्या मैं तुम्हारा नाम जान सकता हूँ?”

“मेरा नाम है नीरा।”

“तो अब यदि मैं नीरा कह कर पुकारूं तो कैसा रहे?”

“तुम्हें मुझ पर सब प्रकार का अधिकार है, तुम मेरे नेता हो न!”

“फिर वही बात...”

वे दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। दीपक जब लैफ्टिनेन्ट था तो नेता जी ने नीरा को भी उसी के नेतृत्व में भेज दिया था।

× × ×

“नीरा! आज मैं जा रहा हूँ। मेरे जाने के पश्चात् तुम कैम्प का सब काम देखना।”

“आखिर कहाँ जा रहे हो, मुझे भी कुछ पता चले?”

“नीरा, यहां से चार मील की दूरी पर भील के उस पार अंग्रेजों ने मोर्चे लगा दिए हैं। मुझे आज्ञा है कि उन मोर्चों को तोड़ कर आगे बढ़ जाऊँ।”

“लेकिन मैं अकेली.. कैसे काम देखूंगी?”

“प्रिये! तुम वीर बाला हो। तुम मुझ से भी वीर हो। तुम मेरी प्रतीक्षा करना, कल या परसों वापिस आ जाऊंगा या तुम्हें भी वहीं बुला लूंगा।”

नीरा की आंखों में आंसू थे परन्तु थी उनमें सन्तोष की झलक।

दीपक चल देता है। बड़ी कठिनाइयों के साथ वह भील तक पहुंच पाया। उसे पता चला कि शत्रु (शेष पृष्ठ १८ पर पढ़ें)

की फौज बहुत अधिक है और उस का मुकाबला करना अत्यन्त कठिन है। उसने एक चाल चली। वह अंग्रेजों के वायरलेस सम्बन्धी भेदों तथा हर प्रकार के संकेत जानता था। वह स्वयं हवाई जहाज में बैठा और पीछे से चक्कर काट कर ठीक वहीं उतरा जहां वे फौजें पड़ी थीं। उसने वायरलेस की सहायता से कमांडर की आज्ञा सुनाई कि भील के दूसरे पार पहुँच जाओ। उसी मार्ग से वह फिर वापस आ गया और सब को छिप जाने को कह दिया। जब शत्रु के सैनिक इस ओर किनारे पर पहुँचने लगे तो उन पर बम वर्षा शुरू हो गई और इस प्रकार उनका मोर्चा तोड़ दिया गया। दीपक की सेना विजयी हुई।

× × ×

दीपक की विजय का समाचार सुन कर नीरा खिल उठी। और नेता जी की आज्ञा से स्वयं उस ओर चल दी। इधर दीपक दूसरे आक्रमण के लिए तैयारी कर रहा था। नीरा सीधी दीपक के पास गई और प्रणाम करके अपनी प्रसन्नता प्रकट की और नेता जी को बधाई दी। यहाँ पर आक्रमण की तैयारियाँ हो रही थीं। उसी समय एक गुप्तचर ने सूचना दी कि शत्रु के जहाज बम्बाईमेंट के लिए आ रहे हैं। उसी क्षण सबका आज्ञा दी गई कि सब दो भील उत्तर पश्चिम की ओर हट जाएँ और कैम्प यहीं रहने दें।

परन्तु यह सब व्यर्थ था। किसी को भी बचने की आशा न थी। परन्तु इसके सिवा आर हो भी क्या सकता था।

धड़ ! धड़ !! धड़ !!!

नीरा गिरी... दीपक चिल्लाया— “नीरा ! तुम मत आओ मुझे जाने दो। मैंने तुम्हें कहा था न कि मेरे पीछे मत आना, परन्तु शायद नेता जी की आज्ञा भंग होती थी... नीरा ! नीरा !!!” दूसरे ही क्षण

सैनिकों ने देखा कि दीपक शहीद हो चुका था।

नीरा उठी और दीपक के समीप पहुँची, उसकी आँखों से अश्रुवार बह रही थी। वह बोली—“मेरे अनोखे नेता ! प्रणाम !” उसी क्षण दीपक की जय से आकाश गूँज उठा।

जाने क्यों ?

क्यों ममता का संसार रचा ?
क्यों नश्वर जग से प्यार किया ?
जाने क्यों स्वतन्त्र बनकर भी,
बन्दी बनना स्वीकार किया ?

क्यों जग की प्रतिमा को पूजा ?
क्यों जग-जीवन का भार लिया ?
जाने क्यों शत शत बार प्रिये—
इस मिट्टी को आकार दिया ?

जब भावों ने करवट बदली,
मन्दिर मेघों का छिन्न हुआ।
निशि निशि के जलते दीपक सा,
यह तेजस्वी मन खिन्न हुआ।

जाने क्यों फूलों को तोड़ा,
जाने क्यों प्रिय शृंगार किया ?
क्यों विश्वप्रेम के आंगण को,
सहसा ही कारागार किया ?

जाने क्यों सौरभ को खोया ?
क्यों शब्दों को साकार किया ?
मेरी छोटी सी दुनिया में,
किन भूलों का सत्कार किया ?

— सुषमा गुप्ता, II Year

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र० दो सगे भाइयों में से एक तीव्र बुद्धि का और दूसरा मन्द बुद्धि का क्यों होता है ?

—लीला, देहली।

उ० इसे पिछले जन्म के संस्कारों का ही फल समझना चाहिए।

—दी०

प्र० जिन बच्चों को दूध नहीं मिलता क्या वे निर्बल होते हैं ?

—कुन्दन लाल, अम्बाला।

उ० यह आवश्यक नहीं है। कई सुखा भोजन खाकर भी हृष्ट पुष्ट और कई पौष्टिक खाकर भी रुग्ण और निर्बल रहते हैं। भोजन के अतिरिक्त कई अन्य बातें भी हैं जो स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती हैं, जैसे बेफ़िकरी, अच्छा जल वायु सैर, व्यायाम इत्यादि।

—दी०

प्र० आये दिन स्कूलों में अध्यापकों की हड़तालें होती रहती हैं। क्यों नहीं सरकार उनके वेतन बढ़ा देती ?

—सुशीला, मेरठ।

उ० न तो सारे स्कूल सरकार के हैं और यदि होते भी तो सरकार की अपनी

कठिनाइयां हैं। फिर प्राइवेट स्कूलों के अध्यापकों के वेतन तभी बढ़ सकते हैं जब फीसें बढ़ें। और यदि फीसें बढ़ाई जायं तो फिर छात्र हड़तालें कर देंगे तब क्या होगा।

—दी०

प्र० जो माता पिता अपने बच्चों को इस लिए स्कूल नहीं भेज सकते कि उनका खर्च उठा नहीं पाते और उनके बच्चे अशिक्षित रह जाते हैं तो इसके लिए दोषी कौन है ?

—राम नाथ, जम्मू।

उ० निस्सन्देह हमारी सरकार ही इसके लिए उत्तर दायी है। एक स्वतन्त्र देश में शिक्षा और स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व उसकी सरकार पर रहता है। और जो सरकार अपना यह उत्तरदायित्व नहीं निभा सकती उसे जनता का विश्वास नहीं मिल पाता।

—दी०

प्रत्येक छात्र छात्रा प्रश्न भेज सकती है।



एक मीठी मुसीबत

कु० विजय हितैषी -

यह भी एक मुसीबत है पर है मीठी मीठी .. परीक्षाओं के दिन हैं सब की परीक्षा सिर पर है। मैट्रिक वालों की ३ मार्च को शुरू है, प्रभाकर वालों की २ जून को एफ. ए. बी. ए. वालों की अप्रैल में आदि २। मतलब यह कि सब के परिश्रम के दिन हैं पर क्रमवृत्त नींद भी इन दिनों परिश्रमी बन जाती है और धक्के देने पर भी 'मान न मान' में तेरा महमान' की तरह सिर पर सवार हो जाती है। कभी २ तो दिन में भी चली आती है और रात को तो आठ बजे से ही आ भ्रमकती है।

देखो, अभी आठ ही बजे हैं। प्रेम दीवार से तकिया सटाये उसका सहारा लेकर किताब घुटनों पर रखे इंग्लैंड की हिस्ट्री याद कर रही है। ३ मार्च को परीक्षा जो आरम्भ है। उसने एक बार याद करके जरा किताब से आँखें हटा कर मन ही मन में दुहरा कर देखना आरम्भ किया कि देखू याद हो गई है या नहीं। उसे यह याद हो या न हो पर निद्रा देवी को तो शिकार मिल ही गया और बेचारी प्रेम की बैठे २ किताब खुले ही आँख लग गई। उधर से मैं देखने उठी तो सोई देख किताब हटा लेती हूँ और कोई गाने आदि का किस्सा उलटा सामने खोल

शेष पृष्ठ २४ पर)

जोसेफ स्टालिन

★ जो ६ मार्च को चल बसे ★

जोसेफ डजुगाशविली स्टालिन का जन्म २१ दिसम्बर १८७८ को हुआ था। उनकी माता का नाम था एकाटिरिना और पिता का विसारियन डजुगाशविली। वे गोरी नामक गांव के निवासी थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय चर्च स्कूल में हुई और ऊंची ग्रीक आर्थोडॉक्स सैमिनरी, टिफलिस में। इन्होंने दो बार विवाह किया। पहला विवाह कैथरीन स्वानिडज के साथ, जिस से एक पुत्र जोस्वा नामक उत्पन्न हुआ। पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात इन्होंने दूसरा विवाह नदेज्जदा अलीलूईव से किया। इस से दो बच्चे हुये। एक पुत्र जिसका नाम वैसिली रखा गया और एक पुत्री जिसे स्वेतलाना कहते हैं।

स्वातन्त्र्य संग्राम में भाग लेते हुए स्टालिन ने अपना नाम ६ बार बदला। उनके मित्र उन्हें 'सोसो' के नाम से और सम्बन्धी 'कोवा' के नाम से जानते थे। स्टालिन नाम उनका खुद को 'Ja Stal. Ja Stal'. कहने के कारण पड़ गया। 'जा स्टाल' का अर्थ है 'मैं फौलाद हूँ।' शेष नाम पुलिस से बचने के लिए अपनाये गये थे।

६ मार्च को इनकी मृत्यु हो गई। इनके पश्चात अब सोवियत कोव रुस के प्रधान मंत्री बने हैं।

कहानी—

★ वचपन ★

(लेखिका: कु० उपा अग्रवाल, फर्स्ट ईयर)

कालेज से आकर मैं अपने कमरे की ओर जा रही थी कि किसी ने पुकारा; 'उषी'। मैंने घूम कर देखा तो नीनी खड़ा मुस्करा रहा था। 'अरे नीनी, कब आए' ? मैंने कहा। और उसके साथ ही ड्राईंग रूम की ओर बढ़ गए।

मैं जानती थी कि नीनी जब भी हमारे घर आया रेडियो-ग्राम पर रेकार्ड जरूर सुनेगा। इसलिए मैं पहले से ही मानो रेकार्ड सुनने के लिये तय्यार हो सोफे पर अधलेटी सी होगई।

तभी साज की मधुर ध्वनि कमरे के शान्त वातावरण में बिखरने लगी और अनजाने में ही मेरा सिर सोफे के पिछली ओर ढलक गया। जगमोहन का गाना चल रहा था, 'भला था कितना अरना वचपन'। सचमुच कितना भला था वचपन का वह जमाना। और उस 'वचपन' शब्द के साथ ही किसी की याद मेरे हृदय में टीस पैदा करने लगी। मैं अपने ही विचारों में खो गई। नीनी भी शायद मुझे गुमसुम देखकर ममी से मिलने के लिये 'बेड रूम' में चला गया।

मेरी आयु तब पाँच साल की थी। पिता जी की बदली शिमले की हो गई थी। पिता जी ने रामू को पहले से ही कोठी ठीक करने के लिए वहाँ भेज दिया था। इस लिए जब हम

वहाँ पहुँचे तो हमें कोई तकलीफ न हुई, बल्कि जाते ही चाय भी तय्यार मिल गई।

उस दिन मेरे हृदय की कुछ अजीब ही अवस्था थी। एक ओर तो लाहौर की गर्मी से निकल कर इस स्वर्गीय वातावरण में आने की खुशी थी और दूसरी ओर मेरा एकाकीपन। मेरी नन्हीं सखियों का अभाव मुझे खाए रहा था। मैं अपनी उदासी दूर करने के लिए पहाड़ों का मनोहर दृश्य दूरबीन द्वारा देख रही थी कि तभी एक नन्हा सा हाथ मुझे अपनी ओर बुलाता हुआ दिखाई दिया। मैं यह सोच कर कि शायद कोई साथी ही मिल जाए, भाग कर वहाँ गई। मेरे समीप पहुँचने पर उस नन्हीं लड़की ने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा, 'मेरे साथ खेलेगी ?' मैं खुशी से फूल उठी और उसे अपनी ग्राऊंड में ले आई। उस दिन हमारी बातचीत केवल एक दूसरे का नाम पूछने तक ही सीमित रही। उसका नाम था 'नीरा'। तभी उसके नौकर ने उसे आवाज़ दी और वह फिर आने का वायदा करके भाग गई। इसके बाद हम इकट्ठे खेलने लगे और हमारी घनिष्टता बढ़ती गई। हम एक ही स्कूल में पढ़ने लगीं। एक दूसरे के लिये अपने को संकट में डोलना तो हमारे लिये मामूली बात थी। येस तो मानो संसार थी वह। हम कभी रूठते, कभी मनते, कभी गुड़ियों का विवाह करते और फिर भगड़ते। इसी तरह हम ने अपने जीवन की पाँच बहारे इकट्ठे बिताईं।

उस दिन मेरी सालगिरह थी। पांच बज गए किन्तु नीरा अभी तक नहीं आई थी। मैं अधिक इन्तज़ार न कर सकी और रामू को साथ लेकर उसे बुलाने गई। वहां का दृश्य देखा तो अवाक रह गई। सब सामान बंधा था और नीरा कागज़ पर कुछ लिख रही थी। मुझे समझते देर न लगी कि हमारी जुदाई की घड़ियां आ गई हैं। फिर भी भारी मन लिए मैंने नीरा की आंखों पर हाथ रख दिया।

नीरा ने मुझे एक तस्वीर देते हुए कहा, “उषा, यह तस्वीर तुम्हें सदैव मेरी याद दिलाया करेगी”। तस्वीर दो लड़कियों की थी जो गुड़ियों से खेल रहीं थी। नीरा ने हँसते हुए कहा—‘देखो उषा, लोग भी हमारी तस्वीर बनाते हैं’ और तब मैं भी अपनी नीरू की भोली बात पर हंस दी। मैं नीरा को साथ लेकर अपने घर आई। परन्तु उस दिन की पार्टी कुछ सफल न रही। नीरा उसा दिन मेरे हृदय को आहत करके अमृतसर चली गई।

इस के बाद नीरा के पत्र आते और मैं भी जल्दी से जल्दी उनका उत्तर देती। चार साल बीत गए परन्तु नीरा की याद मेरे हृदय में ज्यों की त्यों बनी रही।

सन् ५१ की जनवरी ! शायद ही मैं कभी उसे भूल सकूँ। पिता जी किसी काम

के लिये अमृतसर आ रहे थे, मैं भी नीरा से मिलने का लोभ छोड़ न सकी। परन्तु मिलने की यह आशा, आशा ही रह गई। मैं नीरा के घर गई। मुझे देखते ही उसकी ‘ममी’ रोने लगी। मैं हैरान थी कि बात क्या है। तभी मुझे उसकी ममी ने बताया कि नीरा मेरा संसार उजाड़ कर स्वर्ग में बसने चली गई है। मैं चुपके २ सिसकने लगी। नीरा की ममी ने मुझे एक पत्र दिया जिसे मुझ तक पहुँचाना नीरा के नसीब में न था।

आज भी नीरा की दी हुई तस्वीर तथा वह अन्तिम पत्र मेरे हृदय के एक छोर को बुरी तरह से छुआ करते हैं।

‘अरे चीनी (यह मेरा प्यार का नाम है) नीनी तो तुम्हारा खाने वाली येज़ पर इन्तज़ार कर रहा है और तुम हो कि यहां पर बैठी हो,’ रामू ने मेरी विचार धारा तोड़ दी। ‘रे रे रे...देखा, तभी तो यह मुआ रेडुआ चौथे दिन खराब हो जाता है। अभी तक सूई घिसट २ कर रही है,’ रामू अपनी ही रौ में बहा जा रहा था।

मैं चौंक कर आंखें पोंछने लगी जिसे देख कर रामू की जुबान बाहिर निकल आई। वह बोला ‘चीनी तुम रो रही हो?’

‘नहीं तो, यूँ ही किसी की याद आ गई थी,’ मैं ने रुंधे हुए कंठ से कहा—‘लो, कैसी अजीब सी बातें करती हो चीनी,’

रामू बोला। 'क्यों रामू, जब हम शिमले में थे तो मैं ऐसी ही बातें किया करती थी' मैं ने कहा। 'तब तो तू बच्ची थी विटिया,' रामू ने बाहिर जाते २ कहा।

और मैं सोचने लगी कि यह ठोक ही तो कहता है, सचपुच मुझे अब ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। नीरा को तो भगवान ने मेरे बचपन के लिए भेजा था और बचपन की अन्तिम सीमा पार करते २ मेरी नीरा भी अपने जीवन की अन्तिम सीमा तक पहुँच गई।

यही सोचने २ मैं 'डाइनिंग रूम' की ओर चली गई।

मीठी मुसीबत

(पृष्ठ २० का शेष)

कर रख देती हूँ। देखो तो बेचारी कितनी मजबूर है। झुक मार कर कुछ लज्जित सो हुई कुछ तंग सी हुई फिर आँखों पर छींटे मार कर बैठ जातो है। पर आप प्रेम पर ही न हँसें। क्योंकि प्रेम अकेली नहीं, प्रेम से और हजारों लाखों पढ़ने वाले विद्यार्थी हैं जिनमें आप सब भी शामिल हैं। अब नहीं तो पहले कभी होंगे। मैं स्वयं लिखने वाली इनमें शामिल हूँ। मुझ पर स्वयं दिन में भी कई बार ऐसी बीतती है पर मजबूर हूँ। किया क्या जाय ? अजी यह भी एक मजबूरी है, मुसीबत है पर मीठा !

★ बालकों से ★

सुनो सुनो ऐ प्यारे बालक !

करो सदा प्रभु का गुण गान।

आलस और आडम्बर छोड़ो,

छोड़ो व्यर्थ कपट अभिमान।

प्रेम सहित विद्या पढ़ निशिदिन,

पुरुषार्थ पर दो अब ध्यान।

साधन से निर्मल मन बन कर,

होओ अर्जुन भीम समान।

स्वार्थ छोड़ परमार्थ साधकर,

करो बड़ों का नित सम्मान।

विद्या पढ़ बन प्रेम पुजारी,

खूब बढ़ाओ बल औ ज्ञान।

अपनाओ यह महापुण्य है,

दो सब को सत शिक्षा का दान।

त्याग-अविद्या-अवगुण आलस-

धरो हृदय में प्रभु का ध्यान।

भूठ कपट व्यवहार छोड़ दो,

इस से मिलता दुख अपमान।

मधुर वचन प्रिय बोलो प्यारे,

खुश होंगे केशव भगवान।

रोकर कहो प्रेम युत प्रतिदिन,

दया करो हे दया निधान।

कवलवास परमार्थ करके,

बनो जगत में पुरुष महान॥

—जयगौरी शंकर सीताराम।

★

★ भिखारिन ★

बाबू तू 'लाट कमंडल' हो,
सूखा शरीर धँसती आँखों में,
दर्द भरी तीखी चितवन ।
है अर्ध नग्न, छाती से चिपटा,
शिशु है लिए धिनौना तन ।
और पेट दबाए साथ चल रहा,

एक अन्य जर्जर बालक ।
थे तीन जुधा के रूप तृषा की,
जड़ता के हैं प्रति पालक ।
इनके मुखे कण्ठ कह रहे,
'दूधों पूतों' का बल हो ।
बाबू तू.....

उन्मत्त शिराओं में जिनके वैभव की,
प्यास भरी हलचल ।
इस राजमार्ग के प्रहरी हैं,
आकाश चूमते रंग महल ।
इक्कों, तांगों, मोटरों, बसों का,
होता है बेसुध नर्तन ।
अन्तर में भूल भरी जड़ता लेकर,
चलते हैं शव के तन ।
सब के आगे कर फैला कर,
कहते हैं युग युग मंगल हो ।
बाबू तू...

हैं अप्सरियों के परम-भक्त,
ये धन-कुबेर, संश्रुति पोषक ।
सांसों में घुट घुट कर मरती,

दुर्दान्त मनुजता के शोषक ।
घरती है पशुता की रचक,
आकाश गुनाहों की ज्वाला ।
यह मरघट की मस्ती में आई,
ले नर मुँडों की माला ।
पीती है व्यंगों का प्याला,
आँखों में करुणा का बल हो ।
बाबू तू.....

हैं भूखे दोनों राम कृष्ण,
पग पग पर गिरती दीन-प्रसू ।
जिसकी घरती है काँप रही,
जिसका अम्बर जलता धू धू ।
विप्लवकारी उर से अपने,
यह वैभव की सुपुमा प्यारी ।
व्याकुल सुलगाने आई है,
ले कंकालों की चिनगारी ।
इस के तिल तिल मरने से,
शोषक को स्वप्नों का बल हो ।
बाबू तू 'लाट कमंडल' हो ।

—प्र० 'सरोज' एम० ए० ।

लड़कियों के स्कूल में बम
स्नातनधर्म गन्ज स्कूल रिवाड़ी में,
जो एक मुस्लिम जायदाद में स्थित है, ५८
बम २८ कारतूस और ५ नेजे मिले हैं ।
एक बम फट जाने से ३ लड़कियों को चोट
लगी । उनमें से दो को हस्पताल पहुँचाया
गया ।

जहां राजा की मृत्यु पर पांच कुमारी कन्याओं को मार दिया जाता था !

★ पूर्वी अफ्रीका के राजे ★

[लेखिका :— कु० वेद मंगल राष्ट्र भाषा परिचय, हिन्दी रत्न, नैरोबी, पूर्वी अफ्रीका ।]

आज हर एक देश स्वतन्त्रता चाहता है और होनी भी चाहिए । अगर कोई देश गुलाम है तो वह थोड़े वर्षों के पश्चात स्वतन्त्र हो जाएगा । तब ही सुख और शांति हो सकती है । कोई देश वासी अपना राज्य तब पाते हैं यदि उसके पहले राजे बुद्धिमान्, विद्वान और बहादुर रह चुके हों । पूर्वी अफ्रीका में चार प्रांत हैं, केनिया, युगान्डा, टांगानिका और जंजीबार । युगान्डा प्रांत में तो कुछ आदमी पढ़े लिखे हैं भी परन्तु केनिया प्रांत तो बहुत पीछे है । ५० लाख की आबादी में से सिर्फ आधी दर्जन के करीब प्रेजुएट हैं । कोई अपनी भाषा नहीं थी । कोई लिबास नहीं था । कोई अपनी सभ्यता नहीं थी, चारों तरफ जंगल ही जंगल था । न कोई राजा और न कोई शासक । आज कल केनिया प्रांत में जो गड़बड़ चल रही है और माऊ माऊ संस्था ने देश में बेचैनी फैलाई हुई है, योरोपियन और भारतीयों को तंग कर रहे हैं और जान से मार रहे हैं तो वे भूल पर हैं । परन्तु उनके नेताओं ने मान लिया है कि महात्मा गांधी जी की अहिंसा ही एक रास्ता है जिस से स्वतन्त्रता मिल सकती है परन्तु असली निवासियों के

नेता जेल में बन्द हैं जो कि उन्हें बाहिर आकर सम्भावे । केनिया सरकार जोम्बो केनियात्ता (जो के ककुयो कौम का सरदार है) और उनके पांच साथियों पर मुकद्दमा चला रही है । यह मुकद्दमा दुनिया भर में मशहूर हो गया है । आज युगांडा प्रांत, जो कि केनिया के पास ही है और जिसे थोड़ा सा सभ्य कहा जाता है उनके प्राचीन राजाओं के हालात लिखती हूँ :—

राजा खुना अपनी प्रजा से अपने को परमेश्वर सदृश पुजवाता था । वह सिंह, हाथी आदि पशुओं के साथ मनुष्यों का शुद्ध कराया करता था । उन मनुष्यों का पशुओं द्वारा मार डाले जाना देखने से वह प्रसन्न होता था (कहावत है 'किसी को जान जाय किसी का खेल तमाशा') । उस के यहां ते दूधे चीते आदि पलते थे ।

राज दरबार में शकुन विचारने का भारी रिवाज था । अगर कभी अपशकुन ज्ञात होता तो भूट उस खराबी को दूर कराने का यत्न किया जाता । यत्न सब से उत्तम यह था कि राजा के भाई को जलती आग में डाल दिया जाता था या कुछ लोगोंको बिना अपराध ही मरवा डाला जाता था । (शेष पृष्ठ ३२ पर)

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

(श्री आत्मा राम शर्मा, रिटौली)

हे पुरुषोत्तम भारत दीपक,
 भ्रातृ भाव के पोषक राम ।
 तेरे बिन अब नहीं बनेंगे,
 इस जगती के बिगड़े काम ॥१॥

शीघ्र पधारो, स्वयं निहारो,
 मृत-भूमि की विटक अवस्था ।
 स्वप्न हुए सब अतीत गौरव,
 हुई जर्जरित धर्म व्यवस्था ॥२॥

कहां आप जो पितु आज्ञा से,
 फिरे वनों में कष्ट उठाते ।
 वृद्ध पिता पर हाथ उठा कर,
 आज पुत्र हैं वीर कहाते ॥३॥

राज पाट की गेद बना कर,
 चारों भाई थे, तुम खेले ।
 आज चार पद पृथिवी हेतु,
 भीषण नाटक जाते खेले ॥४॥

प्रातः उठ कर जनक सुता की,
 करता पूजा शुद्ध हृदय से ।
 कहां मिलेंगे आज यहां पर,
 विनत सहोदर लक्ष्मण जैसे ॥५॥

एक रजक के कहने पर ही,
 तजी मैथिली प्राण प्रिया थी ।
 अहा ! राम तब शासन युग में,
 मुदित दशों दिश सकल प्रजा थी ॥६॥



लोभ पाप के धूमिल घन ने,
 भारत का नभ ढांप लिया है ।
 नहीं निकलता विवेक भास्कर,
 गाढ़ तिमिर ही भरा हुआ है ॥७॥

नहीं दीखता कोई जन भी,
 हाय ! अब यहां यथार्थ सुखी ।
 सारे अविचलित अस्थिर मानस,
 स्नेह शून्य ओ कपटी दुःखी ॥८॥

देख देख कर इस आचारिक,
 अधः पतन को हे रघुनाथ ।
 मेरे निर्मल अन्तस्तल में,
 लगती चोटे शत इक साथ ॥९॥

राम ! तुम्हारे मानस में क्या,
 जन्म भूमि की लाख हीन दशा ।
 अन्तः पीड़ा नहीं हुई है ।
 जो बैठे हो निश्चिन्त मना ॥१०॥



एकांकी नाटक—

आदर्श पत्नी—उर्मिला

पात्र-परिचय

उर्मिला—लक्ष्मण की धर्मपत्नी ।

देवकी—उर्मिला की सखी (सेनापति की विवा-
हिता पत्नी) ।

दासी—रानी कौशल्या की परिहारी ।

(स्थान : अयोध्या के राजमहल में उर्मिला का कमरा । समय : दोपहर । कमरा विशेष रूप से सजा हुआ है । सामने दो खिड़कियाँ हैं जिनके पर्दे कुछ हट होने के कारण बाहर का दृश्य दिखाई देता है । दाईं ओर की दीवार पर ऋषियों और पूर्वजों के चित्र हैं । एक चित्र विशेषतः बड़ा है जिसमें महाराज हरिश्चन्द्र के काशी से निकलने का दृश्य अङ्कित है । मध्य में लक्ष्मण का सुनहला चित्र है जिस पर पुष्पमाला लटक रही है । बाईं ओर दीवार में दो बड़ी २ अलमारियाँ हैं जो बन्द हैं । दोनों अलमारियों के बीच एक बड़े आकार का दर्पण है जिस पर हल्के हरे रंग का रेशमी पर्दा लटक रहा है । फर्श पर अमूल्य कालीन बिछा हुआ है । उनपर दो स्त्रियाँ बैठी हैं । एक के शरीर पर श्वेत साड़ी माथे पर बिन्दिया और दूसरी के शरीर पर बहुरङ्गी साड़ी, बांह पर चूड़ियाँ और माथे पर बिन्दिया शोभायमान है । दूसरी ओर द्वार है जिस पर मखमली पर्दा पड़ा हुआ है) ।

देवकी—भाभी ! तुम दिन प्रतिदिन दुर्बल

होती जा रही हो ? क्या बात है ?

उर्मिला—नहीं तो । मैं वैसी ही हूँ ।

देवकी—मुझे बनाती हो भाभी ! मैं बची नहीं हूँ । एक ही वर्ष में तुम आधी रह गई हो । धैर्य रखो न !

उर्मिला—देवकी ! तुम भी मुझे धैर्य धरने को कहोगी ? क्या तुम नहीं जानती कि मैंने कितने साहस का कार्य किया है ?

देवकी—सब जानती हूँ किन्तु तुमने कुंवर जी को वन में जाने ही क्यों दिया ?

उर्मिला—यह क्या कहती हो बहिन ! उन्हें रोक कर मैं पथभ्रष्ट हो जाती ? कर्तव्य पालन के लिये जेठ जी ने इतना बड़ा राज्य त्याग कर वनवास लिया तो क्या मैं उन्हें पिता समान बड़े भाई की सेवा से रोकती ? दोनों वंशों पर कलङ्क लगाती और पाप की भागी बनती ?

देवकी—तो आप पति के साथ वन को भी तो जा सकती थीं ? बड़ी भाभी जो गई हैं ।

उर्मिला—जीजी गई हैं पति सेवा में । वह भी भाई और भाभी की सेवा करेंगे । यदि मैं जाती तो उनकी सेवा में बाधा पड़ती ।

देवकी—भाभी धन्य हो तुम और धन्य है तुम्हारा त्याग । मगर एक बात पूछूँ ?

उर्मिला—पूछो ।

देवकी—कुंवर जी ने तुम से पूछा तो होगा ?

उर्मिला—पूछा क्यों नहीं ? मैं उन के वन जाने का निश्चय सुन कर उदास बैठी थी । वह आये और प्रेम से मेरा हाथ अपने हाथों में लेते हुये बोले—उर्मि ! मैं भैया के साथ वन जा रहा हूँ, अनुमति दो !” मेरा मन भर आया, कुछ समय तक प्रेम और कर्तव्य में द्वन्द चलता रहा । अन्त में कर्तव्य ने प्रेम पर विजय पाई । छलछलाते हुये अश्रुओं को अन्दर ही अन्दर रोक कर मैंने कहा—‘जाओ नाथ ! कर्तव्य-पालन में उर्मिला बाधा न डालेगी ।’ उन का मुख मण्डल कंवल की भांति खिल उठा । उन्होंने फिर कहा—‘मेरी रानी उदास न होना । यहां तुम्हें कोई कष्ट न होगा । सहेलियों से जी बहला लिया करना । दोनों भाभियां भी तो नहीं होंगी । कभी जी न लगे तो मायके चली जाना ।’ मैंने उत्तर दिया—‘मैं उदास क्यों होने लगी ? फिर मायके भी क्यों जाऊं ? यहां रह कर पूज्या माताओं की सेवा किया करूंगी । आप मेरी ओर से सर्वथा निश्चिन्त रहें । मैं धन्य हूँ कि मेरे पति इतने कर्तव्यपरायण हैं ।’ तब मैंने स्वयं अपने हाथों से उनके शरीर पर वन-वेष पहराया और माथे पर रौली का टीका किया ।”

देवकी—धन्य है तुम्हारा साहस । क्या पीछे उदास नहीं हुई ।

उर्मिला—न जाने यह हृदय कैसी कैसी कोमल भावनाओं से भरपूर हैं कि लाख वश में रखने पर भी कभी २ अधीर सा हो ही जाता है । सुनहले अतीत की मधुर स्मृति में अश्रु धारा स्वयमेव बह निकलती है । न जाने परमात्मा ने स्त्री का हृदय इतना कोमल क्यों बनाया है ?

देवकी—यह दुर्बलता ही तो नारी का भूषण है भाभी ! और यही अन्तर है उसमें और पुरुष में । महाराज भी तो पुत्र-वियोग सहन न कर जान पर खेल गये ।

उर्मिला—(ठंडी साँस लेकर) यह संसार है बहिन ! उन्हें पुत्र वियोग से अधिक दुःख छोटी रानी की कठोरता का था । दोनों पुत्रों पर महाराज का प्रेम भी अद्वितीय था । (आंखों के अश्रु पोंछते हुए) कष्ट ४२ कष्ट आता है । जेठ जी के जाने और पिता जी के स्वर्ग सिधारने पर माताओं की अवस्था अवर्णनीय थी । वे बाल नोचती, वस्त्र फाड़ती और सिर पीटती थीं । दुःख तो सब को था किन्तु उनकी अवस्था देखकर कलेजा मुंह को आता था ।

देवकी—उस समय तुम्हारा धैर्य अद्वितीय था । कहते हैं कि तुम्हारी दोनों आंखों से अश्रु बह रहे थे और तुम कभी बड़ी रानी को और कभी छोटी रानी को सम्भाल रही थीं ।

उर्मिला—वह परिस्थिति ही ऐसी थी । माताओं का तो संसार ही उजड़ गया । उधर

बृद्धावस्था में प्यारा पुत्र बन चला गया, साथ ही भाई और वधु भी, और दूसरी ओर जीवन धन उन्हें छोड़कर चले गये। वह तो दोनों ओर से लुट गईं। तब उन्हें धैर्य बंधाने वाला कौन था? देवर जी और जेठ जी तो नानके थे। उस समय मुझे अपने डूबते हृदय को संभाल कर उन्हें धैर्य बंधाना ही उचित था।

देवकी—तुम्हारा धैर्य अद्वितीय है भाभी, इतिहास में तुम्हारा नाम सुनहले अक्षरों में लिखा जायेगा। तुम्हारी मूक तपस्या का वर्णन अकथनीय है।

उर्मिला—ऐसा न कहो देवकी! तुम अन्याय कर रही हो। इतनी प्रशंसा क्या उचित है भला? त्याग तो जेठ जी और जीजी का है। बड़े जेठ जी पिता जी की आज्ञा मान तथा राज्य त्याग कर वन चले गये। जीजी भी राजसी ऐश्वर्य को त्याग उनके पदचिह्नों पर चली गईं। दूसरे जेठ जी जब ननिहाल से आये और यहां की अवस्था देखी तो सीधे वनों में गये ताकि बड़े भाई को लिवा ला सकें। अब भी तुम नहीं देखतीं वाटिका में जेठ जी की खड़ाऊं के नीचे आसन जमा कर राज्य-कार्य कर रहे हैं। इतना बड़ा राज्य पाकर ठुकरा देना हंसी नहीं है। इनके सामने मेरा त्याग क्या है? राज प्रासाद में रहती हूं, अच्छा खाती पीती हूं, मुझे कष्ट ही क्या है?

देवकी—(श्रद्धा भाव से) यह तो न कहो

भाभी! यह भी तुम्हारा बड़प्पन है कि अपने किये को छिपाती हो। सब सुन चुकी हूं कि तुम राज महल में किस प्रकार रहती हो। कहां हैं तुम्हारे भूषण और तुम्हारा राजसी वेष? तपस्विनी की भाँति श्वेत साड़ी तुम्हारे शरीर पर है। तुम्हारा तप, त्याग और बलिदान मूक है, गुप्त है। उसे फल की...

उर्मिला—(देवकी के मुंह पर हाथ रख कर) अच्छा बस करो भाटों की भाँति अपनी सखी की प्रशंसा के गीत न गाओ।

(द्वार का पर्दा हटाकर दासी का प्रवेश)

दासी—बड़ी महारानी जी बुला रही हैं।

उर्मिला—तुम चलो मैं अभी आती हूं।

(दासी का प्रस्थान)

उर्मिला—(देवकी से) बहिन तुम बैठो। मैं माता जी की आज्ञा सुन आऊं। (प्रस्थान)

देवकी—(मन ही मन में) धन्य हो भाभी! तुम्हारा तप और त्याग अप्रत्यक्ष और युवराज तथा दोनों भाइयों का त्याग प्रत्यक्ष है। सभी उनकी प्रशंसा कर रहे हैं किन्तु तुम्हारा त्याग इस कमरे की चार दीवारी तक ही सीमित है। संभव है कि इतिहास भी तुम्हारी ओर से आंखें बन्द कर ले। यह पौवन, यह लावण्य! क्या कमरे में बैठ कर रो रो कर खो देने के लिये है? ३६५ दिनों वाले लम्बे वर्ष के पूरे चौदह वर्ष—पूरा एक युग कर्तव्य के चरणों में न्यौछावर कर दिया है तू ने भाभी! महल

में त्याग और सेवा की प्रतिमा बनकर बैठी है। अपने कमरे में भूक रह कर अपने दुःख को अन्दर ही अन्दर पीकर दिन व्यतीत कर रही है और फिर सब के घावों पर फाया रखती फिरती है। परछाई की भांति हर समय तीनों महारानियों की सेवा में उपस्थित है। यह है सच्चा त्याग।

(उर्मिला का प्रवेश)

उर्मिला—शीघ्र ही लौट आई हूँ न बहिन ! देर तो नहीं हुई बहिन ? अच्छा अब तुम कुछ अपनी सुनाओ।

देवकी—मेरी क्या सुनोगी ? दिन अच्छे कट रहे हैं। उसी पुस्तक के कुछ पृष्ठ और पढ़ लिये हैं।

उर्मिला—शुभ से सब कुछ पूछ लिया अपनी बार चुप हो किन्तु यह न होगा। तुम भी माता की पदवी से सुशोभित हो गई हो। सुनाओ जीजा जी प्रसन्न है ? और हां नन्हे को साथ क्यों नहीं लाई ? मुझे दिखाया भी नहीं।

देवकी—उसे भी देख लेना। तुम्हारे पास ही तो है। आज सो रहा था फिर ले आऊंगी। वह तो तुम्हारा ही है। अच्छा बहुत देर हो गई अब चलूँ ?

उर्मिला—कुछ देर और बैठो। इतनी शीघ्रता काहे की है ?

देवकी—रुब की आई हुई हूँ। नन्हा रोता होगा। कल फिर आऊंगी।

यह भी खूब रही !

अनिल अपनी बुद्धिमत्ता के कारण अपने साथियों में बहुत प्रसिद्ध था। अपनी कठिनाइयों को हल करवाने के लिए उसके साथी प्रायः अनिल के पास ही आते और वह तुरंत ही उन सब की कठिनाइयों का हल ढूँढ निकालता। एक दिन जब वह और उसके साथी एक ऊँचे टीले से छलांगें लगा रहे थे तो उनमें से एक लड़का बहुत बड़े मटक के में गिर पड़ा, वह मटका पानी से भरा हुआ था। उस लड़के को निकालने की तरकीब किसी को न सूझ रही थी। यदि अनिल इस समय अपनी बुद्धिमत्ता को प्रयोग न करता तो उस लड़के का डूब मरना निश्चित बात थी। अनिल के पास ही एक पत्थर पड़ा हुआ था जिसको उठाकर उसने घड़े पर दे मारा। घड़े के टूट जाने से सारा पानी उसके बाहर निकल गया। इस प्रकार जब इन्दु बाहर निकला तो हंस कर सब मित्रों से संवाधित हुआ “यह भी खूब रही”।

राजन पराशर, गुड़गाँव

★ ★ ★

उर्मिला—अच्छा जैसी तुम्हारी इच्छा। (दोनों उठकर द्वार की ओर जाती हैं। देवकी प्रणाम करके पर्दा उठाती है और चली जाती है। उर्मिला आकर लक्ष्मण के चित्र के सामने बैठ जाती है।)

पटाक्षेप

आप नहीं जानते

भोजन बैंक

इंग्लैण्ड में एक ऐसा बैंक खोला गया है जिस में लोग रुपये जमा कराने की बजाय भोजन जमा कराते हैं। भोजन एक वर्ष तक ताजा रहता है। भोजन लाकरों में रखा जाता है जिसका किराया ७ पौंड वार्षिक लगता है।

गृहिणी की दैनिक रैर

अनुमान लगाया गया है कि एक गृहिणी घर के काम काज के मिलसिले में प्रतिदिन ५ मील चलती है।

लिप-स्टिक स्कूल

लण्डन में एक कमर्शियल स्कूल है जहां लड़के लड़कियां टाईप शाट्टरहेण्ड और अकाउंट्स सीखते हैं। लड़कों को सिगरेट पीने और लड़कियों को लिपस्टिक बरतने की इजाजत है।

जहां पति भोजन बनाते हैं!

न्यूयार्क का समाचार है कि प्रेयरीलैंड में १०० में से ४८ पति भोजन आप बनाते हैं क्योंकि उनकी पत्नियां बहुत देर से सो कर उठती हैं।

डी० बी० स्कूल सरकारी प्रबन्ध में

पंजाब सरकार ने निश्चय किया है कि प्रति वर्ष एक डी. बी. हाई स्कूल और एक डी. बी. गर्ल्स मिडल स्कूल को अपने प्रबन्ध में ले ले। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को १० एकड़ भूमि और ६०,००० रुपये उस स्कूल के भवन के लिए देने होंगे जिस की अपनी बिल्डिंग नहीं होगी।

मदन लाल पाहवा

कोई परीक्षा न दे सकेगा

माहत्मा गान्धी हत्या केस के अभियुक्त मदन लाल पाहवा को पंजाब यूनिवर्सिटी ने एफ० ए० (इंगलिश) की परीक्षा में बैठने की आज्ञा नहीं दी। उसने प्रभाकर परीक्षा पास की थी। प्रयाग विद्या पीठ ने साहित्यरत्न में उसे बैठने की आज्ञा दे दी है।

★

डी. बी. टीचरों की मांगें स्वीकृत

मौ० आज़ाद से श्री भीम सेन सच्चर ला० जगत नारायण तथा प० श्री राम शर्मा की बात चीत के फलस्वरूप डी० बी० टीचरों की मांगें स्वीकार कर ली गई हैं (१) प्रोफेशन टैक्स ५ रु० सैंकड़ा कर दिया जाएगा (२) हड़ताल के दिनों का वेतन नहीं कटेगा (३) ५० से कम वेतन वालों को ७॥) रु० वृद्धि मिलेगी।

स्वास्थ्य सुधार

मलेरिया की नई औषधि

अमेरिका की कोलम्बिया यूनिवर्सिटी (न्यूयार्क) की रसायनशाला ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान में 'प्रिमावरीन' नामक एक नई औषधि की खोज की थी। अभी हाल के परीक्षणों से पता चला है कि यह औषधि खून में मौजूद समस्त कीटाणुओं को नष्ट कर देती है जिस से रोग के दुसरा कर आने का कोई खतरा नहीं रह जाता। अब तक कोई ऐसा तरीका नहीं खोजा जा सका था जिस से खून में मौजूद रोग के कीटाणुओं को पूरे तौर से नष्ट किया जा सकता। भारत तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के भागों में मलेरिया पर नियन्त्रण प्राप्त करने में इस दवा का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है।

गृह-विज्ञान

★ गम वस्त्रों का कीड़ों से बचाव ★

कटु अनुभव द्वारा स्त्रियों को यह ज्ञात हुआ है कि कीड़े थोड़ा सा भी खाये हुए स्थानों को पहले काटते हैं, इसलिए धब्बे पड़े कपड़ों को बिना साफ कराये वे कभी बक्स में नहीं रखती। यदि कपड़े को डाइक्लीन कराने या धुलाने की आवश्यकता न हो तो वे उसे खुली हवा में लटका देती हैं और ब्रुश करती रहती हैं। फिर उन साफ ऊनी कपड़ों को तह करके और उन पर कीटनाशक दवा छिड़क कर उन्हें भारी कागज में लपेट

देती हैं। १०० घनफुट स्थान वाले बक्स के लिए लगभग एक पाँड कीटनाशक द्रव्य पर्याप्त है। इस पैकट को चिपकने वाले कागज या फीते से बांध कर उस कागज के सारे किनारों को बन्द कर दिया जाता है, जिस से कि कीड़े प्रवेश न पा सकें। फिर इस पैकट को टूंक या दराज में रख कर उसे यथासम्भव ठण्डे स्थान में रख दिया जाता है। (पृ० २५ का शेष)

जब राजा गद्दी पर बैठता था तो इर्द गिर्द के सब राजा लोग इसकी सेवा में अपनी एक लड़की रानी बनाई जाने के लिए भेज दिया करते थे। जिसके घर में लड़की न होती वह लड़की का मूल्य भेज देता था।

राजा की मृत्यु:- उक्त राजा सूना (SUNA) सन् 1857 ई० में मर गया। मरने का समाचार कई महीनों तक गुप्त रखा गया था। यही रिवाज उन अफ्रीकन जतियों में प्रचलित था।

इन में मुर्दों को गाड़ देने का रिवाज था परन्तु राजाओं के मुर्दे गाड़ने में विशेषता यह थी कि राजा के शव को गाय की खाल में रख कर प्रथम सरोवर में तैराते थे। फिर उसको लाकर एक झोंपड़े में रख देते और उसी झोंपड़े में ५० जीवित गऊएं तथा ५ जीवित कुमारी कन्याओं को भी बन्द कर देते थे। वे बेचारियां भूख से तड़प २ कर मर जाती थीं। इस आदत मूल्यता तथा अन्ध विश्वास के अत्याचार का भी कुछ ठिकाना है? यह वृत्तान्त सन् १८५७ का है।

चुटकुले

१ एक माँ (बेटे से) यह कैसी माचिस की डिबिया लाया है जिस में एक भी माचिस नहीं !

बेटा :- मैं क्या जानूँ ? मैं ने खरीदते हुए हर एक सिलाई जला कर देखी थी कि कोई खराब तो नहीं ।

२ शिचक :- रमेश मुगल साम्राज्य पर प्रकाश डालो ।

रमेश :- पर फ्लैश लाईट तो है नहीं प्रकाश किस से डालूँ ?

३ शिचक :- मोहन उल्लू के कितने पंख होते हैं ?

मोहन :- मास्टर जी कोई भी नहीं ।

शिचक :- अरे कैसे नहीं ?

मोहन :- जी, कल आप ने मुझे उल्लू कहा था, मेरे तो कोई पंख नहीं हैं ?

४ मोहन :- सोहन से- क्यों भाई सोहन तुम रात में चशमा लगा कर क्यों सोते हो ?

सोहन :- इस लिए कि स्वप्न अच्छी तरह देख सकूँ ।

—प्रमिला कक्षा पंचम; पालमपुर ।

—मद्रास असैम्बली में यह सुझाव दिया गया कि छात्रों से एक २ रु० मासिक शिचा कर लिया जाय तो २॥ कोरड़ वार्षिक शिचा पर अधिक व्यय किया जा कसता है ।

इधर उधर से

प्रत्येक तहसील में हाई स्कूल

हिमाचल प्रदेश सरकारहर तहसील में हाई स्कूल खोलने का निश्चय कर चुकी है ।

छात्र ने अध्यापक को पीट डाला

टप्पा (भटिण्डा) का समाचार है कि स्थानीय स्कूल के छात्र ने जो कि वार्षिक परीक्षा में असफल रहा था, अपना परीक्षा फल सुनाने वाले अध्यापक को स्कूल से घर जाते समय छड़ी से पीट डाला ।

COURT NOTICE

(Proclamation requiring attendance of Respondents under Rule 20 C. P. C.)

In the court of Shri Hans Raj Sahib Sub Judge I Class, Delhi, court No. 3

Civil suit No. 614 of 52 M/s. Phool Chand Gowardhan Das Commission Agents Gadodia Market Delhi.

— Plaintiffs

Versus

M/s. Tek Chand Durga Prasad commission Agents, Gajrola Distt Moradabad (2) Durga Prasad S/o Tek Chand Prop:- firm Tek Chand Durga Prasad (3) Shambhu Nath (4) Tarlok Chand Sons of Durga Prasad Commission Agents Gajrola Distt Moradabad.

— Respondents

Suit for Rs 238/7/3.

To Respondents above noted.

In this suit the Respondents M/s. Tek Chand Durga Prasad cited above wilfully evade service of summons and their whereabouts are not known therefore this notice is issued to the above respondents that they should appear in this court on 23. 4. 53, at Delhi failing which ex parte proceedings will be taken and suit decided in their absence.

Given under my hand and seal of the court this 19th day of March 1953.

Seal of the court Sd.....

Sub Judge I class Delhi.



(पृष्ठ १० का शेष)

'सुखी' 'बिन्दी' की सीरी सी तो
लानी है इस बार नई ।
इस लिए बाबू जी पैट छोड़
पाजामे से गुजरान करो ।
'वूशर्ट' एक काफ़ी तुम को ?
'जुराब-हैट' ऐ ! शोम करो ।
हो चुका 'कोड बिल' पास अजी !
बोलोगे तो बस खैर नहीं ।
'डाइवोर्स पैटीशन' दे दूँगी
अब कोई मुझ को गैर नहीं ।
यदि 'विद वाइफ' ही रहना है
तो कान दबा कर रहा करो ।

नहीं तो छीलोगे बैठ घास ।
जब होगा हिन्दू कोड पास ॥
'मिस्टर' 'मिसेज' बन जाएंगे
मेसों में दाल पकाएंगे ।
पदों में बैठ कर लाला जी फिर
बच्चों को बहलाएंगे ।
देवी भौंहें या लाल आंख उनकी
न देख सकेंगे वे ।
खीसे' नियोर, और हाथ जोड़
उनसे यह अर्ज सुनाएंगे ।
गृह लक्ष्मी जी ! श्रीदेवी जी !
अपराध मरु का क्षमा करो ।
भीमति ! महामाये ! बलिह !
सेबक पर ठण्डी नज़र करो ।
मैं इन चरणों का दास महा
बलिहारी जाऊँ लाख बार ।
बस हंस कर कह दो क्षमा किया;
वर मांग रहा हूँ कर पसार ।
देवी जी हंसती हंसती जब,
ठुकरा कर सिर मुड़ जाएंगी ।
तब समझेगे 'वे' पूर्ण आस ।
जब होगा हिन्दू कोड पास ॥

(पृष्ठ १० का शेष)

और भीतर से आती हुई एक लड़की से लिपट
कर चीख उठा—उसकी पिचकी गालों पर दो
आंसू चमक उठे 'मेरा महान् गन्तव्य आज पूर्ण
हुआ' कह कर तनिक मुग्धराया ! कुसुम ने
सिसकते हुए ट्रक पर पदार्पण किया और धीरे से
नारा लगाया 'माँ भारती की जय !' वृद्ध की
आंखें चमक उठीं और दूसरे ही क्षण ट्रक हवा से
बाते कर रहा था । चिर बाद कुसुम के शुष्क
अधरों पर हंसी की एक रेखा खिंच गई और
उड़ती हुई धूल पाकिस्तान की खिल्ली देर तक
उड़ाती रही । —३ समाप्त ३—

COURT NOTICE

In the court of Shri Hans Raj
Sahib Sub Judge I class, Delhi.
court No. 3

In the matter of petition, dated
19-2-53 by (1) Shrinati Manjli
Devi widow of Shri Rattan Sain
(2) Shri Rup Chand S/o Rattan
Sain, residents of Sabaran Pur
(U. P.)

for succession certificate under
section 372 of Act 39 of 1925.
To: General public.

Be it known that Manjli Devi
and others cited above have put in
this court a petition for grant of a
succession certificate in respect of
rupees one thousand left by
Nirankar Prashad Gupta deceased.
Any one having any objection,
should appear in this court on 9. 5.
53 at 10 a. m.

Given under my hand and seal
of the court this 17th day of March
1953.

Sd.

Seal of the court : Sub Judge I class
Delhi.

No. 17897 D 14/3/53

वे क्या कहते हैं ?

मैं ने आपकी प्रकाश पत्रिका को

पढ़ा। परिणाम—पत्रिका का भविष्य उज्ज्वल है।

आपकी पत्रिका छात्रों को शिक्षा प्रदान करने में

सफल है और जिस उद्देश्य को लेकर पत्रिका का

प्रकाशन हुआ है वह पूरा हो रहा है।'

—कृष्ण चन्द्र मधु. एच० ए० बी० इंटर कालेज,

सहारनपुर (यू० पी०)

‘आपकी पत्रिका को मेरे स्कूल की छात्राएं बहुत ही पसन्द करती हैं।’

—ई० ज्योत्सवी प्रिंसिपल सेंट एनीस, गल्ज

स्कूल पालमपुर।

कवि विनोद, वैद्यभूषण पं० ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य द्वारा निर्मित।

★ कुछ आवश्यक औषधियां ★

अमृतधारा—जेब में या घर में ‘अमृतधारा’ का रखना भयंकर भूल है। मूल्य बड़ी शीशी 2½ रुपये, आधी शीशी 1¼ रुपया नमूना 8 आने।

अमृतधारा मंजन—दान्तों और मसूढ़ों के लिए सर्व-श्रेष्ठ मूल्य 8 आने।

अमृतधारा अंजन—नेत्र रोगों को दूर करने और दृष्टि बढ़ाने के लिए मूल्य 1 रुपया।

किरण जवानी—बसन्त ऋतु का उपहार। बुढ़ापे और जवानी की सारी कमजोरियां दूर। मूल्य ३२ गोली 2 रुपये, दर्जा अव्वल की ३२ गोली 4½ रुपये।

तिलाई कीम—बाहर बरतने के वास्ते मूल्य 2 रुपये।

खार पाऊंडर—हृदय और मस्तिष्क दोनों बलवान, वीर्य पुष्ट हो। मूल्य ३२ तोला 3 रुपये।

अन्य गुणकारी औषधियों के विस्तृत वर्णन का बड़ा सूचीपत्र पारसल में भेजा जाता है।

पत्र और तार का पता—अमृतधारा, देहरादून।

विज्ञापक :—

मैनेजर, अमृतधारा फार्मसी लिमिटेड, अमृतधारा भवन,

अमृतधारा डाकघर, देहरादून, (३० प्र०)

सोमावती—स्त्रियां प्रदर (ल्यूकोरिया) से छूट कर स्वस्थ और जवान बनें। मूल्य ‘अनारी’ औषधि सहित 2½ रुपये।

मीठाफल—गर्भ के तीसरे मास में केवल एक दिन खा लेने पर पुत्र ही उत्पन्न होता है। हज्जारों के घर पुत्र रत्नों से उज्ज्वल। लड़की उत्पन्न हो तो मूल्य वापिस। मूल्य 8 रुपये।

शोधक—स्थायी कब्ज का इलाज। आमाशय अंतर्द्वियों, नेत्र, मस्तिष्क और गर्भाशय के विकार दूर। मूल्य ३२ गोली 2 रुपये।

सारसारिष्ट-मिश्रित—उत्तम रक्त शोधक। त्वचा और लहू के सारे विकार दूर। बसन्त ऋतु में सेवन करने योग्य मूल्य 2 रुपये।

जीष्ट रस—स्तनयुओं की पीड़ाओं, सिर दर्द, दाँत दर्द आदि को लाभकारी। निर्बलता नाशक बलकारक। मूल्य 1 रुपया।

केवल एक मास के लिए १२॥ प्रतिशत की विशेष रिआयत

हमने अपना वर्तमान स्टाक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों के निम्न-लिखित दरों पर १२॥ प्रतिशत की रिआयत देने का निश्चय किया है। इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आप को निराश होना पड़े।

* फुटबाल कवर *

१ टी शोप श्वेत कुर्म चमड़ा इङ्गलिश डिजायन नं० ५ कवर	११-५-०	१६ वाली बाल नैट वाटर प्रूफ रेग्युलेशन साइज डबल टेप	६-०-०
२ टी शोप कानपुर लैडर	१२-५-०	१७ वाली बाल नैट काटन रेग्युलेशन साइज डबल टेप	५-५-०
३ उत्तम प्रैक्टिस नं० ५ कवर १३ नग	११-०-०	१८ यूथ साइज वाली बाल नैट काटन	७-५-०
४ सस्ता प्रैक्टिस नं० ५	६-५-०	१९ इन्फलेटर (बहुत बड़ा साइज)	५-०-०
५ टी शोप नं० ४ फुटबाल कवर	११-०-०	२० इन्फलेटर (बड़ा साइज)	५-०-०
६ उत्तम प्रैक्टिस नं० (४१३ नग)	६-०-०	२१ लैडर लेसिज (प्रति नग)	०-२-०
७ चीप (सस्ता) प्रैक्टिस नं० ४	६-०-०	२२ विस्ल (ऊंची आवाज)	१-०-०
८ टी शोप नं० ३ यूथ फुटबाल कवर	६-०-०	* हाकियाँ *	
९ उत्तम प्रैक्टिस नं० ३ यूथ,	५-०-०		
१० बलैडर नं० ५, ४, ३ फास्ट क्वालिटी	२-०-०	२३ ३६ फुल साइज इंगलिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक	५-०-०
११ बलैडर नं० ५, ४, ३, सैकंड ,,	१-१२-०	२४ ३६ फुल साइज ओलैम्पिक	७-५-०
१२ टी शोप, थार्न-प्रूफ कुर्म लैडर वाली बाल कवर	१०-०-०	२५ ३३=मिडल साइज इङ्गलिश रबड़ बाऊंड	४-५-०
१३ पेटेंट रोज कलर वाली बाल कवर	६-०-०	२६ हाकी बाल स्पेशल काऊन	४-०-०
१४ उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर	५-०-०	२७ हाकी बाल मैच	३-५-०
१५ यूथ साइज नं० ३ ,, ,,	७-५-०		

नोट:—(१) इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है (२) प्रत्येक प्रकार के वूट, शूज, पुल ओवर, मफलर, जुराब भी तैयार होते हैं। (३) वजन करने की मशीनें और रबड़ की मोहरें भी तैयार होती हैं।

प्यारा लाल ऐण्ड सन्ज स्पोर्ट्स डीलर्स
जालन्धर शहर (पूर्वी पंजाब)

यदि आप चाहते हैं

कि

आप के बच्चे

गली कूचों, स्कूल और कालिजों के दुष्ट विद्यार्थियों के कुसंग, सिनेमाओं के जीवन नाशक प्रचार एवं इस प्रकार के अन्य दूषित वातावरण के शिकार न हों।

तथा वे

कर्तव्य परायण नव युवक, आप के कुटुम्ब के नाम को उज्ज्वल करने वाले, देश के सच्चे नागरिक, समाज के गौरव शाली सदस्य एवं ईश्वर के दृढ़ उपासक बन सकें तो उन्हें आज ही सुयोग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा निम्न लिखित पुस्तकों को बहु संख्या में खरीद कर, इन का प्रचार कर के सात्विक दान के यश एवं पुण्य के भागी बनिये।

आचार्य भगवान् देव जी द्वारा लिखित पुस्तकें:—

१ ब्रह्मचर्यामृत	[तीसरा संस्करण] (=)॥
२ हमारा शत्रु, तम्बाकू का नशा	[दूसरा "] (=)॥
३ पापों की जड़, शराब	["] (=)॥
४ व्यायाम का महत्व	["] (=)
५ राम राज्य कैसे हो ?	["] (=)
६ नव रत्ना	["] (=)
७ स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा	["] (=)
८ बाल विवाह से हानियाँ	["] (-)
९ ब्रह्मचर्य के साधन भाग १, २,	1)
१० ब्रह्मचर्य के साधन भाग ३ [दंत रत्ना]	=)
११ ब्रह्मचर्य के साधन भाग ४ [स्नान संध्या हवन ॥]	

नोट:—हमारा विस्तृत सूची पत्र मुफ्त प्राप्त करें।

वैदिक साहित्य सदन

आर्य समाज मन्दिर, सीता राम बाजार, देहली।

क्या आप प्राचीन आर्य संस्कृति में विश्वास रखते हैं ? क्या आप श्री कृष्ण के उपासक एवं भगवद्गीता के प्रेमी हैं और उसका वास्तविक मर्म जानना चाहते हैं ? यदि हाँ तो आज ही

वैदिक गीता

(तृतीय संस्करण)

जो कि प्रसिद्ध विद्वान श्री आत्मानन्द जी द्वारा लिखा गया श्री भगवद् गीता पर सर्व सुन्दर एवं अद्वितीय भाष्य है। मंगा कर पढ़िये।

सुन्दर दुरंगी छपाई परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण, गते की आकर्षक जिल्द, द्वितीय संस्करण की अपेक्षा अधिक सुन्दर होने पर भी कागज की इस मंहगाई में मूल्य केवल ३) ही रखा गया है। डाक व्यय ॥) पृथक है। तुरन्त मूल्य भेज कर अथवा वी० पी० से मंगवाइये। शीघ्रता कीजिए

पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा लिखित

मनो विज्ञान तथा शिवसंकल्प मूल्य २॥)

वर्तमान द्वितीय संस्करण की थोड़ी सी प्रतियाँ ही शेष रहती हैं। कागज की इस अत्यन्त मंहगाई में न जाने तीसरा संस्करण कब छपे और कितना मंहगा पड़े। वर्तमान पुस्तकों पर मोहर लगा कर मूल्य बढ़ाने की हमारी नीति नहीं है। अतः इस से लाभ उठाएं। और आज ही डाक व्यय सहित ३) भेज कर, ३) की वी० पी० से अथवा स्वयं आकर दुकान से २॥) में अपनी प्रति प्राप्त कीजिए। स्वामी आत्मानन्द जी महाराज की अगली पुस्तक

“संध्या के तीन अंग”

होगी, जो शीघ्र छप रही है।

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	-/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and with drawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Phi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices

Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार देना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार-विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाया। (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को वहां से भेजा जाता है। कारणवश देर से भेजना सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आग्रिम नियत है। बी० पी० से ७॥) है। विदेशों में बी० पी० नहीं जाता। पेशगी १५ शि० भेजें।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥२) के डाक टिकट भेजें।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की व्यवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकेगी।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जाते चाहियें। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे

५) रु० ब्याक के लिए भेजें और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जाते।

(७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अक्षरीय न हों और जिन के दाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार है।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)



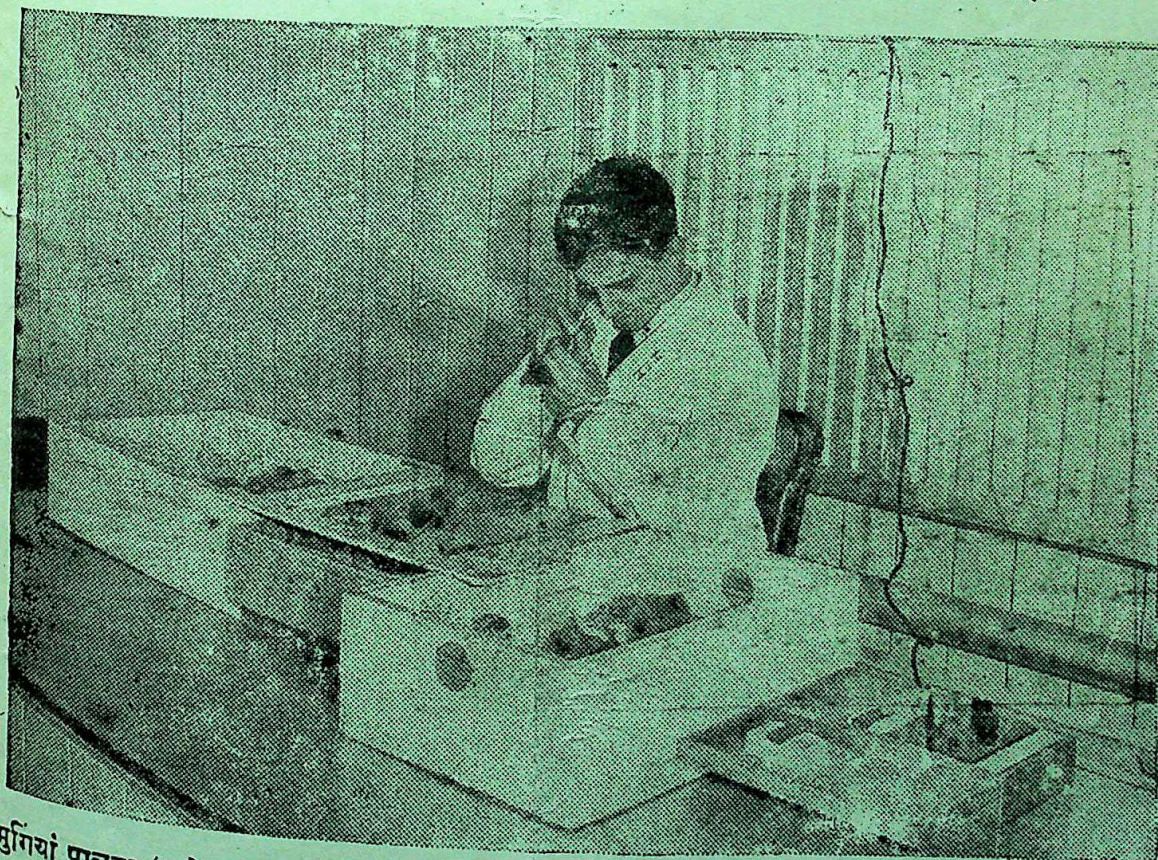
मिसेज आईजन हौवर अमेरिका
के नये प्रधान की पत्नी ।



डा० जाहन डब्ल्यू टेलर-यूनेस्को
के अस्थाई डाइरेक्टर ।



अमेरिका की वजीर खजाना
मिसेज आईवी बेकर इस पद
पर बैठने वाली पहली
अमेरिकन महिला ।



मुर्गियां पालना (पोल्टरी) ब्रिटेन में एक लाभप्रद व्यवसाय है । अभी २ एक मशीन तैयार की
गई है जिसकी सहायता से १ दिन के चूजों के बारे में पता लगाया जा सकता है कि वे मुर्गे हैं या
मुर्गियां ! इस चित्र में उसी मशीन पर काम किया जा रहा है ।

गुरुकुल-पत्रिका,
गुरुकुल कांगड़ी

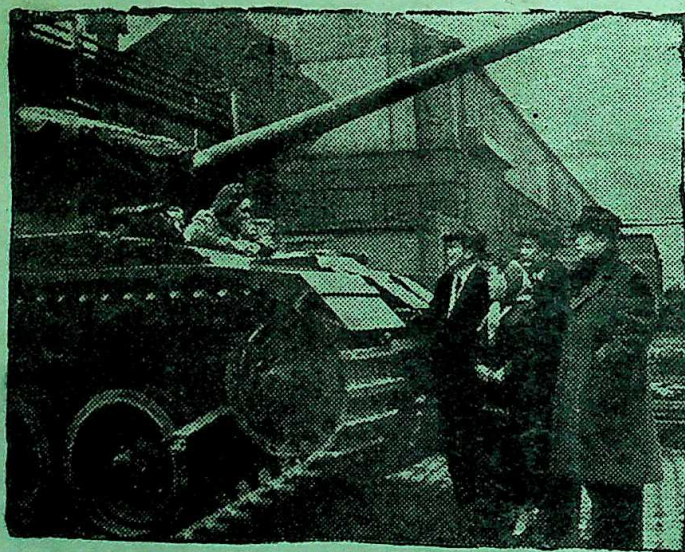
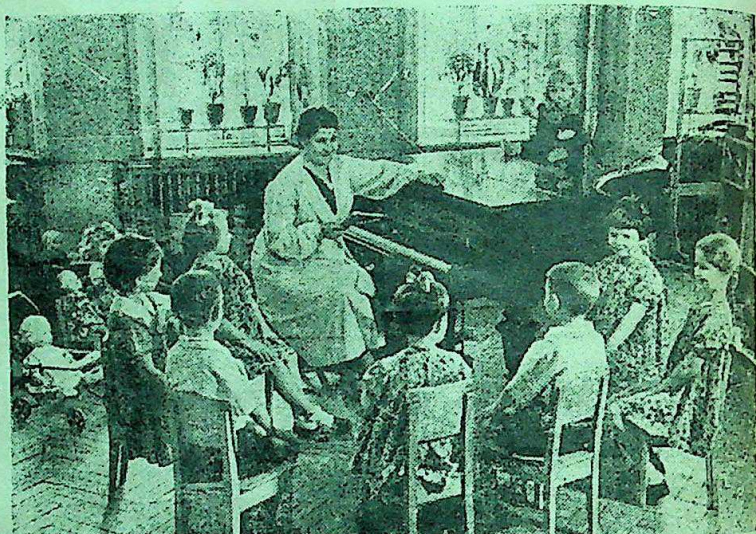
प्रकाश जालन्धर

रजिस्टर्ड नं० ई० पी० ६०



रूस में

मास्को के एक किंडर गार्टन स्कूल में बच्चे पढ़ रहे हैं। कक्षा लगी हुई है। अध्यापिका पढ़ा रही है।



कोरिया में

युद्ध हो रहा है। दक्षिण कोरिया के कुछ पत्रकार अभी हाल में लण्डन गये थे। वे लीडज़ के समीप रायल आर्डिनेंस वर्क्स में टैंक बनते देख रहे हैं।





वार्षिक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रति 11=)

★ संयुक्त राष्ट्र संघ के नये सैक्रेटरी जनरल ★



१५ जून

१९५३

गुरुकुल

कांगड़ी



सम्पादक

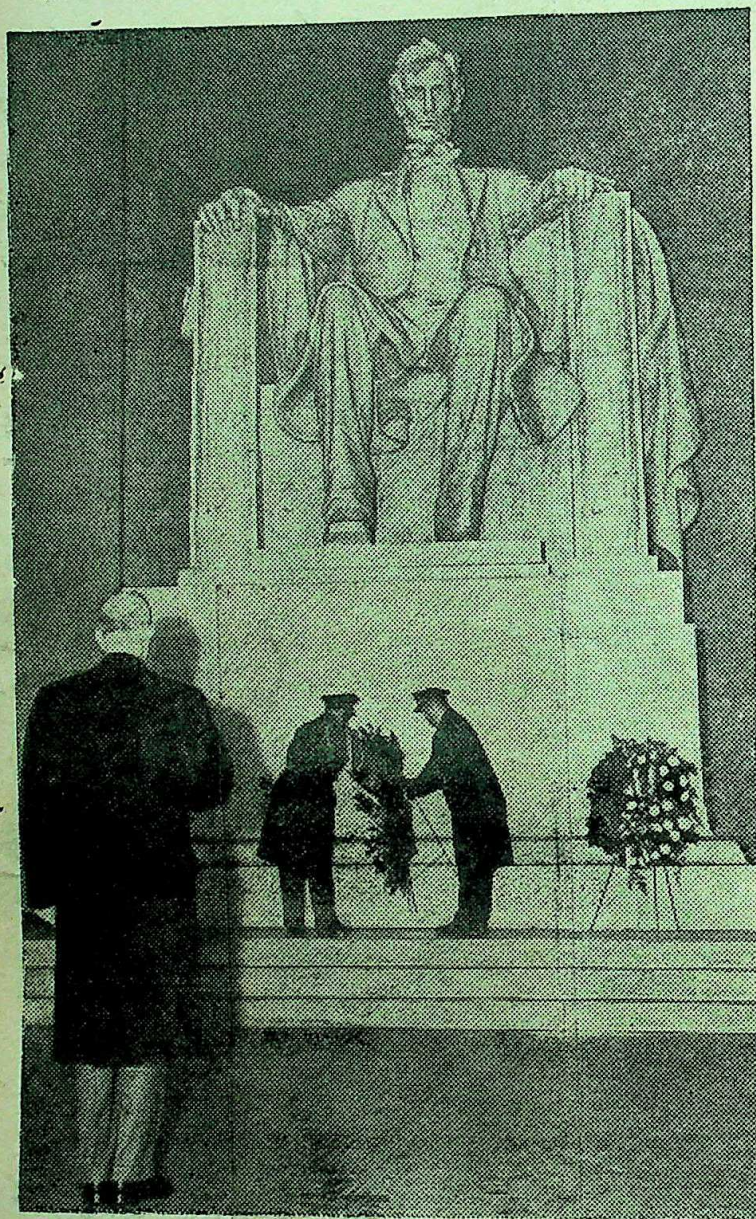
हितैषी अलावलपुरी



श्री दाग हैमस्कजोल्ड जो ट्रिग्वेली
के स्थान पर नियुक्त हुए हैं। आप
स्वीडन निवासी हैं।

THE "Prakash"
Editor: L.C. HITASHI

JULLUNDUR CITY.



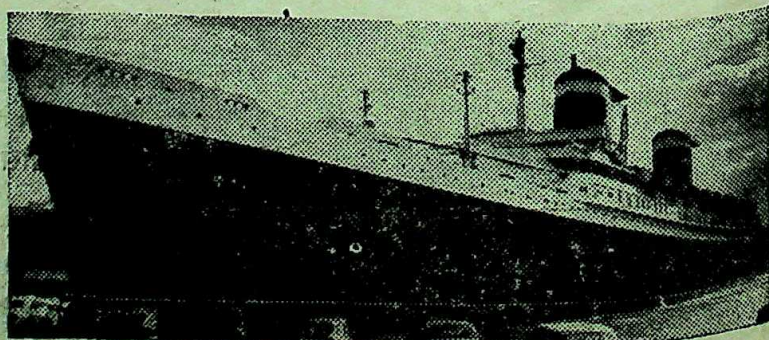
अमेरिका का प्रधान चुने जाने पर आईज़न हौवर अब्राहम लिंकन की भव्य प्रतिमा के सामने खड़े हो स्वर्गीय महान राष्ट्र निर्माता को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं ।

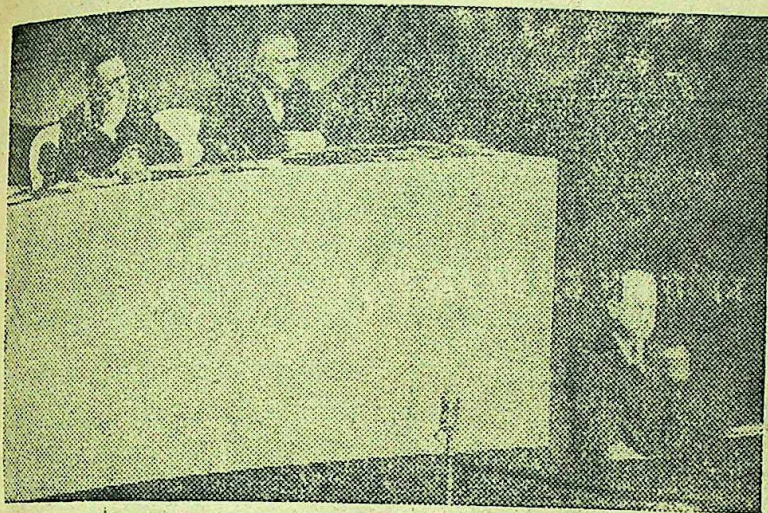


'एस०
'यूनाइ
अमेरि
बड़े
सैनिक
सत्ते



द्रुतगति से चलने वाला
एक नवीनतम जलपोत ।

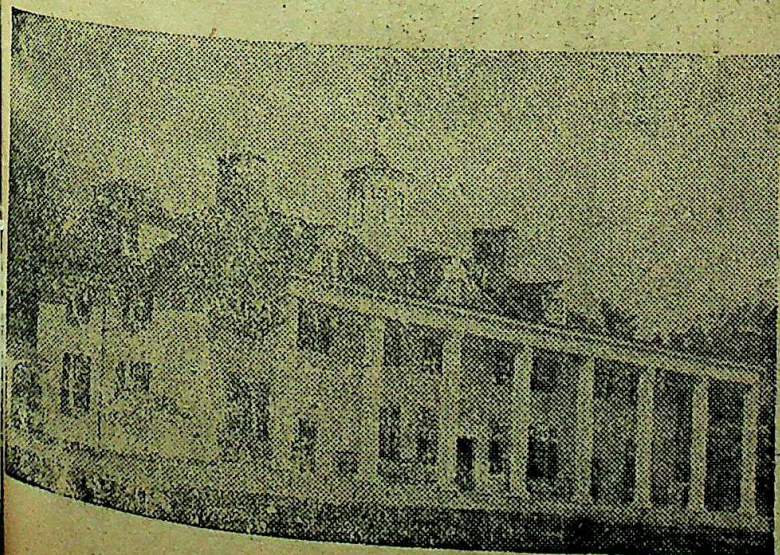
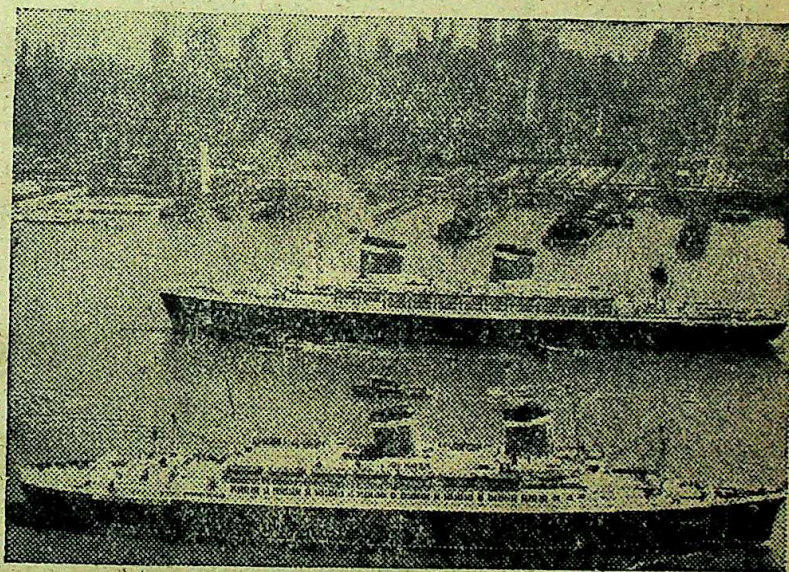




दाग हैमर्कजोल्ड (स्वीडन निवासी)
संयुक्त राष्ट्र संघ के सैक्रेटरी
जनरल का पद सम्भाल रहे हैं।
(माईक्रोफोन के आगे)

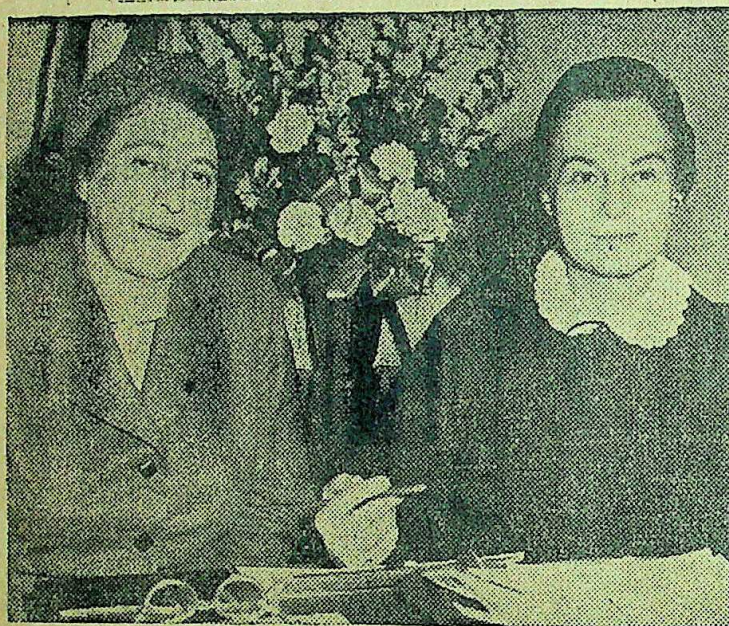
न चुने
होवर
भय
दे हो
निर्माता
त कर

'एस० एस० अमेरिका' तथा
'यूनाइटेड स्टेट्स' नामक दो
अमेरिकन जलपोत जो सब से
बड़े हैं और १४, १४ हजार
सैनिक १० हजार मील तक ले जा
सकते हैं।



माऊंट वर्नेन

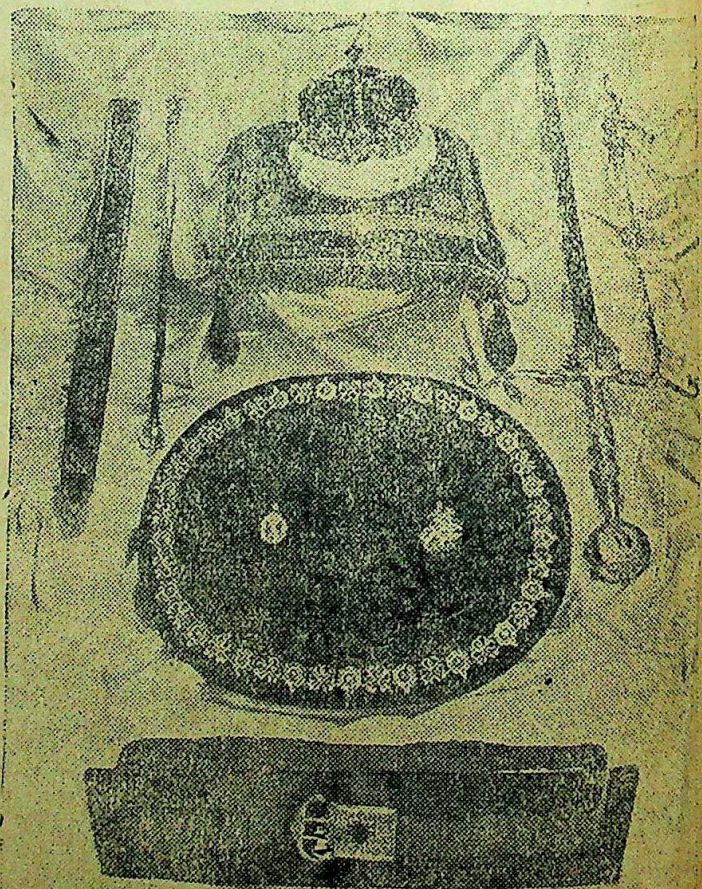
स्व० जार्ज वॉशिंगटन का निवास
स्थान जिसे अमेरिकन बड़े आदर
की दृष्टि से देखते हैं। अब इस
में एक अद्भुतालय स्थित है।



ओबेटा कल्प हौवी अमेरिका की
स्वास्थ्य और शिक्षा मन्त्रिणी
(दाईं ओर) अपनी सहायिका
मिसेज़ जेन मोरा स्पॉलिंग
(बाईं ओर) के साथ ।



सम्राज्ञी एलिज़बेथ के राज्याभिषेक
पर, जो २ जून को लण्डन में बड़े
समारोह से हो गया मुकुट में काम
आने वाली कुछ महिलाएँ ।



पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पैप्सु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत ।

प्रकाश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४८
क्रमांक ४६

जालन्धर, मई, १९५३

[भाग ५ अंक ५
हिन्दी]

अपनी बात

मई का अंक प्रस्तुत है । जून का छपना आरम्भ हो गया है और आशा करनी चाहिए कि ६ जुलाई को पोस्ट हो जायेगा । इस प्रकार जुलाई अंक २७ जुलाई, अगस्त अंक १७ अगस्त और सितम्बर अंक ७ सितम्बर को भेजना संभव होगा । इस के पश्चात् प्रत्येक मास का अंक पहले सप्ताह में छप जाया करेगा । अन्य पत्रिकाओं की तरह हम में दो, दो मास के इन्टरे अंक छाप कर कमी को पूरा करने की चेष्टा नहीं की । हम ने अपने पाठकों को वर्ष में बारह अंक देने का जो वचन दे रखा है उसे पूरा करेंगे ।

आशा करनी चाहिए कि 'प्रकाश' के पाठक भी इसे हर प्रकार की सहायता और सहयोग प्रदान करते रहेंगे और हम भी पत्रिका को अधिकाधिक उन्नत करने का अपना प्रयत्न जारी रखेंगे ।

हितैषी

'प्रकाश' की कहानी

गगन के दीप बुझते हैं, मगर मुझ में जवानी है !
नहीं हारा अन्धेरे से, यही मेरी कहानी है !
अंधेरी रात के आँसू टपकते हैं,
कि तारों के पलक खुलते, झपकते हैं,
मगर मेरे गगन में चाँद निकला है,—
मुझे तो इस धरा पर ही नई दुनिया बसानी है !
अन्धेरे पंथ में मैं तो रहा चलता,
कि मेरा दीप आंधी में सदा जलता,
अन्धेरा देख कर कैसे रुकूँ पथ में ?—
मुझे तो आज धरती पर रुपहली रात लानी है !

न मेरी श्वास छू शबनम रही जीवित,
नए अरमान के सपने रहे पीड़ित,
जलाए जा रहा हूँ किन्तु मैं दीपक,
कि देखो आज धरती पर मचलती रात-रानी है !

—श्याम लाल, 'राही'

सम्पादकीय

★ 'प्रकाश' की स्वर्ण जयन्ती ★

३०-३१ दिसम्बर '५५ को मनाई जायेगी !

'प्रकाश' का जन्म १९०५ में हुआ था, '५५ में इसे छपते ५० वर्ष पूरे हो जायेंगे। १९३५ से इसका संचालन मैं करता आ रहा हूँ। जून १९४८ तक यह उर्दू में छपता रहा। जुलाई '४८ से, जबकि अभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार नहीं किया गया था, इसे हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया गया। यह एक प्रकार से इसका पुनर्जन्म ही था क्योंकि इसका माध्यम बदलने के साथ २ क्षेत्र भी बदल गया। जैसी कि आशा थी नये जीवन के पहले दो वर्षों में भारी आर्थिक हानि उठानी पड़ी और बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। मेरी जगह कोई और होता तो हिम्मत हार कर बैठ जाता और 'प्रकाश' कभी का बन्द हो गया होता। मैं ने अपनी इन्शोरेंस पालिसी की Surrender Value प्राप्त कर एक और हानि उठाना स्वीकार किया किन्तु किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। संभव है कि सहायता के लिए अपील की जाती तो कई सहायता करने को तैयार हो जाते किन्तु मैं ने ऐसा करना उचित नहीं समझा। फिर भी 'प्रकाश' के एक प्रेमी महाशय ईश्वर दास जी मियावाली निवासी ने इस आड़ेवक्त में सहायता की और बिना सूद ५०० रुपये मुझे दे दिये। यह ऋण अभी 'प्रकाश' के सिर पर है। इसे किस्तों में चुकाने की व्यवस्था की जा रही है। महाशय ईश्वर दास जी को उनकी इस सहायता के लिए फन्यवाद न देना

कृतघ्नता होगी।

अब 'प्रकाश' अपना प्रेस होने के कारण घाटे पर तो नहीं चल रहा (क्योंकि छपाई का व्यय दूसरे प्रेस में छपवाने की अपेक्षा कम पड़ता है) किन्तु इसको जिस अवस्था में मैं देखना और छोड़ जाना चाहता हूँ उस में इसे लाने के लिए 'प्रकाश' के प्रेमियों की सहायता की आवश्यकता है। और सहायता का उचित अवसर भी परमात्मा ने उपस्थित कर दिया है। 'प्रकाश' को छपते दिसम्बर '५५ में ५० वर्ष हो जाएंगे। इसलिए निश्चय किया गया है कि ३०-३१ दिसम्बर को 'प्रकाश' को स्वर्ण जयन्ती मनाई जाए।

इस के उपलक्ष में ५० हजार रुपये की सहायता के लिए अपील की जाती है। यह धन दान के रूप में नहीं लिया जाएगा अपितु 'प्रकाश' को 'लिमिटेड' कर देने का विचार है। हिस्सों की कीमत के रूप में जोकि दस दस रुपये के होंगे, ५० हजार रुपये एकत्रित किये जायेंगे। कोई व्यक्ति चाहे जितने हिस्से खरीद सकता है। सम्प्रति धन एकत्रित कर धरोहर रूप में बैंक में जमा करा देना अभीष्ट है। 'प्रकाश' के प्रेमी शीघ्रातिशीघ्र दस रु० प्रति हिस्सा के हिसाब से धन भेजने की कृपा करें। अप्रीका निवासी प्रेमियों, विशेषतः श्री सीता राम मंगत जी से आशा है कि वह इस सम्बन्ध में उतनाह जनक सहयोग और सहायता प्रदान करेंगे। जिनका धन प्राप्त होता जाएगा उनके शुभ नामों की सूची प्रत्येक अङ्क में छपती रहेगी।

—हितैषी

जरा अपनी नक नूँ
दोह के देखो कि
अपनी थां ते है कि...।
खैर जान दियो, शीशा
देखन दी लोड़ नहीं।

अपनी धोली च

* नक कट जान दा डर *

हुन तां एह लोहे दी
बन गई ए ते वढी
नहीं जानी) ते इस दे
खसम ने लोहे दी नक
नूँ लोहे दी करपाण

तुसी केहड़े अठारहवीं-सत्तरहवीं सदी विच रह
रहे ओ कि गल गल ते एह नक लह लह जावे।
ओह वी समा सी जद जातो वाहर त्याह करन
नाल नक कट जांदी सी। हसीत नालों वध दाज
ना देन नाल वी नक नहीं सी रैहदी। माँ पियो
दे मरन ते बाहमनां दी फौज नूँ रज के न खिलौन
नाल भी नक दे वढे जान दा डर रैहदा सी। पर
हुन समय दे बदलन नाल एस नक दा सुभा वी
बदल गिया ए। हुन चाहे कुभ वी करो एह नक
अपनी थां तों हिलन दा नां नहीं लैदी। जिवे
एह हुन लोहे दी बन गई होवे। दूसरे ऐडी मजबूत
हो जान दे बावजूद कदी नक वढी भी जांदी
ए। जिवे किसे दी बौहटी ने पगये मरद नाल
नक वढौन वाला कम कीता (एह सोच के कि

नाल वढ दित्ता। भर नक खुनों कम ते नहीं न
चलदा, उसनूँ होर नक चाहीदी ए ते एह ऐसी
चीज नहीं जेहड़ी किसे तों उधारी मिल
जाये। एहो सोच के वलैत बालियां ने नकली
नक बना दित्ती ए। ८५ पौंड खर्च के असली
नालों चंगी मन मरजी दी नक लवा लौ। नकली
नक ला के चाहे भैड़े तों भैड़ा कम करो क्योंकि
उसदे वढे जान दा डर ई नहीं। जे किसेनूँ
डर होवे वी ते नक वढौन वाला कम करन तो
पहलों उसनूँ लाह के रख लौ ते उस कम तो
सुरखरू होके चाहे ओहो चाहे उसतों लम्बी नक
लवा लौ। रेलू होरी ख नूँ सलाह दे दे ने कि
ओह जिने बच्चे पैदा करे बिना नक दे पैदा
करे ताकि ओह वढे हो के मन मरजी
दी नक लवा लैन।

—भाइया रेलू।

फूल और कांटे

(पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर)

प्र० पण्डित जवाहर लाल नेहरू सम्राज्ञी
एलिजबेथ के राज्याभिषेक पर लण्डन क्यों गए
हैं ?

—राम नाथ, नयाग।

उ० इस लिए कि उन्हें बुलाया गया था। -सं०

प्र० मनुष्य की उयों उयों इच्छाएं पूरी होती
जाती हैं त्यों २ वे बढ़ती क्यों जाती हैं ?

—मोहिती, बनारस।

उ० मनुष्य स्वभाव से ही लोभी जो ठहरा -सं०

प्र० क्या परस्पर बात-चीत से पाकिस्तान
और हिन्दुस्तान में काश्मीर के मामले
में कोई समझौता सम्भव है ?

—प्रेम नाथ, जम्मू।

उ० हमारे विचार से तब तक नहीं जब
तक दोनों पक्षों में से एक काश्मीर से हाथ उठा
लेने को तैयार न हो जाये और यह कभी
सम्भव नहीं। -सं०

प्र० यदि आपको भारत का प्रधान मन्त्री बना
दिया जाये तो आप क्या करें ?

—सुशीला गुप्ता, मेरठ।

उ० प्रत्येक भारत वासी से यही प्रश्न
पूछूँ—अर्थात् अब मुझे क्या करना चाहिए ? -सं०

गतांक से आगे

★ श्री गान्धी सतसई ★

(श्री शान्त सास्त्री 'शालिहास')

द्वितीय शतक

ई० ३० कम्पनी

'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' अंग्रेजी सरकार ।
आई अग्नि लैन को ले बैठी घर बार । १।
ईस्ट इण्डिया कम्पनी किया अनिष्ट अपार ।
अंगुली गह कर-कर लिया पहुंचे पर अधिकार । २।
बणिज हेतु जो आई थी, थी बनिया सरकार ।
लूट पाट कर हिन्द को बना दिया कंगाल । ३।
सुरत-बंग-मद्रास में कर के पद संचार ।
श्री वामन वत् हिन्द में कीना चरण प्रसार । ४।
'सत्यव्रत' के मीन उ्यों बढ़ता गया अपार ।
भारत भर में लाल रङ्ग अंग्रेजी अधिकार । ५।
शिल्प कला कौशल बणिज हस्ति दंत का काम ।
'कम्पनी ने अधिकार से बना दिए वे काम । ६।
अनधिकार प्रयत्न से किए बहुत अन्याय ।
भारत में व्यय नहीं किया भेजी लन्दन आय । ७।

वस्त्रोद्यम

वस्त्र वयन की ज कला, थी जग में विख्यात ।
देख विदेशी चकित हो मलते अपने हाथ । ८।
भारत का विख्यात वह वस्त्र वयन उद्योग ।
किया कम्पनी ने सकल-नष्ट, न दे सहयोग । ९।
अंगूठी के छिद्र से बावन गज का थान ।
आसानी से बिन अटक करता था निर्याण । १०।
ढाका की मलमल वही की, कम्पनी ने वन्द ।
'मैन्चेस्टर' की मीलज का भेज भेज कर 'गन्द' । ११।
सर्व प्रथम श्री गाँधी ने करके सोच विचार ।
इसी वस्त्र व्यवसाय का किया पुनर उद्धार । १२।

चर्खायज्ञ

घर घर में चर्खा चते दिया यही उपदेश ।
वस्त्र कला जीवे पुनः जागे भारत देश । १२।
सूक्ष्म मूत का कांतना भूल गए थे लोग ।
मिखा दिया श्री गाँधी ने वही प्रयत्न उद्योग । १३।
इस चर्खा परचार में 'मैन्चेस्टर' की 'मील' ।
फेन हो गई 'यंत्र से निकली मानों कील' । १४।
'मैन्चेस्टर' की मीलज के मालिक और मजदूर ।
चीख उठे श्री गाँधी की चाल से हो मजबूर । १५।
चर्खे के इस चक्र से बदला हिन्दुस्तान ।
काल चक्र सा चल रहा इसका चक्र महान । १६।
चन्द्र विम्ब में अङ्क उ्यों यथा सूरों में शक्र ।
सुपमा पाता है महा, ध्वजा मध्य में चक्र । १७।
भारत जन-मन व्यूह का मंडा है परतीक ।
जन गण मन के मध्य ही बसा चक्र यह नीक । १८।
इसी यरवदा चक्र ने बदल काल प्रचक्र ।
मंडे में जो सो रहा अब अशोक का चक्र । १९।

अशोक चक्र

लाल किले पर लहरता आज तिरंगा ताक ।
किया 'यूनियन जैक' है इस 'चक्र' ने चाक । २०।
जग में भारत कीर्ति बन कर धर्म-सु चक्र ।
आज गर्व से झूलता है अशोक का चक्र । २१।
'गुप्त सामयिक देश की गुरुता का परतीक ।
सत्य अहिंसा स्मारक धर्म दूत निर्भीक । २२।
यह अशोक का चक्र जो गाज रहा ध्वज बीच ।
तप प्रताप ही बापू का लाया इसको रबीच । २३।

चर्चा चमत्कार

बापू के इस चक्कू ने डाला चक्कर बीच ।
विदेशियों को, गाय उधों फंसी खड़ी हो कीच । १२५।
वैदिक युग की जो कला भूल गए ग्रामीण ।
इसी भूल के कारण हुए दीन अरु क्षीण । १२६।
वही यरवदा चक्कू से की पुनरुज्जीवित ।
संस्कृति की विस्मृत स्मृति श्री गांधी शुचिचित्त । १२७।
चर्चों की धुंकार में गुञ्ज रहा था मन्त्र ।
आजादी का बापू ने ही जाना यह तन्त्र । १२८।
चर्चों के इस मन्त्र को सुना प्रथम सोल्लास ।
बापू ने फिर देश को बता दिया स्मित आस्य । १२९।
घर घर गाँधी चक्कू का शुरू हुआ फिर चक्कू ।
इस चक्कर में फंस गया कूट नीति का चक्कू । १३०।
मैजिस्टर मद मर्दन ? अर्दन दारद दोष ?
दीन जुलाहा पालक ! वर्धक भारत कोष ! १३१।
गुणकारी ! मृदु गायक ! भावक, सूत्र अवक्कू ।
निर्धन जन धनदायक ! धन्य यरवदा चक्कू । १३२।
बढ़ा बढ़ा कर स्वच्छतम-सूत्र हरे दुख चक्कू ।
श्रम जीविगण के अहो धन्य यरवदा चक्कू । १३३।

आन्दोलन

क्षिपता जिसके राज्य में न था सूर्य और चाँद ।
उस विशाल साम्राज्य को किया क्षीण औ' माँदा । १३४।
अल्प समय में संकुचित वह विशाल साम्राज ।
किया बापू ने तेजहत अहो अलौकिक काज । १३५।
बिना किसी संघर्ष के बिना चलाए शास्त्र ।
किया पराजित 'ताज' को त्याग विदेशी वस्त्र । १३६।
सत्याग्रह के अस्त्र का किया नवाविष्कार ।
सविनय आज्ञा भङ्ग का साथ हुआ विस्तार । १३७।
बहिष्कार बायकाट की भी थी गहरी चाल ।
घरता निज देशी सभी त्याग विदेशी माल । १३८।

स्वदेशी

देश वस्तु की उन्नति है देशोन्नति मूल ।
बिन स्व वस्तु व्यवहार के उन्नति केवल भूल । १३९।

क्यों परदेशी वस्त्र ले करते हो धन हानि ।
लोहे के बदले कनक क्यों देते हो जानि । १४०।
भारत जन को बापू ने दिया यही उपदेश ।
अपनी वस्तु से स्वयं करो कार्य ए देश । १४१।
अपना अपना है सदा अपने से कर हेत ।
स्वीय देश की पावनी पूजनीय है रेत । १४२।
अपना अपने देश को जननी सा तू जान ।
दे-दे अपनी जन भी जननी का हित मान । १४३।
गीता भी कहती यही अपने को अपना ।
'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' का तू भाव बना । १४४।
बापू भी कहते यही धन्य मरण वह मरण ।
स्वयं देश अरु जाति हित करे मृत्यु का वरण । १४५।
भया वह पर धर्म है पर शत्रु का नाम ।
पर नहीं अपना होत है रखो न पर से काम । १४६।
परदेशी ने लूट कर हिन्द किया कगाल ।
सारे पर ही छा गया आया जो बङ्गाल । १४७।
हा ! वह कैसी थी घड़ी अशुभ महा दुर्दान्त ।
जब भारत भू-पावनी हुई पर पदा कान्त । १४८।
परदेशी के रूप में आई पर वशता ।
अतिथि समझा था जिसे था वह शत्रु महा । १४९।
मित्र रूप में शत्रु था, था वह मीठा जहर ।
गुप्त रूप से हिन्द में ढाया उस ने कहर । १५०।
जाति धर्म की भावना श्रद्धा अरु विश्वास ।
सब का अनुचित लाभ ही उठा, किया फिर नाश । १५१।
सारे भारतवर्ष में डाल फूट की नींव ।
द्वेष बढ़ाया परस्पर जन-जन में निस्सीम । १५२।
इस शतरंजी चाल को निजमति से निर्मूल ।
किया एक ही चाल से बापू ने आमूल । १५३।

स्वराज्य

बापू बुद्धि सिन्धु ने बुद्धि के परताप ।
किया हरण उद्योग से देश-दास्य सन्ताप । १५४।
जिसकी सीमाएँ वितत जिसका दृढ़ आकार ।
प्रगतिशील जगति विदित जिसका शीलाचार । १५५।

★ उत्तिष्ठत जागृत-उठो जागो ! ★

(गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

उत्तिष्ठत, जाग्रत ! उठो जागो ! प्रभात में ईश्वर का प्रकाश आकर हमारी ऊँच को उड़ा देता है । समस्त रात्रि की गहरी निद्रा एक पल में चली जाती है परन्तु सन्ध्या बेला के उस मोह को कौन भगायेगा ? समस्त दिवस के विचारों और कर्मों से हमारे चहूँ ओर जो एक प्रकार की धूमिलता छा जाती है, उस से मुक्त हो कर चित्त को निर्मल और उदार शाँति में किम प्रकार स्थापित करेंगे ? इतना बड़ा दिवस एक मकड़ी की तरह अपना जाल विस्तृत करता हुआ, हमें चारों ओर से फंसा रहा है । चिरन्तन को भूमा को अपनी छाया द्वारा आवृत कर रहा है । इस समस्त जाल के विस्तार को तोड़ कर के, हमें अपनी चेतना को सजग करना चाहिए । सब के उठने का, जागने का समय हो गया है ।

जिम समय दिवस अनेक कर्मों, विविध विचारों और नाना प्रकृतियों द्वारा हमें चक्र पर चढ़ा रहा होता है, जब वह निखिल विश्व और हमारे आत्मा के बीच में एक प्रकार का आवरण खड़ा कर देता है तब यदि हम अपनी चेतना को बारम्बार 'उत्तिष्ठत, जाग्रत' कह कर के उद्बोधित न करें, यदि इस जागरण के मन्त्र को, व्यावहारिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी प्रतिपल अपने अन्तरात्मा से ध्वनित न करें तो फिर एक के बाद दूसरे चक्र में, एक के बाद दूसरे जाल में हम अवश्य फंस जायेंगे । फिर तो उस तमस् में से, उस जड़ता में से, बाहिर निकलने की इच्छा तक हम में नहीं जागेगी । फलतः आसपास की पररिस्थिति को हम अत्यन्त सत्य रूप में मान लेंगे और उस से भी परे जो उन्मुक्त

विशुद्ध और शश्वत सत्य विद्यामान है, उसके प्रति हमारा विश्वास नहीं रहेगा । और सबसे विचित्र बात तो यह होगी कि उस सत्य के प्रति संशय अनुभव करने जितनी सजगता भी हम में से निकल जायगी । इसलिए जब समस्त दिवस के अनेक विश्व कर्मों का कोलाहल मच रहा हो, तब अपने मन की गम्भीरता में 'उठो, जागो' की ध्वनि अवलित रूप में उठती रहे, यही प्रार्थना है !!



भारत की शिक्षा-प्रणाली

'हमारे मित्र कहे जाने वाले अंग्रेजों का यह कथन सिर्फ निरर्थक आत्म-प्रशंसा है कि यदि वे हमें 'शिक्षा न देते' तो हम अन्धकार के युग में ही पड़े रहते । अंग्रेजों की सरकारी शिक्षा-प्रणाली ने हमारे बच्चों को न केवल सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी विचारधारा ने अपरिचित रखा बल्कि उसके फलस्वरूप वे अपनी प्राचीन संस्कृति को भी भूल रहे हैं । यह मानने पर भी कि हमारी ज्ञान-प्राप्ति का एक ही साधन—अंग्रेजी भाषा—सुलभ है, अब तक हमें जो कुछ मिल सका है, वह नगण्य है । १९३१ में, दो शताब्दियों के अंग्रेजी शासन के बाद भी, सिर्फ एक फीसैकड़ा भारत-वासी अंग्रेजी जानते थे और सिर्फ १५ वर्ष के सोवियट शासन के बाद रूस में १६३८ में ६८ % बच्चे शिक्षित थे ।'

धनवान मनुष्य भाग्य से ही सुखी होते हैं । पेसे में सुख उत्पन्न करने की शक्ति नहीं है । धनवान आलस्य के किशोर होकर उसी में सदा भ्रमण करते हैं ।

★ माताओं के लिए स्कूल ★

नारी के जीवन में शिशु का जन्म एक महान और सुखद घटना का स्थान रखता है।

परन्तु भावी माता की खुशी और व्यग्र प्रतीक्षा के साथ-साथ जिस स्थिति में वह होती है उसके लिए यह स्वाभाविक भी है, हमेशा तबीयत का खराबी, अ-जन्मे किन्तु अभी से उसके प्रेम का केन्द्र बन जाने वाले जीव के प्रति चिन्तित भावनाएं और आने वाले प्रसव के प्रति भय भी सिर धारने लगता है।

पहली बार शिशु को जन्म देने वाली माता को जो कि बहुत कर नवयुवती और अनुभवहीन होती है, माँ के रूप में अपने कर्तव्यों की विन्ता हर घड़ी रहती है—'क्या मैं शिशु का पालन पोषण कर सकूँगी, क्या मैं उसे स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट बना सकूँगी, बीमारी और दुर्घटनाओं से उसकी रक्षा कर सकूँगी?'

अपने जीवन के नये और बहुत ही उत्तरदायित्वपूर्ण दौर में, मातृत्व के दौर में, प्रवेश करते समय प्रत्येक नारी को विशेष देख-भाल की दरकार होती है।

और माताओं और बच्चों के लिए स्थापित सोवियत संघ की डाक्टरी संस्थाएं इस देख-भाल को प्रबन्ध करती हैं।

आजकल मास्को के सभी जिला सलाहकार केन्द्रों और बड़े जिलों के ज़रूचा-बच्चा घरों तथा सफाई शिक्षा-केन्द्रों में माताओं के लिए स्कूल मौजूद हैं।

माताओं के लिए स्कूलों का लक्ष्य युवती माताओं के लिए मातृत्व के लिए तैयार करना, खुद अपने तथा बच्चे के स्वास्थ्य की रक्षा में उन्हें

मदद देना और बच्चे की देख-भाल में सफाई की आदतों का संचार करना होता है।

इस तरह का प्रत्येक स्कूल साफ-सुथरी इमारत में स्थित है और आवश्यक सामग्रियों, दृश्य-शिक्षा के प्रसाधनों और लैण्डर्न सलाइडों से सुसज्जित है। अनुभवी प्रसव विशेषज्ञ और बाल रोग विशेषज्ञ स्कूल में पाठों का निर्देशन करते हैं।

एक समान और विशेष रूप से आयोजित कार्यक्रम के मुताबिक ये स्कूल १२ महीने चालू रहते हैं। पाठ्यक्रम की अवधि दो सप्ताह की होती है, प्रति पाठ दो-तीन घण्टे का होता है और कुल पाँच पाठ दिए जाते हैं।

पहला पाठ एक लैक्चर से शुरू होता है जिसका शीर्षक है : 'प्रसव काल में नारी के शरीर और अवयवों की स्थिति तथा नारियों के लिए सफाई का निर्देश।' यह भाषण डाक्टर से दिलाया जाता है। अन्य पाठ बात चीत के रूप में होते हैं। इन पाठों से भावी माता सीखती है कि उसे सुनिश्चित कार्यक्रम और पथ्य का ध्यान रखना है, कि उसे जितना सम्भव हो उतना ही चलना फिरना चाहिए, दिन भर में कम से कम चार घण्टे ताज़ा हवा में बिताने चाहिए, विशेष शारीरिक व्यायाम उन्ने करने चाहिए, ढोले कपड़े और नीची एड़ी के जूते उसे पहनने चाहिए, डाक्टर के पास जाकर नियमित रूप से उसे अपने को दिखाना चाहिए आदि।

स्कूल के पाठ्यक्रम में बाल रोग विशेषज्ञ के सम्भाषणों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

शिशु के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास के बारे में एक सुविस्तृत भाषण के

बाद पढ़ी हुई चीजों के सम्बन्ध में सम्भाषणों का आयोजन किया जाता है। बाल-रोग-विशेषज्ञ के भाषणों के सावधानी के साथ नोट लिए जाते हैं जो भविष्य में किशोर महिलाओं के लिए पथ-निर्देशन का काम देते हैं।

इन नोटों में विस्तार के साथ शिशु के जन्म से लेकर दूध छुड़ाने के दिन तक के जीवन का समूचा घटनाक्रम अंकित होता है। प्रत्येक किशोर माता को मालूम होना चाहिए कि शिशु की खातिर दैनिक कार्यक्रम का सख्ती से पालन करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है: कब उसे दूध पिलाना चाहिए, सुलाना चाहिए और टहलाने के लिए ले जाना चाहिए। और यह सब कड़ाई के साथ समय पर होना चाहिए। प्रत्येक दिन बच्चे को नहलाना जरूरी है, मौसम के मुताबिक उसे वायु या धूप स्नान कराना जरूरी है। धोने के समय बच्चे के कपड़ों को उबालना जरूरी है। बच्चे को जरूरत से ज्यादा कपड़ों में नहीं लपेटना चाहिए या परों की रजाई ओढ़ कर नर्म बिस्तरे पर नहीं सुलाना चाहिए।

यह याद रखना चाहिए कि बच्चे का स्वास्थ्य दूध पिलाने वाली माता के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। इस बात को हृदय में बैठ कर उसे तदनुसार जीवन बिताना चाहिए। कोई ऐसा काम उसे नहीं करना चाहिए जो थकाने वाला हो।

बच्चे को केवल माँ के दूध पर ही रखना चाहिए। माँ के दूध का अभाव या उसके नाकाफी होने पर और कोई फालतू चीज देने से बच्चे के शरीर में भारी गड़बड़ सी पैदा हो जाती है। प्रत्येक माँ को अपने दूध की ग्लान्डों की देखभाल से परिचित होना चाहिए और इस बात का उसे ध्यान रखना चाहिए कि जो कुछ वह खाए उस में अलबुमन, नमकों और विटामिनों की

मात्रा सही परिमाण में हो।

पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक पक्ष के बाद स्कूल में अमली पाठों का क्रम चलता है। प्रत्येक स्कूल में सोने के कपड़ों के साथ बच्चों के बिछौने, अन्य कपड़े और नवजात शिशु के लिए दवाइयों का एक बक्स स्नान के लिए टब और सेल्युलायड का एक बड़ा बबुआ मौजूद रहता है।

डाक्टर महिलाओं को दिखाता है कि बच्चे को कैसे नहलाना चाहिए और जाड़े तथा गर्मी के मौसम में टहलाने के लिए उसे कैसे कपड़े पहनाने चाहिए। सब से अधिक उपयुक्त कपड़ों तथा दूध पिलाने की कला का प्रदर्शन कर के बताया जाता है। अमली पाठों में महिलाओं को पैटर्नों के सहारे बच्चों के कपड़े की कटाई सिखाई जाता है। दवाइयों के बक्स का इस्तेमाल करना बताया जाता है और रोगी बच्चे के प्राथमिक उपचार का अभ्यास करना तथा खाना और रसों को तैयार करना सिखाया जाता है।

स्कूल के कार्यक्रम में छूत के रोगों को रोकने के उपायों का काफ़ी बड़ा स्थान है। यह माँ की शक्ति के भीतर है कि वह अपने दूध पीते बच्चे की रोगों से रक्षा करे। इसके लिए यह जरूरी है कि वह निजी सफाई के नियमों का पालन करे, कि वह बच्चे को दुलराने का अभ्यस्त न बना कर कड़ी जान बनाए, डाक्टर को उसे नियमित रूप से दिखाए और समय रहते उसके जरूरी डाक्टरी टीके लगवाये।

माताओं के लिये ये स्कूल अपनी छात्राओं को आधुनिक डाक्टरी विज्ञान की सैद्धांतिक जानकारी और अमली कार्य-सम्बन्धी प्रत्येक

★ आओ, निर्भय हो कर जियें ! ★

[लेखिका : कु० सुभद्रा, कोकनाडा-मद्रास]

कितने भाग्यशाली हैं वे लोग जिन्हें भय पर प्रभुत्व प्राप्त है, परन्तु उनकी संख्या बहुत कम होगी। हर कोई समझता है कि भय उस के पास नहीं फटकता, परन्तु यदि जीवन के सब विभागों पर दृष्टि डाली जाय तो उसे यह ज्ञान कर आश्चर्य होगा कि भय तो पग पग पर उसका मार्ग रोके खड़ा है। न केवल हमें उसका जागते और काम करते हुए रात दिन सामना है अपितु स्वप्न में भी हम उससे छुटकारा नहीं पा सकते! एक अंग्रेज विद्वान ने ठीक कहा है कि 'हम सदा बीमार नहीं होते न हम सदैव गुनाह करते हैं' प्रत्युत हम हमेशा किसी न किसी चीज से भय खाते रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति भय खाता हुआ जीता और काम करता है। माता को अपने बच्चों का, पिता को अपने व्यापार का, कलकं को अपने मालिक का भय है। संसार में मुशकिल से कोई ऐसा पुरुष होगा जिसे किसी दूसरे से बुराई किये जाने का भय न हो। शायद ही दुनिया में कोई ऐसी स्त्री होगी जिसे यह भय न हो कि उसे वह चीज जिसे पाने की उसे इतनी इच्छा और उत्सुकता है शायद न मिले। कोई घर, स्कूल या कारखाना ऐसा नहीं जहां के पुरुष स्त्री और बच्चे भय से सर्वथा रहित हों।

यही विचार एक भारतीय महान कवि ने निम्न शब्दों में प्रगट किये हैं :—

'खुशी में बीमारी, रुतबे में अवनति, धन में चोरी, इज्जत में अपमान, शक्ति में दुरमन, सौन्दर्य में हसद और शरीर में मृत्यु का भय है। सब चीजें जो मनुष्य से सम्बन्धित हैं

हैं भय के बिना नहीं।'

हम ऐसे व्यक्तियों के सम्बन्ध में सुनते हैं जिनके बाल चिन्ता और डर से सफेद हो गए, यहां तक कि असामयिक मृत्यु की घटनायें भी होती देखी गई हैं। भय कई प्रकार के रोगों को जन्म देता है और कभी २ मृत्यु को भी। एक घटना का वर्णन करना अनुचित न होगा जिस से जान पड़ेगा कि कभी २ रोग से अधिक भय मृत्यु का कारण बन जाता है। कहते हैं कि एक शहर में छूत की बीमारी फैल गई जिम से हजारों मर रहे थे। सब वृद्ध अपनी 'देवी' के पास पहुंचे और प्रार्थना की कि और अधिक जाने न ले। उसने कहा कि 'केवल एक सौ जाने और लूंगी' कुछ दिनों के अनन्तर उन्हें देख कर आश्चर्य हुआ कि कई हजार और मर गये हैं। वे फिर देवी के पास गये और पूछने पर उसने बताया कि 'मेरे कथनानुसार सौ और मरे हैं, शेष तो भय से मरे हैं'। एक सैनिक युद्ध क्षेत्र में बेशक निर्भय हो परन्तु दुःखद दृश्य देख कर डरे बिना नहीं रह सकता। एक माता अपने बच्चे को शेर के मुँह से छुड़ाने के लिए भले ही निडर बन जाय, परन्तु वह साधारण रोग से भी डरे बिना नहीं रह सकती। हमें निर्भय होना चाहिए ताकि हमें कोई कुचल न सके। हम बहादुर बनें ताकि हमारा कोई अपमान न कर सके। सभी शक्ति निडरता में है। आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए भय पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। हम उन्हीं चीजों द्वारा आकर्षित होते हैं जिनसे डरते हैं, अतः आओ हम निर्भय होकर जियें और दुनिया में सिवाय परमात्मा के किसी से न डरे।

आधुनिक जापान में स्त्रियों की उन्नति

[बङ्गाल की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती शांतादेवी के अनुभव]



जब हमारा जहाज जापान के समुद्र-तट पर पहुँचा तो मैंने देखा कि बहुत से स्त्री-पुरुष अपने सम्बन्धियों के स्वागतार्थ आये हुए थे। पुरुष तो कुछ न कुछ पश्चिमी वेश में थे, परन्तु कोई भी स्त्री विदेशी वेश में न थी। इसका प्रभाव मुझ पर यह हुआ कि जापानी स्त्रियाँ अपने देश की संस्कृति पर गर्व करती हैं, और फैशन की बेदी पर अपने कौमी लिबास की बलि देना नहीं चाहती। जिस होटल में हम ठहरे वहाँ भी समझदार व प्रसन्नचित लड़कियों ने हमारा स्वागत किया। सैर के लिए निकले तो ट्राम गाड़ियों और मोटर बसों में लड़कियों को ही टिकट बेचते देखा। वे इतनी कर्तव्यशील हैं कि जब गाड़ी ठहरती है तो बूढ़ी सवारियों को चढ़ने और उतरने में सहायता देती हैं और बच्चों वाली स्त्रियों का विशेष ध्यान रखती हैं। कोबे में जब मुझे रेल यात्रा करनी पड़ी तो वहाँ पुरुष यात्रियों को अधिक देखा परन्तु ओसाका में स्त्रियाँ ही अधिक यात्रा करती हुई नज़र आईं। कारखानों में ५४०५११ स्त्रियाँ और ११०२४३ पुरुष कार्य करते हैं। कारखानों में काम करने वाली स्त्रियाँ वेश भूषा और रूप रङ्ग से मजदूर नहीं जान पड़ती। उनके चेहरों पर निर्धनता के चिह्न नहीं दिखाई देते, सब की सब हँसती खेलती नज़र आती हैं। जापानी वेश स्त्रियों का रेशमी 'केमोना' है। प्रत्येक जापानी स्त्री चाहे वह निर्धन हो अथवा धनवती सदैव सुन्दर और आकर्षक कपड़े पहनती

है। और एक लिबास पर पञ्चास से दो सौ यन तक खर्च आता है। सौ यन भारत के साढ़े ग्यारह रु० के बराबर होता है। क्या कोई भारतीय मजदूर स्त्री भी दस-बीस रुपये की साड़ी पहन सकती है? जापानी लड़कियाँ प्रायः बाईस तेईस वर्ष की आयु में विवाह करती हैं और विवाह से पहले काफी धन कमा लेती हैं। टोकियो में १७ हजार स्त्रियाँ कार्य करती हैं। उन में से ७६ प्रतिशत कमा कर अपने परिवार की आर्थिक सहायता करती हैं, उनकी आयु १६-२५ के बीच होती है। जापान को पुष्पों का देश कहा जाता है, इस लिए कि स्थान स्थान पर रङ्ग बिरंगे वस्त्रों से विभूषित स्त्रियाँ चलती फिरती ऐसी नज़र आती हैं मानो बाग खिला हुआ हो। भारतीय स्त्रियों की साड़ी, दुपट्टा और शलवार के बाद जापानी 'केमोना' ही सुन्दर वेश है। प्रो० निरोवे का कहना है कि कारखानों में स्त्रियों के अधिक होने का कारण यह है कि उन्हें कपड़े के कारखानों में कोई कठिन कार्य नहीं करना पड़ता। फिर स्त्रियों की मजदूरी पुरुषों से कम है इस लिए सब कारखाने स्त्रियों से भरे पड़े हैं। अब कुछ स्त्रियों ने छापेखानों में भी कार्य करना शुरू कर दिया है। भारतीय स्त्रियों की तरह इन्हें घर का काम काज करने का बड़ा शौक है, पाँत सेवा को वे अपना परम धर्म समझती हैं। इस पर खूबी यह कि पुरुषों की ही तरह स्वतन्त्र और उन्नति के पथ पर अग्रसर हैं।

जापानी तरीके से खेती कीजिए

चावलों के अधिक उत्पादन का उपाय

एक क्षण के लिए कल्पना कीजिए कि १४,००,००० एकड़ भूमि में प्रातः एकड़ २० मन आज के औसत की बजाय ३५ मन प्रति एकड़ धान पैदा होने लगा है और इस प्रकार चावल की पैदावार में ७५०,००० टन की और अधिक वृद्धि हुई है। संख्या शास्त्र की दृष्टि से यह केवल पूर्वगणना ही नहीं बल्कि जापानी तरीके से धान की खेती करने से यह बात सोलहों आने ठीक उतरेगी। दूसरे शब्दों में देश को खाद्यभरित बनाने की दिशा में यह एक बड़ा कदम होगा।

भारत में चावल ही एक ऐसी फसल है जो सब से अधिक क्षेत्रफल, ७ करोड़ ५० लाख एकड़ में बोई जाती है। इस क्षेत्रफल के एक तिहाई भाग में किसी न किसी तरह से सिंचाई हो सकती है और १५ लाख एकड़ में से जिस में जापानी तरीके से खेती की जा सकती है कुल क्षेत्रफल का केवल २ प्रतिशत है।

जापान में जिस सीधे साधे तरीके से आश्चर्यजनक परिमाण में चावल की पैदावार पैदाई गई है वह सदियों से दूसरे देशों के लिये ईर्ष्या का विषय है। हम भी उस अनुभव से लाभ उठा सकते हैं। जापानी लोग खेती के काम आ सकने वाली इंच भर ज़मीन को नहीं छोड़ते और एक एक पौदे की उतनी ही देखभाल करते हैं जितनी मात्नी फूल के पौदों की करता है।

धान की खेती का यह नया तरीका हमारे देश के लिए भी अनुकूल है और औसत भारतीय किसान इसे अपना सकता है।

इस तरीके में पांच क्रियाएँ हैं।

पहले, पौदों के लिए ऊँचे पौद खेत अर्थात् बियाड़ तैयार करना। धान की फसल कटने के बाद मिट्टी में नमी रहते इन पौद खेतों के क्षेत्र को जोत दिया जाता है। यदि जोतना ठीक न हो तो फावड़ों से खोद कर ढेले तोड़ दिये जाते हैं। कूंड की गहराई ३ से ४ इंच तक होती है। क्यारी की अच्छी तरह निराई हो जाने के बाद २० टन प्रति एकड़ के हिसाब से गोबर की खाद डाल कर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए। बीज की क्यारिया खेत से २-३ इंच ऊँची उठा देनी चाहिए। क्यारियों में एक एक फुट की जगह छोड़ देनी चाहिए, ताकि निराई आदि के काम में आसानी हो।

बीज की क्यारी में खाद डालने का ढंग भी कुछ निराला है। क्यारी की सतह पर लगभग एक सूत-इंच का आठवां भाग मोटी कम्पोस्ट खाद की तह बिछा दी जाती है। यह इस लिए आवश्यक है कि पौद की जड़ें मिट्टी की ऊपरी सतह में रहें और इसके रोपने के समय कोई कठिनाई न आये। कम्पोस्ट खाद की तह के ऊपर राख की एक पतली सी तह और बिछा दी जाती है जिस से पौद के बढ़ने में मदद मिले। बोते समय बीज को मिली जुली खाद के साथ मिला दिया जाता है।

जापानी तरीके की बुवाई में बीज बहुत कम अर्थात् ५ से ६ पौंड प्रति एकड़ की क्यारी (शेष पृष्ठ १८ पर)

रोचक तथा शिक्षाप्रद कहानी—

आधुनिक गृहस्थ की एक मल्लक

[लेखक : श्री हितैषी अलावलपुरी]

बाबू जी प्रातः ६ बजे के दफ्तर गए शाम को ६ बजे घर पहुँचे—परेशान, गरमी से बदनवास, रुमाल से पंखे का काम लेते हुए बैठक में आ बैठे। कपड़े उतारे, मुँह हाथ धोया लेकिन गरमी से निढाल हो रहे हैं। पत्नी दूसरे कमरे में अपनी बायल की धोती पर बेल बूटे काट रही है। बाबू जी ने दो एक आवजें दीं। जवाब मिला ५ मिनट ठहरे हाथ वाले फूल को खत्म करके अभी आती हूँ तब तक आप रसोई की अल्मारी में जो दूध का गिलास रखा है उसमें मीठा डाल कर पी लें। खांड पास ही पड़े डब्बे में से निकाल लें। लाचार पति देवता ने रसोई में जाकर दूध पिया। आकर बैठे ही थे कि बच्चा जाग बैठा और रोने लगा। श्रीमती जी ने कहा 'जरा 'नन्हे' को उठा लें मैं अभी आई' पतिदेव धुँकलाए तो खूब लेकिन डर भी था होम गर्वनमेंट का, साथ ही बेटा केवल श्रीमती का ही न था कुछ उनका भी था। पितृ स्नेह से विभोर होकर कहो या श्रीमती जी की आज्ञा पालन के लिए— उन्होंने बच्चे को गोद में उठा लिया! अभी दो ही मिनट न हुए होंगे कि उसने कपड़ों पर पेशाब कर दिया। तब तो बाबू जी बड़े जोश में आए और क्रोध में पुकारने लगे—'लीला ! लीला ! सुनती नहीं नन्हा रो रहा है। उसने मेरे कपड़ों पर पेशाब कर दिया है और शायद भूखा भी है।' पति का पारा चढ़ते देखा तो मुस्कराती हुई देवी जी आई और क्या खूब कहा 'पेशाब क्या कर दिया बच्चे ने, आसमान सिर पर उठा लिया आपने, मुझ पर रोज करता है तो मैं किसे आँखें लाल पीली करके दिखाती

हूँ? फिर आपही का तो बेटा है। मैं इसे सारा दिन रखती हूँ क्या ५ ही मिनट में घबरा गए ?'

'यह काम है ही तुम्हारा, तुम न करोगी तो और कौन करने आएगा ?'

बच्चों को जन्म दे, पाले, रात दिन उठाये फिरे, टिट्टी पेशाब साफ करे, रसोई में चूल्हा फूँके, गेट बनाएँ बरतन साफ करे, क्या इसके सिवा हमें कुछ न करना चाहिए, क्या स्त्रियाँ इसी लिए हैं ? पत्नी क्या हुई, एक सवारी, वावरचत, घर की सफाई करने वाली, बच्चे पैदा करने वाली मशीन, पालने पोसने वाली आया, इनकी टिट्टी पेशाब उठाने वाली भंगिन और पति को देवता मानकर उसकी उचित और अनुचित आज्ञा को बिना चूँ चरां मानने वालो दासी के सिवा कुछ और भी है ? परमात्मा स्त्री तो किसी को न बनाए और बनाए भी तो भारत में पैदा न करे।'

'बाबू साहेब दिल पर जबर रख करके सुन लेते हैं। उत्तर दे' तो लड़ाई हो और चुप रहें तो श्रीमती जी हमेशा सिर पर सवार रहें और बात २ पर बिगड़े बोलें और कोसे। अपनी वेबसी; लाचारी और बदनसीबी का रोना रोएं। वह सोचते हैं कहाँ गया वह ज़माना जब पत्नियाँ गृह द्वार पर पतियों की प्रतीक्षा किया करती थीं, आने पर स्वागत करती थीं, पानी से हाथ मुँह धुलातीं जल पान कराती, पंखा बरती, और पाँव दबाती थीं, और पति सेवा में सुख मानती थीं। दुःख को भी सन्तोष और शांति से काट लेती थीं और पति को प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न रखने का यत्न करती थीं। वह ठाण्डी साँस भर कर रह जाते—'न जाने

जमाना अभी और कितना बदलेगा और स्त्रियां क्या से क्या हो जाएंगी ?

एक दिन बाबू जी कहीं कह तो बैठे कि 'लीला आज सब्जी में नमक अधिक पड़ गया मालूम होता है, फिर क्या था चूल्हे की तपश से श्रीमती जी का मिजाज पहले से ही गरम था इस पर यह शिकायत ! कह ही तो दिया — 'मैं कोई COOK नहीं हूँ जो लजीज़ खाने तैयार करने की परीक्षा पास करके आती।' बाबू जी चुप रह जाते हैं आखिर उत्तर भी क्या दें ? उन्होंने ने विवाह किया है एक पत्नी से, नकि एक बावरचन से । वह भी सच्ची है, यह सोच कर दिल को समझ लेते हैं ।

पति समझता है कि वह दफ्तर में दिन भर माज पच्ची करता है और दफ्तर से जब घर आता है तो सिवाय पत्नी की फरमाइशों और घर के गण्यों के और कुछ करने को समय नहीं मिलता । वह सुख के कुछ क्षण एकांत में शांति से बिता नहीं सकता । क्या दिन रात परेशान और बदहवास होकर घर से दफ्तर और दफ्तर से घर, घर से बाज़ार, बाज़ार से घर और घर से दफ्तर जाने का नाम ही जीवन है ? वह समझता है उसका जीवन अत्यन्त नीरस है आखिर इस जीवन में वह चीज़ कहाँ है जिसे सुख कहते हैं ।

और पत्नी समझती कि पुरुष तो सारा दिन कुर्सी पर बैठा कलम चलाता है और घर में आकर बीवी बच्चों पर हुक्म चलाता है, न कुछ कष्ट न दुःख । सौर हम नौकरों की भाँति प्रातः जागती है, सफाई, रसोई, बच्चों को नहलाना धुलाना, खाना पिलाना आदि कामों में ही दिन बीत जाता है । न चन ले सकती हैं, न आराम से कुछ लिख पढ़ सकती हैं, कितना अशान्तिमय जीवन है ।

एक रविवार को बाबू साहेब दफ्तर का कुछ

काम कर रहे थे । पत्नी ने कहा ज़रा बाज़ार जाकर दरज़ी से मेरे कपड़े तो लादो, मुझे अपनी मौसी के हां जाना है उसने बुला भेजा है' । वह काम समाप्त न करने पाये थे कि उसके दो एक मित्र आ जाते हैं । अन्दर बैठी देवी का क्रोध बढ़ रहा है कि जो भी आता है उसे उठने नहीं देते । बातों में ऐसे बेसुध होजाते हैं कि घर की भी सुध नहीं रहती । यह भी भूल जाते हैं कि घर में भी कोई है और उसका भी कोई काम है । परन्तु ठीक है कौन परवाह करता है स्त्रियों की ? स्त्री तो लाचार बेवस और मजबूर है । वस रोने बैठ जाती हैं श्रीमती जी !

वह दोस्तों से निपटने पर घर के अन्दर आते हैं तो इरशाद होता है, 'कब से कह रही हूँ मौसी के हां जाना है बाज़ार जाओ कुछ फल ले आओ, दरज़ी से कपड़े ले आओ लेकिन सुने कौन ? मेरी बात के लिए तो मानो कान ही न हों, सुन भी पड़े तो परवाह किसे है ? यारों दोस्तों से ही फुरसत नहीं तो घर की सुध कैसे लें ?'

लाचार बाबू जी भी क्रोध में यह कहे बिना नहीं रह पाते कि 'मैं तुम्हारा नौकर थोड़े हूँ जो सारा दिन मुँह की ओर देखा करूँ कि रानी जी कब कोई हुक्म दें और मैं बजा लाऊँ' । वह देखने को खामोश हो जाती है लेकिन दिल में आग सी लग जाती है । जी में आता है कि कुछ खाकर मर जाए ? लेकिन यह कैसे हो सकता है ?

यूँही सुबह से शाम और शाम से दूसरी सुबह हो जाती है । दोनों कहते हैं ग्रहस्थ जंजाल है दुःखों की खान है, कोई नरक है तो यही ।

लेकिन हम इसे ऐसा क्यों समझते हैं और यह अवस्था क्यों होतो ह क्या इस पर भी कभी विचार किया है ?

(पृ० १५ का शेष)
के चालीसवें से सत्ताईसवें हिस्से में तथा कतारों में ही बोना चाहिए।

बीज के छांटने में भी बड़ी सावधानी रखी जाती है। बीज को छान कर अच्छे दाने नमक के पानी में भरी एक बाल्टी में डाल दिये जाते हैं और केवल वही भारी दाने बोन के काम में लाए जाते हैं जो नीचे बैठ जाते हैं। एक से दो सप्ताह तक भीगे बीज को, अंकुर फूटने पर, बोना और अधिक लाभदायक रहता है।

बियाड़ को निराई की आवश्यकता तो बहुत कम होती है पर एक या दो बार करनी अवश्य चाहिए। पहली निराई के बाद थोड़ी सी खाद की और आवश्यकता हो तो बाद में भी थोड़ी सी खाद डाल देनी चाहिए।

अब रोपने का समय आता है। रोपाई कतारों में करनी चाहिए। ऐसा करने से किसान को खेत में चलने फिरने और निराई आदि कई बातों की सुविधा रहती है। ये कतारें ८ से १० इंच दूर होनी चाहिए।

उल्लास-दिवस

जापानी किसानों के लिए रोपाई का पहला दिन बड़े हर्षोल्लास का होता है। गृहिणियां नये वस्त्र धारण करती हैं, स्कूलों में छुट्टी कर दी जाती है जिस से कि बालक बालिकायें रोपाई के काम में अपने माता पिता का हाथ बटा सकें। पौद के उखाड़ने में भी बहुत ही सावधानी बरती जाती है। उखाड़ते समय इस बात का बहुत ध्यान रखा जावा है कि पौद की जड़ें टूट न जायें। इन्हें धीरे से उखाड़ कर तुरन्त दूसरी जगह

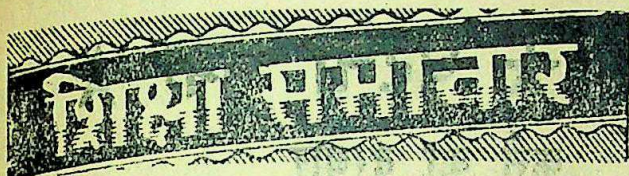
रो दिया जाता है। इस प्रकार रोपने से पौदों को दूसरी जमीन में बढ़ने में बहुत सहायता मिलती है।

जापानी तरीके की एक विशेषता यह भी है कि ३ से ६ पौदों का गुच्छा एक जगह बोया जात है जब कि पुराने तरीकों से ८ से २० पौदों के गुच्छे इकट्ठे बोये जाते हैं। ऐसा करने से एक तौ पौद कम लगानी पड़ती है और दूसरा बढ़ने के लिए स्थान मिलने के कारण पैदावार भी ज्यादा होती है।

दो सप्ताह के बाद खूब निराई की आवश्यकता होती है। अधिक से अधिक पैदावार के लिए किसान को १०० पौंड 'अमोनियम सल्फेट' और १०० पौंड 'सुपरफासफेट' के मिश्रण तैयार कर पौदों की जड़ों के आस पास डालना चाहिए। पौदों के फूलने से २ सप्ताह पहले तक इनके बीच की जमीन को भी गोड़ते भी रहना चाहिए। बाद की गुड़ाई हानिकारक है।

जहां पानी है और खाद की मात्रा तथा देखभाल अच्छी को गई है वहां इस तरीके से पैदावाद काफी हुई है। भारत में बम्बई के धान के इलाकों में यह तरीका काफी सफल पाया गया है।

भारत में इस तरीके से औसत पैदावार ४० मन प्रति एकड़ से कम नहीं रहा। विदेशी अन्न से मुक्ति पाने के राष्ट्रीय संघर्ष में यह तरीका स्वावलम्बन की ओर ले जाने वा एक छोटा रास्ता है।



काश्मीर यूनिवर्सिटी का मैट्रिक का परीक्षा परिणाम निकल गया। ३३०३ परीक्षार्थी थे, इन में से १६२१ पास हुए। एस० आर० एम० पी० हाई स्कूल जम्मू का विद्यार्थी सावरकर ६८४ अंक लेकर प्रथम रहा। द्वितीय प्रीतबन्धु और तृतीय देवल कृष्ण। ये दोन छात्र भी इसी स्कूल के हैं।

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड फीरोज़पुर ने २ मिडल स्कूलों को हाई और ६ लो० मिडल स्कूलों को मिडल कर देने का निश्चय किया है। जे० वी० टीचरों के वेतन में ७॥ रु० की वृद्धि ही जायेगी।

मध्य भारत सरकार ने स्कूलों के भवनों के लिए ३६६६०६ रु० स्वीकार किये हैं।

फेयरे डिक्नसन रुथर फोर्ड कालेज न्यू जर्सी (अमेरिका) ने सैडम विजय लक्ष्मी पंडित स्कालरशिप एक भारतीय विद्यार्थी को उक्त कालेज में १ से ४ वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करने के लिए देने का निश्चय किया है। यह ४७५ डालर प्रतिवर्ष का होगा।

चण्डीगढ़ में पंजाब यूनिवर्सिटी के जो दफ्तर बन रहे हैं उन पर ४० लाख रु० व्यय होंगे।

जिला इंस्पेक्टर के एक वक्तव्य के अनुसार जिला जालन्धर में १३४ नये प्राइमरी स्कूल खोले जा चुके हैं।

पंजाब के शिक्षा विभाग ने भविष्य में खोले जाने वाले नये प्राइमरी स्कूलों में सम्मिलित शिक्षा प्रचलित करने का निश्चय किया है।

श्री कृषक !

(रचि०—जगपाल सिंह 'सरोज')



नव उमंगों से सजा उर श्री कृषक अब मुसकरा दे।

देख कण कण इस धरा का,
मौन बन कर गा रहा है।

भार पीड़ा का—उठाये,
तू युगों से आ रहा है।

भूल अब जा उन क्षणों को,
बीत निष्ठुर दिन गये जो-

आस की चिनगारियों से घर निराशा का जला दे।
नव उमंगों से सजा उर श्री कृषक अब मुसकरा दे॥

दासता के बन्धनों में,

सांस जब तू ले रहा था।

निर्दयी सागर में अपनी,

भाग्य नौका खे रहा था।

रूठ नव निर्माण के वह,

उस समय जो स्वर गये थे-

अब स्वयं ही बज उठेंगे इस लगन के गीत गा दे।

नव उमंगों से सजा उर श्री कृषक अब मुसकरा दे॥

प्रगति के मृदु भाव ले चल,

धन्य है प्रयास तेरा।

विश्व इस पर भी बला से,

यदि करे उपहास तेरा।

खा अनेकों बार ठोकर,

गिर पड़े पथ में भले ही-

व्यस्त रहकर परहितां में फिर भी जीवन को बिता दे।

नव उमंगों से सजा उर श्री कृषक अब मुसकरा दे॥



सप्ताचार-सार

काश्मीर के मामले को सुलझाने के लिए पाकिस्तान और भारत के प्रधान मन्त्रियों में लण्डन में बातचीत हो रही है।

२ जून को मलिका एलिजबैथ का राज्याभिषेक हो गया। भारत के प्रधान मन्त्री इस में सम्मिलित हुए।

कोरिया के युद्ध बन्धियों की बदला बदली के प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्र संघ और उत्तरी कोरिया में समझौता हो गया है। अपने देश को लौटने की इच्छा न करने वाले सैनिक एक गैर जानिबदार कमिशन की निगरानी में दे दिये जायेंगे। इस कमिशन के सदस्य ५ देश होंगे, पोलेण्ड, स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, चैकोस्लवाकिया तथा भारत। इसका प्रधान भारतीय होगा। अब सन्धिवार्ता शीघ्र सिरे चढ़ जायेगी।

भारत ने पुर्तगाल की राजधानी लिजबन से अपना प्रतिनिधि बुला लिया है। यह पग पुर्तगाल के भारत में उसकी बस्तियों के भावष्य के सम्बन्ध में वार्तालाप द्वारा समझौता करने को छद्यत न होने के कारण उठाया गया है।

ईरान अपना तेल जापान तथा अन्य देशों को कम मूल्य पर बेचने का प्रयत्न कर रहा है।

२६ मई को अंग्रेज पर्वतारोहियों ने माऊंट एवरेस्ट को सर लिया। इन में नेपाल में जन्मे भारतीय शेरपा तिन्सिंग सब से पहले चोटी पर पहुँचे। भारत सरकार इस वीर का सम्मान करेगी। मलिका एलिजबैथ ने भी उसे सम्मानित किया है। पश्चिमी बंगाल और नेपाल भी उसका सम्मान करेंगे।

★ घटना चक्र ★

कुत्ते का दरबार

किंवदन्ति है कि लार्ड डलहौजी का दरबार लगा हुआ था। सारे देश के राजे महाराजे और नवाब उस में सज-बज कर बैठे थे और बाइसराय के आगमन की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे कि भट से उनका कुत्ता वाइस्सराय की कुर्सी पर आकर बैठ गया। इतने पर ही बस नहीं कम्बख्त उपस्थित जनों की ओर मुँह करके भौंकने लगा—आप ही सोचिए कि कुत्ते की इस हरकत से दरबार के दर्शकों के दिल पर क्या बीती होगी ?

रोग

पंडित जवाहर लाल नेहरू के स्वर्गीय पिता पं० मोती लाल एक बार स्विटजरलैण्ड इलाज करवाने गये। वह डाक्टर के पास बैठ कर अपने रोग की हिस्ट्री सुना रहे थे। डाक्टर उनके विस्तृत वर्णन से ऊब कर पूछ बैठे—‘आप यह बताइये कि अब आप को क्या शिकायत है ?’

पंडित जी बोले—‘मुझे सम्प्रति आपकी जल्दबाजी की शिकायत है।’



आवश्यक सूचना

२५ तारीख तक पत्रिका न मिले तो हमें पत्र द्वारा सूचित कीजिए। पत्र लिखते समय अपना नाम, स्थान, डाकखाना, जिला आदि पूरा पूरा पता लिखें। ग्राहक संख्या भी अवश्य लिखनी चाहिए और यह भी कि किस मास का अंक नहीं मिला।

—मैनेजर

★ भारतीय बाल सभा ★

★ (बच्चों का भाग) ★

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

(बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर)

प्र० इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा में फेलों में फर्स्ट कौन रहा ?

—सोहन लाल, अमृतसर ।

उ० क्यों तुम भी उम्मीदवार हो क्या ?

—दी०

प्र० यदि पशु भी बातें करने लगे तो क्या हो ?

—देवकी, श्रीनगर ।

उ० वे मनुष्य की गुलामी छोड़ दें और उनका काम भी उसे स्वयं करना पड़े ।

—दी०

प्र० यदि फूलों में कांटे न होते तो क्या होता ?

—लीला शर्मा, करनाल ।

उ० तो फूल इतने मनमोहक भी न होते ।

—दी०

प्र० गधे को बुद्धि मिल जाए तो वह क्या करे ?

—कुन्दन लाल, अम्बाला ।

उ० भार होना छोड़ कर स्कूल में तुम्हारे साथ पढ़ने चला आये ।

—दी०

प्र० क्या आप कभी रोती भी हैं ?

—सुषमा, बनारस ।

उ० हां, जब कोई फेन होकर आत्म-हत्या कर लेता है ।

—दी०

प्र० मैं ने सुना है कि परीक्षा-प्रणाली बन्द कर दी जाएगी ? सुशीला, मेरठ ।

उ० तारादेवी (शिमला) में हुए मुख्याध्यापकों के सम्मेलन में एक महोदय ने ऐसा सुझाव रखा था किन्तु भारत में अभी इसकी क्रियात्मक रूप मिलना असम्भव ही समझो—तुम्हें इस उत्तर से निराशा तो नहीं हुई क्या ?

—दी०

प्र० मनुष्य इस संसार में क्यों आता है ?

—वेदवती देहरादून ।

उ० जी चुकने पर मरने के लिए । दी०

प्र० मनुष्य वृद्ध होने पर अपने बचपन को क्यों याद करता है ? —सरला, देहली ।

उ० इस लिए कि यह उसके जीवन का चिन्ता रहित भाग होता है ।

—दी०

(सभी विद्यार्थी प्रश्न भेज सकते हैं ।)



लीजिए पशु भी बोलने लगे

वह प्रश्नों का उत्तर टाईप कर देती है।

★ बातें करने वाली घोड़ी ★

उस से एक लेखक के इंटरव्यू का विवरण

विर्जीनिया (उत्तरी अमेरिका) में मिसेज़ क्लौडिया फोंडा नामक एक स्त्री के पास 'लेडी-वण्डर' नामक २७ वर्षीया एक घोड़ी है जो जब छोटी थी तो चीनी भाषा में बोल सकती थी। वह प्रश्नों का उत्तर देती थी। अब उसकी यह भाषा बोलने की शक्ति तो जाती रही है किन्तु अब एक विशेष रूप से उसके लिए बनाये गये बहुत बड़े टाईप-राईटर पर प्रश्नों का उत्तर टाईप कर देत है।

इसकी मालकिन मिसेज़ फोण्डा ने इसे उस समय पालनार्थ प्राप्त किया जब वह दो सप्ताह की थी। उसे अन्य घोड़े घोड़ियों से पृथक् रखा और बोतल के दूध पर पाला गया। तब से अब तक वह पशुओं की खुराक नहीं मनुष्यों का भोजन खाती है और वह भी रसोई में।

एक अमेरिकन लेखक जिम हगट ने उस घोड़ी से एक घंटा तक इंटरव्यू किया और कुछ प्रश्न किए जिसके उत्तर उसने टाईप कर दिये। लेखक के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसके उत्तर ठीक पाये गये। ज्यों वह उसके सामने प्रश्न करने के

विचार उपस्थित हुआ तो इत्फाक से उस समय गाड़ी के विस्ल की आवाज़ आई। उसने पहला यही प्रश्न किया—यह किसकी आवाज़ है। 'लेडी वण्डर' ने टाईप कर दिया 'TRAIN' गाड़ी! उससे दूसरे प्रश्न में अमेरिका के प्रधान का नाम पूछा गया जो उसने ठीक बता दिया। सब से आश्चर्यजनक उत्तर था उनके इस प्रश्न का कि कैंनेडा में इस वर्ष फ़ैडल चुनाव कौन जीतेगा? उसका उत्तर था लिबरल पार्टी।

उस लेखक का कथन है कि उसने लिबरल पार्टी का उसके सामने जिक्र तक नहीं किया था। उसके साथ एक फोटोग्राफर भी था। जिम हगट ने, फोटोग्राफर को अपनी आयु एक कागज़ के टुकड़े पर लिखने को कहा। उसने अस्पष्ट अक्षरों में लिखा था अतः जिम ने उसे ४२ पढ़ा। तब 'लेडी वण्डर' से प्रश्न किया कि मेरे साथी की आयु क्या है? उसने टाईप कर दिया—४२। ध्यान रहे कि जिम ने या फोटोग्राफर ने घोड़ी या उसकी मालकिन को वह कागज़ जिस पर आयु लिखी गई थी, देखने का अवसर नहीं दिया था।

★ प्रकृति की शरणा में ★

(लेखक: श्री आत्माराम शर्मा, रिटौली)

चल दूर कहीं इस जगती से,
एकांत शान्त में रहने को।
व्यर्थ यहां क्यों पड़ा हुआ है,
नित नये उपद्रव सहने को ।१।
विष कुम्भ पयो मुख यह दुनिया।
असम्भव यहां सुखद परिणाम।
मानवता भी रो उठती है,
देख मनुज के विषमय काम ।२।
स्वार्थ पट की धूमिल ओट में,
लेकर विश्व प्रेम का नाम ।
बल हीनों को दला जा रहा;
सिद्ध करने को अपने काम ।३।
मत डर पागल, कि तू वहां पर
होगा सहाय हीन अकेला ।
खाने को कुछ नहीं मिलेगा,
भरी दुःखों से होगी बेला ।४।
प्रकृति देवता माता होगी,
बन देव सखा भोले भाले ।
फलाहार विनत तरुवर देंगे,
खाने को फल मधु रस वाले ।५।
लता कुञ्ज में कलरव करते,
मुदित विहग के मधुमय गीत ।
पुरुष रचित वाद्यों को करते,
लज्जित खण्डित मौन विनीत ।६।

शुक्ल पत्र का चारु चन्द्रमा,
सघन पादपों में छिप २ कर ।
आँख मिचौनी नित्य करेगा,
बन कर तेरा प्यारा सहचर ।७।
गिरि वर उर पर बहने वाले,
लघु चरणों के कल २ स्वर में ।
प्रकृति का नित्य गान सुनेगा,
जो भरता नव साहस उर में ।८।
वहां की अडिग नीरवता में,
बैठ शिला की शीतल छाया ।
पूर्ण प्रकृति को अर्पण करना,
अपना सर्वस, मन वच काया ।९।



टैलीफोन पर विवाह

लीजिए अब वर और वधु का विवाह
के लिए एक स्थानपर होना आवश्यक नहीं ।
वे चाहें तो टैलीफोन पर भी विवाह कर
सकते हैं। अभी अभी रावलपिंडी (पाकिस्तान)
में एक लड़की का निकाह लण्डन में डाक्टरी
पढ़ रहे एक लड़के से टैलीफोन पर मौलवियों
ने पढ़ा दिया । कोई समय था जब मौलवी
टैलीफोन में आने वाली आवाज़ को शैतान की
आवाज़ कह कर इसका विरोध किय करते थे।
मगर आज जमाना बदल गया है ।

कहानी

★ क्या मैं मर गई थी ? ★

(ले० : कु० मनोरमा शर्मा, द्वितीय वर्ष क० म० विद्यालय जालन्धर)

“.....हां ! तो फिर यह ठीक है कि मैं मर गई थी। लोगों के कहने पर मुझे भी मानना पड़ा कि मैं मर गई थी। पर यह सब कैसे हुआ कि एक बार यम-लोक में जा कर मैं फिर लौट आई। लोग कहते हैं कि यमराज से भूल हो गई और जब उन्होंने ने भूल को अनुभव किया तो मेरी आत्मा को फिर इसी शरीर में भेज दिया। पर मैं तो विश्वास नहीं कर सकती। वह केवल एक स्वप्न होगा। हां ! अवश्य वह स्वप्न ही था। लोग तो बातका बतंगड़ बनाना जानते हैं। गहरी निद्रा में मग्न मैं स्वप्न लोक में विचरण कर रही थी, और इन्होंने ने समझ लिया कि मैं मर गई हूं।

कैसा था वह स्वप्न ! कुछ भयंकर, कुछ सुन्दर, कुछ भयोत्पादक, कुछ आकर्षक, नहीं, वह स्वप्न नहीं था। सचमुच ही मैं यमलोक की यात्रा कर आई हूं। और कहीं भी ऐसा सम्भव नहीं हो सकता।

तो फिर यह ठीक है कि मैं मर कर पुनः जीवित हुई हूं। पर क्यों और कैसे ! ठीक याद आया, डाक्टर ने कहा था कि तीन बूंद से अधिक दवाई खा ली जाए

तो मृत्यु तक हो जाने की सम्भावना है। तो शायद ऐसा ही हुआ क्योंकि दवाई खाने के बाद कुछ अस्पष्ट सा कोलाहल मुझे सुनाई देने लगा था। घर वालों में बड़ी हलचल सी मची हुई थी। पर यह सब कुछ क्यों था और यह लोग क्या कह रहे थे, यह सब न तो मैं सुन ही पाती थी और न समझ ही।

तभी एकाएक न जाने क्या हुआ, जैसे मैं ऊपर ही ऊपर उड़ती जा रही हूं। मैं अपने आप को रूई से भी हल्का अनुभव कर रही थी। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे मुझे कोई खींचे लिए चला जा रहा है। और तभी मैं ने अपने आप को एक अन्धेरी गुफा में पाया। एक छाया मेरे आगे आगे चल रही थी और शायद मुझे अपने पीछे आने का संकेत कर रही थी। वह अन्धेरी गुफा न जाने कितनी लम्बी थी। चलते २ में घबरा गई पर मुझे थकावट अनुभव नहीं हो रही थी। जैसे बिना पैरों कहीं चल रही हूं।

अचानक मेरे आगे चलने वाला छाया ने एक बृहदाकार पुरुष को कुछ दिखाया। उस ने द्वार खोल दिया और वह वह छाया उस में प्रविष्ट हो गई। साथ ही चुम्बक की

तरह खिचती हुई मैं भी उसी के साथ द्वार को लांघ कर एक विशाल प्रांगण में पहुँच गई। वहाँ की चमक ने मेरी आँखें चौंधिया दीं। मणि मणिकय-युक्त उस प्रांगण में मैं किर्कतव्यविमूढ़ सी इधर उधर आँखें फाड़ कर देखने लगी। मणि-खचित स्तम्भों में से बड़े बड़े बल्ल लटकते हुए थे, जिनका प्रकाश आँखों को स्थिर नहीं रहने देता था। एक तरफ कुछ भीड़ सी थी, जिस के सामने ऊँचे मञ्च पर कोई महानुभाव बैठे थे। उन्हीं के साथ कुछ नीचे एक और महोदय अपना बड़ा सा पत्रा खोले कुछ पढ़ रहे थे और उक्त महानुभाव वह सब सुन कर और सिर हिला कर अपनी सह-मति असहमति प्रकट कर रहे थे।

मैं एक कोने में दुबक कर खड़ी हो गई। वह छाया मंच पर बैठे महानुभाव के पास गई। न जाने उन में क्या बातें हुईं। छाया मेरी ओर इशारा कर रही थी। मुझे मित्राय कुसकुसाहट के और कुछ सुनाई न पड़ रहा था। तभी मैं काँप उठी। मंच पर आसीन महोदय लाल पीली आँख किये छाया को घूर रहे थे और शायद कड़े शब्दों में डाँट भी रहे थे। सारी सभा में एकदम सन्नाटा छाया हुआ था। छाया ने धीरे से सिर झुकाया और वापस लौट पड़ा। मैं अब भी उसी के पीछे थी। हम उसा रास्ते से

लौट रहे थे जिस रास्ते से आए थे। हमने उस लौह द्वार को पार किया। एकाएक वह छाया मेरी आँखों से अन्तर्धान हो गई और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी ने मुझे धक्का दे कर ऊँचे से नीचे फेंक दिया हो। मेरा वह हल्कापन जाता रहा। पहले मैं जिस स्वतन्त्रता का आभास पा रही थी, वह अब न थी। अब मुझे कुछ परिचित से शब्द सुनाई पड़ रहे थे। पहले मैं विन्कुल भी किसी शब्द को समझ न पाई। अचानक मैं ने सुना,—‘घबराने की आवश्यकता नहीं, मरीज में हरकत आ रही है।’

(पृष्ठ २८ का शेष) ★

*चौदहवीं के चाँद की तरह रोशन हों, दाँतों की चमक तारों की चमक के समान हो, होटों पर मुस्कान हो; स्वर्गीय अप्सरा की लताफत से आवाज़ भरपूर हो। जब यह मूर्ति तैयार हो जाय तो हाज़िर करो।’ जब यह मूर्ति तैयार होकर पेश हुई तो उसका नाम स्त्री रखा। स्त्री के होटों पर मुस्कान आई, चण भर में ही संसार का नक्शा बदल गया। चाँद प्रसन्नता से आकाश पर उछल पड़ा, लहरे दरिया के सीने पर नाचने लगीं, फूल मुस्काने लगे, पक्षियों ने एक विशेष आनन्द बना दिया। पहाड़ों की चोटियां और घाटियां चरमों और आवशारों की संगीतमयी आवाज़ से भर गई। स्त्री को मुस्कान से दुनिया स्वर्ग बन गई।

* परियों की गाड़ी में दुनिया की सैर *

जापान में रहने वाले बच्चों को संसार के विभिन्न देशों के घरों की सैर करने के लिए जादुई कालीन पर सवार होने की आवश्यकता नहीं है। वे जब चाहें 'परियों की गाड़ी' पर सवार होकर टोकियो की बाह्य वस्तियों में स्थित यूनेस्को ग्राम में पहुँच सकते हैं और वहाँ संसार का मूँचम रूप में परिदर्शन कर सकते हैं।

सायेमा पार्क की वृत्तों से अच्छादित पहाड़ियों में बसे इस अनूठे और सुन्दर ग्राम में विभिन्न आकार के लगभग ४० मकान एक-दूसरे के निकट खड़े हैं। ये सभी मकान भिन्न २ देशों में पाये जाने वाले मकानों के नमूने पर तैयार किये गए हैं। वहाँ हालैंड की एक पवनचक्की शेक्सपियर के इंग्लिश निवासगृह पर मैत्री का हाथ बढ़ाये हुए खड़ी है, पास ही एक तुर्क सराय की मीनार आसमान को छूने का प्रयत्न करती हुई दीखती है।

जापानी बच्चों ने भारत, हिन्देशिया, अफगानिस्तान, वीतनाम, लाइबीरिया और स्वीडन आदि जिन देशों का नाम केवल समाचारों में ही सुन रखा था, अचानक ही उनकी यात्रा करने का भी उन्हें अवसर प्राप्त हो गया। प्रत्येक मकान और उस पर लगे

झंडे को देख कर तथा इंग्लिश और जापानी भाषा में अंकित इतिहास को पढ़ कर ये छोटे बच्चे प्रत्येक देश की स्थापत्य-कला और रीति-रिवाजों के विषय में थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त कर लेते हैं और साथ ही अपनी आँखों से देखते हैं कि उस देश के लोग किस प्रकार रहते हैं।

दो वर्ष पुराना

यूनेस्को ग्राम का निर्माण जून १९५३ में संयुक्त राष्ट्रीय शिक्षा-विज्ञान-संस्कृति संघटन (यूनेस्को) में जापान को शामिल किये जाने के उपलक्ष्य में किया गया था। इस ग्राम का आयोजन सायबू रेलवे कम्पनी ने किया है और इसका डिजाइन जापान के प्रमुख स्थापत्य कला-शास्त्री और वासेदा विश्वविद्यालय के उपाध्याय केन्जी इमाई ने तैयार किया है।

इस ग्राम का प्रत्येक मकान एक छोटा सा नमूना है। ये नमूने यूनेस्को के ४६ सदस्य राष्ट्रों द्वारा प्रदान किये गए नक्शों तथा तस्वीरों के आधार पर तैयार किए गए हैं। प्रत्येक मकान की स्थापत्य कला में उस देश के जलवायु प्रकृति, तथा संस्कृति को सही रूप में दर्शाया है। इस समय तक

४० मकान तैयार हो चुके हैं और दूसरों का निर्माण हो रहा है।

प्रस्तुत मकानों में हिन्देशियाई नमूने का भी एक मकान है। बग्लियों पर खड़े इस मकान की छत फ़्लॉस की है और दीवारों पर चित्रकारी की हुई है। उष्ण प्रदेशीय मकान के सामने एक नारवेजियन मकान खड़ा है, जिसकी दीवारें लकड़ी की हैं और छत ढालुआं है। इस प्रकार के मकानों में रहने वाले उत्तर की बर्फीली हवाओं से बचे रहते हैं।

पुरानी और नई दुनिया

थोड़ा आगे चल कर दर्शक नई दुनिया में पहुँच जाता है। यहां एक अमेरिकी मकान खड़ा है। इस मकान की दीवारें पतले तख्तों की हैं और छत ढालुआं है। छत में अनेक उभरी हुई खिड़कियां हैं। इस प्रकार के मकान न्यू इंग्लैंड के देहातों में पाये जाते हैं।

कुछ कदम बढ़ाते ही बच्चे फिर पुरानी दुनिया में प्रवेश करते हैं। यहां वे यूरोप का दर्शन करते हैं, जहां उन्हें शेक्सपियर का इंग्लैण्ड स्थित जन्मस्थान देखने को मिलता है। यहीं उन्हें १६वीं सदी के हंग का आस्ट्रियन मकान भी देखने को मिल सकता है। इंसब्रुक का यह विशाल भवन प्रदर्शनी के विशाल कक्ष और रेलवे

स्टेशन का काम दे रहा है।

इस भवन में लगे घण्टे की आवाज़ को सुन कर बच्चे 'फेअरी टून' में बैठने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

दक्षिण अमेरिका में जगह-जगह जंगल वृक्षविहीन, मैदान तथा ऊंची ऊंची पहाड़ियां पाई जाती हैं। ब्राज़िल, पेरू, आर्जेण्टीना और बोलिविया के मकानों की स्थापत्यकला में दक्षिण अमेरिका की इस भौगोलिक स्थिति का स्पष्ट आभास मिलता है।

यूनेस्को ग्राम में अक्सर लोक नृत्यों, खेलों तथा अन्य प्रदर्शनों का आयोजन किया जाता है।

जापानी बच्चों और उनके अभिभावकों के लिए यूनेस्को ग्राम संसार की एकता और सौहार्द का प्रतीक है।

★

उड़ गई

शरीफों से शराफत, रईसों से रियाज़त, मालदारों से तिजारत, फकीरों से किनायत, कचहरियों से सिमायत !

बाज़ नहीं रहता

चोर चोरी से, कज़ाक सीनाज़ोरी से, अय्याश तमाश बीनी से, नुक़ताचीन नुक़ता चीनी से, खुदा तरस परहेज़ गारी से और राय़र शायरी से !

कहानी—

* परमात्मा ने जब पहली स्त्री बनाई! *

परमात्मा ने जब प्रारम्भ में स्त्री के बनने की आज्ञा दी तो उस समय सारी सामग्री पुरुष के बनने में समाप्त हो चुकी थी और कोई उपयुक्त सामग्री शेष न रही थी। चूनाचि उसने बेलों की नज़ाकत, फूलों की रंगत, हिरण की नज़र, बुलबुलों के चहचहे, कोयल के नगम, किरणों की प्रसन्नता और बादलों की गिरयाजारी—इन सबको परस्पर मिला कर स्त्री बना दी और उसे पुरुष के सुपुर्द कर दिया। परन्तु कुछ दिनों के अनन्तर 'पुरुष' बेकसी की अवस्था में लौट कर वापिस आया और कहने लगा :-

‘हे परमात्मा ! इस स्त्री ने मेरी जिन्दगी तलख कर दी है। हर समय चिड़ २ करती रहती है। कभी अकेला नहीं होने देती, मुझे हर समय इसकी रक्षा का ध्यान रहता है। कभी प्रसन्न और कभी मुँह बमोरने लगती है सारा दिन बेकार रहती है। मैं यह अमानत वापिस करने आया हूँ। मैं इस से किसी अवस्था में भी गुज़ारा नहीं कर सकता।’

परमात्मा ने स्त्री वापिस ले ली। कुछ दिन व्यतीत होने के अनन्तर आदमी फिर वापिस आया और कहने लगा :-

‘हे परमात्मा ! मुझे घर जाने

ज्ञात हुआ कि मेरा जीवन विष्कुल नीरस होगया है। मैं हमेशा उदास रहता हूँ, उसकी सेवा, उसका प्रेम, उसका त्याग मैं कभी नहीं भूल सकता। उसकी हंसी एक मधुर संगीत थी वह सुन्दर थी। मुझे एक बार फिर वापिस दे दो।’

परमात्मा ने कहा, ‘बहुत अच्छा ! स्त्री पुनः पुरुष के सुपुर्द कर दी गई। दूसरे दिन पुरुष फिर वापिस आया और कहने लगा, ‘प्रभो ! मैं ने अच्छी तरह तजुर्बा करके देख लिया है इस से आराम कम और कष्ट अधिक है इसे वापिस ले लो।’

परमात्मा की आज्ञा एक दम फिजा में गूँजी, ‘ऐ मनुष्य ! जा इसका सारा प्रबन्ध तुम्हें स्वयं करना होगा।’ पुरुष बोला—‘मगर मैं उसके साथ नहीं रह सकता।’

परमात्मा ने कहा ‘तेरा गुज़ारा इस के बिना भी नहीं हो सकता।’ यह कह कर परमात्मा ने पुरुष की ओर से मुँह मोड़ लिया। पुरुष गर्दन नीची किए हुए कुछ सोच रहा था कि क्या करूँ। न इसके साथ रह सकता हूँ न इस के बगैर।

परमात्मा ने आज्ञा दी, ‘स्वर्ग की मिट्टी ले कर एक मूर्ति तैयार करो जिसकी आँखें

तेरी जय हो भारत माता यह भी खूब रही !

(श्री पं० मदन मोहन लाल चतुर्वेदी)

सारे जगत को तुम हो प्यारी,
सब को है अब आस तुम्हारी।
कोई पैदा करदे दाता,
तेरी जय हो भारत माता ॥१॥

★

इस पृथ्वी पर बड़े बड़े हो गए,
लाया साथ यहां पर खो गए।
है कोई आता, है कोई जाता,
तेरी जय हो भारत माता ॥२॥

★

बेचैनो संसार में छाई,
मात पिता न है कोई भाई।
यह जीते जी का नाता,
तेरी जय हो भारत माता ॥३॥

★

ऐ मन मूर्ख तू अज्ञानी,
ईश्वर की महिमा नहीं जानी।
क्या रचना तेरी विधाता,
तेरी जय हो भारत माता ॥४॥

★

प्रभु मदन है दास तुम्हारी,
भव सागर से पार उतारो।
बिन करनी पछताता,
तेरी जय हो भारत माता ॥५॥

★

एक अमेरिकन सिपाही को शरारत जो
सूझी तो सड़क पर खड़ा हो गया और थोड़ी
दूर एक डालर फैंक दिया—इस विचार से
कि कोई उसे उठाने को झुकेगा तो हंसते हुए
कहूंगा कि यह मेरा है। इस से वह लज्जित
हो जायेगा। कई व्यक्ति आये और पास से
निकल गये। एक व्यक्ति आया उसने डालर
देखा, मुस्कराया और अपनी जेब से एक
डालर निकाल कर पहले के समीप रख दिया।
अब तो वह सैनिक बड़ा घबराया क्योंकि
एक-एक करके कुछ ही घण्टों में वहां
काफी सिक्के लोग डाल गए—शायद
यह समझ कर कि उसे आर्थिक
सहायता की आवश्यकता है। वह भिखारी
समझे जाने की आत्म-ग्लानि से ज़मीन
में गड़ा जा रहा था कि उसका एक दूसरा
सैनिक मित्र उधर आ निकला जो उसे
पहला सिक्का डाल कर दूसरों का मजाक
उड़ाने के लिए छोड़ गया था। जब उसने
उसके सामने बहुत से सिक्कों का ढेर देखा
तो हंसते हुए बोला—यह भी खूब
रही !

सारा धन बाद में रैडक्रास को
दे दिया गया। —नरेन्द्र हितैषी

★

★ गुरु-दक्षिणा ★

(लेखिका : कु० विजय हितैषी, प्रभाकर छात्रा, शाखा विद्यालय, जालन्धर)

पात्र परिचय :-

हिरण्यधनुष=	भील राज
एकलव्य=	भील कुमार
गुरुदेव=	कौरव पाण्डव गुरु द्रोणाचार्य
रानी=	भील राज की रानी
अर्जुन=	पाण्डव

(स्थान :- भील राज का शयनागार
समय प्रातः ७ बजे । राजा पलंग पर तकिये
के सहारे लेटे हैं रानी चरण दबा रही है ।
एकलव्य का प्रवेश)

एकलव्य-(रानी के चरणों पर सिर रख
कर) चरण वन्दना माँ !

रानी-चिरंजीव रहो बेटा !

एकलव्य-(राजा के चरणों पर झुक कर)
चरण वन्दना पिता जी !

राजा-सुखी रहो बेटा !

[एकलव्य पलंग पर बैठकर बड़ी
तजाकत से]

लव्य-पिता जी ! मैं भी अब धनुर्विद्या
सीखने गुरु जी के पास जाऊंगा । उन से
विद्या सीखने के लिए दूर २ से राजकुमार
आते हैं । मुझे भी आज्ञा दीजिए ।

राजा-बेटा ! मेरी ओर से तो कोई इन्कार
नहीं, तुम्हारी जो इच्छा हो सीखो ! पर जहां

तक मेरा विचार है वे तुम्हें शिष्य नहीं
बनायेंगे क्योंकि हम निम्न जाति वालों को
वे कहां शिक्षा देते हैं ? उनका धर्म तो
केवल क्षत्रियों को ही शिक्षा देना है ।

रानी-(घात काटते हुए) अरे बेटा ! इतने
से तो हो, तुम तो अभी खेलो कूदो मजे
करो । (अंक में भर लेती है)

एकलव्य-(जल्दी से गोद से निकल कर
एड़ियां ऊंची करके खड़ा होकर) देखो तो माँ
तुम से भी ऊंचा हूं । यदि पिता जी के
वस्त्र पहन लूं तो पिता जी जान पड़ें ।

पिता-हां ! हां !! अब हम तो बीते समय
के राजा हैं । तुम्हीं ने तो राजा बनना है ।
बड़े कैसे नहीं !

लव्य-हां तो पिता जी ! फिर जाने
दीजिए न मुझे । मैं गुरु जी को किसी न किसी
प्रकार स्वयं ही मना लूंगा ।

राजा-बड़ी खुशी की बात है । अच्छा तुम
जाओ परमात्मा तुम्हें सफल करे ।

लव्य-(माता पिता के चरणों की धूलि
मस्तक पर लेते और माता की ओर
आशीर्वाद के लिए झुकते हुए)

लव्य-माँ ! तुम भी आशीर्वाद दो न ।

रानी-(सिर पर हाथ फेर और मस्तक का)

चुम्बन ले कर) जाओ मेरे लाल ! तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हो । हमारी शुभ कामनाएं तुम्हारे साथ हैं । तुम धनुर्धर बन कर लौटो । तब तक तुम्हारा सिंहासन तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहेगा ।

लव्य अच्छा माँ... पिता जी फिर विदा !

(एकलव्य का प्रस्थान) पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

(स्थान :- गुरु द्रोण का आश्रम, समय

मायं ५ बजे ! आश्रम के बाहर एक बट वृक्ष के नीचे द्रोणा अपने शिष्यों के साथ बैठे हैं । सब अपना कार्य करने में व्यस्त हैं । लव्य का प्रवेश)

एकल०-एकलव्य का श्री चरणों में प्रणाम स्वीकृत हो ।

गुरु-(आंखें ऊपर उठाकर) सानन्द रहो बेटा ! कहो तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, तथा किस प्रयोजन से आये हो ?

एकल०-(प्रसन्न होकर) गुरुदेव ! मैं आप से धनुर्विद्या सीखता हुआ इन श्री चरणों की सेवा करना चाहता हूँ ।

गुरु-पर बेटा ! यह तो तुमने कहा ही नहीं कि तुम कौन से राजा के कुमार हो ?

एकल०-गुरुवर ! मैं भीमराज हिरण्य धनुष का पुत्र हूँ ।

गुरु-(चिन्तित स्वर में) ओह ! तुम भाग्यहीन हो । तुम्हारी इच्छा पूर्ण न हो पायेगी ।

क्योंकि यहां पर क्षत्रिय वंशीय राजकुमारों को ही शिक्षा दी जाती है । तुम मेरे शिष्य कैसे बन सकते हो ?

एकल०-गुरु जी ! क्या याचक निराश ही लौटेगा ? उसे श्री चरणों की सेवा की भिक्षा न मिलेगी क्या ? बड़ी आशा और विश्वास से आया था । कैसे भी हो इस दास को तो अपना ही लो । एक बार तो सेवा का अवसर दे दो ।

गुरु-(दयादृष्ट होकर गले से लगाते हुए) वत्स ! मैं नियन्त्रण के बन्धन में बन्धा हुआ हूँ । जाओ मेरा अशीर्वाद तुम्हारी सहायता करेगा । तुम स्वयं अभ्यास द्वारा धनुर्धर बन जाओगे ।

एकल०-[गुरु के चरणों से लिपट कर उन्हें अश्रु जल से धो डालता है फिर उनकी धूलि मस्तक पर ले खड़ा हो जाता है और भराई हुई आंवाज़ में कहता है] जैसी आपकी आज्ञा गुरुदेव ! यह शिष्य आपकी आज्ञा का कभी उलंघन न करेगा । क्या कभी आपके दर्शन फिर भी पा सकूँगा ?

गुरु-क्यों नहीं एकलव्य ! हम एक दिन तुम्हारे पास जरूर आयेंगे ।

एकल०-अहोभाग्य !

(एकलव्य का प्रस्थान)

पटाक्षेप

तीसरा दृश्य

(स्थान :- वही द्रोण जी का कुटीर
समय : सायं ७ बजे ! गुरु द्रोण अपने
शिष्यों के बीच विद्यमान हैं। चारों ओर से
शिष्य उन्हें घेरे हुए हैं। शेष सब तो आज
रोज की तरह ही हैं पर अर्जुन कुछ
उदास सा दीख पड़ता है।)

गुरु-अर्जुन बेटा ! तुम आज मूक क्यों हो,
क्या किसी ने कुछ बात कहदी या रूठे हो
मुझ से ?

अर्जुन-मैं ।

गुरु-(पास आकर) बेटा ! बोलते क्यों नहीं !
तुम्हारा मलीन मुख तो मुझ से देखा नहीं
जाता। तुम तो मुझे अश्वत्थामा से भी कहीं
अधिक प्रिय हो। बोलो ! क्या बात है ?

अर्जुन-गुरुदेव ! फिर कभी बताऊंगा।
अब नहीं।

गुरु-(उसे उठाते हुए) चलो बाहर चल कर
बताओ।

अर्जुन-(धीरे २) गुरुजी ! आप ने एक
बार मुझे वचन दिया था कि... (मौन हो
जाता है)

गुरु-हां हां कहो क्या वचन दिया था मैं ने ?
अर्जुन-कि मुझ से बढ़ कर आप और किसी
को भी धनुर्विद्या न सिखायेंगे।

गुरु-बस यही बात थी ? ठीक तो है अरे
धनुर्विद्या में तुम से अधिक नपुण और

है भी कौन ?

अर्जुन-नहीं गुरु जी ! आपने अन्याय किया
है मेरे साथ।

गुरु कैसा अन्याय और वह भी फिर तुम से ?
अर्जुन-आप कहते हैं कि धनुर्विद्या में
मुझ से अधिक चतुर और कोई भी नहीं।
पर एकलव्य तो मुझ से भी चतुर है।

गुरु-एकलव्य ! इस नाम का तो मेरा कोई
शिष्य ही नहीं। तुम भाइयों के सिष्याय में और
किमी को पढ़ाता ही नहीं।

अर्जुन-भला मैं कैसे मानूं जब उस ने
बताया है कि वह आपका शिष्य है। आपने हमारे
कुत्ते को देखा था जिसका मुँह बाणों में
बिन्धा हुआ था। कितना आश्चर्यजनक चातुर्य
था। ऐसा तो मैं भी नपुण नहीं हूँ। यह
कमाल आपके उसी शिष्य का है। वह कहता है
कि एक बार आप के पास आश्रम पर भी आया
था। वह आपको जानता भी भला प्रकार है।

गुरु-हमें तो याद नहीं। तुम मुझे उसके
पास ले चलो देखें तो सही यह हमारा शिष्य
शिष्य कौन है ?

अर्जुन-चलिए मैं अभी लिए चलता हूँ
उसके पास वह इसी जंगल में एक गुफा में रहता
है। इस समय भी अभ्यास कर रहा होगा।

गुरु-तो चलो चलो ।

(दोनों का प्रस्थान)

चौथा दृश्य

(स्थान :- एक निर्जन वन में लव्य की कन्द्रा समय ८ बजे सायं एकलव्य अपने गुरु की मिट्टी की प्रतिमा के आगे धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहा है। उसका रूप देखने योग्य है। बेचारा मिट्टी का माधो जान पड़ता है। मानो वर्षों की आन्धियों की मिट्टी उस के शरीर पर लिपटी हो। सहसा किसी के आगमन की आहट पाकर रुक जाता है पर यह देख कर कि उसके गुरु जी एक शिष्य के साथ उसी कुचो को लिए चले आ रहे हैं तो किसी अज्ञात भय से कांप उठता है पर उसको गुरु भक्ति भय की धक्का देकर उसे दूर भगाती है और वह दौड़ कर गुरु के चरणों को पकड़ लेता है।)

(गुरु उसे दोनों हाथों से उठा कर लड़ा करते हैं)

लव्य-प्रणाम गुरुवर !

गुरु-वीरवर तुम कौन हो ? हमने तुम्हें पहचाना नहीं !

लव्य-भगवन ! आपका शिष्य लव्य।

गुरु-(आश्चर्य से, याद करके) ओह ! लव्य बेटा ! अभी तक तुम यहीं भटक रहे हो। हम ने तो समझा था कि लौट गये होगे। तुम्हें बाण चलाना किसने सिखाया।

लव्य-मेरे गुरु ने। आइये मैं आपको अपने गुरु के दर्शन कराऊं।

(ले जाता है कन्द्रा में)

गुरु-यह कुत्ता तुमने बेन्धा है।

लव्य-(अपराधी की तरह झुक कर) गुरुवर ! अपराधी उपस्थित है दण्ड दें।

गुरु-कैसा दण्ड ? वीरता कोई अपराध नहीं है। (मिट्टी की अपनी ही प्रतिमा देख और आंखों में अश्रु भर कर) हे वीर बालक ! तुम हमें गुरु मानते हो तो तुम्हें दक्षिणा भी देनी। चाहिए बोलो देते हो गुरु दक्षिणा !

लव्य-(उतावला सा होकर) भगवन ! शीघ्र आज्ञा हो क्या उपस्थित करे यह दास ! सेवा तो भाग्य में न थी पर दक्षिणा देने का सौभाग्य तो स्वयं मेरे पास आया है। ओह ! प्रतीक्षा सफल हो उठी है। बोलिए गुरुवर आज्ञा दीजिए।

गुरु-(लव्य को आंसुओं का हार पहनाते हुए) लव्य ! तुम हमें अपना दायाँ अंगूँठा काट दो। हमें इसकी ही आवश्यकता है।

लव्य-(तलवार खोजता है, अर्जुन अपनी तलवार म्यान से निकाल कर दे देता है। अंगूँठा काट कर) लीजिए गुरुवर ! यह तुच्छ दक्षिणा।

गुरु-(अंगूँठा पकड़ कर शून्य में ताकते हुए) धन्य हा तुम लव्य ! अरे धन्य है तुम्हारी अटल भक्ति और मुझ निर्मम पर ममता।

लव्य-आप तो यूँ ही शोक कर रहे हैं। (शेष पृ० ३६ पर)

गृह-विज्ञान

अमूल्य वचन

कुछ सज्जियों की तासीर

अदरक-(गर्म खुशक) खाने को पचाता है जिगर के सुदे खोलता है मेहदे की रतुवत और बलगम को दूर करता है। स्मरण शक्ति और पौरुष को बढ़ाता है। इसका मुरब्बा सर्द मिजाज और बलगम तबीयत वालों को लाभदायक है।

पालक-(सर्द व तर, शीघ्र पचने वाला, गुर्दा मसाना और पेशाब की तकलीफ व कब्ज को दूर करता है।

अरबी-शरीर को मोटा और बलवान बनाती है। गुरदे की कजोरी को लाभदायक है परन्तु देर से हजम होती है और पेट में अफारा करती है इस लिये गर्म मसाला डाल कर इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

कुछ फलों की तासीर

अलीची-(गर्म तर) दिल दिमाग को शक्ति देती खून बढ़ाती और प्यास बुझाती है मगर देर से पचती है।

खजूर-(गर्म तर) दिल व दिमाग को शक्ति देती और शरीर को मोटा करती है।

खुर्माणी (गर्म) कब्ज कुशा है, शरीर को देती है ताकत और पेट के किरमों को मारती है।

सफलता के मन्दिर का द्वार सतत खुला नहीं रहता। मनुष्य को अपने बाहुबल से खोल कर मन्दिर में प्रवेश करना पड़ता है। उस के प्रवेश करते ही वह द्वार पुनः अन्य के लिए बन्द हो जाता है और उसमें (मन्दिर में) यहां तक कि उसकी सन्तान भी प्रवेश नहीं कर सकती।

कठिनाइयां महान गुणों को प्रकाशित कर महानता अर्पण करती हैं।

उत्तम मन शरीर को उत्तम बनाता है।

दूसरे पर विश्वास करने से प्रथम आत्मविश्वास करना सीखो। कभी निराश न होना। आशा ही मानव जीवन की सजीवता है।

अन्धकार को देख कर कोई मानव डर जाय तो वह सच्चा मानव नहीं। मानव का कार्य तो अन्धकार को हटा कर प्रकाश करना है और प्रकाश को सच्चे मानव ही उत्पन्न कर सकते हैं।

निश्चय और सफलता में चोली दामन का साथ है।

स्वास्थ्य सुधार

पायोरिया के कारण और इलाज

कारण—कभी इस रोग का कारण यह होता है कि मसूढ़ों की शक्ति निर्बल हो जाने से उनके भाग के रक्त को उनका अंग नहीं बनाती इस लिये मसूढ़ों में रक्त भर जाता है और साधारण कारणों से बढ़ने लगता है या उम हिस्से के रक्त में सफ़रा की आमेजश अधिक हो जाती है जिस से कि रक्त में एक प्रकार की तेज़ी और रिक्कत पैदा हो जाती है और बहने लगता है या मसूढ़ों में खून अधिक इकट्ठा हो कर वरम पैदा कर देता है जिसके कारण रक्त गन्दा होकर पीप का रूप धारण कर लेता है और अपनी तेज़ी और खराबी के कारण मांस को गला कर वहां जख़म पैदा कर देता है तो इस से पीप निकलने लगती है। चुनांचि यदि यही घाव अधिक देर तक रहे तो नासूर की शकल पैदा कर लेता है जो कठिनाई से अच्छा होता है। या इस रोग का कारण मुंह और दांतों को साफ न करना होता है विशेष कर भोजन करने के अनन्तर दांतों को साफ न करता होता है। परिणाम यह होता है कि दांतों पर सख़्त पीले रंग का मैल जम जाता है और उसके कारण मसूढ़ों के किनारे

घायल होकर उन से पीप आने लगती है।

इलामात—रोग के आरम्भ में प्रायः मसूढ़ों में वरम हो जाते हैं साधारण कारणों से खून आने लगता है। मुंह का स्वाद खराब रहता है। श्वास से दुर्गन्ध आती रहती है। अन्तिम अवस्था में मसूढ़ों को दबाने से दुर्गन्ध युक्त पीप और लेसदार रतूवत निकलती है विशेषतः उस अवस्था में जबकि रोगी ने पान, छालियां आदि न खाया हो और मुंह न धोया हो। दांतों की जड़े खाली हो जाती हैं। जो लोग इस रोग में ग्रस्त रहते हैं वे मसूढ़ों के फूलने और दांतों के दर्द से प्रायः पीड़ित रहते हैं।

इलाज—इस रोग में ऐसे मंजन प्रयोग में लावे जो जाली भी हों और काब्ज़ भी। मुंह और दांतों की सफ़ाई का विशेष रूप से ध्यान रखें। भोजन करने के अनन्तर दांतों की दरारों में से भोजन के रेज़े निकाल दें और खूब भली भांति गरारे व कुल्ली करें, दिन में कई बार। लेकिन यदि मसूढ़ों से खून आता हो तो यह नुसखा प्रयोग में लावे :-

फिटकरी की खील ३ माशा, नीला थोथा खील ३ माशे, तवाशीर ३ माशे, मस्तगी, ३ माशे, कत्था, सफेद ३ माशे, आकरकरा ३ माशे। इन सबको कूट छान कर मंजन बनाएं और सायं व प्रातः दांतों मसूढ़ों पर मलें और दो तीन बार दिन में एक तोला फिटकरी ४० तोला पानी में घोल कर कुल्ली करें।

चुटकुले

१ राम—भैया ! मेरी खीर का ध्यान रखना मक्खियां न बैठें !

श्याम—मेरे बैठने की क्या आवश्यकता है थोड़ी सी फिनाइल इस पर डाल दो मक्खियां नहीं बैठेंगी ।

२ रोगी—डाक्टर साहेब मेरी आंखें आई हैं ।

डाक्टर—तो धराते क्यों हों, आज तुम्हारी आंखें आई हैं, दवा डाले देता हूँ, कल चली जावेगी ।

३ मास्टर—पृथ्वी गोल है या चपटी ।

शिष्य—गोल ।

मास्टर—सबूत दो कि किन किन बातों से उसे गोल कहा जाता है ।

शिष्य—मैं बहस नहीं करना चाहता, अच्छा तो चपटी ही सही ।

४ पत्नी—मैं कहती हूँ, आपको मेरे जैसी बीवी चिराग लेकर दूँ देने से भी न मिलेगी ।

पति—लेकिन मैं तुम्हारे जैसी बीवी दूँ देने ही क्यों लगा !

६ युवक—मैं शराब नहीं पीता, जुआ नहीं खेलता, फजूल खर्च भी नहीं हूँ ।

युवती—क्या तुम में कोई भी बुराई नहीं है ? *

पृ० ३३ का शेष

मेरा क्या बिगड़ा है । काम चलाने योग्य तीर तो मैं अब भी चला सकता हूँ । (घायल हाथ से ही एक तीर छोड़ता है । तीर ठीक चलता है)

अर्जुन—मैं आत्म ग्लानि से मरा जा रहा हूँ । तुम धन्य हो लव्य !

गुरु—लव्य ! जब मैं गुरु कर्म न निभा सका तो तुमने शिष्य धर्म क्यों निभाया ? तुम भी मुझे फटकार कर बाहर करते । हाय ! कहां मेरी निर्ममता और कहां तुम्हारी ममता ।

(अर्जुन और द्रोण का प्रस्थान)

समाप्त

* युवक—एक ही बुराई है ।

युवती—“ क्या ”

युवक—‘यही कि मुझे झूठ बोलने की आदत है !’

—आत्मदेव तनेजा, रेवाड़ी ।



Get your

QUESTION PAPER

printed at

The Prakash Printing Press

Chahar Bagh, JULLUNDUR

at Competitive Rates

केवल एक मास के लिए 12½ % की

* विशेष रिआयत *

हमने अपना वर्तमान स्टॉक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों का सामान निम्नलिखित दरों पर 12½ % की रिआयत देने का निश्चय किया है इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आप को निराश होना पड़े।

* फुटबाल कवर *

1 टी शेप श्वेत कुर्म चमड़ा इङ्गलिश डिजाइन नं० 5 कवर	13 8 0
2 टी शेप कानपुर लैडर	12 8 0
3 उत्तम प्रैक्टिस नं० 5 कवर 13 नग	11 0 0
4 सस्ता प्रैक्टिस नं०	6 8 0
5 टी शेप नं० 4 फुटबाल कवर	11 0 0
6 उत्तम प्रैक्टिस नं० (4) 13 नग	9 0 0
7 चीप (सस्ता) प्रैक्टिस नं० 4	6 0 0
8 टी शेप नं० 3 यूथ फुटबाल कवर	9 0 0
9 उत्तम प्रैक्टिस नं० 3 यूथ,	5 0 0
10 बलैडर नं० 5, 4, 3 फर्स्ट क्वालिटी	2 0 0
11 बलैडर नं० 5, 4, 3 कैकण्ड "	1 12 0
12 टी शेप, थार्न प्रूफ कुर्म लैडर वाली बाल कवर	10 0 0
13 पेटेंट रोज कलर वाली बाल कवर	9 0 0
14 उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर	8 0 0
15 यूथ साइज नं० 3 " "	... 7 8 0

16 बाल बाल नैट वाटर प्रूफ रेगुलेशन साइज डबल टेप	9 0 0
17 वाली बाल नैट काटन रेगुलेशन साइज डबल टेप	8 8 0
18 यूथ साइज वाली बाल नैट काटन	7 8 0
19 इन्फलेटर (बहुत बड़ा साइज)	5 8 0
20 इन्फलेटर (बड़ा साइज)	5 0 0
21 लैडर लेसिज (प्रति नग)	0 2 0
22 विस्ल (ऊँची आवाज)	1 0 0

* हाकियाँ *

23 36" फुल साइज इङ्गलिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक	8 0 0
24 36" फुल साइज औलैम्पिक	7 8 0
25 33" मिडल साइज इङ्गलिश रबड़ बाऊंड	4 8 0
26 हाकी बाल स्पेशल काऊन	4 0 0
27 हाकी बाल मैच	3 8 0

★ नोट :- 1. इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है, 2. प्रत्येक प्रकार के बूट, शूज, पुल ओवर, मफलर, जुराब भी तैयार होते हैं। 3. वजन करने की मशीनें और रबड़ की मोहरें भी तैयार होती हैं।

* प्यारा लाल एण्ड सन्ज स्पोर्ट्स डीलर्स *

★ जालन्धर शहर (पूर्वी पञ्जाब) ★

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	1/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and with ...	1/12
drawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg.	2/12
Ledger A. & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices
Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY,

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार-विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना। (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) 'प्रकाश' प्रतिमास के प्रथम सोमवार को वहां से भेजा जाता है। कारणवश देर सवेर सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आशिम नियत है। बी० पी० से ७॥) है। विदेशों में बी० पी० नहीं जाता। पेशगी १२ शि० भेजें।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥२) के डाक टिकट भेजें।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकेगी।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जाते चाहियें। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिए भेजें और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख जौटाये नहीं जाते।

(७) बिज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अक्षरीय न हों और जिन के हाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार है।

१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार ३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार ८०)	४३)	२६)
६ बार १५०)	८०)	५०)
१ वर्ष २५०)	१७५)	१००)



रूस में

बारनोविच वाले इलाके में दल-दल
मयी भूमि दूरत की जा रही है।



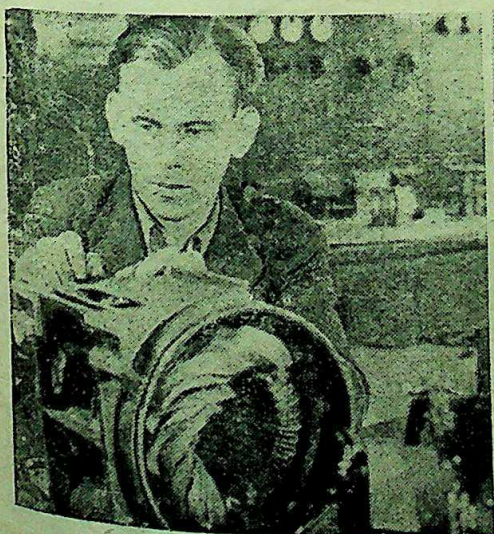
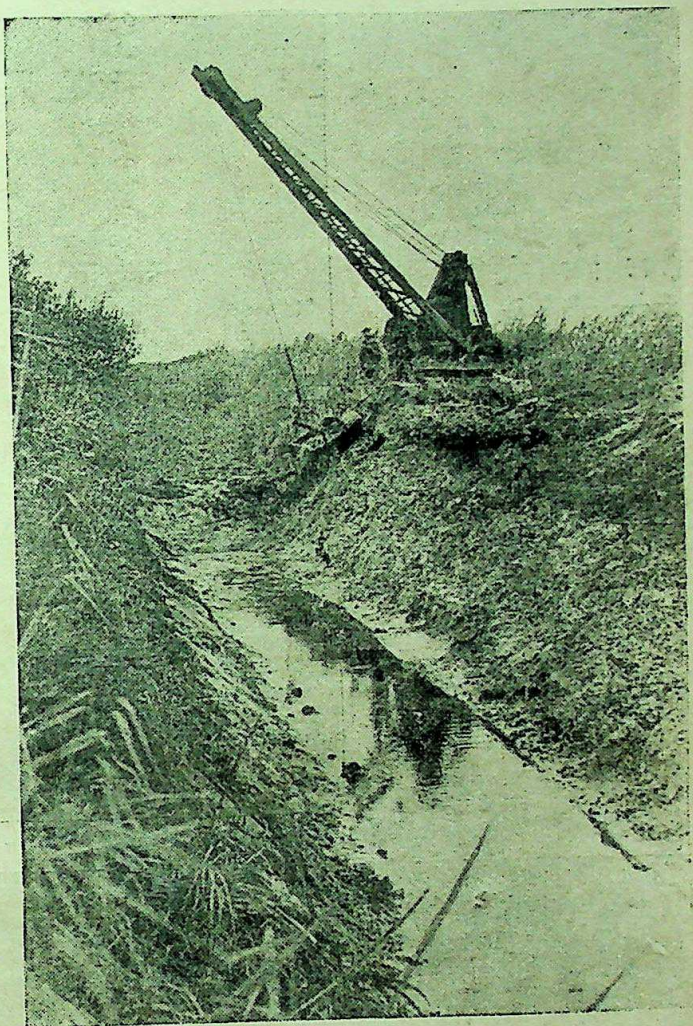
नीचे

वाईं ओर

बेलोरूस के एक प्रमुख कवि
पेट्रसब्रोवका।

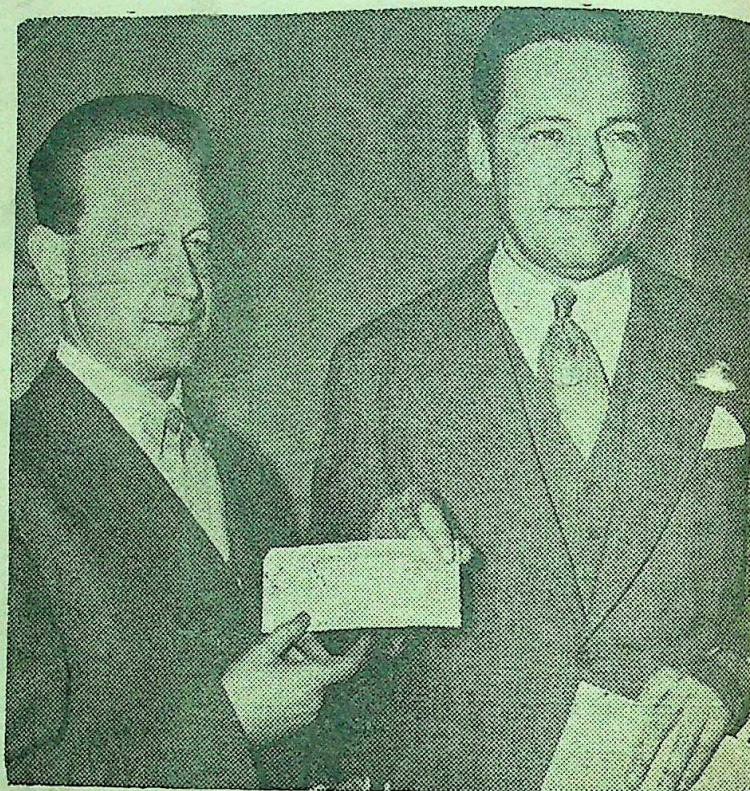
वाईं ओर

मिंस्क के मोटर कारखाने
में काम करने वाले
असैम्बली मैट
अखलोमेको





हेनरी कैवट लाज (संयुक्त राट संघ में अमेरिकन प्रतिनिधि, वार्ड और) संयुक्त राष्ट्र संघ के नये सैक्रेटरी दाग हैमस्कजोल्ड को ६० लाख डालर का चेक अमेरिका के शुल्क की पहली किस्त के रूप में भेंट कर रहे हैं।

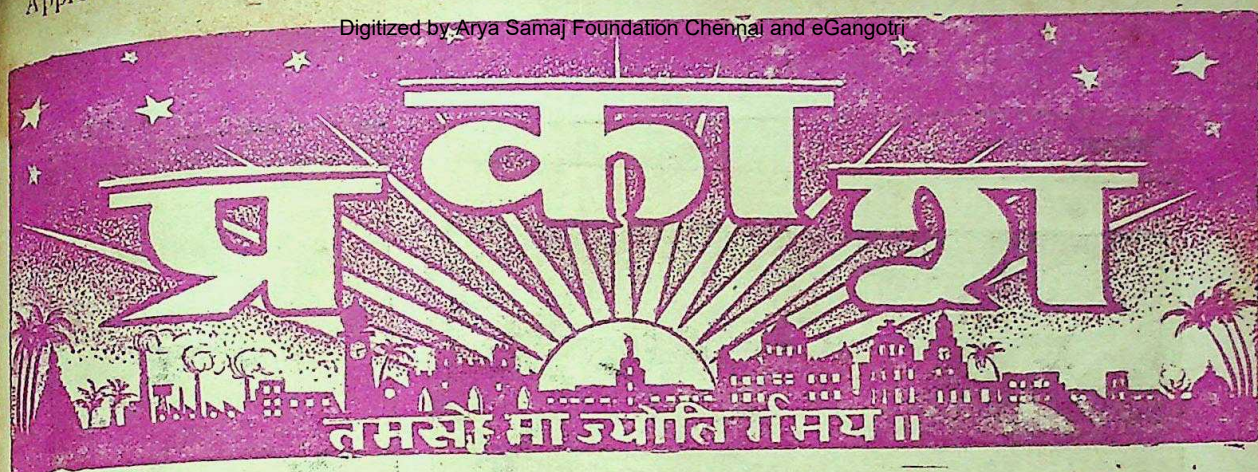


जरा संभल कर

अमेरिकन नगर न्यूयार्क की सब से ऊँची ऐम्पायर स्टेट बिल्डिंग पर बिजली का कारीगर टैली विज़न-मास्ट लगा रहा है। यह ज़मीन से १२५० फीट की ऊँचाई पर कार्य कर रहा है।



प्रकाश प्रिंटिंग प्रेस, चहारबाग, जालन्धर में श्री एल० सो० हितेश्वरी द्वारा



वाषक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रति ॥=)



१५ अक्टूबर

१९५३



सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी



* राम दर्शन *



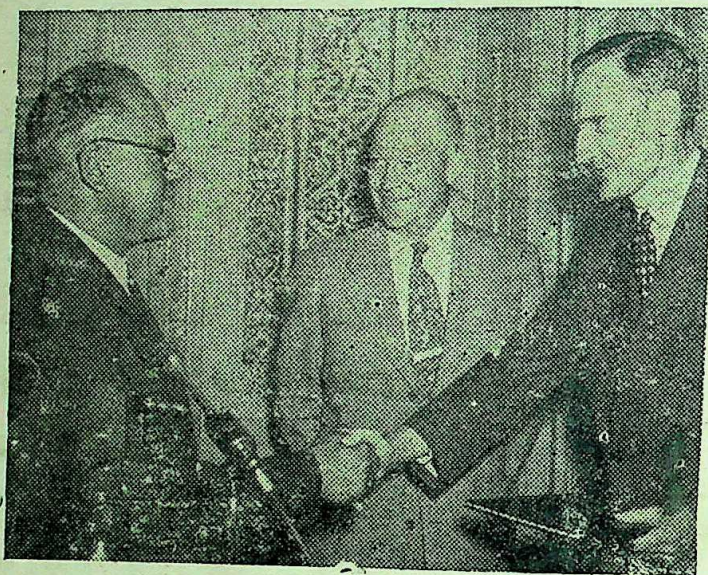
जिनका विजय दशमी पर्व १७ अक्टूबर को मनाया जा रहा है।

THE

"Prakash"

Editor: L.C. HITASHI

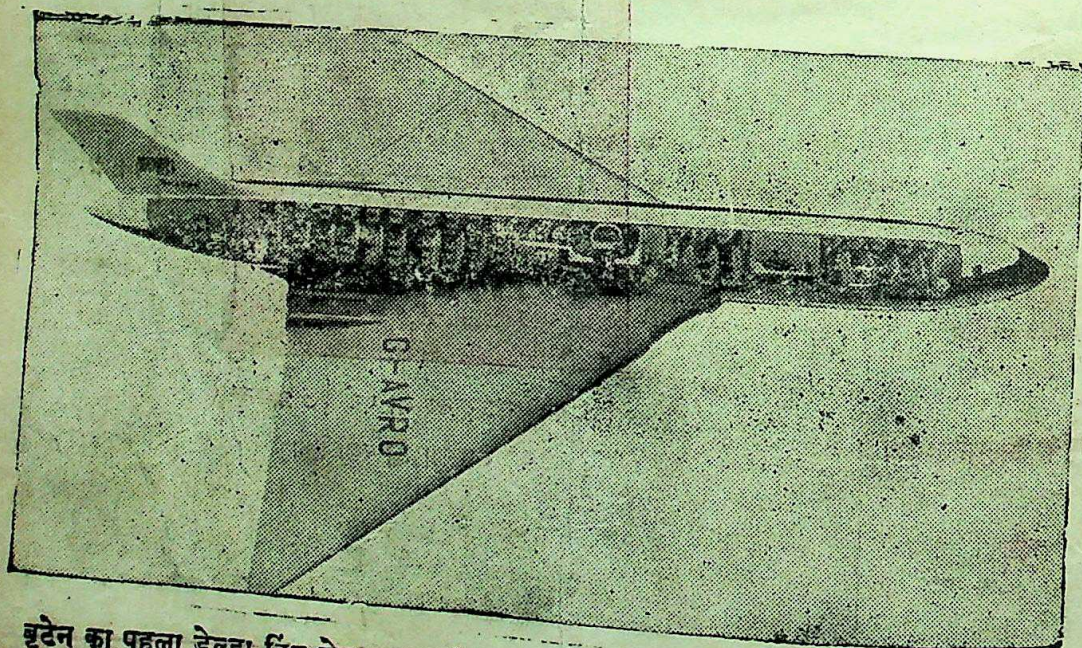
JULLUNDUR CITY



जोहन डी० राकफेलर तृतीय (दाईं ओर) यू० एस० नीग्रो कालेज के प्रधान से आर्थिक सहायता के लिए धन्यवाद प्राप्त कर रहे हैं। राकफेलर से इस कालिज को ५० लाख डालर प्राप्त हुए थे।



मिसेज़ टी० ए० एमेट ब्रुटेन की पहली महिला प्रतिनिधि जो संयुक्त राष्ट्र संघ के आठवें अधिवेशन के लिए चुनी गई हैं।



ब्रुटेन का पहला डेल्टा विंग जेट एयर लाईनर जो १३१ यात्री लेकर ६०० मील प्रति घण्टा की रफ्तार से बिना कहीं ठहरे ७ घण्टों में लण्डन से न्यूयार्क पहुँचेगा।

वर्ष ४८
क्रमांक ५०

हम ने
विविध कि
स्त्रों में स
और भ्रातृ
सदस्यता के
विच्छेदक शु
प्रतिभास ह
प्रबन्ध किय
१८ वर्ष
के सदस्य न
पर कर भेज
से नकल क
'संघ'
सोपहर के
कार्यालय में
और बाहिर
संघ के सा
१५ अक्तूबर
जाएँ। जो
ने साथ ले
दिन चुनाव
अपने मित्र

पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पंजु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत।

प्राक्काश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४८
क्रमांक १०

जालन्धर, १५ सितम्बर, १९५३

भाग ५ अङ्क ६
हिन्दी

अपनी बात

हम ने 'प्रकाश बाल संघ' की स्थापना का विचार किया है। इसकी स्थापना का उद्देश्य बच्चों में साहित्यिक रुचि कोई विकास करना और भ्रातृ भाव को बढ़ाना है। इस संघ की सदस्यता के लिए हमने कोई शुल्क नहीं रखा। केवल शुल्क भी इस लिए रखा गया है ताकि प्रतिमास होने वाली बैठक में कुछ जल-पान का प्रबंध किया जा सके।

१८ वर्ष से कम आयु की लड़कियां-लड़के इस संघ में सदस्य बन सकते हैं। पृष्ठ ६ पर दिया कूपन भर कर भेजना पर्याप्त होगा। सादा कागज पर लिखे नकल करके भी भेजा जा सकता है।

'संघ' की प्रथम बैठक २५ अक्तूबर रविवार को दोपहर के ३ बजे रखी गई है। यह बैठक प्रकाश संघ के कार्यालय में, जो प्रकाश प्रेस में है, होगी। स्थानीय बच्चे और बाहर के प्रकाश-प्रेमी बच्चों को हम इस बैठक में सम्मिलित होने का निमन्त्रण देते हैं। वे २० अक्तूबर को १३०, चहारवाग में ३ बजे पहुँचें और अपना नाम लिखवाएं। जो बच्चे अपनी रचनाएं सुनाना चाहें वे साथ लेते आएं। अधिकारियों का भी उसी दिन चुनाव होगा। सभी बच्चे आप आएं और अपने मित्रों को साथ लाएं।

★

—हितैषी

लिए १४ छात्रों को निकाल दिया

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भूत काल में मनुष्य के ४० दान्त होते थे जो अब ३२ रह गये हैं। समय आएगा कि इन की संख्या २० रह जाएगी।

जिला करनाल के ८० ग्रामों में स्कूलों के अपने भवन बनवाने के लिए पञ्चायतों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

और फांटे

प्रश्न और उनके उत्तर

अपनी भूमिकाएं भूल जायेगा और कोई आर ही बोली बोलने लगेगा। -सं०

प्र० अभी पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र संघ की एक कमेटी की बैठक में पाकिस्ताना प्रतिनिधि ने कहा था कि उसकी सरकार अल्प संख्यकों का एक अमानत समझती है और उनकी रक्षा करना अपना धर्म है। आपकी इस पर क्या सम्मति है?

—सोहन लाल, देहली।

उ० क्यों नहीं? पाकिस्तान सरकार तो हिन्दुओं को अमानत समझती है पर हिन्दु हा मूर्ख हैं जो अपनी जायदादें वहां छोड़ कर भाग आये। -ज०।

भाग नहीं आयेगा।
आशा करना चाहिये कि अमेरिका शीघ्र ही उस के कान खींच देगा तब यह गीदड़

छोटे हुं दे सुनिया
करदे सी कि भगवान
कोई भुल नहीं करदा
ते जिन्नीयां भुलां
हुं दीयां ने सब मनुख
तों। भर हुन साडा एह भरम दूर हो गया ए ते एह
विश्वास पक्का हुं दा जांदा ए कि भगवान भी
भुल्लां करन लग पिया ए। देखो न इको सितम्बर
महीने विच उसतों किन्तीयां भुलां होईयां ने।
हिन्दुस्थान 'च

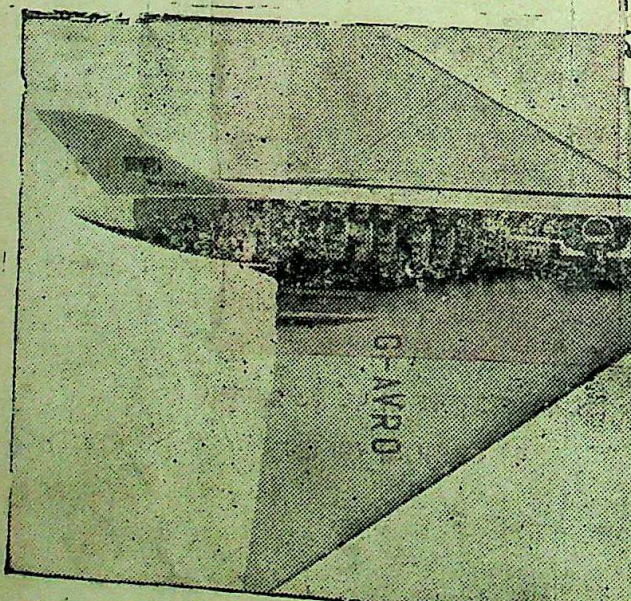
अपनी धोली 'च

भगवान दियां भुल्लां

ते डाक्टरां ने इस भुल दा सुधार कीता ते किसे
नूं विश्वास न होया कि भगवान तों भी गलतो
हो सकदी ए। भर एह जापदा ए कि भगवान
भी अज दे मनुखां वांग बहुत परेशान ए ते
अनगिनत कर्मेलियां 'च उसदी तबजो फसो होन
करके उस तों वड़ीयां गलतीयां होन लग पइयां
। मेरे इस लेख नूं पढ़ के कई मै नूं नास्तिक
हून्गे भर मै नूं डर एह बे कि दिन पर दिन
वदीयां भगवान दीयां भुल्लां नूं बेख के किधरे
नूं नास्तिक समझन वाले आप ही नास्तिक न
जान। ऐडी वड़ी दुनियां 'च इको इक भगवान
ते जे किधरे उसतों भी लोकां दा रहंदा खूदा
ध्यास चुकिया गया ते बेचारा भगवान की करेगा ?
कि उसतों खुश तां शौद ई कोई होवे ते नराज
मे दिसदे ने। आओ भुलां करन वाले इस
भगवान नूं बदल दइए ते नवां भगवान बना*



जौहन डी० राकफेलर तृतीय (दाई ओर) यू० एस० न
कालेज के प्रधान से आर्थिक सहायता केलिए धन्यवाद
कर रहे हैं। राकफेलर से इस कालिज को ५० लाख डॉ.
प्राप्त हुए थे।



सार

प्रयुक्त किये जाने
वाले उपायों पर १७५
करोड़ रुपये व्यय
करने का निश्चय

गा है।

श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र
के आठवें अधिवेशन की प्रधान चुनी गई हैं।
ईरान में डा० मुसद्दक के विरुद्ध राज्य से
व विद्रोह करने और शाह की आज्ञा की
लना करने के अपराध में मुकद्दमा चलाया

ब्रटेन का पहला डेल्टा विंग जेट एयर लाईनर जो १३१ यात्रीवाला है जिसमें सरकारी वकील डा० मुसद्दक
रफ्तार से बिना कहीं ठहरे ७ घण्टों में लण्डन से ए फाँसी की सज़ा दिए जाने की मांग करेगा।

चन्द्र
ए।
भग-
ल दा
लगा
किसे
लतो
वान
ए ते
होन
इयां
स्तक
दिन
केधरे
क न
गवान
खुंदा
रेगा ?
नराज
इस
बना*
जाने
१७४
व्यय
नेश्चय
राष्ट्र
हैं।
य से
की
बलाया
पुसहक
करेगा।

पञ्जाब यूनिवर्सिटी के
स्कूल बोर्ड की एक
मीटिंग २४ अक्तूबर
को गवर्नमेंट ट्रेनिंग

कालेज जालन्धर में होगी जिसमें सैकण्डरी
एजुकेशन कमिशन को सिफारिशों और नरेन्द्रदेव
कमेटी की रिपोर्ट पर विचार किया जाएगा।
पञ्जाब यूनिवर्सिटी के चान्सलर ने एक
implementation कमेटी सैकण्डरी एजुकेशन
कमिशन की सिफारिशों को क्रियात्मक रूप देने
के लिए बनाने की आज्ञा दे दी है।

पंजाब सरकार ने बेकारी को दूर करने के
लिये एक शिक्षा योजना बनाई है जिस के
अनुसार १२०० नये अध्यापक रखे जाएंगे। इन
में से ५०० अनट्रेंड मैट्रिक, ५०० ट्रेंड मैट्रिक,
१५० अनट्रेंड एफ० ए० और ५० अनट्रेंड ग्रेजुएट
होंगे। इ हैं नये प्राइमरी स्कूलों में रखा जायेगा।

प्र० क्या आप अमेरि-
कन दार्शनिक जार्ज
एडामस्की का यह
कथन कि उन्होंने ने
नवम्बर ५२' में दूसरी
दुनिया से आये व्यक्ति
से कैलिफोर्निया के सहारा में भेंट की थी, सत्य
मानते हैं ?

—श्याम सुन्दर, बम्बई।
उ० दार्शनिक अधिकतया जागते में स्वप्न
देखा करते हैं। हो सकता है कि उनकी यह
कथित भेंट भी एक स्वप्न को कहानी हो ! -स०

प्र० दक्षिणी कोरिया के प्रधान डा० सिंहमैन
री भारतीय सुरक्षा सेना को निकाल बाहर करने
की धमकियां दे रहा है इनका क्या परिणाम
होगा।

—सुशीला, मेरठ।
उ० इन गीढ़ भूमकियों से डर कर भारतीय सेना
अपना वह काम जो उसे सौंपा गया है छोड़ कर

शिक्षा समाचार

अखिल भारतीय नई
तालीम सम्मेलन का
उद्घाटन पं० नेहरू
११ नवम्बर को

तितवार (आसाम) में करेंगे।

अखिल भारतीय स्काउट तथा गाईड
जैम्बूर २७ से ३१ दिसम्बर तक सिकन्दराबाद
(हैदराबाद स्टेट) में होगा
लखनऊ यूनिवर्सिटी ने असम्भ्यता पूर्ण व्यवहार के
लिए १४ छात्रों को निकाल दिया है।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि भूत काल में
मनुष्य के ४० दान्त होते थे जो अब ३२ रह
गये हैं। समय आएगा कि इन की संख्या २०
रह जाएगी।

ज़िला करनाल के ८० ग्रामों में स्कूलों के
अपने भवन बनवाने के लिए पञ्चायतों को
प्रोत्साहित किया जा रहा है।

फूल और कांटे

पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर

अपनी भूमकियां भूल जायेगा और कोई आर
ही बोली बोलने लगेगा। -सं०

प्र० अभी पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र संघ की
एक कमेटी की बैठक में पाकिस्ताना प्रतिनिधि ने
कहा था कि उसकी सरकार अल्प संख्यकों का
एक अमानत समझती है और उनकी रक्षा करना
अपना धर्म ! आपकी इस पर क्या सम्मति है ?

—सोहन लाल, देहली।

उ० क्यों नहीं ? पाकिस्तान सरकार तो हिन्दुओं
को अमानत समझती है पर हिन्दु हूँ मूर्ख हूँ जो
अपनी जायदाद वहाँ छोड़ कर भाग आये। -उ०।

भाग नहीं आयेगा।
आशा करना
चाहिये कि अमे-
रिका शीघ्र ही उस
के कान खींच देगा
तब यह गीढ़

सम्पादकीय विचार

पंजाब की नई राजधानी

७ अक्टूबर को राष्ट्रपति ने पञ्जाब की नई राजधानी-चण्डी गढ़ का उद्घाटन कर एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति कर दी। कुछ सरकारी दफ्तर शिमला से नई राजधानी में आ गए हैं, शेष के वहां पहुंचने में सम्भवतः ६-७ वर्ष और लगेगे। हमें राजधानी सम्बन्धी पूर्वी पञ्जाब के चिर स्वप्न की पूर्ति पर हार्दिक प्रसन्नता है। क्रियात्मक रूप में जनता की कठिनाई पहले से कुछ बढ़ गई है क्योंकि इससे पूर्व जहां सरकारी दफ्तर जालन्धर और शिमला दो स्थानों में थे वहां अब वे तीन स्थानों में बट जाएंगे। किन्तु आशा करनी चाहिए कि १९६० तक चण्डी गढ़ सम्पूर्ण राजधानी बनजाएगी और यह भारतमें ही नहीं एशिया भर में अद्वितीय होगी।

५ वर्षीय योजना में परिवर्तन

प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू की एक घोषणा के अनुसार भारत सरकार की पाँच वर्षीय योजना में परिवर्तन अनिवार्य हो गया है। संभाव्य परिवर्तन द्वारा देश में बढ़ती हुई बेकारी को दूर करने के लिए सुझाये जाने वाले उपायों पर व्यय किये जाने के लिए १७५ करोड़ रु० की राशि सुरक्षित कर दी जाएगी। संभवतः सरकार ग्रामों में शिक्षा प्रसार के लिए बहुत से स्कूल खोलेगी जिन में शिक्षित बेकारों को अध्यापन कार्य पर नियुक्त किया जाएगा। इससे एक पंथ दो काज तो होंगे किन्तु प्रति वर्ष और अधिक पढ़े लिखे बेकार होते जाएंगे अतः क्यों न शिक्षा प्रणाली में ऐसे परिवर्तन किये

जाएँ कि शिक्षा प्राप्त कर चुकने पर कोई भी नव युवक बेकार न रह कर कोई शिल्प-कार्य आरम्भ कर दे अथवा कृषि कार्य में लग जाये ?

“प्रकाश बाल संघ”

की नियम पूर्वक स्थापना करने के लिए इसके सदस्यों की एक बैठक २५ अक्टूबर को प्रकाश कार्यालय में मध्याह्नोत्तर तीन बजे होगी। सदस्य बनने का शुल्क १) है (कोई देना चाहे दे, न देना चाहे न दे)। इस संघ का उद्देश्य बच्चों में भ्रातृ भाव और साहित्यिक रुचि का संचार करना है। प्रकाश के १८ वर्ष से कम आयु के सभी बच्चे निम्न कूपन भरकर भेज दें। उसी दिन अधिकारियों का चुनाव भी होगा। जो सुनाना चाहें वे रचनाएं भी साथ लावें।

★ सदस्यता का कूपन ★

श्री मन्त्री जी,

प्रकाश बाल संघ, जालन्धर

श्रीमन्मस्ते ! कृपया ‘प्रकाश बाल संघ का / की मुझे सदस्य बना लें’। मैं संघ के उद्देश्य से सहमत हूँ और इसके नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करता / करती हूँ।

भवदीय:-

नाम

पुत्र/पुत्री

आयु

श्रेणी

पूरा पता

चमेली से चन्द्र प्रकाश !

गत अगस्त मास में वरेली में एक १७ वर्षीया युवती-चमेली आपरेशन के पश्चात् लड़का बन गई है। अब उसका नाम चन्द्र प्रकाश रखा गया है। वह एक कन्या पाठशाला में अध्यापिका थी। लड़का बन जाने पर उसे वहां से जवाब मिल गया है।

★ श्री गान्धी सतसई ★

[श्री १० व० शॉत शास्त्री 'शालिहास']

(तृतीय शतक)

कटु अनुभव सुखाद के पग पग होते दृष्ट ।
 नाना व्यय अगदादि से होते हम फिर नष्ट । ८५।
 हो जाते हीनांग सैं बन जिह्वा के दास ।
 इन्द्रिय गण की दास्ता से ही जीवन नाश । ८६।
 अपनी सुविधा के लिये करे लक्ष्य का त्याग ।
 पतन हेतु यह रीति है मिथ्या से अनुराग । ८७।
 निश्चित निज अदर्श को पाने का जी तोड़ ।
 करना उद्यम, है सही परमार्थ की ओड़ । ८८।
 प्रबल यही पुरुषार्थ है नर नारी के हेतु ।
 निजादश आराधना संस्मृति सागर सेतु । ८९।
 अस्वाद व्रत पालना में जाग्रति है कांद्य ।
 नष्ट कर सकेंगे इसी पथ से स्वाद ध्वांत् । ९०।
 अल्प समय में ही हमें होगा यह विज्ञात ।
 कहां स्वाद अस्वाद औ' कहां काम्य है तात ? । ९१।
 जो कुछ भोजन सदन में पके उसे लें खाय ।
 अस्वाद व्रत का यही सब से सरल उपाय । ९२।
 क्या खाएंगे आज हम ? आज पकेगा क्या ?
 इस मंफट से छूटने का है यही उपाय । ९३।
 भोजनार्थ कुछ भी मिले हो न यदि वह त्याज्य ।
 ईश कृपा से खा उसे होबे वृत्त सहाय्य । ९४।
 अग्निपक्व को त्याग कर खाएं सूर्य विपक्व ।
 इस विचार से ही चुनें हम अपने सब भक्ष्य । ९५।
 सूर्य पक्व में प्राह्य हैं वनस्पति फल मुख्य ।
 अल्पमात्र ही हम रखें अग्नि से सांमुख्य । ९६।
 फलाहार दुस्साध्य हो यदि तो करें प्रयत्न ।
 स्वाद हेतु कुछ भी नहीं पके यही हो यत्न । ९७।
 सावधान पूरी तरह रहें स्वाद त्यागाथ ।
 ब्रह्मचर्य की साधना जिससे हो सकतार्थ । ९८।

स्वादऽस्वाद विचारना ही इस व्रत का मूल ।
 यदि स्वाद जित हो सके नष्ट होयें सब शूल । ९९।
 स्वाद नयी ब्रह्मचारी है स्वाद जयी है धन्य ।
 अस्वाद व्रत शोधक धन्य गांधियतिधन्य । १००।

(चतुर्थ शतक)

अस्तेय :-

सत्य अहिंसा गर्भ से सभी व्रतों का जन्म ।
 होता है । श्री गाँधी ने जाना है यह मर्म । १।
 अस्तेय उद्भावना भी है सत्योदभूत ।
 'सत्य' साध्य है जीव का, जीवन पावन पूत । २।
 स्तेयव्रती प्रेमी कभी हो सकता न त्रिकाल ।
 सत्य शोध उसके लिये है जीवन जञ्जाल । ३।
 जाने या अन जाने में करते हम सब स्तेय ।
 ज्यादा या कम मात्र में यह अपराध अजेय । ४।
 बिन पूछे या बिन कहे करना वस्तु ग्रहण ।
 परकीया अथवा निजी है चोरी में गणन । ५।
 अपनी वस्तु का भी हम करते हन्त ! स्तेय ।
 यथा पिता निज पुत्र से छिप कर कुछ खा लेय । ६।
 पथ प्राप्त अज्ञात का रखना अपने पास ।
 विस्मृति से भी चौर्य है दो राजा के पास । ७।
 अस्तेय व्रत और भी इस से आगे कठिन ।
 गौर जरूरी चीज का कर रखना संघटन । ८।
 अथवा लेना और से उस की आज्ञा पाय ।
 बिना जरूरत चीज का चोरी ही कहलाय । ९।
 ऐसी चोरी खाद्य की होती है अधिकांश ।
 खाना 'जुद' से अधिक भी है चोरी का अंश । १०।
 उपवासी खाता नहीं मुँह से कुछ भी अन्न ।
 स्वाद यदि मन में करे यह भी स्तेय अनन्य । ११।
 (क्रमशः)

१६ वर्ष पूर्व की एक आपबीती घटना—

★ दोज़ख की एक रात ★

[हितैषी अलावलपुरी]

मैं दफ्तर में आकर कुर्सी पर बैठा ही था और सोच रहा था कि इस सप्ताह के अङ्क का अग्र लेख किस विषय पर लिखूँ कि यकायक मैं ने कमरे में 'प्रताप' के मैनेजर और अपने पत्र के पहले सम्पादक को आते देखा। उनको आकस्मिक आता देख मुझे कुछ हैरानी हुई। अभी नमस्ते मेरे मुँह से बाहिर भी न निकली थी कि मैनेजर ने एक चिट्ठी मेरे हाथ में दी। चिट्ठी को लेते हुए मेरा माथा ठनका और बढ़कते हुये दिल से मैं ने उसे पढ़ना आरम्भ किया। वह मेरी dismissal का नोटिस था। पत्र में लिखा था—'आपको मैं जितना दिशानतदार समझता था उतने ही आप बददियानत साबित हुये (इन शब्दों को पढ़ते ही ऐसा जान पड़ा मानो मेरे सिर पर पत्थर आ गिरा हो) 'प्रताप' के लिए 5 रु० वसूल करना और 3½ रु० जमा कराना हद दरजे की बेईमानी है? इस हालत में मैं नहीं समझता कि आपको क्यों न डिसमिस कर दिया जाये? आप फौरन आफिस का चार्ज मा० अमर नाथ को दे दें।'।

मा० अमर नाथ मुझ से पूछने लगे कि बात क्या है—मैनेजर साहिब जोश में थे, शायद इस लिये कि उन्होंने ने एक 'चोर' की चोरी पकड़ा कर बहादुरी का काम किया था और वे मास्टर जो को चार्ज लेने को कह रहे थे—यह पत्र जो मेरे लिए बिल्कुल गरमतबका और वज्र तुल्य था, पढ़ कर आँखों से दो आँसू निकल आये—इस लिये नहीं कि नौकरी हाथ से जा रही थी बल्कि इस लिये कि मुझ पर एक ऐसा इल्जाम लगाया जा रहा था जो मेरे भविष्य पर कलंक का टीका था।

मैं उस टीके को अपने माथे पर लगा कैसे देख सकता था जबकि मैं बिल्कुल निर्दोष था? यदि मैं दोषी होता तो मैं खुद ही अपना माथा उस कलंक के टीके को लेने के लिये झुका देता। मैं क्रोध और क्षोभ से कांपने लगा—मास्टर जी एक और मैनेजर के जोशोगज़ब के डर से चार्ज ले रहे थे दूसरी ओर मुझे बार बार मालिक से मिलने को कह रहे थे। मैं इसके लिए तैयार न था। इस का कारण यह कि मालिकने मुझे एक मिनटका नोटिस, या अपनी सफाई पेश करने का मौका दिये बगैर मुझे ज़िन्नत के ऐसे गहरे गढ़े में धकेलने का हुक्म दे दिया था जिस में गिर कर मेरी इज्जत और मान सब तबाह हो जाने वाले थे—मैं जल्द से जल्द चार्ज देकर उस कार्यालय से भाग कर अपने घर की तारीक कोठरी की तनहाई में बैठ कर खूब जो भर कर रोना चाहता था। मालिक के पास इस लिए भी न जाना चाहता था या जाने का हौसला न था कि मैं यद्यपि निर्दोष था लेकिन किन्हीं दो एक व्यक्तियों की भ्रमोत्पादक बर्तों से मालिक की नजरो से गिरा दिया गया था—मैं अपना कलंकित व मालिन चेहरा कैसे दिखाता? सारा चार्ज दे देने के बाद मैनेजर ने मुझे एक पत्र 'मालिक' के नाम इस उद्देश्य का लिखने को कहा कि मैं ने चार्ज आझानुसार दे दिया है अतः मेरा हिसाब करके मुझे मुक्त कर दिया जाये परन्तु सच पूछो तो मेरा दिल इस ज़बरदस्तीक लादे हुए गुनाह को उठाने में असमर्थ था और मैं उस समय इतनी आत्मग्लानि अनुभव कर रहा था कि काँतिब, चपड़ासी, मैनेजर और अपने मास्टर जी से दूर

भाग जाने की चेष्टा कर रहा था ।

बात, वास्तव में क्या थी ? एक रोज़ ६ बजे शाम को एक सज्जन हमारे यहां कांठी पर आए । (प्रकाश का यहीं कार्यालय था 'प्रताप' का दफ्तर अलग और दूसरी सड़क पर वहां से काफी फासले पर था) वे स्टेशन जा रहे थे । तांगे से उतरे और कहने, 'लगे मैं माण्डले जा रहा हूँ, २ मास के लिए 'प्रताप' जारी कराना है । मैं ने कहा चन्दा दो मास का कितना है यह मुझे मालूम नहीं । उन्होंने ने कहा मुझे बहुत जल्दी है, आप पांच रुपये ले लें उसकी रसीद दे दें, बाकी मैं आकर लेलूंगा । मैं ने पूछा आपको मांडले में भेज दूँ । उन्होंने ने कहा दो एक रुपये भेजने पर व्यर्थ मैं २ आने खर्च आ जायेंगे दो मास के अनन्तर मैं ने लौट आना है आकरही लेलूंगा । मैं ने उन्हें 'प्रकाश' की पाँच रु० की रसीद काट दी । उन्होंने ने ब्रह्मा का पता लिखवा दिया । मैं ने रसीद में यूँ लिख दिया on $\frac{1}{2}$ of two months' subscription exceeding amount to be refunded to the payee. वे चले गए । दूसरे दिन मैं ने खजानची से कहा कि एक सज्जन ५ रुपये दे गए हैं । २ मास का चन्दा है बाकी उन्हें लौटाना है आप ये पांच रुपये ले लें । उन्होंने ने कहा, २ मास का चन्द ३½ रु० है 1½ रु० आप उन्हें खुद ही दे दीजिएगा । मैं ने वैसे ही किया । इस तरह दो मास बीत गये । वे महाशय वापिस लौट आए और लायलपुर से 'प्रताप' कार्यालय में पत्र लिखा कि आपके पास 'प्रकाश' की रसीद द्वारा ५ रु० जमा हैं २ मास पत्र आ चुका है शेष लिखे वर्ष का चन्दा कितना भेज दूँ ? मैं ने जर ने खजानची से पूछा । उन्होंने ने कहा कि यहां तो ३½ रु० जमा कराया गया है । शायद मैं ने जर ने खजानची को सुझा से शेष 1½ रु० के विषय में पूछने को कहा होगा । उनकी ओर से उस ग्राहक का पत्र और

'प्रकाश' की रसीद भेजते हुए पूछा गया कि यह ५ रु० कहां जमा हुए 'प्रकाश' में तो जमा नहीं हैं ! (प्रकाश और प्रताप दोनों के वे ही खजानची थे मैं ने लिख भेजा कि दो मास का चन्दा ३½ रु० 'प्रताप' के हिसाब में जमा करा दिए थे, 1½ रु० मेरे पास है, आप संगी लें । चुनाँचि 1½ रु० अगले दिन जमा करा दिया गया । मैं साधारण तथा इस सम्बन्ध में निश्चिन्त हो गया परन्तु जिसादिन नोटिस मिला वह 1½ रु० जमा कराने के ८-६ दिन बाद की बात है, जिसे पढ़ कर मैं हैरान रह गया । मैं ने सोचा क्या इसे बेईमानी कहा जा सकता है ? बेईमानी तो तब होती जबकि जो रसीद ग्राहक को दी गई थी उस पर ५) लिखे जाते) और अपनी रसीद पर ३½ । तब कहा जा सकता था कि यह 1½ रु० का गबन है— या मैं 'प्रकाश' की official receipt की वजाये उसके form या कार्ड पर ५ की रसीद दे देता— मैं ने तो जान बूझ कर 'प्रकाश' की official receipt पर चन्दा २ मास का कितना है यह न जानने के कारण ये शब्द लिख दिये on $\frac{1}{2}$ of two months' subscription of Pratap-exceeding amount to be refunded. इस से बढ़ कर नेक नीयती और इमानदारी का और सबूत क्या हो सकता था ।

मैं मास्टर जी के इसरार के बावजूद कि जाकर मालिक के आगे गिड़गड़ाऊँ, जाना न चाहा— बात असल में यह थी कि मास्टर जी समझते थे कि वह यह काम कर न सकेंगे । इस उत्तरदायित्व को वह अपने ऊपर लाने को तय्यार न थे । इसी असमर्थता का संकेत उनके कांपते हुए हाथ कर रहे थे । मैं चपरासी, कातिब और मास्टर जी की हमदर्दी, और सलाह को ठुकरा कर घर चला आया । मैं क्रोध और क्षोभ से भरा हुआ था । (शेष पृ० १५ पर)

★ ढलते नीर ★

[लेखक—श्री 'राजेश', गवर्नमेंट हाई स्कूल, बंजार ।]

प्रातः उठा तो सर भारी २ सा जान पड़ा । दिल की टौह की तो उसे भी गहन सरिता में डूबते देखा.....अन्तः करण में उसे हाहाकार सी सुनाई दी । अवयवों की ओर लपका, तो उसे मिली, विगत जीवन की धूमिल थकान, आलस्य और शिथिलता !

वह उछिन हो उठा और विकल हृदय थामे कुर्सी पर बैठ गया । उस के हताश नेत्र सामने दीवार पर लगे हुए चित्र में जा अटके । उसने देखे.....ढलते नीर.....जो कपोलों की राह अवन के मरुस्थल पर टप टप करके गिर रहे थे ।

ये वही नीर थे जो 'रीता' ने इस पापी जग से जाते समय 'राजेश' के सामने बहाए थे । हां, ये वही नीर थे, जिन्हें देखकर राजेश छटपटाता हुआ कह उठा था—'रीता, इन अमूल्य मोतियों को नीर-विन्दु बना के मत गंवाओ' । दुनिया ने और तो सब हम से छीन लिया है केवल यही उपहार हम अपने पास बचा सके हैं । इन की कद्र करो; रोता ! नियति के सन्मुख केवल यही हमारा लेखा-जोखा है, और कुछ भी नहीं ।'

उसने एक टक बांधे इस निर्जीव चित्र का निरीक्षण किया, किन्तु हर ओर से उसे चीत्कार की पुकार ही सुनाई दी ।

वह अनायास ही कह उठा—'रीता...रीता तुम कहाँ हो ?' और जब निराशा एवं विवशता के झोंके, चारों किनारों से उसे मसलने लगे, तो वह दोनों हाथों से खिन्न नेत्र ढाँपे राने लगा.....सिसक २ कर, बिलख २ कर, तब

अन्तःत्मा ने आवाज दी और उस के कानों ने सुना—'रोने धोने से अब क्या होगा, बाबू ! वह तो इस दुनिया से दूर जा चुकी है । वह अब तुम्हें नहीं मिल सकती.....हां, कभी नहीं ।

भल्ले, तू रोता है बच्चों की तरह ? छिः छिः ! रोता, तेरी होती तो तुम्हें छोड़ कर क्यों जाती ?.....माना, तेरा उस से प्रेम था । वह भी तुम्हें चाहती थी—हृदय से, लेकिन जानते हो नियति के दुस्तर हास को ? जानते हो उसकी प्रवचना को, उसकी डिम्बना को ? देखा है उसकी उन्मादिनी लहरों को ?

.....वह देखो; ढलते नीर भी इस बात की निशानी हैं.....उनकी भी यही पुकार है—तुम मुझे भूल जाओ । मेरी याद को अपने दिल से निकाल कर बाहिर फेंक दो । मैं तुम्हें अब न मिल सकूँगी ।'

इस विलुप्त वाणी को सुन कर उस के हृदय में सिहरन हो उठी । संकल्प-विकल्प, तर्क-वितर्क की झंकार उस के मस्तिष्क में झंका हो उठी । सोचा.....'क्यों न इस दुनिया से भाग कर उस दुनिया में पहुँच जाय, जहाँ उसकी राता होगी ! क्यों न उस के समस्त हृदय व्यथा की गाथा रखी जाय । वह भी तो वहाँ दुखी ही होगी ?

.....क्यों न उसे नियति के हास से; प्रवचना और उसकी उन्मादिनी लहरों से बचाया जाय ।

.....लेकिन सुना है, उस दुनिया में तो दुःख की झलक मात्र भी देखने को नहीं मिलती । सुख ही सुख होता है, वहाँ ।' फिर.....वह स्वयं

कृषि

चार वाली भूमि को उर्वरा कैसे बनाया जाए?

रिवरमाइड (कैलेफोर्निया) यू० एस० नेशनल सैलिनिटी लेबोरेटरी के वैज्ञानिक आजकल एक ऐसी समस्या को सुलझाने में लगे हुए हैं जिसके कारण हर वर्ष हजारों एकड़ उपजाऊ भूमि की उत्पादनक्षमता नष्ट होती जा रही है। यह समस्या भूमि में चार की मात्रा बढ़ाने की है संसार के उन सभी भागों के किसान जहां कृषि मुख्यतः सिंचाई पर निर्भर करती है, इस समस्या को ले कर बहुत चिन्तित हैं।

शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई का जल जल्दी ही भाप बन कर उड़ जाता है और उसके साथ वह कर आये हुए खनिज पदार्थ मिट्टी की ऊपरी सतह पर ही रह जाते हैं और खेतों पर पानी निकलने की सामान्य व्यवस्था से ये खनिज पदार्थ हट नहीं पाते। यदि मिट्टी की ऊपरी सतह पर जमे हुए इन खनिज पदार्थों को न हटाया जाए तो

ही बड़ बड़ा उठा—‘हां, मुझे भी सुखी रहना होगा। मैं भी चला जाऊंगा इस दुखी दुनिया से, वही.....वहीं अपनी रीता के पास। मैं भी नियतिके निष्ठुर हाथों में अपना सर्वस्व सौंप दूंगा। केवल सुख से रहने की खातिर.....रीता के साथ।

वह उठा। उसके पैरों में गति आई और वह लम्बे २ ढग भरने लगा।

वह जा रहा था, सड़क के किनारे किनारे.....इस दुनिया को छोड़ कर, इस पापी जग से विमुख.....अपनी रीता के पास.....दूसरी दुनिया में।

उसे किसी ने न देखा और वह चला गया.....दूर.....सुदूर!

खेत की उपज काफी घट जाती है।

भारत के कई भागों में खेतों में इस प्रकार के चार की मात्रा बहुत बढ़ गई है। अकेले उत्तरप्रदेश में सफेद रङ्ग की चारमिश्रित मिट्टी ने लगभग २० लाख एकड़ भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट कर दी है। यही हालत कुछ अंशों में पञ्जाब राजस्थान और पैंसु में भी पाई जाती है।

सिंचाई के पानी के साथ आने वाला यह चार केवल खेतों की उपज ही नहीं घटाता, बल्कि कालान्तर में इसकी मात्रा इतनी बढ़ सकता है किसान अपने उन खेतों को छोड़ने तक को विवश हो जाए जिन्हें उसने अपना खून-पसीना बहा कर तयार किया है।

जहां कहीं भी दीर्घकाल से सिंचाई से खेती होती है वहां यह आवश्यक हो जाता है कि अन्य रासायनिक पदार्थों की सहायता से घुल सकने वाला चार की परतों को नष्ट किया जाए और इस प्रकार मिट्टी की उर्वरा-शक्ति कायम रखी जाये।

अमेरिका के पश्चिमी भाग में स्थित १६ राज्यों की दो करोड़ एकड़ सिंचाई वाली भूमि में से अधिकांश भूमि की उपज इस चार के कारण १० से लेकर २० प्रतिशत तक घट गई है।

जो किसान चार मिश्रित मिट्टी को पुनः उपजाऊ बनाना चाहते हों उनको चाहिए कि वे अपने खेत में पाये जाने वाले चारों के गुणों, सिंचाई के लिए उपलब्ध होने वाले पानी की किस्म तथा खेतों से पानी निकालने के तरीकों के सम्बन्ध में विशेषज्ञों से परामर्श करें।



★ बालक और पिता ★

(श्री कुलविहारी एम० ए०)

बालक माँ के बाद पिता के ही पास आता है। पिता में कुछ ऐसी विशिष्ट बातें पाई जाती हैं जो माँ में नहीं होतीं। घर में सब से अधिक शक्ति पाई जाती है, उसकी प्रतिष्ठा भी सब से अधिक है। लड़का पिता को इन सब गुणों का पुञ्ज मानता है।

बालक की दृष्टि में पिता:—बालक का मस्तिष्क बहुत सक्रिय होता है परन्तु वह किसी वस्तु का वास्तविक मूल्य आँकने में असमर्थ रहता है। वह यह नहीं समझता कि कोई व्यक्ति गुण दोष दोनों का संमिश्रण भी हो सकता है। वह पिता को आरम्भ में गुणागार ही मानता है। कौन सा ऐसा कार्य है जो पिता न कर सकता हो। वह एक ऐसा सर्वशक्तिमान् सर्वसम्पन्न व्यक्ति है जिसके चारों ओर सभी वस्तुएं घूमती हैं। उस के लिए क्या उपलब्ध नहीं है? पिता जी सब से बड़े खिलाड़ी, सबसे बड़े शारीरिक बल वाले, तथा महत्तम शरणागत पाल भी हैं। पिता जी बालक के लिए पूर्ण देवता हैं।

यह बात नहीं है कि बालक में केवल अच्छी ही भावनाएं पाई जाती हैं। अवगुणों की ओर भी उसका ध्यान रहता है परन्तु वह अवगुण और गुण को एक स्थान पर रखना नहीं जानता। उसके लिये पितृशक्ति या तो शुद्ध दैवी है या शुद्ध राक्षसी। बालक को यही तो आगे चल कर सीखना है कि पिता में बुराई भी हो सकती है और उसके बावजूद भी वह अपना है और बड़ा है।

पिता की मनोवैज्ञानिकता:—बालक अपने वातावरण में स्थिरता चाहता है। बार २ परिवर्तन

उसके अनुकूल नहीं बैठता। पिता का इस स्थिरता में बड़ा हाथ रहता है। वह बड़ा ही क्रियाशील होता है। शक्तिपुञ्ज होने से बाह्य आपदाओं से घर की रक्षा करता है। उन आसुरी शक्तियों से जो मुँह फैलाये बाहिर खड़ी रहती हैं, बाप ही त्राण दिला पाता है। बच्चों के हृदय में उसके लिये फिर क्यों न अधिक सम्मान रहे। इसी कारण वे उनकी प्रशंसा के पुल बांधा करते हैं। बच्चे उन्हें हृदय से चाहते हैं। इस चाह में कुछ भय भी सम्मिलित है। बालक जानता है कि पिता की सहायता उसके लिए बड़े काम की है, पथ प्रदर्शन के लिये भी वह उसी के पास जाता है।

पिता बालक की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता है। उसके बिना वह सुखी नहीं रह सकते। उसके बिना उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। उस के अभाव में वे न केवल बाह्य नियन्त्रण से ही वाञ्छित हो जाते हैं वरन् उनका स्वयं का आत्मनियन्त्रण भी ढीला हो जाता है। व्यक्तित्व निर्माण में 'अहं' भावना का बड़ा महत्व है। यह भावना धीरे २ समाज में पैदा होती है। बालक यह समझने लगता है कि 'मैं' और लोगों से भिन्न हूँ। यह भिन्नता की अनुभूति उस के जीवन विकास का मुख्य सोपान है। धीरे २ 'मैं' में वह शक्ति भी आती है जो सारी प्रवृत्तियों और प्रेरणाओं को एक ओर लगाती है। इन में किसी को विशृङ्खलित न होने देना उस इच्छा शक्ति का ही काम है जो 'मैं' की भावना के साथ ही विकसित होने लगती है।

'अहं' की जो नियन्त्रक शक्ति है उसका भी प्रेरक अनजाने ही पिता बनता है। दृश्य वातावरण

का नियन्त्रक तथा नियामक पिता धीरे २ सन्तान के अन्दर भी अनुसरण तथा निर्देश के कारण आंतरिक शक्ति जागृत करता है। पिता की भावना धीरे २ ऐसा आदर्श उपस्थित कर देती है जिस पर लड़का अपना जीवन ढाल सके। पिता के न रहने पर इस आदर्श का अभाव हो जाता है। यही कारण है कि पिता की अनुपस्थिति में लड़के को मनोवैज्ञानिक कष्ट पहुँचता है। उस का आंतरिक अचेतन मन विचलित हो जाता है।

पिता के अभाव में लड़के की व्यथा—

पिता के अभाव में लड़के में आत्मग्लानि भी पैदा हो सकती है। वह यह नहीं समझ पाता कि और लड़कों के तो पिता हैं उसके क्यों नहीं। पिता के विषय में बालक की बड़ी उत्कण्ठ जिज्ञासा होती है। ऐसी अनेक कहानियाँ हम सुनते हैं जिन में पिता के विषय में बालक माता से प्रश्न करता है। दैनिक जीवन में भी हम लड़कों को प्रकाश्य रूप से पिता के सम्बन्ध में जाँच करते देखते हैं। उसके अभाव के विषय में वास्तविक ज्ञान न रखने के कारण उनके हृदय में यह विचार भी घुस सकता है कि वे पिता पाने के योग्य नहीं हैं। उन में कुछ बुरी बातें हैं तभी तो वह नहीं हैं या कहीं चला गया ह। ऐसी दशा में वह माँ के सम्बन्ध में भी बुराई सोचने लगता है। कदाचित् इसी कारण पिता चल गये हों। माँ इस योग्य नहीं कि पात रख सके। धीरे २ उसके अचेतन मन में माँ के प्रति भी घृणा की भावना पैदा होती है। पिता के प्यार, आश्रय, नियन्त्रण तथा उत्साह प्रदायक प्रेरणा से रहित बालक वास्तव में असहाय सा रहता है।

अनुचित (गैर कानूनी) ढंग से पैदा हुआ लड़का बहुत अधिक व्यथित रहता है। लोग उसे अपने पिता के सम्बन्ध में सच्ची बातें नहीं

बताते। वह सदा एक आदर्श मूर्ति का स्वप्न देखा करता है जो शक्तिशाली, प्रभाव सम्पन्न हो। ऐसा बालक प्रायः घूमता हुआ दिखाई पड़ता है। उसे एक स्थान पर शांति नहीं मिल पाती।

पिता में बालक के अपनत्व की भावना काम करती है। वह उससे बात करता है, उस के प्रश्नों का उत्तर देता है। उसे बाजार घुमाता है। उसको आवश्यक वस्तुएं देता है। बालक यह नहीं सहन कर सकता कि पिता का प्रेम उस से किसी प्रकार हट जाय। पिता की अनुपस्थिति में उसके मन में अकेलेपन की व्यग्रता उठती है। लड़का इस चिन्ता में व्यस्त रहता है कि कहीं पिता न लौटे। प्रायः देखा गया है कि ४ साल तक के बालक पिता की अनुपस्थिति को बहुत ही अधिक महसूस करते हैं। उनका ऐसा भावात्मक उद्रेक होता है कि स्नायुओं पर बड़ा जोर पड़ता है। आखिर बालक की शक्ति ही कितनी होती है ? उसकी भूख कम होने लगती है। रात्रि को बार बार उठा करता है, अनिद्रा की सी बेचैनी रहने लगती है। अनेकों लड़के आवारों की भांति इधर उधर घूमने लगते हैं, अनेकों प्रायः आवेश में आया करते हैं, अनेकों प्रकार से अपने आत्माय जनों की व्यग्रता बढ़ाते हैं ताकि लोग उन की ओर ध्यान दें।

पिता के मरने पर बालक या तो माँ से अत्यधिक प्रेम करने लगते हैं और परावलम्बी से हो जाते हैं अथवा माँ से भी अचेतन घृणा करने लगते हैं जैसा कि ऊपर लिखा गया है। माँ चाहे कितना ही प्यार करे परन्तु मन से वे स्वभाविक नहीं हो पाते। उन में सुरक्षा तथा निश्चिन्तता नहीं आ पाती, उन में आत्मतृष्टि का अभाव रहता है।



★ रूसियों की भारतीय साहित्य में रुचि ★

(ले—ग० ग० कोतोवस्की, इतिहास विज्ञान के कैंडीडेट ।)

भारत के लोगों की प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति में सोवियत जनता ने हमेशा गहरी दिलचस्पी ली है । यही वजह है जो सोवियत पाठकवर्ग तथा वैज्ञानिक मण्डलियों के व्यापक तबकों ने तुलसीदास की विख्यात काव्यकृति 'रामायण' के रूसी अनुवाद की ओर, जो मनुष्ययुगीन भारतीय साहित्य का अन्यतम स्मारक है, इतना अधिक ध्यान दिया है ।

रूस में भारतीय साहित्य के वैज्ञानिक अध्ययन की अति पुरानी परम्परा है । ई० मीनायेव, व० मिल्लर, स० ओल्देनबुर्ग, फ० शेखात्सकोई तथा दूसरे रूसी वैज्ञानिकों ने भारत के प्राचीन एवं मध्ययुगीन टकसाली साहित्य के शोधकार्य में बहुमूल्य योगदान दिया है । क्रांति से पहले भी संस्कृत साहित्य के कुछ रूसी अनुवाद प्रकाशित हो चुके थे, जैसे कालिदास की अमर कृति "अभिज्ञान शुकुन्तला" का रूसी अनुवाद ।

महान् अक्टूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद भारत की जनता के इतिहास एवं संस्कृति के अध्ययन में एक नये दौर का श्रीगणेश हुआ । भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य का अध्ययन शुरू हो गया । अकदिमीशियन फ० शेखात्सकोई तथा स० ओल्देनबुर्ग ने (अंशतः अनुवाद) बौद्ध साहित्य के कतिपय स्मारक प्रकाशित किये । १९३० में भारत की प्राचीन कथामाला 'पञ्चतन्त्र' का संग्रह प्रकाशित हुआ । इसके बाद १९३७ में लल्लू लाल जी के 'प्रेमसागर' का रूसी अनुवाद प्रकाशित हुआ । अनुवाद अकदिमीशियन अ० बरान्निक्कोव ने किया

था । सुविस्तृत लेख और टीकाओं से युक्त यह प्रकाशन भाषाविज्ञान सम्बन्धी शोधकार्य में एक महत्वपूर्ण चिह्न है । १९५१ में ही भारत के प्राचीन महाकाव्य 'महाभारत' का रूसी भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुआ । अनुवाद का काम सोवियत संस्कृत-विद्याविद् व० काल्यानोव ने किया । आज भी सोवियत संघ के भारतीय विद्याविद् भारत की आधुनिक भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने और उसे लोकप्रिय बनाने की ओर अत्यधिक ध्यान दे रहे हैं ।

भारत क्लासिकल साहित्य निधि के श्रेष्ठतम नमूनों को लोकप्रिय बनाना सोवियत संघ के प्रमुख भारतीय भाषाविद् अकदिमीशियन अ० बरान्निक्कोव के वैज्ञानिक कार्यालय का मुख्य अङ्ग था । अकदिमीशियन अ० बरान्निक्कोव ने हिंदुस्तानी (हिन्दी और उर्दू) तथा संस्कृत की कई पुस्तकों का अनुवाद किया । शायद भारत के क्लासिकल साहित्य के स्मारकों के जितने भी अनुवाद हुये हैं उनमें सब से अधिक महत्वपूर्ण और इसके साथ ही अकदिमीशियन बरान्निक्कोव के वैज्ञानिक क्रियाकलापों का चरम शिखर तुलसी कृत 'रामायण' का रूसी भाषा में पद्यबद्ध अनुवाद है । इसका प्रकाशन सोवियत संघ की विज्ञान-अकदिमी ने १९४८ में किया था ।

'रामायण' का अनुवाद दस वर्षों के लम्बे अर्से तक किये गये लगातार परिश्रम का परिणाम है ।

लड़की से लड़का

अहमदाबाद के समीप एक ढाई वर्षीया हरिजन कन्या सविता लड़का बन गई है ।

मुझे अचानक और खिलाफे मामूल इस तरह उदास और वक्त से पहले घर लौटते देख पत्नी घबरा गई। उसने पूछा—‘क्या बात है इतने घबराये हुए क्यों हो ? मैं ने कह दिया, ‘आज से बेकार हो गया हूँ।’ उसने हैरानी से पूछा, ‘क्या जवाब मिल गया ?’ मैं ने कहा—‘हां’। उसने फिर पूछा—‘क्यों ?’ मैं ने उसे सारी बात बता दी। उसने कहा यदि यह बात है तो अवश्य मालिक को गलत फहमी हुई है उन से मिल कर अपनी पोजीशन स्पष्ट करनी चाहिये। मैं ने कहा, ‘अब मैं वहां इस अनुभव के लिये नहीं जाऊंगा।’ पत्नी ने कहा, ‘नौकरी के लिये फरियाद करने न सही यह कलंक का टीका धोने के लिये तो जाना ही होगा। कल आर्य जगत में स्वभावतः प्रश्न उठेगा कि ‘प्रकाश के सम्पादक को क्यों जवाब दे दिया गया ?’ बात छिपाये नहीं छिपती। आपकी कथित वेईमानी की बात मशहूर हो जाएगी। आपकी वती बनाई इज्जत और मान मिट्टी में मिल जाएंगे। आर्य जगत की नजरों से गिर जाओगे। किसी जगह भी नौकरी के काबिल न रहोगे।’

उसका कहना था सत्य। दिल ने अनुभव किया परन्तु मैं उसी समय ‘मालिक’ के चरणों में जाने को उद्यत न था। उसे यह वचन दिया कि कल जाकर अपनी पोजीशन साफ करदूंगा।

कभी दिल में आता कि ‘रिफॉर्मर’ पत्र में जगह मिल सकती है उसके मालिक को मिलना चाहिए। फिर सोचता कि वह पूछेगा कि यकायक वहां से पृथक क्यों हो गए ? और साथ ही वह प्रकाश के मालिक का मित्र भी है, हो सकता है वह उसे कह दे कि यह तो वहियानत आदमी है इसे क्यों रखते हो ? इसी तरह दूसरी दो एक अखबारों के मालिकों से मिल कर किस्मत आजमाई का ख्याल आता, जिसका स्मर्थन मेरी धर्मपत्नी करती। यह सब कोशिश करने का मैं

उसे विश्वास दिला रहा था और साथ ही यह भी कि कल उसे जालन्धर भेज देना पड़ेगा—और दो एक दिन में ही यह मकान खाली कर देना चाहिये। इसका ८) रुपये मासिक किराया बेकार कैसे बर्दाश्त कर सकेंगे ? ४०) मासिक पाने वाला लाहौर शहर में रहते हुए एक पत्नी और बच्चे के भरण पोषण के अनन्तर क्या बचा सकता है ? कम से कम मैं तो २ वर्ष की नौकरी में कुछ नहीं बचा पाया जो बेकार हो जाने पर बीवी और बच्चे समेत लाहौर रह कर मजे से दूसरी नौकरी मिलने तक खा सकता। इस लिये सलाह यही ठहरी कि सामान चचा की कोठो में रखा जाये और कल ही दफ्तर में हिसाब बेबाक करके जालन्धर के लिए (जहां मेरे माता पिता रहते थे) प्रस्थान किया जाए। यह तजवीज पत्नी की थी। मैं किसी के पास जाकर चाहे वह चचा ही क्यों न हो, यह भित्ता मांगने जाने को तैयार न था कि जाकर सामान रखने के लिए उन्हें एक कमरा या कोठरी देने को कहूँ। यदि ऐसा सम्भव होता तो आज मैं पृथक मकान किराये पर लेकर क्यों रहता ? आत्माभिमान मुझे इस प्रस्ताव से सहमत न होने देता था। परन्तु धर्म पत्नी की जिद थी और यह कहना भी कि यदि वक्त और मुसीबत में अपने इतना भी काम न करेंगे तो वह हैं किस समय के लिये ? आप शायद मेरे वहां जाकर यह प्रार्थना करने से हिचकचाने का कारण यह समझें कि वे पूछेंगे कि जवाब मिल गया तो किस लिये और यदि उन्हें सच्ची बात बताई गई कि मैं वहियानती के इल्जाम में निकाला गया हूँ तो मेरी कैसी भद बनेगी। परन्तु नहीं, यदि मैं ने स्वयं भी नौकरी छोड़ी होती तो भी मैं यह प्रार्थना लेकर उनके हां न जाता—परन्तु पत्नी के मजबूर करने पर जाना ही पड़ा। वह रास्ते में मुझे नौकरी छूट

जाने की असली वजह को छिपा कर कोई दूसरा कारण बता कर सारी बात बता देने को पका करती गई। परन्तु मैं उसे यह मनवाता गया कि बात वह करेगी। इसी समझाने बुझाने की कोशिश करते हम उनकी कोठी के दरवाजे पर पहुँच गये। मैं ने खुशक हंसी हंसने का प्रयत्न करते हुए धर्म पत्नी को मज़ाक में कहा, 'अच्छा अब चेहरे पर आई मलिनता को कुछ समय के लिये दूर कर दो और समझ लो कि कुछ हुआ ही नहीं।'।

हम बहुत दिनों बाद उनके हाँ गये थे, इस लिये बच्चे बड़ी उत्सुकता से मिले और हंसते खेलते हुए उन्होंने हमें घेर लिया। कोई मुन्नी को छीनने लगा। बहन धर्म पत्नी की बांह पकड़ कर उलाहने में कहने लगी, 'भाभी! अभी तो गृहस्थी का बोनम इतना अधिक नहीं हुआ कि फुरसत तक न मिले, फिर ईद का चाँद क्यों हुई जाती हो? चाची ने कहा, 'क्यों बेटा क्या तुम्हें फुरसत नहीं मिलती जो इधर आने का ध्यान तक नहीं आता?' सभी प्रसन्न थे इस लिये हंसी मज़ाक कर रहे थे। परन्तु हमें उनकी हंसी हंसा न सकी, क्योंकि बेकारी का भूत सर पर सवार हो चुका था और वह भूत था पेट पालन की चिन्ता का—जिसने हमारी हंसी मुस्कान सब कुछ छीन लिया था। यद्यपि हमने उनके स्वर में स्वर मिलाने की कोशिश की, पर टूटी सितार से आवाज़ कैसे निकले? चाची ने कहा, 'भोजन का समय हो रहा है, खा लो, बलो सभी मिल कर खा ले'। मैं ने कहा—'हम तो घर से खा कर आए हैं क्योंकि आना था यहां इसी लिये।' यद्यपि हम खा कर न आये थे। परन्तु हम यह झूट बोल ही गये यद्यपि नौकरी छूट जाने की सही बात छुपाने के लिए झूट बोलना मुश्किल जान पड़ता था।

बहिन बोली—'भैया हम ने Radio लगवाया है चलो न सुनें।' चाची और लड़के लड़कियाँ हमें खींच कर एक शानदार सजे सजाए कमरे में ले गये। द्वारों पर परदे लटके थे। फर्श पर कालीन बिछे थे। हमें ये सब चीजें अच्छी न लग रही थीं। 'रेडियो' पर हो रहा मज़ाकिया डरामा सुनाई देने लगा, सब हंस रहे थे परन्तु हमारा ध्यान किसी और ही तरफ था। हमें मालूम भी नहीं था कि किस बात पर सब हंस रहे थे। समय बीत रहा था, रात भीगी जा रही थी, सर्दियों के दिन थे। हम जिस उद्देश्य से आये थे वह बात चाची से कहने को उत्साह न होता था। वह मेरी ओर देखती और इशारे से समझाती और मैं चाची की ओर देखता और गदन नीचे झुका लेता, फिर यह ख्याल आते ही कि हम महफिल में बैठे रेडियो सुन रहे हैं। ध्यान रेडियो की ओर करता। सभी हंसते, मैं उन के चेहरों की ओर देख करके यह जानने का प्रयत्न करता कि ये क्यों हसे और लज्जा से बचने के लिये खुशक और बनावटी हंसी हंस देता। वह गद्दे जिन पर आगे मैं कई बार बैठ कर प्रसन्न होता था आज अच्छे न लग रहे थे और खुद को मैं उनके योग्य न समझता था। कभी उठ खड़ा होता कभी बैठ जाता। कभी पत्नी के चेहरे की ओर देखता कभी चाची की ओर तो कभी रेडियो की ओर। जब इसी तरह उन्होंने ने हमें चुप चाप देखा तो पत्नी ने चाची ने पूछा—'चुप क्यों हो? तबीयत ठीक है न?' मैं ने कह दिया 'ज़रा सिर दर्द है। अच्छा, अब हम जाते हैं।'।

चाची ने मजबूर किया कि यह सुरीला गाना सुन कर ही जाना, पर हमारे दिलों को वह दिल सौज गाना जो हमारे अशांत दिल बजा रहे थे, सुनने से ही फुरसत न थी। इस

लिए हम जाने के लिए उठ खड़े हुए । आज न जाने पहली बार क्यों चाची को हम पर दया आई कि उसने हमारे जाने के लिए मोटर भेजने को कहा । हम ने बहुत कहा कि हम यहीं पैदल चले जाएंगे परन्तु वह मानी नहीं । खैर हम नमस्ते कह कर उसी तरह खाली लौट आये जिस तरह एक बार सुदामा कृष्ण के दरबार से खाली हाथ आ गया था । मोटर पौ पौ करती हुई बीडन, रोड टैम्पल रोड और माल रोड को पार करती हुई घर की ओर जा रही थी । परन्तु सड़कों की रौनक और दुकानों की सजावट हमें न भाती थी । हम चुप चाप बैठे एक दूसरे की ओर हसरत भरी निगाहों से देख रहे थे और न जाने दिल क्या सोच रहे थे । मोटर भागी जा रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि निर्दोष सीता को लक्ष्मण बनवास के लिये छोड़ने जा रहा हो ।

घर पर पहुँच कर हम कुछ खाये पिये बिना सोई हुई वस्त्री को को चारपाई पर लिटा और उस कमरे की लाइट बुझा कर दूसरे कमरे में आये । मेरे बहुत कहने पर भी वह उस कमरे की बत्ती को जलती रहने देने को तैयार न हुई जहाँ मुन्नी सो रही थी हालाँकि वहाँ खुद उस अन्धेरे कमर में अकेली न छोड़ती थी । मेरे बहुत ज़ोर देने पर बोली—‘बेकार हो जाने पर कफयत करनी चाहिए ।’ बेशक उस की कफायत की बात दो दिन पहले मुझे हंसा देता, परन्तु आज सत्य ही जान पड़ी और मैं चुप रह गया ।

हम दूसरे कमरे में जाकर सामान बांधने और साथ ही साथ यह भी सोचने लगे कि एकदम माता पिता हमें आया देख कर क्या कहेंगे ? हम यह सोच कर खुद ही तसल्ली कर लेते कि यह Private नौकरी ही तो थी । इसका हथ्र और क्या

होता ? मैं ने पत्नी से पूछा चाची से कहा क्यों नहीं ? उसने कहा आप ने क्यों न कहा ? मैं ने जवाब दिया, ‘मेरी जुबान तो आत्माभिमान ने पकड़ ली थी ।’ तो क्या मैं ही रह गई हूँ जिसमें आत्म अभिमान नहीं ? वह बोली । एक दूसरे की कड़वी बातें आज हम शर्वत की तरह पिये जा रहे थे । और क्रोध बिल्कुल न आ रहा था । एक दिन पहले हम मामूली सी बात पर झगड़े थे और एक दूसरे से तने तने से रहते थे परन्तु आज हमें एक दूसरे पर इतना प्यार आ रहा था कि शायद कभी इतना आया ही न हो । शायद मुसीबत में दिल बर्दाशत करना सीख लेता है । न जाने इसी तरह कितना समय बीत गया पर आँखों में नींद न आई । यदि हम थक न गए होते तो शायद सामान बांधते ही रात काट देते क्योंकि हम एक दिन का किराया भी और सर पर लेन को तैयार न थे और सुबह होते ही मालिक मकान को यह कह देने का निश्चय कर चुके थे कि हमें जालन्धर में अच्छी नौकरी मिल गई इस लिये हम जा रहे हैं ।

आखिर थक कर हम बिना कुछ खाये और बिस्तर बिछाये लेट गये । न आज भूख थी न नींद । थके आदमी को नींद जल्दी आती है परन्तु अपमान और भविष्य की चिन्ता जो बेकारी ने हमारे सामने खड़ी कर दी थी उसके होते नींद पास तक न फटती थी । आज वस्ती मुझे कितनी प्रिय लग रही थी—ठीक उसी तरह जिस तरह कोई बहुत मुदत के बाद मिलने पर लगता है । मेरी खाट खिड़की के पास बिछी थी जिस में से चाँद की चाँदनी चिटक रही थी । कमरे में अन्धेरा होने परी भी चाँदनी में हम एक दूसरे का चेहरा देख रहे थे । कितन उदास थे ! हमें ऐसा जान पड़ता था कि लम्बी बीमारी के बाद स्वस्थ हुए हों । हम आँख मीच

कर सोने का प्रयत्न कर रहे थे। दिल सोचने और भविष्य की चिन्ताओं की उलझन में फँसा हुआ था। हम कुछ क्षण बाद आहिस्ता और चुपके से एक दूसरे को देखने की कोशिश करते कि सो गए हैं कि नहीं किन्तु दोनों की नज़रों का सामना हो जाता। पत्नी कहती—‘क्यों इतनी चिन्ता करते हो? नौकरी और मिल जाएगी। जिसने पहले दी वह अब भी देगा। जिसने पैदा किया है वह खाने को देगा ही। कल उस जगह जाइएगा, उस जगह पूछियेगा……’

मैं ने आँखों पर हाथ धरते हुए कहा—‘यह क्या उपदेश शुरू कर दिया? सो जाओ। ‘आप भी तो सो जायें।’ मैं ने कहा—‘लो मैं सोता हूँ।’ मैं ने फिर आँखें मूंद लीं। उस समय शायद २ बज चुके थे पर नींद नहीं आ रही थी। ठण्ड लगने से कुछ ज़ुकाम सा हो गया था। मैं ने नाक से बहते हुए पानी को पोंछा तो पत्नी ने समझा कि मैं रो रहा हूँ दिल भर आने की वजह से नाक से पानी बह रहा है। उसने इस बात की जांच किये बिना आँखों से आंसुओं की धारा चला दी और इधर मेरी आँखों में हाथ हटाया तो बेखुश थी। मैं ने कहा—‘मैं रोऊँगा क्यों? मेरा खो नहीं गया कुछ! पर तुम क्यों रोती हो? हमारी पारस्परिक सहानुभूति की अथाह गहराई का अनुमान लगाना कठिन था। उसकी आँखों के आंसू पोंछते २ मेरी आँखों में भी आ गए जो उसने पोंछ दिये। हम फिर सोने का बहाना करके लेट गये। कुछ ही मिनट बाद उसने मेरी आँखों को फिर टोला। मैं ने कहा, ‘यह क्या करती हो?’ उसने कहा, ‘यह देखती थी कि सो गए हो या अभी जागते हो।’ मैं ने कहा ‘सोने वाला हूँ।’ वह बोली, ‘सोते क्यों नहीं?’ मैं ने कहा, ‘इस प्रश्न के उत्तर की आवश्यकता

है? अपने दिल से ही पूछ लो।’ इसी तरह चार बज गये। फिर न जाने कैसे नींद आ गई? आखिर हम सो ही गये।

सुबह उठे, आगे 7-7½ बजे उठा करते थे पर आज 6-6½ बजे ही आँख खुल गई। सोते में मैं ने क्या स्वप्न देखा यह बताने बैठूँ तो एक पृथक् कहानी बन जाए।

गवाला दूध देने आया। वह आगे सवा सेर दूध देता था। आज पत्नी ने कहा हमें आज दूध नहीं चाहिये। मैं ने कहा, ‘क्या तुम्हारे साथ मुन्नी भी घृत रखेगी? उसे क्या मालूम है कि……’

खैर बहुत जोर देने पर आध सेर ले लिया। दूध पिलाते २ छोटी सी लड़की ने दूध पीने की शीशी तोड़ दी। पत्नी को बहुत गुस्सा आया। उसने उठ कर एक दो थप्पड़ जमा दिये बिटिया के। आज पहली बार उसने बच्ची को पीटा था। केवल इस लिये कि ४ आने का उसने नुकसान कर दिया था और चार आने फिर से खर्च करके नई शीशी लानी पड़ रही थी। मैं ने कहा—‘आगे तो तुम ने उहो कभी पीटा न था। आज तुम्हारी ममता कहां गई?’ वह लज्जित हो गई यद्यपि मैं जानता था कि बेकारी में एक एक पैसा एक एक रुपये से अधिक कीमती जान पड़ता है। इसी लिये वह गुस्से में आ गई थी कि ४ आने और खर्चने पड़ेगे।

मैं बाज़ार से शीशी खरीद रहा था कि एक मित्र मिल गया। जो ‘अताप’ कार्यालय में काम करता था। उसने सारी बात पूछी—सब बात जानने के बाद उसने भी जोर दिया कि मैं मालक के पास जाकर सारी बात कहूँ। और वह भी मैं नज़र से घर पर मिल कर कुछ हो सका तो करेगा। मैं राजी न होता था, पर उसने कहा कि इसमें हर्ज ही क्या है।

शीशी खरीद कर घर आया और नहा धोकर मालिक के पास जाने को तैयार हो गया। पत्नी ने जोर दिया कि भोजन करके जाऊं परन्तु तब तक भोजन के लिये भूख कहां जब तक कि दिल में लगी आग बुझ न जाये।

मैं यह सोचता हुआ कि मालिक से क्या हुआ दफ्तर की ओर चल पड़ा। रास्ते में कौन गुजरा, कौन सी सड़क पर से आया यह याद नहीं। जब कोठी के दरवाजे पर पहुँचा तो दूर से ही मालिक को धूप में बरामदे में बैठा पाया। मैं ने नमस्ते कह कर उनसे निवेदन किया कि मैं कुछ कहना चाहता हूँ। उन्होंने ने धीमे से बैठ कर धैर्य से कहने को कहा। मैं ने उनका ध्यान इस बात की ओर दिलाया कि वह बेईमानी नहीं है। उन्होंने ने कहा क्यों? ३ मास का चन्दा ५) वसूल करके १॥) जमा कराना बेईमानी नहीं? मैं ने कहा कि ३ मास का चन्दा नहीं २ मास का चन्दा १॥) था। रसीद पर साफ लिखा है। two months' Pratap's subscription. Exceeding amount to be refunded. बेईमानी तो तब होती जब खजानची के ग्राहक के पत्र और रसीद भेजने पर मैं १॥) के सम्बन्ध में लाइली का इजहार करता। मैं ने बिना चूँ चरों

१॥) जमा कर दिया और मुझे मालूम तक न था कि यह बात यहां तक बढ़ेगी कि इसे बेईमानी पर मामूल करके मुझे वदियानती का तौक पहना कर, बगैर सफाई का मौका दिये, बिना बयान लिये, एक मिनट का नोटस दिए बगैर डिसमिस कर दिया जाएगा। मालिक को समझाया गया था कि चन्दा ३ मास का था और ५) ही जमा होने चाहिए थे। जब गलत फहमी दूर हो गई तो उसने प्रसन्नता से अपना नोटिस लौटा लिया और मुझे उस इल्जाम से 'बरी' कर दिया जिसने मेरे तन बदन को आग लगा रखी थी।

एक छोटी सी गलत फहमी की बदौलत एक रात जिसे बेकारी की रात नहीं दोख की एक रात कहना चाहिए मुझे देखनी नसीब हुई। परन्तु एक सबक भी मिल गया जिसने मुझे भविष्य के लिए सचेत कर दिया है।

जब मैं ५ बजे घर गया तो मेरा खिला हुआ चेहरा देख कर पत्नी ने पूछा, 'कहो क्या कर आये?' मैं ने कहा, 'बरी हो गया हूँ और नौकरी वापिस मिल गई है। अब बेकार नहीं हूँ।' हम दोनो उस समय कितने खुश थे कोई क्या अन्दाज़ा लगायेगा?

समाप्त

हाज़िर जवाबी

हाज़िर जवाबी के सुन्दर उदाहरण कचहरियों में प्रायः मिलते हैं। विशेष कर आयरलैण्ड के वकील तो अपनी हाज़िर जवाबी के लिये विश्वविख्यात हैं। इसका प्रमाण निम्न घटना से मिल जाएगा।

एक वकील तथा जज में बहुत अनबन रहती थी। एक दिन एक मुकद्दमे में वह दोनों उपस्थित थे। जब वकील ने बयान देना आरम्भ किया तो जज महोदय यह दिखाने के लिए कि

वकील जो कुछ कह रहा है वह बेकार है, अपने पास बैठे कुत्ते की ओर देखने लगे। वकील ने जब जज महोदय को कुत्ते की ओर देखते हुए पाया तो वह चुप हो गया। जज ने कहा—'बयान जारी रखीए।' चतुर वकील ने आदर पूर्वक उत्तर दिया, 'हमा कीजिये श्रीमान, मैं समझा था आप परामर्श कर रहे हैं।' इस उत्तर को सुनकर उस जज पर क्या बीती होगी इस का अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं।



★ विजय दशमी पर्व ★

['अशाँत' रेवाड़ी]

अखिल विश्व में युग २ तक गूँजे यह जय अभियान हमारा ।
 आज मेदिनी के आंचल से जागे हिन्दुस्तान हमारा ॥
 विजय पर्व की बेला में प्रकृति ने चुननव परिधान लिया है ।
 पूर्वजों की विमल कीर्ति पर जल थल ने अभिमान किया है ॥
 आसुर अत्याचारों से संसृति में हाहाकार हुआ था ।
 साधु मुनीश्वर योगी पर रावण का अत्याचार हुआ था ॥
 दानवता चंगुल में जकड़ी जब भोली मानवता रोयी ।
 पशुता बर्बरता के सम्मुख जग ने निज जीवन निधि खोयी ॥
 जब भार धरणि का हरने को 'देवों' का दल समवेत हुआ ।
 भीषण संहार की निरख आग हर्षित कितना साकेत हुआ ॥
 पा शौर्य भारती भू से राघव ने रण का सन्धान किया ।
 निर्मम शर की हुँकारों से निश्चर यमलोक पयान किया ॥
 सो गये सदा को शूर सुवन गर्वीले सवा लाख नाती ।
 'प्रायश्चित्त अत्याचारों का' है पुलक पुलक वसुधा गाती ॥
 राघव का शौर्य उदधि की उन उत्तान तरंगों से पूछो ।
 कोदण्ड चण्ड भीषण रव उन विकराल निषंगों से पूछो ॥
 खोजो खगरी की महानता सरयू के बीच विलासों में ।
 माँ अन्नपूर्णा वैदेही बन्दिनी विकले के हासों में ॥
 दिन कर की आभा झौंक रही जागो जागो हे नव प्रभात ।
 वह अत्याचार अनीति सिन्धु की गई उमड़ती उपरात ॥
 कितनी सुकमारी सीताएँ हैं बिलख रही लुढ़ रही लाज ।
 दुम्सहः होने दुराचार कोई पुकार सुनता न आज ॥
 असमर्थ हुई धरणी अनीति का, करने में अब वहन भार ।
 'हे दुष्ट दलन हे रघुनन्दन आओ', है वसुधा की पुकार ॥
 भारत भू अत्याचारों को, है सह सकती अब और नहीं ।
 हो प्रकट पुनः हे दैत्य निकन्दन, पावन करदो पुण्य मही ॥
 मृदुतर कमनीय कुसुम पर, गा गा मधुप मधुर मधुपान करे ।
 लज्जा से रंक्तिम कलियों पर, आ पुनः विहंगमगान करे ॥
 सौभाग्य श्री इठलाती सी, प्रीवा में डाले हरित हार ।
 हो जगद् गुरु, उन्नत महान, गा उठे विश्व गुण एक बार ॥

दूसरा क्षेत्र माता की गोद

गर्भ काल के पश्चात् संस्कारों का दूसरा क्षेत्र माता की गोद अथवा उसके कोमल हाथों से हिलाया डुलाया जाने वाला पालना है। बच्चों के संस्कार इन स्थानों को पाकर बढ़ते हैं। माता के कंठ से उत्पन्न लोरियों के चित्र बालक के कोरे हृदय पर शीघ्रता से छपते जाते हैं।

माता लोरी देती हुई बालक को शिक्षा देती है कि बच्चे ! अपनी पृथ्वी किसी को नहीं देनी चाहिए उसकी रक्षा करने के लिये मर जाना ही महत्ता प्राप्त करना है। मातृभूमि की रक्षा करने के लिये अपने प्राणों की बलि कर देना ही मृत्यु का सच्चा मूल्य प्राप्त करना है।' माता की यह शिक्षा बालक के गर्भजात संस्कारों को विस्तृत करती है और उसके यह भाव (संस्कार) चरित्र निर्माण करते हैं।

वातावरण का प्रभाव

बच्चों के चरित्र का निर्माण माता के अतिरिक्त बहुत कुछ वातावरण से भी होता है। जिस प्रकार के वातावरण में बालक का लालन पालन होगा उस से ही बालक का चरित्र बनेगा इस लिये बालकों को सदैव ही सुन्दर वातावरण में रखने का प्रयत्न होना चाहिए।

बच्चों को अच्छी संगत की अत्याधिक

आवश्यकता है। बालक तो अपने आस पास के संगी साथियों को जैसा करता हुआ पाएगा वैसा ही वह स्वयं भी करने लगेगा। यदि उसके साथी ने गाली दी तो आप को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वह शांत खड़ा रहेगा। वह भी अवश्य गाली देगा। इस लिये हमारा प्रयत्न यही होना चाहिए कि बालक के वातावरण का सुधार करें। वास्तव वातावरण बालक के लिए हम इस तरह बना सकती हैं कि उसके संग खेलने वाले सभ्य बालक हों और घर में परिवार के सभी सदस्य यदि हिल मिल कर रहेंगे तो बालक भी नम्र स्वभाव का होगा। यदि परिवार के सदस्य आपस में लड़ेंगे झगड़ेंगे तो बालक पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

इस प्रकार प्रत्येक बालक के चरित्र निर्माण का श्रेय अथवा भार उसकी माता तथा चारों ओर के वातावरण पर है।

इनके सुधार होने पर बालकों के संस्कारों में स्वतः सुधार हो जाता है।

(पृ० २७ का शेष)

उधर गर्वित रावण युद्ध-घोषणा द्वारा अपने वंश और समस्त राष्ट्र के लिये दशहरे का दिन ला रहा है। इधर से हनुमान की सेना बल दल से जिस दिन भी चढ़ गई लंका में विजय दशमी का त्योहार शीघ्र ही आजाएगा।

दो मित्रों में वार्तालाप (DIALOGUE)

★ विज्ञान-वरदान या अभिशाप ? ★

[लेखक—श्री आत्मदेव आनन्द, रेवाड़ी]

सुशीलः—ओह आज बड़े दिनों बाद मिलना हुआ । क्या हाल है ?

सुनीतः—आपकी कृपा से सब ठीक ठाक है ! आपके हाथ में क्या है—अखबार ? जरा दिखाना तो !

(हाथ बढ़ा कर लेता है और पढ़ता है)

‘अमेरिका में हाईड्रोजन बम का आविष्कार ।’ वाह रे अमेरिका ! कमाल कर दिया । देखा सुशील ! विज्ञान की उन्नति ।

सुशीलः—आपका इससे क्या अभिप्राय है ? क्या आप हाईड्रोजन बम जैसी विनाशकारी वस्तु को लाभदायक समझते हैं ? आज साइंस ही मानव जाति का रक्त पान कर रही है । कभी बम कभी ऐटम बम और आज हाईड्रोजन बम के आविष्कार का समाचार सुनने को मिला है ।

सुनीतः—तुम गलती पर हो । यह ऐसा अस्त्र है जिसके द्वारा मीलों दूर की भूमि पर शत्रु सैनकों को नाश किया जा सकता है । शत्रुओं का सामना करने के लिये आधुनिक युद्ध का यह सबसे बड़ा हथियार है ।

सुनीलः—परन्तु तुमने यह नहीं सोचा कि इससे कितनी हानियाँ हैं । जिस धरती पर

गिरता है उसे बंजर बना देता है । वह पृथ्वी खेती के योग्य नहीं रहती । अब तुम्हीं बताओ कि इस अस्त्र के प्रयोग से क्या लाभ होगा ?

सुनीतः—यह तो ठीक है परन्तु साइंस ने और कितने ही लाभ पहुँचाये हैं, समुद्री जहाज, गाड़ी, मोटर, वायुयान और साइकल आदि ने मनुष्य के जीवन को आरामदेह बना दिया है ।

सुनीलः—आप भ्रम में हैं । आप इसमें लाभ ही लाभ खोजते हैं । कभी देहली को किसी सड़क के मोटर स्टैंड पर खड़े लोगों की लाईनों को नहीं देखा ? मोटर नहीं आई तो कालेज से छुट्टी ! उनसे तो एक पग भी पैदल नहीं चला जाता । घर से थोड़ी दूर भी जाना हो तो साइकल चाहिए । पुराने लोगों को नहीं देखा जो दस-दस कोस तक पैदल चल लेते थे ।

सुनीतः—अजी ! आप तो पुराने ज़माने की बातें करते हैं । यह विज्ञान का युग है । प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि उसे आराम मिले और इसी लिये नित्य नये आविष्कार हो रहे हैं । टेलीफोन, रेडियो, वायर लैस द्वारा समाचार प्राप्ति कितनी सुगम हो गई है ।

और सिनेमा मनोरंजन का कितना उत्तम साधन है।

सुशील: लेकिन तुमने सिनेमा से हो रही हानियां नहीं देखीं। आज सिनेमा ने ही हमारे युवकों के चरित्रों को बिगाड़ दिया है। जिधर देखो “आवारा हूँ, आवारा हूँ” की ध्वनि कानों में पड़ती है। अश्लील, गन्दे और असभ्यतापूर्ण चित्रों को देख देख कर हमारे युवक जीवन-ध्येय को भूल बैठे हैं।

सुनीत:- परन्तु सिनेमा द्वारा हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी का कितना प्रचार हो रहा है। यह सब सिनेमा की ही कृपा है। यह मनोरंजन का भी उत्तम साधन है।

सुशील:- भैया, पर ऐसे सिनेमा से क्या लाभ जो चरित्र को बिगाड़े—और आंखों को कमजोर करे। भाषा का प्रचार अच्छे चित्रों से भी हो सकता है और इसके साथ साथ मनोरंजन भी।

सुनीत:- अच्छा अब देर हो रही है। फिर मिलेंगे।

सुशील:- लेकिन मेरी बात पर ध्यान देना। विज्ञान से हमें जहां लाभ हैं वहां हानियां भी कम नहीं।

सुनीत:- इस से तो मैं भी सहमत हूँ। इसका सदुपयोग किया जाए तो यह वरदान है और दुरुपयोग किया जाए तो अभिशाप! अच्छा*

विकस रहे अब गाँव हमारे !

[स्वामी शरण सकसेना]

★ ॐ ★

विकस रहे अब गाँव हमारे !

नई दृष्टि की नई भावना,

नई दृष्टि के लिए साधना,

बड़े प्रगति के पथ पर मानव—

नई क्रांति ले पाँव तुम्हारे !

विकस रहे अब गाँव हमारे !!

विहंस उठा जगती का कण-कण,

हुआ प्रफुल्लित जन-जन का मन,

युग-युग से पीड़ित वसुधा की—

आज लगी फिर नाव किनारे !

विकस रहे अब गाँव हमारे !!

नियत समय पर गिरता धनजल,

रुकने लगा बिखरता मरु-थल,

नगर-नगर में, डगर-डगर में—

मुस्काये तरु-छाँव सम्हारे !

विकस रहे अब गाँव हमारे !!

स्वयं प्रकाशित हृन्द-धरा पर,

गूँज उठा विश्वास भरा स्वर,

दूर नहीं अब हमसे मंजिल—

सर्वोदय भाव जगा रे !

विकस रहे अब गाँव हमारे !!

★

*नमस्ते !

सुशील:- नमस्ते जी !

★ हमारा विजय दशमी पर्व ★

[लेखक—श्रीचन्द्रदत्त, हैडमास्टर, मेहर भटौली]

राम चन्द्र जी की विजय पताका शीघ्र ही लंका पर फहराएगी और फहरानी भी चाहिए ही। रावण को धर्मपत्नी ने चेतावनी दी, भद्र पुरुषों ने समझाया, आता ने अनुनय विनय की, किन्तु 'मूर्ख हृदय होवे न चेत कितना ही सिख देव'। रामचन्द्र यदि अपने को वश में किये हैं तो वह धूर्त रावण अपने मिथ्याभिमान के गर्व में चूर हो रहा है। एक ओर सर्वोन्द्रियजित भगवान राम और दूसरी ओर इन्द्रियलोलुप रावण है।

रामचन्द्र की कुटिया भारत की सीमा थी और उधर रेखा के आगे सम्भवतः दुष्ट रावण का पाकिस्तान बनने जा रहा था। वह साध्वी सीता को उस पाकिस्तान में हर ले गया। महात्मा गाँधी तथा जवाहर इस कौतुक को पहले ही जानते थे, किन्तु मजबूरन भारत माता के समीप से रावण का मारीचिका हिरण लार्डमाउटवेदन गुजारा गया।

जिन्ना साहेब के प्रतिनिधि, लियाकत अली खां ने अपनी लंका कराची में परकोटा बनवाया। अशोक वाटिका में सीता के मुक्त कराने को मृदुला वहिन आदि सखियां भी भेजी गईं, परन्तु आधुनिक रावण

ने किसी की न सुनी। आता विभीषण ने अपने वंश के कल्याण के लिये समझाया, किन्तु दुष्ट प्रकृति पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ। खां ब्रदर्स ने भी अपने भाई लियाकत को भारतवर्ष के कर्णधारों की साधुता से अवगत कर दिया, परन्तु बदले में जीवन की स्वतन्त्रता ही खो ली। बीबी फातिमा ने भी अपने राज्य में त्रुटियां देखीं और प्रधान मंत्री को चेतावनी दी, परन्तु 'कर्मगति टोरे नहीं टरै'। इसमें क्या सन्देह है कि विभीषण आता (खां भाइयों) को अपने सच्चे हितैषी के पास शरण लेनी पड़े—नहीं लंकाधिपति बनकर रामचन्द्र द्वारा राज्याभिषेक करवाए।

दुष्ट रावण की हत्या के लिये क्या रचवाए विधि ने रचीं। 'बापू' दशरथ वियोग रूपी गोली का निशाना हुए। पटेल ने गृह-विभाग को भरत की भांति सम्भाला। राजर्षि टण्डन राजगुरु की अनुमति से सर्वत्र आनन्द ही आनन्द रहा। इधर अब 'बापू' के प्रतिनिधि नेहरू ने जब से कार्य भार संभाला है रावण को राजदूतों द्वारा शांति पूर्वक मान जाने को कह रहे हैं, किन्तु (शेष पृष्ठ २७ पर)

स्वास्थ्य सुधार

मंजन बनाइए

दंत मंजन बनाने की विधि भी बहुत ही सरल है जिस के लिये हम बाजारों में बहुत सा पैसा व्यय कर देते हैं। शुद्ध दंत मंजन बनाने के लिए हमें अपने घर पर बना मंजन ही विश्वास करने योग्य है।

बादाम और अखरोट के ऊपरी कड़े वाले छिलके को अक्सर कूड़ा करकट समझ कर फेंक देते हैं। उनका भी मंजन बनता है। यह जान कर हम एक पंथ दो काज कर लेंगी। मंजन भी बन जाएगा और कूड़ा भी उपयोगी सिद्ध होगा। तो इन छिलकों को इकट्ठा करके लोहे के किसी बर्तन में रखकर एक जलता हुआ अंगारा उन में रख दीजिए इस प्रकार सारे छिलके सुलग जाएंगे और धुँआ होने लगेगा। घर में एक तरफ रखकर खूब धुँआ होने दीजिए उसे जला कर लौ मत निकलने दीजिए। वरन राख हो जाएगी। जब छिलके जलते जलते राख हो जाएं तो पानी डाल कर बुझा दीजिए ठण्डा होने पर उन्हें धारीक पीस डालिए और कपड़े से छान लीजिए। पीसते समय थोड़ा सा नमक और थोड़ी सी काली मिर्च भी डाल दीजिए।

यह भी खूब रही !

किसी समय एक परिवार में पति-पत्नी तथा उनके माता पिता चारों ही

बहरे थे—उनका धन्या खेती बाड़ी करना था। एक दिन लड़का खेती कर रहा था कि एक मनुष्य ने आकर उस से पूछा, 'क्यों भैया इस गांव की राह कहां है।' इस पर लड़के ने कहा, 'मैं बैल नहीं बेचूंगा।' तब आदमी ने कहा, 'नहीं भाई, बैल नहीं पूछ रहा हूँ।' तब लड़के ने कहा, भाग जा यहां से, नहीं तो मारूंगा—इतना सुन कर वह भाग गया। जब लड़के की मां खाना देने आई तो लड़के ने कहा, 'मां एक आदमी मुझ से जबरदस्ती बैल मांग रहा था।' इस पर मां ने कहा, 'क्या बेटा, दाल में नमक कम है, मैं अभी बहू को डाटूंगी।' घर जाकर उसने बहू से कहा, 'क्यों री दाल में नमक कम क्यों डाला।' तब बहू ने कहा, 'सासु जी, मैंने तो गेहूं नहीं बेचे—इनकी बात पिता सुन रहा था, बोला—'लड़ती क्यों हो दाल पीसने का सिल बट्टा तो आंगन में रखा है। यह पढ़ आप कहेंगे यह भी खूब रही !

★

इसे किसी तंग मुँह की शीशी में भर लीजिए दांत भी उज्ज्वल व चमकीले हो जाएंगे और अनुपयोगी वस्तु भी उपयोगी बन जाएगी।

—उर्मिला, माथुर।

१२ आने मन घी

ईसा से ४०० वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त के राज्य में भारत में अनाज के भाव (कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार) इस प्रकार थे :

चावल १), तेल ११), घी १११), दाल १), नमक ११), शकर ११=), मन और कपड़ा १) में पाँच थान ।

उन दिनों भले ही देखने में प्रति व्यक्ति की आय कुछ भी रही हो पर भूखों मरने की कल्पना पुस्तकों में ही की जाती थी । जनजीवन में उसका कोई स्थान न था । यदि ऐसे सम्पन्न काल में किसी विदेशी यात्री ने यहां पर घरों में ताले पड़ते नहीं देखे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

तुगलक के शासन काल में

१८०० वर्ष बाद आज से ६०० वर्ष पूर्व १४वीं शताब्दी में भारत में तुगलकों का शासन था । उस समय भावों में निम्न प्रकार वृद्धि हुई ।

चावल १)१११), तिल का तेल ११=) और घी ११=) मन तथा महीन सूती कपड़ा ३) में १५ गज ।

अकबर के राज्य काल में

२०० वर्ष और बीते । महंगाई बढ़ी पर



१-सूर्य का व्यास पृथ्वी के व्यास से १०८ गुना बड़ा है ।

२-सूर्य के अन्दर १३ लाख पृथ्वियां समा सकती हैं ।

३-संसार में सब से बड़ा रेलवे स्टेशन सोनपुर (भारतवर्ष) का है ।

४-संसार में सबसे बड़ी नदी मिसिसिपी है ।

५-यदि शरीर की छोटी-बड़ी नसों की लम्बाई नापी जाए तो वह ३५०००० मील होगी ।



फिर भी किननी ? अकबर के शासन में भाव इस प्रकार हो गए :

अच्छा चावल ११=), घटिया चावल ११=), दाल ११=), नमक ११) और खांड २११=) मन । इससे पता चलता है कि चावल के दाम ढाई गुना से कुछ अधिक हुए, शकर आठ गुना बढ़ गई किन्तु नमक का मूल्य १६ गुना बढ़ा ।

औरंगजेब के राज्य काल में

एक रुपये में चावल ११ मन, चावल घटिया ११ मन, तेल बढ़िया २१ सेर, तेल घटिया २४ सेर, घी बढ़िया १०१ सेर, घी घटिया १३ सेर ।

चुटकुले

१-जज, 'तुमने साईकल क्यों चुराई ?'
कैदी, 'जी चलाना सीखने के लिए।'

२-उपदेशक, 'अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर चांटा मारे तो तुम्हें अपना दूसरा गाल भी उसके सामने कर देना चाहिए।'

एक आदमी, 'लेकिन अगर कोई हमारी नाक पर घूंसा मारे तो उसके सामने दूसरी नाक कहां से करूंगा ?'

३-राम, (आकाश में देखकर) 'देखा कैसा सुन्दर चांद निकला है।'

श्यामः 'अरे नहीं यह तो सूरज है।'

इस पर दोनों लड़ पड़े। एक कहता चांद है तो दूसरा सूरज बताता। तभी एक व्यक्ति वहां से गुजरा। उन्होंने उस से फैसला करने को कहा। वह बोला, 'क्या बतलाऊं भाई मैं तो परेशी हूँ।'

४-जज, 'मैं तुम्हें दो वर्ष की सज़ा दे रहा हूँ। क्या तुम कुछ कहना चाहते हो ?'

कैदी, 'आप मेरे घर पर कह दें कि मैं खाना खाने आज शाम को न आकर कल आऊंगा।'

५-पिता, (पुत्र से) बेटा कृष्ण कौन थे ?
पुत्र, 'मैं नहीं जानता। आप ही बताएं।'

पिता, 'ला रामायण मैं अभी बताता हूँ।'

बूभिये तो !

(१)

ऊंट की सी बैठक

हिरन की सी चाल

एक जानवर ऐसा

जिसके पूँछ न वाल

(२)

दुबला पतला खाली हाथ

लड़ता बादशाह के साथ

पहन लंगोटा निकेला घर से

भीड़ हो गई गया जिधर से

(३)

एक कमरे के चारों कोनों में एक एक

बिल्ली बैठी है और प्रत्येक बिल्ली के

सामने तीन तीन बिल्लियां बैठी हैं। तो

बताओ कमरे में कुल कितनी बिल्लियां हैं।

(४)

नीली बधियां धौरी पूँछ

बतावे तो बता नहीं उखाड़ू तेरी मूँछ

★

६-पहला मित्र, 'आपके भाई कालेज में क्या हैं ?'

दूसरा मित्र, वह हाफ बैक हैं।'

५० मित्र, मेरा मतलब हाकी या फुटबाल

के खेल से नहीं, पढ़ाई लिखाई से है।'

दू० मित्र, 'पढ़ाई लिखाई में तो वह

फुल बैक हैं।'

गृह-विज्ञान

धब्बे छुड़ाइये

घास का धब्बा

इसको मिथिलेटिड स्पिरिट या मिट्टी के तेल से दूर किया जा सकता है। धब्बे वाले भाग को स्पिरिट या मिट्टी के तेल में भिगो कर रखो। जब धब्बा हल्का हो जाए तो धो डालो।

पान का धब्बा

कच्चा आलू पीस कर धब्बे पर रगड़ो हल्का होने पर धो डालो।

फाउन्टेनपेन की स्याही का धब्बा

फाउन्टेनपेन की स्याही का धब्बा ज़रा मुश्किल से छूटता है। उसे जेवले वाटर से छुड़ाना चाहिए। लाल स्याही का धब्बा ठण्डे पानी में अमोनिया डाल कर या जेवले वाटर से छुड़ाना चाहिए।



*था। उसके प्रभाव से मेरे मन बुद्धि दूषित हो गये थे, इसीसे मैं ठीक २ उत्तर नहीं दे सका। अब युद्ध में अर्जुन के बाणों के लगने से मेरे शरीर का दूषित रक्त निकल गया है और कई दिनों तक उपवास करने के कारण मन शुद्ध हो गया है। श्रीकृष्ण ने मेरी बुद्धि में तत्त्वज्ञान प्रकाशित कर दिया है, इससे मैं इन प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर दे रहा हूँ।' द्रौपदी का समाधान हो गया।

द्रौपदी क्यों हंसी ?

श्रीकृष्ण की प्रेरणा से द्रौपदी के साथ सभी लोग भीष्मपितामह के पास गये, वहाँ उन्होंने ने भीष्मपितामह के चुंह से नाना प्रकार के इतिहास, पुराण के उपदेश सुने।

एक दिन उपदेश के समय ही द्रौपदी को हँसी आ गई। भीष्मपितामह से वह छिपी न रही, उन्होंने द्रौपदी से कहा—'बेटी! मैं जानता हूँ कि तुम बड़ी साध्वी, सदाचार-परायण और मर्यादा में स्थित हो। तुम्हें अकारण हंसी नहीं आ सकती। हंसने का कुछ न कुछ कारण अवश्य होगा। इस समय तुम्हें किस कारण से हंसी आई है?' द्रौपदी ने कहा—'दादा जी! उपदेश सुनते २ मेरा मन दूसरी जगह चला गया था। मैं सोचने लगी कि जब दादा जी ऐसे तत्वज्ञानी हैं, तब इन्होंने दुःशासन के वस्त्र खींचते समय उसे रोककर क्यों नहीं? जुआ भी क्यों नहीं बंद कर दिया? हमें इस बात पर आई कि उस दिन तो बार २ एक प्रश्नपूछने पर आपने मेरा उत्तर नहीं दिया। उस दिन आपका ज्ञान न जाने कहाँ चला गया था, आज यह उपदेश सुन कर एकाएक मुझे उस दिन की बातें याद हो आईं।' इसी से हंसी आ गई।' भीष्मपितामह ने कहा—'बेटी! उन दिनों मैं कौरवों का अन्न खाता था। उसी अन्न से मेरे शरीर का खून और मन बनता*

केवल एक मास के लिए 12½ % की

विशेष रिश्चायत

हमने अपना वर्तमान स्टाक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों का सामान निम्नलिखित दरों पर 12½ % की रिश्चायत देने का निश्चय किया है इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आप को निराश होना पड़े।

* फुटबाल कवर *

1. टी शेप श्वेत कुर्म चमड़ा इङ्गलिश डिजाइन नं० 5 कवर 13-8-0
2. टी शेप कानपुर लंदर 12-8 0
3. उत्तम प्रैक्टिस नं० 5 कवर 13 नग 11-0-0
4. सस्ता प्रैक्टिस नं० 6-8-0
5. टी शेप नं० 4 फुटबाल कवर 11-0-0
6. उत्तम प्रैक्टिस नं० (!) 13 नग 9-0-0
7. चीप (सस्ता) प्रैक्टिस नं० 4 6-0-0
8. टी शेप नं० 3 यूथ फुटबाल कवर 9-0-0
9. उत्तम प्रैक्टिस नं० 3 यूथ, 5-0-0
10. बलैडर नं० 5, 4, 3, फर्स्ट क्वालिटी 2-0-0
11. " " " सैकण्ड " 1-12-0
12. टी शेप थार्न प्रू कुर्म लैडर वाली बाल कवर ... 10-0 0
13. पेटेंट राज कलर वाली बाल कवर 9-0-0
14. उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर 8-0-0
15. यूथ साइज नं० 3 " " 7-8-0

16. वाली बाल नैट वाटर प्रूफ रैग्युलेशन साइज डबल टेप 9-0-0
17. वाली बाल नैट काटन रैग्युलेशन साइज डबल टेप 8-8-0
18. यूथ साइज वाली बाल नैट काटन 7 8-0
19. इन्फ्लेटर (बहुत बड़ा साइज) 5-8-0
20. " (बड़ा साइज) 5-0 0
21. लंदर लेसिज (प्रति नग) 0-2-0
22. विस्त (ऊँची आवाज) 1-0-0

* हाकियां *

23. 36" फुल साइज इंगलिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक 8-0-0
24. 36" फुल साइज ओलैम्पिक 7 8-0
25. 33" मिडल साइज इङ्गलिश रबड़ बाऊंड 4-8 0
26. हाकी बाल स्पेशल क्राऊन 4-0-0
27. हाकी बाल मैच 3-8-0

* नोट :- 1. इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है, 2. प्रत्येक प्रकार के वूट, शूज, पुल ओवर, मफलर, जुराब भी तैयार होते हैं। 3. वज्र करने की मशीनें और रबड़ की मोहरे भी तैयार होती हैं।

*** प्यारा लाल एण्ड सन्ज स्पोर्ट्स डीलर्स ***

जालन्धर शहर (पूर्वी पञ्जाब)

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	-/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and withdrawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices
Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य : १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना । (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना । (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहायता देना । (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना । (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों को रक्षा करना । (६) शिक्षा सुधार विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना । (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति ।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहाँ से भेजा जाता है । कारणवश देर से भी सम्भव है ।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आग्रिम नियत है । बी० पी० से ७॥) है । विदेशों में बी० पी० नहीं जाता । पेशगी १५ शि० भेजें ।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥२) के डाक टिकट भेजें ।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी इसी की वृद्धि की जा सकेगी ।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जायें चाहियें । जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिए भेजें और अपना फोटो भी ।

(६) अप्रकाशित लेख जौटाये नहीं जाते ।

(७) बिज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अक्षरीकृत न हों और जिन के नाम पेशगी आ जायेंगे । रेट निम्न प्रकार हैं ।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)

केवल एक मास के लिए 12½ % की विशेष रिआयत

हमने अपना वर्तमान स्टॉक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों का सामान निम्नलिखित दरों पर 12½ % की रिआयत देने का निश्चय किया है इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आपको निराश होना पड़े।

* फुटबाल कवर *

1. टी शीप श्वेत कुर्म चमड़ा इंग्लिश डिजाइन नं० 5 कवर	13-8-0
2. टी शीप कानपुर लेदर	12-8-0
3. उत्तम प्रैक्टिस नं० 5 कवर 13 नग	11-0-0
4. समता प्रैक्टिस नं०	6-8-0
5. टी शीप नं० 4 फुटबाल कवर	11-0-0
6. उत्तम प्रैक्टिस नं० (1) 13 नग	9-0-0
7. चीप (समता) प्रैक्टिस नं० 4	6-0-0
8. टी शीप नं० 3 यूथ फुटबाल कवर	9-0-0
9. उत्तम प्रैक्टिस नं० 3 यूथ,	5-0-0
10. बलैडर नं० 5, 4, 3, फर्स्ट क्वालिटी	2-0-0
11. " " " सैकरण्ड "	1-12-0
12. टी शीप थार्न प्रू कुर्म लेदर वाली बाल कवर ...	10-0-0
13. पेटेंट राज कलर वाली वान कवर	9-0-0
14. उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर	8-0-0
15. यूथ साइज नं० 3 " "	7-8-0

16. वाली बाल नैट वाटर प्रूफ रैग्युलेशन साइज डबल टेप	9-0-0
17. वाली बाल नैट काटन रैग्युलेशन साइज डबल टेप	8-8-0
18. यूथ साइज वाली बाल नैट काटन	7-8-0
19. इन्फ्लेटर (बहुत बड़ा साइज)	5-8-0
20. " (बड़ा साइज)	5-0-0
21. लदर लेसिज (प्रति नग)	0-2-0
22. विस्ल (ऊँची आवाज)	1-0-0

* हाकियां *

23. 36" फुल साइज इंग्लिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक	8-0-0
24. 36" फुल साइज ओलैम्पिक	7-8-0
25. 33" मिडल साइज इंग्लिश रबड़ बाऊंड	4-8-0
26. हाकी बाल स्पेशल क्राउन	4-0-0
27. हाकी बाल मैच	3-8-0

* नोट :- 1. इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है, 2. प्रत्येक प्रकार के बूट, शूज, पुल ओवर, मफलर, जुराब भी तैयार होते हैं। 3. वजन करने की मशीनें और रबड़ की मोहरे भी तैयार होती हैं।

*** प्यारा लाल एण्ड सन्ज स्पोर्ट्स डीलर्स ***

जालन्धर शहर (पूर्वी पञ्जाब)

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	-/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and withdrawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices
Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना। (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों को रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना। (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहाँ से भेजा जाता है। कारणवश देर से सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आग्रिम नियत है। बी० पी० से ७।।) है। विदेशों में बी० पी० नहीं जाता। पेशगी १२ शि० भेजे।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥३॥ के डाक टिकट भेजे।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकेगी।

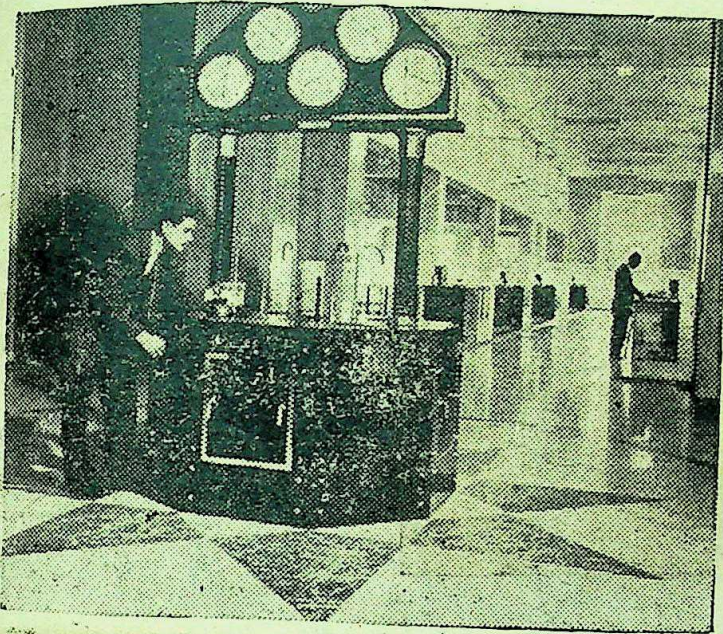
(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जायें चाहियें। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे

५) रु० ब्याक के लिए भेजे और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जाते।

(७) विज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अक्षरीय न हों और जिन के दाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार है।

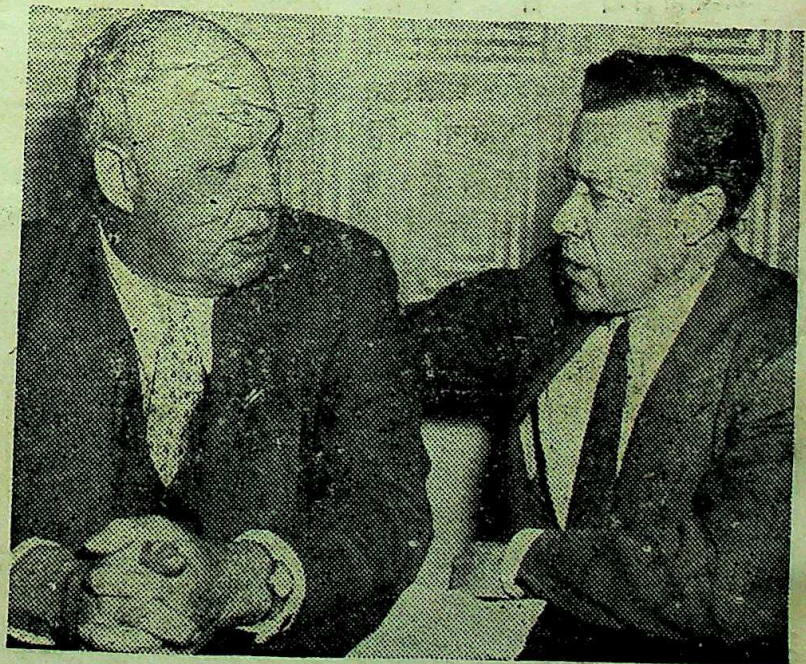
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)



★

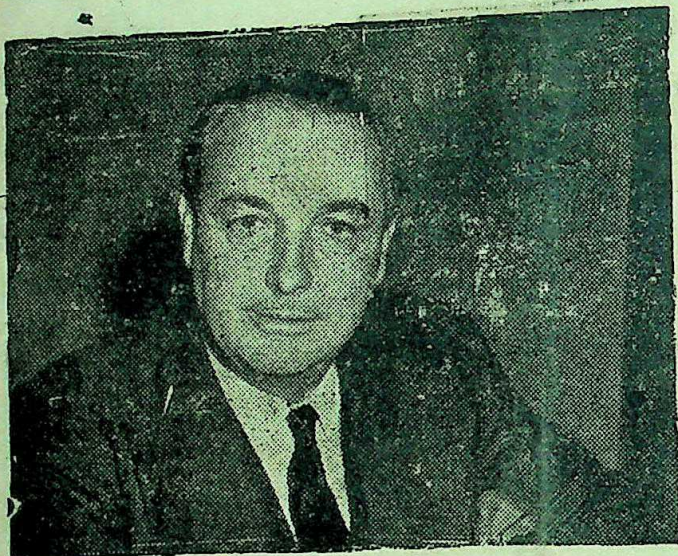
मिश्र ने अगामी ५ वर्षों में ग्रामों में पानी सप्लाई करने की २ करोड़ ६ लाख पौंड की एक योजना बनाई है। इस योजना के लिये आवश्यक सामान ब्रटेन से मिश्र भेजा जा रहा है। चित्र में उस सामान का कुछ भाग दिखाई पड़ रहा है।

★



(बाईं ओर) जॉर्ज मीनो प्रेजिडेंट पैड्रेशन आफ लेबर तथा वाल्टर रिड्थर प्रधान, कांग्रेस आव इंडस्ट्रियल ऑर्गेनाइजेशनज़ अभी अभी परस्पर मिले और कई आवश्यक-समस्याओं पर वार्तालाप हुआ।

‘प्रकाश’ जालन्धर



सर थामस लियोनल डग्गेल
टी० डी० ऐम० पी० जो ब्रटेन
के कृषि मन्त्री हैं। इन्हें अभी
अभी कैबिनेट रैंक दिया गया
है। इनकी आयु ५६ वर्ष की है।

अमेरिका और ब्रटेन में अध्यापक
अध्यापिकाओं का परिवर्तन
चल रहा है। अभी २ इसी योजना
के अन्तर्गत १०० अमेरिकन
अध्यापक अपनी पत्नियों और
बच्चों सहित ब्रटेन पहुँचे हैं। वे
एक वर्ष तक ब्रटेन के स्कूलों में
अध्यापन कार्य करेंगे। इतने
ही ब्रिटिश अध्यापक अमेरिका
गये हैं। चित्र में अमेरिकन
अध्यापकों में से कुछ बातचीत
करते हुए।





वार्षिक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रति ॥४॥



2562
26/6/96

~~गुरुकुल कांगड़ी~~
गुरुकुल कांगड़ी

६ नवम्बर

१९५३



सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी



संयुक्त राष्ट्र संघ के आठवें अधिवेशन की प्रधाना श्रीमती
विजय लक्ष्मी पॉन्डत सैक्रेटरी जनरल हैमर्कजोल्ड
से परावश करती हुई ।

THE "Prakash"

Editor: L.C. HITASHI

1111 INDIR CITY

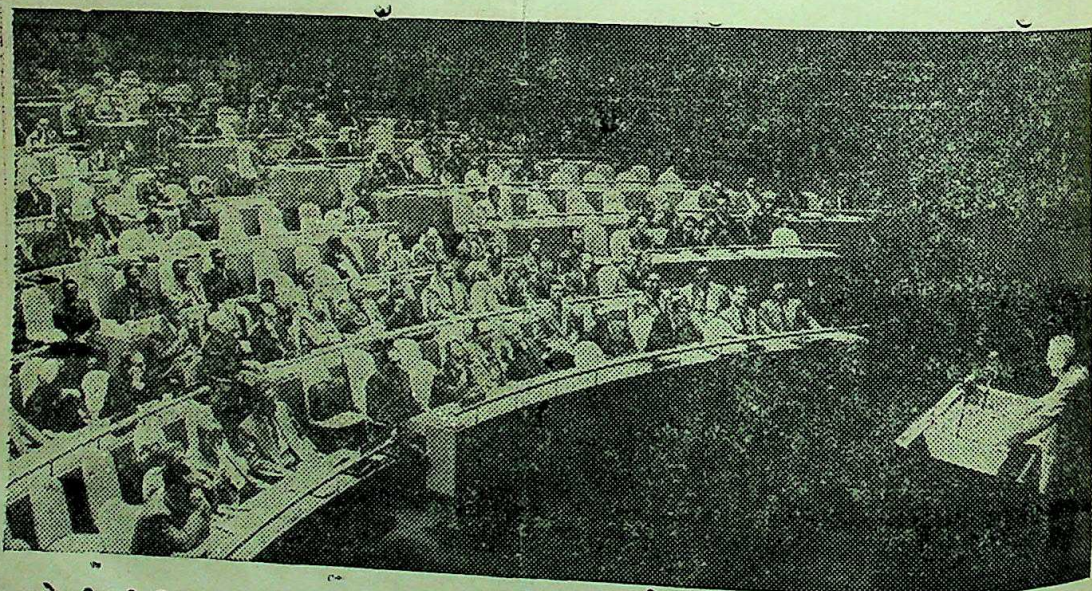


स्योल में

अमेरिका ने २ करोड़ डालर की सहायता दक्षिणी कोरिया को दी है। इस धन से युद्ध पीड़ितों को अन्न और वस्त्रों की सहायता दी जा रही है। चित्र में एक कोरियन स्त्री और बच्चा चावल और डिब्बे का दूध प्राप्त कर रहे हैं।



संयुक्त राष्ट्र संघ का आठवां अधिवेशन



जो श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित की अध्यक्षता में हुआ। चित्र में अमेरिका के सेंक्रेट्री और स्टेट जौहन फौस्टर डुलेस अमेरिका की विदेश नीति का स्पष्टीकरण करते हुए।

पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पैप्सु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत ।

प्राक्काश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४८
क्रमांक ५१

जालन्धर, दीपमाला १९५३

[भाग ५ अंक १०
हिन्दी]

इस अंक में

लेख	५०
रूस में मैं ने क्या देखा ?	७
तलाक वरदान या आभशाप ?	६
शिक्षा के नये तरीके	२०
दीवाली या दीवाला ?	२१
सुगन्धि देने वाला मीनार	२८
कहानियां	
निराशा के मोड़ पर	११
उदारता	१२
कलाकार	२४
कर्त्तव्य पथ	३०
नाटक	
मिथिला	१५
कविताएं	
दीप जलाओ	३
श्री गांधी सतसई	८
धरती और गगन	१८
नवयुग	२५
पा न सकी	२६
आंसू पीकर मुस्कायेगे	२७
दीवाली पर	३१

फुटकर

एक राजपूती प्रेम गीत, यह भी खूब रही,
अपनी बोली 'च, फूल और कांटे, फुलवाड़ी
चुटकुले, पहेलियां, समाचार आदि ।

साथी ऐसे दीप जलाओ !

कभी न बुझने पावे जल कर
फिर वह सब दीप तुम्हारे
फिल-मिल फिल-मिल चमको
जैसे नील गगन के तारे
ज्ञान दीप की सर्व प्रिय ज्योति को
घर घर में तुम फैलाओ
साथी ऐसे दीप जलाओ !

विचलित न होने पावे वह
संकट, आन्धी, तूफानों में
क्रांति ज्योति रहें बढ़ाते
सर्व पीड़ितों के प्राणों में
हृदय दीप की प्रखर ज्योति से
जग परिवर्तन मय बनाओ
साथी ऐसे दीप जलाओ !

ले ले साम्य प्रकाश दीप का
मिट जाए सब अनीति प्रकार
कोना कोना हो ज्योतिर्मय
हट जाये पापी अन्धकार
साम्य लक्ष्मी की कृपा आज
सब के लिए सुलभ बनाओ
साथी ऐसे दीप जलाओ !
श्याम 'राठौर'

प्र० कराची में कार-
मीर के मामले में
फिर मुक्के दिखाए
जा रहे हैं, क्यों ?

—प्रेम नाथ, जम्मू ।

उ० इस लिए कि
खाने को अमेरिका ने उन्हें गेहूं मुफ्त दे दिया
है !

प्र० पाकिस्तान शरणार्थियों की छोड़ी हुई
सम्पत्ति के सम्बन्ध में भारत सरकार से समझौता
क्यों नहीं करता ? — देवी दयाल, देहली ।

उ० क्योंकि वह अपने हाथों अपना दीवाला
निकालने को बुद्धिमत्ता नहीं समझता । सं०

प्र० पाकिस्तान के गवर्नर जनरल मि० गुलाम
मुहम्मद ने दशहरा पर राम की प्रशंसा क्या कर
दी पाकिस्तान में तूफान सा लठ खड़ा हुआ —
मानो वे रावण के वंशज हों ! क्या यही है उनकी

फूल और कांटे

पाठकों के प्रश्न और उनके उत्तर

भ्रम कैसे हुआ ? महात्मा गान्धी से मुहम्मद अली
(खिलाफत आन्दोलन वाले) द्वारा कहे गये ये
शब्द कि 'एक फासक और फाजिर मुसलमान भी
एक अच्छे हिन्दू से महान है' मुसलमानों की
कुत्सित मनोवृत्ति के आईनादार हैं । सं०

प्र० आपके विचार में कोरिया में स्थायी शांति
सन्धि हो पायेगी कि नहीं ? राम शरण, लखनऊ ।

उ० कल क्या हो जाएगा कौन जाने ? अन्त-
र्गष्ट्रीय राजनैतिक स्थिति बड़ी fluid है । किसी
भी मामले में कोई निश्चित सम्पत्ति प्रगट नहीं
की जा सकती ! — सं०

सहिष्णुता जिस का
इस्लाम प्रचार करता
है ? — राम लाल,
अमृतसर ।
उ० आप को इस्लाम
की सहिष्णुता का

—शिक्षा विभाग ने
डी० बी० गर्लज मिडल
स्कूल गुडगाँव और
मिडल स्कूल सठियाला

(अमृतसर) को हाई करने की स्वीकृति दे दी है ।

—इस वर्ष पञ्जाब यूनिवर्सिटी कन्वोकेशन
१६ दिसम्बर को अम्बाला में होगा । डा० राधा
कृष्णन कन्वोकेशन भाषण देंगे ।

—पञ्जाब यूनिवर्सिटी के ५०० कर्मचारी
एक मास के पश्चात हड़ताल कर देंगे यदि उनकी
मांगें स्वीकार न की गईं ।

—पैपु सरकार चौदह वर्ष तक की आयु के
बालक तथा बालिकाओं के लिए निःशुल्क तथा
अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करना चाहती है ।

—भारत सरकार ने ५३-५४ में हरिजन
छात्र-छात्राओं को मैट्रिक के पश्चात की उच्च शिक्षा

शिक्षा समाचार

के लिए दस हजार
छात्र वृत्तियां देने का
निश्चय किया है ।

—श्री रामजीदास

भू० पू० हैडमास्टर गवर्नमेंट हाई स्कूल नन्दपुर
केशो ने अपने पद से च्युत किये जाने की आज्ञा
के विरुद्ध हाई कोर्ट में अपील की है ।

—जालन्धर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड टीचरों को बढ़े
हुए वेतन देने में असमर्थ है ।

—डी० बी० टीचर्स बोर्ड के सैक्रेटरी ने
घोषणा की है कि वे पञ्जाब सरकार के अपने
फैसलों को क्रियात्मक रूप देने के बारे में की
जाने वाली कार्यवाही को ३१ अक्टूबर तक
प्रतीक्षा करेंगे ।

—पञ्जाब यूनिवर्सिटी के कुछ दफ्तर एक
मास के अन्दर २ चण्डी गढ़ आ जायेंगे ।

पहलों पहलों घियो

नकली चलिया सी ते
इसनू खाना शुरू
करन वाले बजारों

लुको के लियौंदे सन

कि कोई दोस्त या रिश्तेदार देख न लवे। इक
समां ओह आया कि सब्भे बनस्पति खान लग
पये ते लोग डालडे दे डिब्बे लई भी परेशान
होन लगगे। ते लोकां डालडा भी नकली बनौना
शुरू कर दिता।

हुन कल्ले घियो दी की गल ? सब्भे कुम्भ
नकली मिल सकदा ए। दुध नकली, सोना नकली,
दवावां नकली होर ते होर दिल भी नकली बन गया
ए। अखां, फेफड़े, लत्तां, बाहां, दन्द, नक
मतबल की सब्भे कुम्भ नकली मिल सकदा ए।
साईंस दी तरकी ने ऐना कुम्भ नकलो बना दिता
ए कि हुन ओह समां भी छेती औन वाला ए जद
असली ते नकली 'च पछान औखी हो जावेगी।

साडी इस दुनिया विच इक होर भी दुनिया

—पनमुनजाम में
संयुक्त राष्ट्र संघ के
अधिकारियों और का-
मुनिस्टों में शान्ति

सम्मेलन सम्बन्धी बात चीत सिरें चढ़ती नज
नहीं आती।

—भारतीय संग्रहक सेना कई कठिनाइयों
का सामना करते हुए अपना कर्तव्य पालन
किये जा रही है।

—काश्मीर को ताकत से हथियाने के लिये
कराची में फिर से मुक्के दिखाये जाने लगे हैं।
एक खातून ने ५० ट्रोंड स्त्रियों को लेकर काश्मीर
में प्रवेश करने की स्वीकृति मांगी है। (संभवतः
काश्मीर का सस्ता चावल और गेहूं खाने को

अपनी धौली च

सब कुम्भ नकली

नकली ए। हसदे हन ते हासा नकली, जे
रोंदे हन ते ओन्हां दे हिंजू नकली, जे ओह
मरदे वी हैन ते नकली ! ओन्हां दे डाक्टर
नकली ते पुलिस वाले भी नकली—गल की
सब्भे कुम्भ नकली। तुसीं पुछोगे कि भाईया जी
दस्सों केहड़ी बे एह दुनिया ! जे तुसीं नहीं
समझे ते लौ सुनो एह बे सिनेमा दी दुनिया !

भाईये नूं तां डर ए कि किधरे ओह
समय भी न आ जावे कि एस दुनियां 'च सब
कुम्भ ऐना नकली हो जावे कि लोक नकली नूं
असली ते असली नूं नकली समझन लग
पैन ते भाईये रेलू नूं भी न पछानन ते कह
देन कि भाईया रेलू भी नकली ए !

★

—भाईया रेलू

समाचार-सार

जी ललचा रहा है।

सं०)

—ईरान की नई

सरकार ने आशा

प्रकट की है 'क तेल के मामले में बृटेन से
शीघ्र हो कोई समझौता हो जायेगा और पुनः
तेल देश से बाहिर जाना आरम्भ हो
जायेगा।

—मिस्र और बृटेन में नहर स्वेज के सम्बन्ध
में अभी समझौता सिरें नहीं चढ़ा।

—इस बार निम्न प्रकार नोबल प्राईज दिये
गये हैं :— साहित्य—मि० चर्चिल, शांति—मि०
जार्ज मार्शल (भू० पू० अमेरिकन सैक्रेटरी आब
स्टेट) डाक्टरी डा० अडाल्फ कर्नेज।

नये स्कूल

पञ्जाब सरकार ग्रामों में प्राइमरी स्कूल खोल रही है जिन में ७५

छात्रों के लिए एक अध्यापक नियत किया जायेगा। शिक्षा निवारणार्थ जितने अधिक स्कूल खुले अच्छा है किन्तु ऐसे स्कूलों के खोलने से क्या लाभ जो धनाभाम में ज्यादा दिन जीवित न रह सके? पहले से चल रहे स्कूलों की अवस्था ही डावांड़ोल है अतः पहली आवश्यकता है उन्हें सहायता देने की।

मैट्रिक परीक्षा में सुधार की आवश्यकता

जहां शिक्षा विभाग प्राइमरी शिक्षा में सुधार करना चाहता है वहां मैट्रिक की परीक्षा में भी सुधार करना चाहिए। हमारा एक सुझाव यह है कि एल्जैबरा और ज्यामैट्री लड़कों के लिए भी ऐच्छिक विषय बना देने चाहिए। अन्य परीक्षाओं की भांति इसकी भी वर्ष में दो परीक्षाएं होनी चाहिए और यदि कोई विद्यार्थी केवल एक विषयमें फेल होजाये तो उसे केवल उसी विषय में दूसरी बार परीक्षा देनी पड़े ऐसी व्यवस्था की जाये। जरा सोचिए कि एक विद्यार्थी मैट्रिक के अन्य सब विषयों में पास है केवल मैथेमैटिक्स में फेल है और उसे एफ० ए० आर्ट्स में करनी है तो उसका एक वर्ष पुनः मैट्रिक की परीक्षा देने में क्यों नष्ट हो? प्रथम तो उसे बिना किसी शर्त के एफ० ए० में प्रविष्ट होने की सुविधा दी जानी चाहिये या अधिक से अधिक इस शर्त पर प्रविष्ट रक लिया जाए कि वह सप्तीमैट्री परीक्षा देकर उस विषय में पास हो जाएगा। ब्रिटेन में ऐसी ही व्यवस्था है।

प्रकाश बाल संघ

२५ अक्टूबर को तीन बजे मध्याह्नोत्तर

सम्पादकीय विचार

कार्यालय में कु० सन्तोष सूरी की अध्यक्षता में हुई। इस में ४०-४५ स्थानीय बच्चे

सम्मिलित हुए। इस सभा का आयोजन सुरेन्द्र रानी (फोर्थईयर) कु० नीलिमा अधीर (फर्स्टईयर) विजय हितैषी प्रभाकर (एफ० ए० छात्रा) की ओर से किया गया था। सर्व प्रथम श्री हितैषी जी ने सभा बुलाये जाने का उद्देश्य बच्चों को बताया। विनय सेठ देवी रानी सूरी, बीणा सहगल और नरेन्द्र सहगल ने कविताएं सुनाईं। कु० गुरुशरण कौर तथा सुमन मैनन ने गीत सुनाए। कु० कमलेश और मीणाक्षी सेठ ने नृत्य प्रस्तुत दिया। श्री प्रताप कृष्ण कालिया तथा नरेन्द्र सहगल ने चुटकुले सुनाये और विनय सेठ ने पहेलियां बुझवाईं। कु० सुरेन्द्र ने एक छोटा सा भाषण मनुष्य के स्वार्थ स्वभाव पर दिया। हितैषी जी ने बाहिर की पाठिका कु० सुदर्शन की कविता और श्री राकेश की कहानी पढ़ कर सुनाईं। कु० सन्तोष सूरी के धन्यवाद और हितैषी जी के सरकार द्वारा बच्चों के प्रति बरती जाने वाली प्रेक्षा सम्बन्धी भाषण के साथ कार्यवाही ५ बजे समाप्त हुई।

—विजय हितैषी

परीक्षा प्रणाली

यह निर्विवाद है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परीक्षा का तरीका दोषपूर्ण है। कई बार एक होशियार छात्र भी घबड़ा कर परीक्षा में असफल रह जाता है अतः पञ्जाब के शिक्षा विभाग द्वारा यह प्रस्तावित सुधार कि ५वीं कक्षा तक अध्यापक छात्र के वर्ष भर के श्रेणी के कार्य की रिपोर्ट पर उसे उत्तीर्णोत्तीर्ण किया करेगे और वर्तमान परीक्षा प्रणाली उड़ा दी जायेगी प्रगति की ओर पहला पग है और प्रशंसनीय है।

★ रूस में मैं ने क्या देखा ? ★

(लेखिका—दिव्या भट्ट)

[स्कूल-शिक्षिका, कोपेनहागेन में हुई विश्व महिला कांग्रेस में भारतीय महिलाओं के प्रतिनिधि-मण्डल की एक सदस्या]

सोवियत संघ में जहां जनता ने अपने लिए सच्ची आजादी जीत ली है, हर घड़ी गहरी दिलचस्पी के साथ हमने वहां के जीवन को देखा। सोवियत संघ को देख कर यह यकीन हो जाता है कि मानव के साहसपूर्ण सपने भी सच्चे हो सकते हैं।

हमने एक ऐसे राष्ट्र को देखा जो बेकारी, गरीबी या वेश्यावृत्ति से अपरिचित है। एक ऐसा देश जहां हर व्यक्ति का ध्यान रखा जाता है, जहां विज्ञान और संस्कृति जनता की सेवा में अर्पित है,—हमें ऐसा लगा जैसे हम कोई अनहोनी चीज देख रहे हों।

सोवियत संघ की अनेक इन्स्टीच्यूटों तथा डाक्टरी संस्थाओं को हमने देखा। हजारों सवाल हमने पूछे और यकीन के साथ हम कह सकती हैं कि देश में सार्वजनिक स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ाने के लिए जो कुछ भी किया जा सकता था, वह सब किया गया है।

सोवियत फैक्टरियों और प्लांटों को देखकर तो हम केवल चकित ही रह गईं। ऐसे मजदूरों को हमने पहले कभी नहीं देखा था जो अपने कारखानों पर उतना ही गर्व करते हैं जितना कि एक माता को अपने पहले शिशु पर होता है।

स्वखानोवित (अग्रणी मजदूर) मारिया रोज़हानोवा से जिसने सामग्रियों में बचत करने का एक नया तरीका ईजाद किया है, मैं ने

पूछा—‘तुम्हारे ईजादकर्ता बनने का स्रोत क्या है?’

एक मालकिन जैसी गम्भीर मुद्रा में जवाब दिया—‘युद्ध के बाद सूती कपड़ों की कमी का अनुभव हुआ। लोगों को अपनी पसन्द या जरूरत का कपड़ा मिलने में कभी-कभी दिक्कत होती थी। फलतः उत्पादन का मसला सामने आया।’

सोवियत मजदूरों के बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन फिर भी यह सोचना मेरी कल्पना से बाहर था कि उनके हित राज्य के हितों से इतनी पूर्णता के साथ मिल गये हैं। मजदूरों को उत्पादन की पूरी जिम्मेदारी खुद अपने ऊपर लेते हुए मैं ने पहले कभी नहीं देखा था।

हमारे देश में रिहायश की स्थिति प्रतिदिन विकट होती जा रही है। यही कारण है जो गृह-निर्माण की योजनाओं और कार्यों में हमने गहरी दिलचस्पी ली। हमें अच्छी तरह से मालूम था कि दुनिया में कोई ऐसा देश नहीं है जहां पुरानों की जगह नये घरों के निर्माण की योजना हो। दुनिया के करीब-करीब सभी नगरों में शानदार महलों और बड़े-बड़े औद्योगिक कारखानों के साथ-साथ गन्दी बस्तियां भी बढ़ रही हैं। केवल मास्को पहुँचने पर ही सावधानी से तैयार की गई योजना के मुताबिक चलने वाले निर्माण-कार्य से हमारा परिचय हुआ, और पुरानों (पृ० १० पर)

★ श्री गाँधी सतसई ★

[ले०—श्री शान्त शास्त्री, 'शालिहास']

(चतुर्थ शतक)

झूठी इच्छा शक्ति ही है चोरी का मूल।

जो है आज विचार में कल पाएगा तूल। १२१

पर विचार या भाव को अपना जो बतलाये।

भाव चोर विद्वान वह, अपना मान घटाये। १२३।

अन्याविष्कृत यन्त्र को कहे ममाविष्कार।

चोरी महती है यही, तथा है मिथ्याचार। १२४।

अस्तेयव्रत पालक, रहे अतः बहु नम्र।

सादा चौकन्ना सदा सद्बिचार औ' कम्प्र। १२५।

अपरिग्रह

परिग्रह करना बुरा, सत्यव्रती के हेतु।

परिग्रह का अर्थ है संचय करे अहेतु। १२६।

यदि करें विश्वास हम परम प्रभु पर पूर्ण।

आवश्यक वस्तु वही देगा प्रति दिन तूर्ण। १२७।

भक्तों का अनुभव यही सोलह आने सत्य।

'आवश्यक' प्रति दिन हमें देगा वही अनंत। १२८।

सामाजिक वैषम्य का मूल परिग्रह जान।

प्रभु में अविश्वास का है यह पूर्ण प्रमाण। १२९।

गैर जरूरी वस्तुएं धनी गृहों में नित्य।

पड़ी सड़ा करती यूँ ही अगणित वा अप्रयुक्त। १३०।

औ' अभाव में उन्हीं के कोटि कोटि जन यूथ।

फिरे भटकते भूख के मारे खाते जूठ। १३१।

आवश्यकता वश यदि जमा: करें सब लोग।

तंग न होंगे निधन जन पावे वे समभोग। १३२।

परिग्रह वश ही तो हैं धनि निधनी सब तंग।

लोभाधिक्य अतोषता के हैं ये सब ढंग। १३३।

लखपति होना चाहता कोटि अरबाधीश।

तो भी हो अतृप्त वह धुनता रहता शीश। १३४।

मन में है कंगाल के लखपति पद की चाह।

उदरम्भर होकर भी वह भरता रहता आह। १३५।

पर हक है कङ्काल को पाए वह भर पेट।

औ' समाज का धर्म है दे उस को भर पेट। १२६।

अतःएव कंगाल के पेट पूर्ति करणार्थ।

उतना खुद ही छोड़ दे धनी निधन भरणार्थ। १२७।

अतिपरिग्रह त्याग दे धनी स्वयं भर पेट।

पाजाएँ कङ्काल तब हो न जूठ से भेंट। १२८।

जो है मनसा कर्मणा पक्षीवत् दिग्वास।

है आदर्शाऽपरिग्रही, संचय सदा उदास। १२९।

रोज रोज फिर अन्न की अभिलाषा भगवान।

स्वयं करेगा पक्षीवत् परी पूरण काम। १३०।

दृष्टि रख आदर्श पर करें परिग्रह जांच।

जैसे जैसे कम उसे करें, न आवे आंच। १३१।

नहीं परिग्रह वृद्धि है सभ्य संस्कृति रूप।

स्वेच्छा और विचार से तन्निग्रह तद्रूप। १३२।

गैर जरूरी प्रतिग्रह प्रतिवेशी की चोर।

वृत्ति को उत्साह दे करता उसको चोर। १३३।

आवश्यकता हास में हैं समर्थ सब मर्त्य।

जैसे जैसे कम करें पावे मोद अमर्त्य। १३४।

वस्तुवत् ही 'विचार' का परिग्रही न होय।

व्यर्थ ज्ञान मास्तिक में रखे, सो ऐसा होय। १३५।

जो विचार ईश्वर विमुख करते हों—हों व्यर्थ।

उक्त परिग्रह में गणित हैं वे त्याज्य निरर्थ। १३६।

आज ज्ञान के नाम पर करते जो निस्सीम।

अर्जन, वह अज्ञान है हानि कारक भीम। १३७।

किन्तु परिग्रह छोड़ कर बने न उद्यम हीन।

बने प्रवृत्तिमय प्रतिक्षण सत्साधन लीन। १३८।

सेवाधर्मी हम रहें क्षण न कर्म विहीन।

सारासार विवेक को सीखें बने अदीन। १३९।

जन सेवा रत मनुज को है यह प्राप्त विवेक।

स्वतः, सहज, अतएव वह है सत्य सेवक नेक। १४०।

★ तलाक-वरदान अथवा अभिशाप ? ★

आधुनिक शिक्षित युवतियों की ओर से तलाक की मांग का समर्थन काफी बढ़ रहा है। लेकिन शायद पश्चिम की अन्वाधुनिक नकल करने की दौड़ में वे उन दुष्परिणामों का ध्यान नहीं करती, जो आज पश्चिम में हो रहे हैं। यदि एक बार भी भारत में तलाक की आज्ञा दे दी गई, तो यहां भी वह अवस्था पैदा न हो जाएगी, जो पश्चिमी देशों में हो गई, इस बात की क्या गारण्टी है ? कुछ घटनाएं नीचे देते हैं :-

ऐसे ऐसे तुच्छाति-तुच्छ कारणों से अमेरिका में पति अथवा पत्नी को तलाक की आज्ञा मिल जाती है कि सुन कर आश्चर्य होता है। उदाहरण के लिये वहां एक व्यक्ति को तलाक आज्ञा मिल गई कि उसकी पत्नी अपना अधिक समय 'गाफ' खेलने में बिताती है। एक दूसरा मजे का मामला इस प्रकार है कि एक स्त्री के जुड़वां बच्चे पैदा हुए। पति के नालिश करने पर अदालत ने यह राय दी कि जुड़वां बच्चे एक ही माता से, पर दो विभिन्न पिताओं से उत्पन्न हो सकते हैं। इस अद्भुत दलील के आधार पर स्त्री व्यवहारिणी प्रमाणित की गई और पति को तलाक की आज्ञा मिल गई। शिकागो की मिसेज़ लेवो नाम की एक स्त्री ने अपने पति को केवल इस कारण से तलाक दे दिया कि वह अपने गले से नाना प्रकार की बोलियां निकालता है। जर्टीशिन नाम की एक दूसरी स्त्री को इस कारण से तलाक की आज्ञा मिल गई कि उसका पति जो एक चित्रकार था, उसे एक खास 'पोज' में रख कर चित्र खींचना चाहता था ! इसी प्रकार सानफ्रांसिस्को के एक कलाकार को सदा अपने बालों को 'लहरदार'

बनाये रखने के कारण अदालत ने पत्नी से अलग होने और प्रतिमास स्त्री के भरण पोषण का खर्चा देने के लिए बाध्य किया है। जज की इस न्यायपरायणता की बलिहारी है ! सेण्ट लुई की एक स्त्री ने अपने पति के विरुद्ध नालिश की कि वह गुसलखाने में मछलियों को रख कर पालता है। केवल इसी कारण से उसे तलाक की आज्ञा मिल गई। एक उपन्यास-लेखक की स्त्री ने पति को इस लिये दोषी पाया कि वह अपने मित्रों को अपनी कहानियां पढ़ कर सुनाता है। अदालत ने उसकी फरियाद सुनी और चट उसके पति के खिलाफ तलाक का हुक्म सुना दिया।

केवल अमेरिका में ही नहीं, यह अद्भुत बीमारी यूरोप में भी फैली हुई है। प्राग (आस्ट्रिया) की खबर है कि वहां एक स्त्री ने इस लिये अपने पति के विरुद्ध तलाक का मामला चलाया कि वह अपने 'पलैट' में कबूतरों को पालता था। पेरिस की एक नवयुवती स्त्री ने अदालत में अपने पति के विरुद्ध यह शिकायत करके तलाक की आज्ञा चाही कि वह बड़े खोरो से खुरांटे भरता है और उसकी नींद में विघ्न डालता है। एक दूसरी स्त्री ने यह शिकायत करके अपने पति से अलग होने की आज्ञा प्राप्त कर ली कि वह उसे शाकाहारी बनने पर जोर देता है और वह बिना मांस के रह नहीं सकती। फ्रांस में होने वाली एक दूसरी मजेदार बात का पता चला है। वह यह कि वहां पति-पत्नियों के बहुत से जोड़े आपस में सलाह करके झूठमूठ तलाक का मामला खड़ा करके एक दूसरे से अलग होने के

(पृ० ७ का शेष)

की जगह परनये घरों को उदय होते हुए देखा ।

शिशु राष्ट्र की अत्यन्त मूल्यवान् निधि होते हैं । सोवियत स्कूलों, किएडरगार्टेनों, पुस्तकालयों, पात्रोनियर प्रसादों और बच्चों के कैम्पों को देखकर हमें यकीन हो गया कि सोवियत बच्चों को श्रेष्ठतम शिक्षा और पालन-पोषण की तमाम परिस्थितियां प्राप्त हैं । हर शिशु को सच्चा मानव बनने का पूरा अवसर मिलता है ।

हमने आपेरा और वैंले (गीति नाटक और नृत्य नाटक) देखे, जातीय नृत्यों के हमने दर्शन किये । नाट-घरों में हर धन्धे के लोगों से हमारी मुलाकात हुई — मजदूरों से, सामूहिक किसानों से, विक्रेताओं और गृहिणियों से जो कला का आनन्द लेने आये थे ।

इतने सादे और साथ ही इतने सुसंस्कृत तथा सुशिक्षित लोग हमने पहले कभी नहीं देखे थे जितने कि सोवियत संघ में देखने में आये ।

हमने साफ रूप में देखा कि समृद्ध आध्यात्मिक तथा भौतिक जीवन के लिए जरूरी तमाम बातों को सहज-सुलभ बनाकर सोवियत सामाजिक प्रणाली ने जनता को खुशहाली हो प्रदान नहीं की है, बल्कि खुद मानव को भी बदल दिया है ।

हां, मैं मारिया रोज़ानोवा से सहमत हूं । उसने कहा था कि वह अपने आपको दुनिया में सबसे सम्पन्न महिला समझती है । बिला शक, उसका कहना ठीक है : सोवियत सरकार उसके स्वास्थ्य और शिक्षा का सतत ध्यान रखती है । संगीत और साहित्य को उसने उसकी सेवा में लगा दिया है, और उसने काम तथा विश्राम का अधिकार उसे प्रदान किया है ।

❶

(पृ० ६ का शेष)

बाद विवाहित जीवन से भी अधिक घनिष्ठता के साथ सुख पूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं । तलाक का क्या कारण था ? केवल यह कि जब तक स्त्री पति के साथ बन्धन में बन्धी हुई है तब तक उसे पैतृक उत्तराधिकार की सम्पत्ति प्राप्त नहीं हो सकती ।

इस लिए उक्त रूप से पूर्णलिखित सम्पत्ति प्राप्त करके दोनों आनन्द पूर्वक रहने लगते हैं ।

न मलूम जब तलाक की नौबत आजाए और सबूत की जरूरत पड़े, इस ख्याल के बहुत से युवक तथा युवतियां विवाह निश्चित हो जाने पर विवाह के कुछ समय पहले अपने किसी मित्र को एक पत्र लिख देते हैं कि उनकी इच्छा के विरुद्ध माता पिता की जबरदस्ती से विवाह होने जा रहा है और बड़े करुण शब्दों में वे अपना 'दुखड़ा' रो देते हैं, यद्यपि बात बिल्कुल बेबुनियाद होती है और विवाह उन्हीं की रज़ामन्दी से होता है । विवाह हो जाने के बाद मौका आने पर सबूत के बतौर मित्र के द्वारा उक्त पत्र पेश कर दिया जाता है और विवाह रद्द हो जाता है ।

क्या भारतीय महिलाये आगे बढ़ने से पहले दो चरण इन पंक्तियों पर विचार करने का कष्ट उठावेंगी ?

यदि वे गम्भीरता से विचार करेंगी तो उन्हें इस निष्कर्ष पर पहुँचने में देर नहीं लगेगी कि तलाक वरदान नहीं प्रत्युत अभिशाप है !

मनुष्य के लिए बन्दर की आंखें

अदन का समाचार है यमन के दो आदिमियों की एक अमेरिकन डाक्टर ने खराब आंखें निकाल कर बंदरों की आंखें लगा दी हैं । अब दोनों देख सकते हैं ।

★

★ निराशा के मोड़ पर ★

(लेखक—श्री 'राकेश' डलहौजी)

वह ठिठक कर रह गया। चेतना के चारों पट विकराल भय के झुकोरों से खटखटाने लगे।

रजनी की गहन कालिमा तथा प्रशान्त नीरवता में स्वयं को एकाकी, निराधार और निरीह सा जान वह उद्विग्न हो उठा। कुछ भी न दीखते हुए सब कुछ देख लेने की खातिर उसने अपने आतुर नेत्र चारों ओर पसारे किन्तु प्रगाढ़ कालिमा में वे भी उद्योति-विहीन से बन गये।

हां, कानों में केवल यही आवाज़ रह कर मुखरित होने लगी—'कहां जा रहे हो ? इतना अन्धकार है, कुछ भी सुझाई नहीं देता किन्तु फिर भी तुम हो कि चले ही जा रहे हो !'

'रुक जाओ, मैं कहती हूं रुक जाओ ! मेरा कहना मान लो !'

'रुक जाऊं ?' उसके मुंह से अनायास ही निकल गया—'मैं रुक जाऊं ! नहीं नहीं, मैं नहीं रुक सकता। मैं नहीं रुक सकता !'

वह सचमुच न रुका और पुनः लम्बे २ डग भरता हुआ आगे बढ़ने लगा।

विचार—शृंखलाओं से भिड़ता हुआ वह आगे ही आगे बढ़ता जा रहा था.....जय किस की होगी यह अभी तक अनिश्चित ही था।

दो चार पग बढ़ते ही उसे फिर कुछ न कुछ सुनाई देता किन्तु यह सब सार्थक होता हुआ भी निरर्थक था—उस की अचेत अनुभूति के समान 'विचल अन्तर्त्मा के सामने।

'रुक जाओ मूर्ख ! क्यों अपने जीवन को बरबाद करने पर तुले हो। वह देखो, सामने सरिता की उन्मत्त तरंगें तुम्हें आलिंगन में भर लेने के लिये कितनी विकल हैं। तू वहीं क्यों

बह जाना चाहता है। सोच लो अब भी समय है। तू मिट जाएगा। तेरा निशान तक भी बाकी न रहेगा।

यह ठीक है कि तू निराश है दुखी है लेकिन ऐसे भी तो जीवन नहीं चलता। तू मानव है। तुझे जीवन है मिला केवल जीने के लिए। मर कर तो फिर जिन्दगी नहीं मिलती। और फिर यह असीम जगत का समस्त ऐश्वर्य तेरा है—केवल मानमता के नाते।

इस में जीने के लाखों बहाने हैं, यदि कोई जीना चाहे तो। फिर तुम कहां भागे जा रहे हो, कायरों की भान्ति निज विश्व से।

'मैं फिर कहती हूँ कायर न बन रुक जा !'

'मैं कायर हूँ क्या ?' वह रुक कर फिर सोचने लगा—'नहीं नहीं मैं कायर नहीं। मैं... मैं...तो फिर क्या हूँ ?' और इसी प्रश्न की झंकार के साथ वह वहीं सरिता के किनारे किसी शिला पर धड़ाम से गिर पड़ा।

सोचा—'मैं मानव हूँ, यह भी ठीक है।

यह विशाल जग मेरा है—इसमें जीना मेरा परम्परागत अधिकार है—यह सर्वथा सत्य है। लेकिन मैं जिऊँ किस अधिकार से, जबकि दुनिया में मैं अधिकार रहित हूँ। यह अपना जग भी वेगाना है। इसमें करुणा की झलक मात्र भी नहीं। सहानुभूति लेश मात्र को नहीं।' इसी संकल्प विकल्प के साथ घंर की समग्र दयनीय दशा उसकी शून्य आंखों के सामने घूमने लगी।

'माँ को बीमार हुए लग भग दो मास बीत रहे हैं। उसकी हालत दिन प्रति दिन खराब होती

[शेष पृष्ठ १८ पर]

एक शिवाप्रद रोचक कहानी—

★ उदारता ★

[लेखक—श्रीयुत् जयराम सन्तोष शम्भूदवी]

‘एक पैसा ! ईश्वर के नाम पर बावा’

‘माफ करो बावा’

‘एक पैसा भला हो’ फकीर ने नम्रतापूर्वक कहा !

‘माफ करो बावा—बावा माफ करो’ अमीर ने कुछ तीखे होकर आवेश में कहा।

उसके नाम पर—बूढ़ा प्रातः से अन-जल रहित है’

‘जाते हो कि नहीं?’ अमीर ने आपे से बाहिर होते हुए कहा।

‘अच्छा बावा ईश्वर तुम्हारा भला करे’ बूढ़ा फकीर गुनगुनाता हुआ चल पड़ा।

‘कितने ठीठ होते हैं यह लोग। पीछा छुड़ाना भी कठिन हो जाता है।’ यह बात अमीर ने अपने साथी से एक ही सांस में कह दी। ‘जब तक इन्हें डांट न बताई जाए दुष्ट टलने का नाम ही नहीं लेते।

न मालूम वह इसी तरह और क्या कहता रहा ? ★

‘ओह दस हजार !’

मार्ग पर चलते हुए फकीर ने एक बड़ा हुआ बटवा उठा का नोटों का बण्डल गिन कर उछलते हुए कहा।

‘आयु भर के लिए दर दर भटकने से छुटकारा—दुःख व दरिद्रता का अन्त—सुख ऐश्वर्य की कुञ्जी’ फकीर की विचार प्रगति बहुत ही तीव्र वेग से उड़ान में वियुक्त हो उठी।

‘एक अति सुन्दर कोठी, सवारी के लिए गाड़ी और सेवा में तत्पर रहने के लिए नौकर चाकर।

इसी को तो कहते हैं, ‘छप्पर फाड़ कर देना’ फकीर ने बटवे को उसी प्रकार बन्द करके हवा में उछालते हुए कहा।

‘मैं कितना भाग्यशाली हूँ। हजारों रुपये का अकेला मालिक’ उसकी आंखों में खुशियां तथा अधरों पर मन्द मुस्कान नाच उठी। वह बटवे को उलट-पलट कर ध्यान पूर्वक देख रहा था।

‘किन्तु हाय’ फकीर ने लम्बी सांस भर कर कहा।

‘उस बेचारे की क्या दशा होगी ? जिसके हाथ से इतनी बड़ी पूंजी निकल गई है।’ फकीर की विचार तरंग ने अकस्मात् पलटा खाया। वह एक टक बटवे की ओर रहस्य पूर्ण दृष्टि से निहारता रहा।

‘मेरा घर खुशियों के दीपकों से जगमगा रहा है, और उसके घर घोर अन्धकार का राज्य होगा, मैं प्रसन्नता से फूला नहीं समाता, और उसे जैसे सारे संसार के विषैले बिच्छु एक साथ डंक मार रहे होंगे।’ वह चुप हो गया जैसे अपने मन में कुछ फैसला कर रहा हो।

‘तो क्या यह मुझे उसके स्वामी को सौंप देना चाहिए?’ वह फिर उसी प्रकार सोच विचार के सागर में डूब गया।

‘वाह ! मैं क्यों लौटाऊँ जब ईश्वर ने मुझ पर कृपा की तो मैं कृतघ्न क्यों बनूँ ? अब इस पर उसका कोई अधिकार नहीं है। यह मेरा हो चुका है, हां मेरा ! अब इसे मुझ से कोई छीन भी नहीं सकता, और अब किसी को यह अधिकार है। भी कहां कि मुझ से इसे छीन ले।’

इसी उधेड़बुन में बटवा हाथ से छूट कर धरती पर गिर पड़ा। जब वह उसे उठाने के लिये झुका तो अपने धूलि लिप्त पैर तथा जीर्ण शीर्ण वस्त्र दृष्टिगोचर होते ही जहां का तहां खड़ा रह गया। जैसे उसे कोई भूली बात अकस्मात् स्मरण हो उठी हो।

‘यह मेरा है!—पर कैसे?’

वह कभी बटवे की ओर कभी अपनी ओर देख रहा था।

‘नहीं यह मेरा नहीं—इस पर मेरा किंचित मात्र भी अधिकार नहीं।’

‘क्या मैं ने इसे पाने के लिये प्रयत्न किया है; क्या मैं ने इसके लिये खून पसीना एक किया है, क्या यह भारी रक्म मेरे निरन्तर परिश्रम का फल है, और क्या मैं ने इसकी प्राप्ति के लिये तद्वीर सोचने में कितनी ही रातों आंखों में काटी है?’

‘नहीं, नहीं, कदाचित नहीं।’

‘तो फिर यह मेरा कैसे हो सकता है? मैंने अपने आपको कष्टों में नहीं डाला, असहाय वातावरण की गर्मी सर्दी को सहन नहीं किया। तब मेरा इस पर कैसा अधिकार?’

‘किसी को धोखा देकर, किसी का हक छीन कर, और पता नहीं कैसे यह पूँजी जोड़ी गई होगी, और अब इसे मैं डकार जाऊँ? नहीं यह मुझ से नहीं हो सकता।’

‘किसी की आशाओं को कुचल कर स्वयं सुख भोगूँ; एक कितना बड़ा पाप है यह! धिक्कार है ऐसी सुख सामग्री पर, जो किसी की गाढ़े पसीने की कमाई को छल कर प्राप्त की जाए। मेरी अन्तर आत्मा मुझ से घृणा रखी है। मानो मैं हत्यारा हूँ, किसी निर्बल निरपराधी के खून से हाथ रंग रखे हैं, यह धन मेरे मन की शांति को नष्ट कर देगा। यह माया

नहीं आग है, जो मुझे भस्म कर देने के लिये प्रज्वलित है, क्या मैं इन नरकमय लपटों की लपेट में आ जाऊँ।’ अपनी वास्तविक प्रसन्नता से वञ्चित हो जाऊँ नहीं यह मुझ से होना सम्भव नहीं। इधर इस माया की मादकता मुझे मेरे कर्तव्य पथ से विचलित कर देगी, उधर इसका वियोग इसके स्वामी को सुखा २ कर कांटा बना देगा। इसको अपनाते से न मैं चैन से रह सकूँगा और नां ही वह भाग्यहीन मनुष्य इस जान लेवा सदमे को सहार सकेगा।’

‘मैं अपनी स्वाधीनता तथा निश्चिन्तता को, मन की पवित्रता को, इस माया के बदले नहीं बेच सकता। हां मैं दो दिलों की आशाओं को काल का ग्रास नहीं बना सकता।’

‘मैं इसे लौटा दूँगा, यह मुझे लौटाना ही होगा। जब तक लौटा नहीं देता मुझे कभी शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती और नहीं मैं स्वतन्त्रता पूर्वक जीवित रह सकता हूँ।’

दूर एक भारी जमघटा सा दिखाई पड़ रहा था। फकीर उसी ओर चल दिया।

‘अजी जेब से भी कभी बटवे निकल कर गिरे हैं। यह तो किसी की बदमाशी है।’

‘हां किसी जेबकतरे की ही करतूत है।’

‘इन बदमाशों की कोई रोक थाम नहीं होती पत्रों में भी प्रति दिन यही समाचार छपते रहते हैं।’

‘बस साहेब पुलिस में रपट दिलवाने के सिवा कोई चारा नहीं।’

सारांश यह कि जितने मुँह उतनी बातें। भिखारी पास यह सब कुछ देखता और सुनता रहा। बीच में एक मनुष्य घबराया सा खड़ा था। प्रतीत होता था कि इसी का बटवा खो गया है। भिखारी ने भट पहचान लिया कि यह वही मनुष्य है जिसने एक पैसे के

एक राजपूती प्रेम-गीत

(ले०—श्रीमती सरोजिनी नायडू)

पार्वती—(खिड़की में से)

मेरे प्रियतम ! यदि तू तुलसी का फूल होता तो मैं तुझे अपने बालों में पिरोती । यदि केवड़े की रुह होता—जिसने आज मेरे रेशमी वेष को सुगन्धित बना रखा है, तो मैं तुझे इस दुपट्टे में लगाती जिसे मैं किनारी लगा रही हूँ ।

हृदयेश ! यदि तू एक सुन्दर पंखा होता (जैसा कि एक मेरे समीप पड़ा है) या एक

बदले कितनी ही झिड़कें दी थीं ?

भिखारी झिड़कियों का बुरा नहीं मानते । यदि वह ऐसा अनुभव करे तो मांगे ही क्यों ?

उसने बिना झिझक आगे होकर बटवा अमीर की ओर बढ़ा दिया ।

‘ज्ञा करना आपको बहुत कष्ट हुआ होगा । यह मुझे राह में पड़ा मिला था । मैं इस पर अपना कोई अधिकार न समझते हुए आपकी चीज़ आपके सुपुर्द करता हूँ । यह कह कर फकीर चलने लगा ।

सब चकित रह गये, और अमीर की तो यह दशा थी ‘कि एक रंग आता था और एक रंग जाता था । वह धम से फकीर के चरणों में गिर पड़ा और तत्पश्चात् सौ रुपया निकाल कर अर्पण करते हुए गिड़गिड़ा कर कहा—‘यह भेंट आपको अवश्य स्वीकार करनी होगी । मैं आपका.....’—फकीर बीच में ही बोल उठा और उसके हाथ से नोट छीन कर उसके मुख पर दे मारे ।

‘परमात्मा के नाम पर एक पैसा न दे कर अब यह घूस देकर अपनी उदारता दिखाने चले हो ? ध्यान रहे ईश्वर के भक्त कभी घूस नहीं लेते ।’

चांदी का दीपक (जो मेरे शयनागार में इस समय जल रहा है) तो मेरे प्रियतम ! वह क्या ही सुखमय जीवन होता हमारा । फिर मुझे द्वेषी रात्रि की क्या चिन्ता होती जो मेरे और तेरे मध्य में वियोग के अन्धेरे और शोकमय परदे डालकर लज्जा पैदा कर देती है ।

जङ्गली मक्खियो ! दौड़ो बाग की ओर जहां सूर्य अस्त हो रहा है ।

जंगली तोतो ! पश्चिम के बागों की ओर ।

आ ! ऐ मधुर नाजुक और आकर्षक अन्धियारी और मेरे प्रियतम को मुझ से मिला दे ।

अमरसिंह (घोड़े की जीन पर से)

प्रेयसी ! यदि तू बाज होती तो मेरे हाथ पर बैठी हुई पंख फड़फड़ाती (जिसके गले के घूंगरू चलते समय बजते हैं) यदि तू बगले का पंख होती तो मैं तुझे अपनी पगड़ी में टांग लेता । यदि तू वह चमकीली तेज आबदार और अजेय खड़ग होती जो मेरे पहलू में लरजती रहती है तो मैं किनना पाग्यशाली होता ?

प्रेयसी ! यदि तू मेरे शत्रुओं के विरुद्ध एक तीर होती । कठिन यात्रा के लिए सदैव साथ रहने वाली आशीर्वाद होती, तो हृदयेश्वरी ! प्रातः के नक्कारे की चोटें तुझे मुझ से कैसे पृथक् कर सकती ? हमारा मधुर मिलन दिन चढ़ने के कारण यूँही क्यों समाप्त हो जाता ?

जंगली हिरणो ! जल्दी करो उन खेतों की ओर जहां सूर्य की अन्तिम रश्मियों के तीर टूट टूट कर लुप्त हो रहे हैं । जंग के घोड़ो ! भागो पश्चिम के प्रामत्तेयों की ओर, और ऐ शान्तिमय मधुर रात्रि ! सुख और आनन्द भरी अन्धियारी के गिलाफ को लिये हुए आ और ले चल मुझे मेरी प्रेयसी के पास । (अनूदित)



एकांकी नाटक—

★ मिथिला ★

(ले०—डा० कृष्णदत्त जी भारद्वाज, एम. ए., पी. एच. डी. आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

पहला दृश्य

स्थान—सिद्धाश्रम । समय—प्रातःकाल ।

[मुनियों की मण्डली विराजमान है । विश्वामित्र जी श्रीराम-लक्ष्मण से वार्तालाप कर रहे हैं]

राम-गुरु जी ! आपकी कृपा से कल हम दोनों भाइयों ने ताड़का, मारीच, सुबाहु आदि राक्षसों का अन्त कर दिया । आज हमारे लिये आपको क्या आज्ञा है ?

विश्वामित्र - बरस ! तुम दोनों की वीरता से मुझे बड़ी प्रसन्नता है । मुझे ही क्या, इस सारी मुनिमण्डली को यह जानकर बड़ा हर्ष हो रहा है कि अब हमारे यज्ञ-हवन आदि धार्मिक कार्यों में कोई बाधा नहीं पड़ेगी । अब मेरी इच्छा है कि तुम दोनों भाई हम लोगों के साथ मिथिला चलो ।

लक्ष्मण - गुरुदेव ! मिथिला में किसका राज्य है और कौन २ सी वस्तुएं दर्शनीय हैं ?

विश्वामित्र-कुमार ! मिथिला में राजा जनक का शासन है । वे अपनी निष्काम कर्म-निष्ठा के लिये बड़े प्रसिद्ध हैं । राज्य का सब काम करते हुये भी वे उसमें आसक्त नहीं होते । यही उनकी विशेषता है । उनके यहां एक बड़ा यज्ञ होने वाला है । हम लोग उसमें सम्मिलित होना चाहते हैं । मार्ग में शोण, गङ्गा और विशाला पड़ेगे । शोण एक नद है, गंगा नदी है और विशाला एक नगरी है । इनके अतिरिक्त वहां पहुँच कर तुम मिथिला का राज प्रसाद और पुष्पवाटिका देख सकोगे और भी एक अद्भुत वस्तु वहां है ।

ले०—वह क्या

विश्वामित्र-राजा जनक के यहां एक बहुत बड़ा धनुष है । वह शिवजी के पास था । उसी से उन्होंने ने दत्त के यज्ञ का विध्वंस किया था । तदन्तर वह धनुष शिवजी ने देवताओं को दे दिया । देवताओं ने उसे देवरात के पास धरोहर के रूप में रख दिया था ।

ले०-गुरु जी ! ये देवरात कौन थे ?

विश्वामित्र-इतिहासवेत्ता कहते हैं कि वे इन महाराज जनक के एक पूर्वज थे । देवरात के पिता का नाम था निमि ।

राम-गुरुदेव ! शिवजी का वह धनुष तो बहुत बड़ा होगा ।

विश्वामित्र-हाँ कुमार ! वह धनुष बहुत बड़ा है । भारी भी बहुत है । मिथिला नरेश नित्य देवता के समान गन्धपुष्पादि से उसकी पूजा करते हैं । उसको एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना बड़ा कठिन है । अतएव इस काम के लिए महाराज ने आठ पहिरों वाला एक संदूक बनाया है । उसी में वह रक्खा जाता है ।

ले०-गुरु जी ! वह संदूक क्या लकड़ी का है ?

विश्वामित्र-नहीं बेटा ! लकड़ी का संदूक उस धनुष के लिये बहुत दृढ़ नहीं होता, अतएव वह लोहे का बनवाया गया है । एक दो आदमियों से तो वह सन्दूक खिंचता भी नहीं, इसलिये अवसर पड़ने पर बहुत से आदमी उसे खींचते हैं ।

ले०-गुरुदेव ! आपके मुखारविन्द से उस धनुष की चर्चा सुन कर मेरे हृदय में उसके दर्शन की बड़ी उत्कण्ठा हो रही है । आप हमें मिथिला कब ले चलेगे ?

विश्वामित्र—कुमार ! मैं तो प्रस्तुत हूँ। तुम्हारा उत्साह हो तो अभी चल दे।

लक्ष्मण—हां गुरुदेव, अभी चल दीजिये। शुभस्य शीघ्रम्। साथ में कौन कौन चलेंगे ?

विश्वामित्र—ये सभी ब्रह्मवादी महर्षि महाराज जनक के यज्ञ में सम्मिलित होंगे।

—लक्ष्मणगुरुदेव ! किस प्रकार चलेंगे ? पैदल अथवा सवारी में ?

विश्वामित्र—गाड़ियों का प्रबन्ध कर लिया गया है, अतएव तुम्हें पैदल चलने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा।

लक्ष्मण—कितनी गाड़ियों का प्रबन्ध किया है ?

विश्वामित्र—सौ गाड़ियों का।

ल०—अहा, तब तो हम लोगों का एक बड़ा अच्छा दल हो जाएगा।

राम—गुरु जी ! यदि हम लोग अभी चल दें तो सूर्यास्त तक कहां पहुंच लेंगे ?

विश्वामित्र—मेरा अनुमान है कि सूर्यास्त से कुछ पूर्व ही शोणभद्र पहुंच जाएंगे।

ल०—गुरुदेव ! शोण में आप मुझे और भैया राम को तैरने तो देंगे न ?

विश्वामित्र—(मुस्करा कर) वत्स ! दिन ही दिन में पहुंच जाओगे तो तुम लोग आज ही तैर सकोगे और यदि रात हो गई तो कल प्रातः काल।

ल०—तो गुरु जी ! अब हम सब लोग चल दें तो अच्छा हो।

विश्वामित्र—एवमस्तु ! चलने से पूर्व स्वस्तिकारक प्रार्थना बोल लो।

सब—(मिलकर गाते हैं)

हमें शक्ति दो, पार करें प्रभु ! वन औ' उपवन सब पथ के।

देखें दृश्य मनोहर, पहुंचे मिथिला में हम सब न थकें ॥

नदियों से शुभ सलिल मिले, मधु पुष्पों से फल तरुवर से।

कहीं मार्ग में हमें न भय हो असुर, दस्यु नर, किन्नर से ॥

[आगे आगे विश्वामित्र और पीछे पीछे राम, लक्ष्मण और मुनि आश्रम से बाहिर जाते हैं]

दूसरा दृश्य

स्थान—शोण के तट पर एक शिविर।

समय—रात्रि का प्रथम प्रहर।

[सायंकाल के भजन और भोजन से निवृत्त होकर विश्वामित्र, राम, लक्ष्मण और कतिपय मुनि बैठे हैं। शोण के प्रवाह की धीमी धीमी ध्वनि आ रही है। चारों ओर प्रशान्त वातावरण है। परस्पर विश्रम्भालाप हो रहा है]

विश्वामित्र—वत्स लक्ष्मण ! तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई न ?

ल०—आपकी कृपा से गुरुदेव ! मैं और भैया राम शोण में मन भर कर तैरे। हम सब के सब स्नान करने से तो नद के तट पर किसी पुण्य पर्व का सा दृश्य उपस्थित हो गया था।

राम—गुरु जी ! आप लेट जाइये। हम दोनों आपके पैर दवा दें।

विश्वामित्र—कुछ देर और ठहरो, राम !

ल०—तो गुरु जी ! तब तक कोई सुन्दर कथा सुना दीजिए।

विश्वामित्र—बेटा ! क्या सुनाऊं ? मुझे तो तुम दोनों से यही कहना है कि तुम दोनों ऐसे अच्छे अच्छे कम करो कि आगे के युग में लोग तुम्हारे पवित्र चारित्र्य को कहें और सुनें।

राम—यह आपका आशीर्वाद है, गुरुदेव !

ल०—आज तो गुरु जी ! अपने ही जीवन की कोई घटना हम लोगों को सुनाइये।

विश्वामित्र-अच्छा सुनो । तुम्हें अपने जीवन में हुए महान् परिवर्तन की घटना सुनाता हूँ । मेरे वंश का तो परिचय होगा ही ।

ल०-फिर भी उसे दुहरा दीजिये मुनिवर !

विश्वामित्र-बड़ी पुरानी बात है, प्रजापति के एक पुत्र हुआ । नाम था कुश । कुश के हुए कुशनाभ । कुशनाभ के हुए गाधि । मैं उनका हो पुत्र हूँ । पहले मैं क्षत्रिय था और था राजा ।

ल०-यह बड़ा आश्चर्य है कि आप भी पहले एक राजा थे । अब तो आप ब्राह्मणों के भी शिरोमणि हैं ।

विश्वामित्र-हाँ ! एक बार ऐसा हुआ कि मैं एक अक्षोहिणी सेना लेकर देश देशान्तर में घूमता घामता वशिष्ठ जी के आश्रम पर पहुँचा ।

राम—उन वशिष्ठ जी के आश्रम में जो अपने आशीर्वाद से कोसल साम्राज्य की रक्षा किया करते हैं ।

विश्वामित्र-हाँ राम ! उन्हीं को उन्होंने मेरा और मेरी सेना का बड़ा आतिथ्य किया । नाना प्रकार के भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य और पेयमे परिपूर्ण विविधि आकार के सोने और चाँदी के पात्र हम सब के सामने प्रस्तुत कर दिये ।

ल०—बड़े आश्चर्य की बात है गुरुदेव ! उनके पास इतनी सामग्री कहाँ से आई ?

विश्वामित्र—वशिष्ठ जी के पास एक कपिला गौ थी । उसी के प्रभाव से उन्होंने ने ऐसा चमत्कार किया था । आतिथ्य ग्रहण करने के अनन्तर हम लोगों को उन्हें धन्यवाद देना चाहिए था, किन्तु हमने तो रजोगुण से अभिभूत होकर उनकी दिव्य घेनु ही लेनी चाही ।

राम-गुरु वशिष्ठ जी ने क्या कहा ?

विश्वामित्र—कहा कि यह गौ ही तो हमारा सर्वस्व है । इसकी सहायता से ही हमारे यज्ञ-याग

चलते रहते हैं । इसे हम न देंगे । तब तो मैं ने और मेरी सेना ने बल का प्रयोग किया । गौ को छीना । परन्तु क्या हुआ ? गौ ने अपने शरीर से अनेक सैनिक उत्पन्न कर दिये । हमारी पराजय हुई । बड़ी ग्लानि हुई । कनिष्ठ कुमार को राज्याधिकार देकर मैं उत्तर दिशा में तपस्या करने बन की ओर चला गया ।

ल०-फिर क्या हुआ गुरुदेव !

विश्वामित्र—फिर मैं ने हिमालय पर जाकर भगवान् आशुतोष को प्रसन्न कर उनके वरदान से दिव्य अस्त्र शस्त्रों को प्राप्त किया और वहाँ से लौटकर वशिष्ठ जी के आश्रम पर ही उनका प्रयोग किया ।

राम—क्या फिर भी कपिला ने सैन्य की सृष्टि की ?

विश्वामित्र—नहीं । अबकी बार वशिष्ठ ने ही मुझे ललकारा । जब मैं नहीं माना और अपने आयुधों का मैं ने उन पर प्रहार किया तो वशिष्ठ जी ने अपने दण्ड से उन सब को विफल कर दिया ।

ल०—बड़ा आश्चर्य है !

विश्वामित्र—हाँ, तब तो मेरे मन में ईर्ष्या और भी बढ़ गई । मैं और भी अधिक तपस्या करने दक्षिण में चल दिया । उन्हीं दिनों की तपस्या के प्रभाव से मैं ने त्रिशंकु को सदेह स्वर्ग पहुँचा दिया था ।

राम—वह प्रसंग हमने सुन रखा है गुरुदेव !

विश्वामित्र—तब मैं ने पश्चिम दिशा में पुष्कर के तट पर एक वन में रह कर तप किया जिस में मेनका नाम की एक अप्सरा ने विघ्न डाला था । अस्तु, तदनन्तर उत्तर में कौशिकी नदी के तट पर मैं ने तपस्या की । उस से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने मुझे दर्शन दिये और महर्षि की पदवी भी ।

(शेष अगले अङ्क में)

(पृष्ठ ११ का शेष)

जा रही है । दवा दारू का कोई साधन नहीं । वैद्य ने कहा है बेहतर हो किसी अच्छे से डाक्टर को दिखलाया जाये । लेकिन अच्छे से डाक्टर को दिखलाना तो तभी संभव होगा जब रकम भी अच्छी दी जाए । यह डाक्टर लोग जो ठहरे । दस रुपये से कम तो इनकी फीस भी नहीं—फिर दवा दारू इस से अलग रहा । यह डाक्टर लोग क्या जानें, कि ये दस रुपये किसी निर्धन के लिये कितनी बड़ी राशि है जो रक्त पसीना एक करके दिन भर में डेढ़-दो रुपये कमाता हो, जो इन दस रुपयों की खातिर अपनी जान पर खेल जाना साधारण सी बात समझता हो ।

लेकिन रुपया..... और इस के अभाव में... एक लम्बी निःश्वास छोड़ वह एक बार फिर पूर्णतया आन्दोलित हो उठा किन्तु विचारों की लड़ियां उसी प्रकार उसके मस्तिष्क में विखरती रहीं ।

‘पढ़ाई के लिये जो रुपया कर्ज लिया था, वह भी अभी चुकाना बाकी है । चौधरी पन्ना लाल से रोज़ खरी खोटी सुननी पड़ती है । अब की बेर तो उस ने कहा है कि यदि रुपया व्याज सहित १५ दिन तक न चुका दिया गया, तो वह अदालती कार्रवाई करेगा ! रुपया भी तो इस लिये लिया था कि पढ़ कर मैं नौकरी करके सब चुका दूंगा । लेकिन आज पूरे दो साल हो रहे हैं नौकरी नहीं मिली मुझे । शायद मिलेगी भी नहीं । उसकी आंखें डबडबा आईं । हृदय सिन्धु में तूफान उमड़ पड़ा और यही वाक्य उसके मस्तिष्क में तरल गति लिये विहार करने लगा ।

—‘यह कभी नहीं हो सकता । मुझे मां

का इलाज अवश्य ही किसी अच्छे डाक्टर से करवाना होगा । जिसकी दया दृष्टि से मैं सब कुछ करने योग्य बना उसके लिये मैं अन्तिम काल में छोटा सा बलिदान भी न दे सकूंगा ? और हां, चौधरी पन्ना लाल का रुपया भी तो हर हालत में चुका देना होगा । इस के लिये मुझे चाहे दिन रात भी मेहनत क्यों न करनी पड़े । किन्तु मातृ स्नेह और त्याग को सजीव रखने के लिये मैं स्वस्व की आहुति दे डालूंगा ।

वह अनायास ही कह उठा—‘माँ...’

नव जीवन की उज्ज्वल उमंग उसके रोम रोम में थिरक गई । उत्सुकतापूर्ण धैर्य उसे प्रोत्साहन देने लगा और वह उठ खड़ा हुआ । जाने से पहले केवल एक बार, एक ही बार उसने सरिता की झुलझुली उर्मियों की ओर निहारा और फिर निराशा के मोड़ से आशा के पथ पर बढ़ने को उद्यत हो गया और देखते ही देखते कहीं दूर अन्धकार में लीन हो गया ।

धरती और गगन

कहीं श्रेष्ठ आकाश-कुसुम से धरती की माटी ।
तूफानों के संग से अच्छा अपना मूक संगीत ।।
उतना मोहक चाँद न जितना मोहक पिय दर्शन है ।
धरती उतनी दूर नहीं है, जितनी दूर गगन है ।।
धरती के नागरिक स्वर्ग की बात सोचते हैं क्यों ?
वर्तमान के नयन भविष्यत् को विलोकते हैं क्यों ?
उतना ही अमूल्य विगत है सब जितना यह क्षण है
धरती उतनी दूर नहीं है, जितनी दूर गगन है ।।
ताजमहल में लाश सुरक्षित, जीवन नग्न ठिठुरता ।
यहां मौत है पूज्य, जिन्दगी के प्रति यहां निठुरता ।।
उतनी दूर नहीं है जीवन जितनी दूर मरण है ।
धरती उतनी दूर नहीं है, जितनी दूर गगन है ।।

—जय कुमार, ‘जलज’

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

[बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर]

प्र० मैं श्री प्रेम चंद रचित 'मोटर के छींटे' के आधार पर एक कहानी 'पंडित जी' शीर्षक से भेज रहा हूँ—कहिये कैसी है ?

—सुशील कुमार, बधवा, ६वीं कक्षा, भिवानी।

उ० अच्छा होता कि तुम अपने जीवन की कोई घटना लेखबद्ध करके भेजते अथवा कोई ऐतिहासिक कहानी भेज देते। तुम्हारी कहानी सम्पादकजी के पास है, पढ़ कर प्रकाशित करने न करने का वही निश्चय करेंगे। —दी०

प्र० मैं एक लेख स्त्री जाति के उपकारार्थ भेज रही हूँ। क्या आप इसे प्रकाशित कर अनुगृहीत करेंगी ? —सूर्यमुखी, धांगड़।

उ० लेख तो मिल गया है किन्तु वह प्रकाशित करने योग्य नहीं है क्योंकि उस में जहाँ कोई विशेष बात नहीं है वहाँ अशुद्धियाँ भी बहुत हैं। —दी०

प्र० आपने मेरा वार्तालाप प्रकाशित कर मेरा उत्साह बढ़ा दिया है, मैं एक और रचना

'कुर्सी की आत्म कथा' भेज रहा हूँ। क्या यह प्रकाशित कर कृतार्थ करेंगे ? आत्मदेव उ० तुम्हारी रचना मिल गई है किन्तु इसमें बहुत कुछ संशोधन करना पड़ेगा अतः कहना कठिन है कि कब तक छप सकेगी।

—दी०

प्र० क्या आप दीवाली पर 'प्रकाश' का विशेष अंक प्रकाशित नहीं कर रहे ?

—धर्मपाल देहली।

उ० विशेष अंक के प्रकाशन का उत्साह तभी होता है जब उसकी विशेष मांग भी हो। इसके अभाव में अतिरिक्त व्यय कहां से पूरा किया जाए ? —दी०

प्र० मुझे एक दिन के लिये अपनी कुर्सी पर बिठा कर देखिए मैं क्या करती हूँ ?

—कृष्णा गुप्ता, अमृतसर।

उ० किसी रविवार को जालन्धर आ जाओ, उस दिन मेरी कुर्सी सर्वथा खाली होती है। —दी०

(सभी छात्र प्रश्न भेज सकते हैं)

★ अमेरिका में शिक्षा के नये तरीके ★

दृश्य और श्रव्य साधनों से सहायता

एक आदर्श अमेरिकी स्कूल का निरीक्षण करने वाले किसी भी आगन्तुक को यह देख कर तनिक भी आश्चर्य नहीं होगा कि स्कूलों में ब्लैक बोर्ड और संसार के वृत्ताकार मानचित्र का प्रयोग आज भी उसी प्रकार किया जा रहा है जिस प्रकार आज से ४० वर्ष पूर्व किया जाता था । आज के स्कूलों के छात्र भी ब्लैक बोर्ड और ग्लोब से अच्छी तरह परिचित हैं । लेकिन कक्षाओं में सिनेमा के पर्दों और विद्युत्चलित फोनोग्राफ देख कर आगन्तुक को निश्चय ही आश्चर्य होगा । उसे यह ज्ञात होगा कि इस प्रकार के उपकरण आजकल अमेरिका के लगभग सभी स्कूलों में पाये जाते हैं । उसे यह भी ज्ञात होगा कि आजकल अमेरिकन शिक्षक छात्रों को शिक्षा देने के लिये विविध प्रकार के श्रव्य और दृश्य साधनों का प्रयोग करने लगे हैं । आजकल इस प्रकार दी जाने वाली शिक्षा को 'श्रव्य और दृश्य साधनों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा' कह कर सम्बोधित करते हैं ।

गत १५ वर्षों के अन्दर अमेरिकी फिल्म प्रोजेक्टरों और आवाज भरने वाले

यन्त्रों का अधिकाधिक प्रयोग करने लगे हैं । सर्वप्रथम द्वितीय महायुद्ध के दौरान में अमेरिका की सशस्त्र सेना में सैनिकों को टैक्निकल विषयों की जानकारी कराने के लिये सफलतापूर्वक नवीन शिक्षा-विधियों का प्रयोग किया गया था । उदाहरणार्थ सशस्त्र सेना की विभिन्न शाखाओं ने युद्ध के दौरान में सिनेमा के ६०,००० प्रोजेक्टर खरीदे थे । इन में से अधिकांश का प्रयोग टैक्निकल प्रशिक्षण देने के लिये किया गया था । इस प्रकार फिल्मों की सहायता से बहुत से सैनिकों को एक दिन के अन्दर ही कई विषयों के सम्बन्ध में आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाता था । शिक्षकों को भी इस कार्य में विशेष थकान अनुभव नहीं होती थी ।

सेना में सैनिकों को सामूहिक रूप से शिक्षा देने की यह नवीन विधि इतनी सफल रही कि देश के सभी शिक्षा शास्त्रियों का ध्यान सहसा ही इस ओर आकर्षित हो गया । इस विधि का उपयोग कर अमेरिकी शिक्षा शास्त्रियों ने छात्रों को शिक्षा देने के विभिन्न साधनों—मानचित्रों, ग्लोबों (संसार का वृत्ताकार मानचित्र) इत्यादि में

काफी सुधार किये हैं ।

इन श्रव्य और दृश्य साधनों के अन्तर्गत वह सब सामग्री आ जाती है जिस की सहायता से लिखित और बोले हुए शब्द आसानी से समझे जा सकते हैं । इस प्रकार की सामग्री में फिल्मों, बड़े फोटो, मनुष्य शरीर तथा पशुओं के ढाँचों के नमूने, मूर्तियाँ तथा अन्य प्रकार की वस्तुएँ होती हैं । इसके अतिरिक्त इसमें आवाज़ भरने के यन्त्र, रेडियो और टेलीविज़न, फार्म जीवन तथा कला कौशल पर प्रकाश डालने वाली वस्तुएँ भी होती हैं ।

आजकल अमेरिका के सभी स्कूलों और कालेजों में छात्रों को शिक्षा देने के लिये श्रव्य और दृश्य साधनों का प्रयोग किया जाता है । अमेरिका के प्रारम्भिक स्कूलों में फिल्म प्रोजेक्टरों का उपयोग देश के ऐतिहासिक पवित्र स्थानों के विशाल आकार के चित्र दिखाने के लिए किया जाता है । दूसरी ओर वाशिंगटन स्थित जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी विदेशी भाषाएँ सिखाने के लिए आवाज़ भरने वाली मशीनों का प्रयोग करती है । आजकल किंगडरगार्टन से लेकर कालेजों और यूनिवर्सिटियों तक में इतिहास, विज्ञान, रेखागणित, कविता, मशीन-विज्ञान तथा अन्य विषयों की शिक्षा देने के लिये श्रव्य और दृश्य साधनों का प्रयोग किया जा

रहा है ।

श्रव्य और दृश्य साधनों में सवाक चलचित्र सब से प्रभावकारी साधन सिद्ध हुए हैं । इसकी विशेषता केवल यह नहीं कि चलचित्रों को बहुत अधिक लोग देख सकते हैं । इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि दर्शकों में यह प्रवृत्ति होती है कि स्वयं को रजतपट पर आने वाले पात्रों में से एक समझ लेते हैं । इसप्रकार चलचित्र में उनकी दिलचस्पी बढ़ जाती है । इसके अलावा चलचित्र घटनाओं को अधिक स्पष्ट ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं । दूसरी बार फिल्म देखने पर दर्शक कठिन विषय को भी आसानी से समझ जाता है ।

जब से धातु से बने हुए फीते (टेप) पर आवाज़ भरने की विधि का आविष्कार हो गया है, श्रव्य साधन का उपयोग अधिकाधिक किया जाने लगा है । गत दस वर्षों में यह कार्य बहुत अधिक प्रगति कर गया है । इस विधि के अन्तर्गत टेप में आवाज़ भर शीघ्र ही फिर सुनी जा सकती है तथा इस टेप को बार २ इच्छानुसार प्रयुक्त किया जा सकता है । टेप रिकार्डर विदेशी भाषाओं के पढ़ाने में भी बहुत सहायक सिद्ध हुआ है ।

अमेरिका में छात्रों को शिक्षा देने के लिए रेडियो का प्रयोग भी किया जा रहा है ।

★ दीवाली क्यों मनाई जाती है ? ★

(लेखक—श्री चन्द्र दत्त हैडमास्टर, मेहर भटोली)

आज तो बड़ा पटाख पटाख हो रहा है। कोई त्योहार प्रतीत होता है। हाँ, त्योहार ही तो है, दीवाली है न। यह क्यों मनाया जाता है ? भारतवर्ष में कई प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। नहीं सारे संसार में समय २ पर त्योहार मनाते हैं। कई त्योहार अपने शूरवीर पूर्वजों की स्मृति में मनाए जाते हैं, कई देवताओं को रिझाने के लिए तथा कई एक त्योहार ऋतु के परिवर्तन के निमित्त मनाए जाते हैं।

दीपावली का त्योहार सम्भवतः अपने पूर्वजों की स्मृति में मनाया जाता है। कहते हैं कि श्रीराम चन्द्र चौदह वर्ष के वनवास के उपरान्त अयोध्या में जब पधारे थे तो नगर निवासियों ने उनके स्वागत के लिए रात्रि को घी के दिए जलाये थे। महाराज रामचन्द्र जी के प्रति उनकी प्रजा की श्रद्धा के रूप में दीप जलाये गए थे। यह स्वागत प्रजा का अपने हितैषी और तपस्वी राजा के प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता को दिखाने का ढंग था। रामचन्द्र एक आदर्श राजा थे जिन्होंने अपनी प्रजा के हित में सब आराम छोड़ कर वन की तपस्या को स्वीकार किया। वे प्रजा सुख के लिए

अपनी पत्नी का भी परित्याग कर सकते थे। 'प्राण जाए पर वचन न जाई' उनका बड़ा सिद्धांत था। अपने पिता का आदर्श क्षत्रिय राजकुमार प्रण में पूरा उतरा। प्रजा ऐसे राजा का स्वागत क्यों न करती ? सहस्रों वर्षों से यह त्योहार मनाया जाता है।

आर्य समाजी ऋषि दयानन्द के निर्वाण दिवस के रूप में इसको मनाते हैं। वे ऋषि सच्चे सन्यासी थे जिन्होंने सचमुच डूब रही भारत की सामाजिक नथ्या को बचा लिया। काश ! भारत वासी महापुरुषों और नेताओं की कद्र करना जानते ! हिन्दुत्व की उच्चता नीचता में बदल जाती यदि दयानन्द-सरस्वती का आगमन न होता।

भूली हुई जनता जूर, शराब, मांस और तमाशे में व्यर्थ धन खर्च कर यह त्योहार मनाती है। यदि हम इन महापुरुषों की स्मृति में इसे इस के वास्तविक रूप में मनाएं और सत्यार्थ के प्रकाश के लिए यत्न करें तो कितना अच्छा हो।

—अमेरिका में ३०,००० स्त्रियां पत्रकार, ७००० इंजनीयर, ११,००० डाक्टर और ६०,०० वकील हैं।

★ दीवाली या दीवाला ★

[श्री रमेशचन्द्र शास्त्री, 'शान्त']

त्योहार जातीय चेतना के प्रतीक होते हैं और प्रतिवर्ष नियत समय पर आकर वे जातिगत शिथिलता को दूर करने में सहायक होते हैं। प्रथम त्योहारों का चलन किसी विशिष्ट आदर्श को या किसी महापुरुष की स्मृति को लेकर होता है फिर धीरे धीरे रूढ़िवाद में पड़ कर उसका रूप इतना विकृत हो जाता है कि त्योहार का चेतनातत्त्व गौण तथा रूढ़ि प्रधान हो जाती है। दीवाली का वैदिक कालीन रूप 'नवशस्येष्टि' था। साढ़ी की फसल कट जाने के बाद भारत का कृषक अग्निरूप भगवान को प्रथम समर्पण कर अन्न का उपभोग कर आत्म मंतोष प्राप्त करता था क्रमशः बलि के पतालगमन, कृष्ण के नरकासुर वध तथा दुर्गा की 'लक्ष्मी' शक्ति के पूजन रूप में इसने राष्ट्रीय स्वच्छता पर्व का रूप धारण किया। वैज्ञानिकों के मतानुसार-वर्षा ऋतु में समुद्भूत कीट पतंगों से गृह परिमार्जनार्थ चूने कलई का लेपन, तेल के दीपों द्वारा सूक्ष्म कीटों का नाश तथा बाह्य अन्धकार के साथ साथ आन्तरिक तमस का विनाश कर 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का प्रतीक रूप यह पर्व भारतीय परम्पराओं का उद्बोधक तथा राष्ट्रीय जाग्रति का अग्रदूत था। परन्तु राष्ट्र

का दुर्दैव ! 'नव शस्येष्टि' के स्थान में 'डान्डा पाकेष्टि' तथा स्वच्छता के स्थान में जूआ-मद्यपान आदि के द्वारा आन्तरिक तमस का परिवर्धन तथा स्वास्थ्य स्वच्छता के प्रतीक तेल दीपों के स्थान में विद्युद्दीपों का प्रयोग कर हम अपने बौद्धिक दीवालिएपन का परिचय देते हैं। कुछ सज्जन मोमबत्तियां जलाकर अपने को प्रगति गामी सिद्ध करते हैं परन्तु यह बुद्धि के दीवालिए पन का द्योतक है। पेट्रोल के उच्छिष्ट से निर्मित ये मोमबत्तियां वायु विदूषक होती हैं न कि वायु शोधक जिस से त्योहार का वास्तविक उद्देश्य ही नष्ट हो जाए वह तो त्योहार की अन्त्येष्टि है न कि उस का सम्मान।

विविध संप्रदायी भारत में दीवाली विविध दृष्टिकोणों से मनाई जाती है परन्तु यदि हम उसके प्राकृतिक रूप को देखें तो वह सर्वमान्य है। प्राकृतिक त्योहार के रूप में यह शरद् ऋतु का प्रारम्भिक त्योहार है लोग घरों के अन्दर बन्द कमरों में रहना सोना प्रारम्भ करते हैं अतः वर्षा जन्य दोषों के निवारणार्थ उनका शोधन मार्जन आवश्यक है, जिसमें वायु शुद्धि सर्व प्रथम है। घृत के समान शुद्ध सरसों को

(शेष पृष्ठ २६ पर)

कहानी—

★ कलाकार ★

[लेखिका—ड० नीलिमा, 'अधीर' जालन्धर ।]

वह कलाकार था—

ऐसा भावुक कवि का हृदय था उस के पास और..... किसी मोहक सुन्दरता की छाया को अंकित करने की योग्यता भी थी। इस के अतिरिक्त न जाने कौन कौन से विचित्र गुण रखता था। कोई क्या जाने !

वह अद्भुत प्रतिमा-रूप ही तो था। उसकी सांसों में जवानी तैरती थी। मुखमण्डल पर पवित्रता को धीरे से गोद में दबाये गम्भीरता विराजा करती—और वहीं दो श्यामल पलकों के बीच रूपहली दृष्टि की शय्या पर युगनिर्माण का संदेश लिये कल्पनायेँ करवटेँ बदला करतीं। और—कभी कभी अनजाने ही वह भोली कल्पनायेँ पलकों द्वारा सिंचित हो जातीं। तब जब वह गीली भीगी सी पलकेँ अचानक ऊपर निहारतीं तो वहाँ का पत्ता पत्ता जो अपनी छाया में उस कलाकार को आश्रय दिये रखता, सहानुभूति और दया दिखाने के हित ज़रा झुक सा जाता, बोलती कोयल भी चुप्पी ठान लेती और शिशिर समीरण भी धीमी पड़ जाती वह 'प्रिय' था न उन सब का।

उस की गति में चांदनी झलकती थी।

जब वह किसी छाया का हृदय खींचने को घुटने टेकता तो कोई भी ऐसा न होगा जो कह उठता 'सच ! कैसा कलाकार है यह'।

उसके दिल में मानव प्रेम के शोले धधकते थे। उसका मन जो मानव के हित में फंसा हुआ था, एकदम स्वच्छ था। लेकिन मानव ही की वाणी 'पगला है, यह तो आंखेँ फाड़ प्रकृति को निहारता है। अकेला है—जो चाहे करे रोक तो कोई सकता ही नहीं'—न जाने और क्या क्या ? उस की अभिलाषाओं और उमंगों के कच्चे कांच के मोतियों को चूर २ कर देती। अपना सर्वस्व बिखरता देख वह ज़रा सा कांप उठता लेकिन फिर दो क्षण बाद युगनिर्माण की वही विचारधारा उसे आ घेरती।

यह सब देख, कि मानव का दिया तिरस्कार, जिसे वह प्रेम करता था, कलाकार ज़रा विचलित नहीं हुआ है तो वह ज़रा सी लज्जाई। लेकिन सोचा, नहीं इसको जाना ही होगा यहां से, स्वयं चली आई वह। कौन ? वही 'मौत' ! 'मौत' जिससे कलाकार घृणा करता था। वही शृंगार किये चली आई।

कपटता का भी तो रूप सुन्दर होता है।
ऐसे ही 'मौत' जब आई, तो पावों में नूपुर
भंकृत हो उठे, भौहें ज़रा टेढ़ी सी, नयनों में
कटान्न लिए आ खड़ी हुई 'मौत' ! कलाकार
पहले तो देखता रहा उसे, सुन्दर जो थी
वह। उसका चित्र खींचने को ज्यों ही उसने
अपना रंग, कूची उठाने को हाथ बढ़ाया तो
बोल पड़ी मौत। उसके बोल से यही जान
पड़ता था कि वह उसे लेने आई है न कि
अपना चित्र बनवाने।

कलाकार ने इन्कार कर दिया। ठीक ही
तो है, बेचारा कैसे चल पड़ता। जब कि
उसे मानव से प्रेम था।

अपना यह अपमान लिये मुड़ पड़ी,
सौन्दर्य तथा कुटिलता की प्रतिमा 'मौत' !
कितना भयंकर शब्द है ! फिर भला क्या
कलाकार चल पड़ता सीधा उसके साथ ?

'मौत' जानती थी कि कलाकार को
मानव से प्रेम है तो उसने कलाकार को
मिटाने के लिए ही सोचा। और सोचा कि
मानव के हाथ से इसे सदा के लिए मिटाया
जाए—क्योंकि मानव से प्रेम जो था
कलाकार को।

अब भेजा 'मौत' ने मानव के ही हाथ
विष का प्याला जिसमें व्यंग व कटान्न रूखी
हलाहल भरा पड़ा था। कलाकार ने सुधा
समझ बड़े प्यार से प्याला मुंह के साथ

★ नवयुग ★

[ले०—श्री राजेन्द्र 'राजन' पराशर गुड़गांव]

नवयुग आया मिल के गायें

भ्रातृ भाव के सुन्दर गीत

सारे मिथ्या भेद मिटा कर

करें परस्पर सबसे प्रीत ॥१॥

सेवा कर फैला दें जग में

शान्ति चंद्र का स्निग्ध प्रकाश

दुनिया के दुख दर्द मिटा कर

अन्धकार का कर दें नाश ॥२॥

हम हैं देशभक्त पुरुषों की

धीर वीर नाहर सन्तान

भारत माता के युग पद पर

कर दें अर्पण तन मन प्राण ॥३॥

आओ दीन कृष्क की नौका

भवसागर से पार करें

दुखि श्रमिक का क्लेश निवारण कर

भवसागर से पार करें ॥४॥

❶

लगा लिया क्योंकि मानव द्वारा दी गई
वह भेंट नहीं ठुकरा सकता था। तभी !
पर जब सुधा पी और हौले से नेत्र मूंदे
तो मानव ने देखा कि वह सोया पड़ा
था, सदा के लिए—और खड़ी 'मौत' अपनी
विजय पर मुस्का रही थी !

★

पा न सकी !

था मिला हुआ मृदु सा अमृत,
 पर पा न सकी इस जीवन में।
 भगवान तो रूठे ! शेष रही,
 बंसी की थिरकन धड़कन में—
 चिर साधना से अभिशाप मिला,
 मैं चीख उठी उस तड़पन में।
 मरु-भूमि की हूँ ठुकराई,
 खोई शून्य सी कण कण में।
 थी लग्न, मग्न हो तुलिका में,
 साकार मिला कुछ कण कण में।
 इस कूल थी मैं, उस पार थे वह,
 क्या जादू था उस चितवन में।
 थी जीत कहां ? इक हार ही थी,
 था भांका विरह अँसुअन में।
 व्यथित उर-पच्ची उड़ता था,
 पहुँचा कल्पित से मधुवन में।
 ज्वाला सी उमरो हिय तल में,
 जब चेत हुई तब उलझन में।
 अधरों से टूटा गान मिला,
 सागर भी छलके नयनन में।
 प्रसून शुष्क थे जीवन के,
 इक हार मिली थी अनवन में।
 दुर्वादल लख भी हास करूँ,
 न जागी आशा कण कण में।
 अब चाह मिलन की सिसक रही।

अभिशाप मिला इस विछुड़न में।
 मधुमास है आया कहने को,
 दिखता है पतझड़ उपवन में।
 विरह की घड़ियाँ बढ़ती हैं,
 मधु मिलन बसा है विछुड़न में।
 मैं पगली धूम्र उपवन में,
 प्रिय बसे हुये हैं धड़कन में।
 —कु० सुदर्शन खोसला

(प्रष्ठ २३ का शेष)

कोल्हू से निष्कासित तैल का धूम गृह की
 वायु को शुद्ध करने में पूर्ण समर्थ है।
 अतएव हमारे विज्ञ पूर्वजों ने 'दीप' का
 समावेश भी इस पर्व की क्रियाओं में किया
 था। लक्ष्मी पूजन के रूप में राष्ट्र लक्ष्मी
 के संशोधन का संकेत भी इसमें निहित
 है। वैश्यवर्ग अपना नवीन व्यापार-वर्ष
 इस दिन से प्रारम्भ कर जैसे गतवर्ष का सिंहा-
 वलोकन करते हैं वैसे समस्त राष्ट्र के
 लिए यह अतीत चिंतन और भावी निर्माण
 का पर्व है। परन्तु असल तथ्य को न
 जानने के कारण हम उसे उपरी चमक
 दमक में बिता कर कर्तव्य की इति श्री
 समझ लेते हैं। अतः अब आवश्यकता
 है पर्व के विस्मृत उद्देश्य को जागृत
 करने की विशेषतः धनिक वर्ग को चाहिए
 कि पर्व का रूप धनमत्ता के कारण विकृत
 न करें।

आंसू पी कर मुस्कायेंगे !

हम कर्मशील हैं, कष्टों में भी
तनिक नहीं घबरायेंगे !
हम कांटों पर चलने वाले
आंसू पी कर मुस्कायेंगे !!
बादल हों, आंधी बहे,
बवण्डर आए या बिजली चमके !
हों लाख लाख दुख पर उमंग में,
भर हम सब का मुख दमके !
कष्टों में भी हम पतन सरीखे,
पथ पर बढ़ते जाएंगे !!
हम कांटों पर चलने वाले,
आंसू पी कर मुस्कायेंगे !
हम सब के शस्त्र अनोखे हैं,
हम सब के रण के ढंग अजब !!
जग दांतों तले दबाए उंगली,
लख हम सब के करतब !
हम तीर प्रेम का छोड़ेंगे,
दुश्मन को मित्र बनाएंगे !!
हम कांटों पर चलने वाले,
आंसू पी कर मुस्कायेंगे !
हम दुर्गुण को गुण से जीतेंगे,
मैल मिटाएंगे मन का !!
हम सब को गले लगवेंगे,
हम दुख समझेंगे जन-जन का !
सारी जगती में सदा शान्ति,
का ही सन्देश सुनाएंगे !!

यह भी खूब रही !

एक दिन बहुत बड़े किसान का दरवाजा
समीप के गांव के दो व्यक्तियों ने खटखटाया ।
'क्यों भाई कैसे हो रामू ? हम गांव से आ
रहे थे; रास्ते में एक लाश पड़ी हुई मिली,
हम समझे वह लाश कहीं तुम्हारी ही न हो ।'
'देखने में कैसी थी ?' रामू ने पूछा ।
'बिन्कुल तुम्हारे जैसा ही डील-डौल
था ।'

'क्या वह सफेद गाढ़े की कमीज पहन
रहा था ?'

'हां ।'

'और उस पर काला चारखाना था ?'
रामू ने फिर पूछा ।

'नहीं वह तो बिन्कुल सादी थी ।'

दरवाजा बन्द करते हुए रामू बोला,
'नहीं तो फिर वह मैं नहीं हूंगा ।'

सिपाही-(शराबी से) यहां सड़क पर
क्यों पड़ा है ?

शराबी—मेरे सामने सारी दुनिया
धूम रही है, जब घर आएगा मैं उस में
घुस जाऊंगा ।

★

हम कांटों पर चलने वाले,

आंसू पी कर मुस्कायेंगे !

—श्याममोहन

संसार का एक नया आश्चर्य—

★ सुगन्धि देने वाला मीनार ★

अफ्रीका की 'रेड मारकेश' नामक स्थान उचरी अफ्रीका की लाल मिट्टी से बना हुआ है और एक बहुत उपजाऊ घाटी के बीच में बसा है। उसके पीछे एटलस नामक पहाड़ है जिस पर सदा बर्फ जमी रहती है। इस शहर के बीच में एक मस्जिद भग्नावस्था में पड़ी है। इसका एक गगनचुम्बी मीनार नगर के बीचोंबीच खड़ा है। इस मीनार को 'काउतोविया' कहते हैं। इस से हर समय बड़ी मीठी सुगन्धि उठती रहती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि लगभग ७५० वर्ष पूर्व सुलतान याकूबुल मंसूर ने इस मीनार को बनवाया था और इसके गारे में १६० बोरी कस्तूरी की मिलाई गई थी। उसी कस्तूरी की मीठी सुगन्धि आज ७ सदियां व्यतीत हो जाने के बाद भी सारे नगर को सुवासित किये रहती है।

इस सुगन्धित मीनार के ऊपर तीन गेंदें लगी हुई हैं जो सूर्य के प्रकाश में स्वर्ण की भांति जगमगाती हैं। इन गेंदों का चमकना ठीक भी है क्योंकि उसके मीनार में ७५ लाख रुपये के मूल्यवान हीरे तथा जवाहरात भरे हुए हैं। याकूबुल मंसूर ने यह ऊंचा मीनार उस रुपये से बनवाया था

जो उसने लड़ाई में ईसाइयों से जीता था। मीनार बनाने के बाद जो रुपया बचा था वह सब उसी में भर दिया गया। बाद में इस रुपये में से कुछ सूद पर भी उठा दिया गया। मारकेश में यह स्थान सबसे पवित्र और सुरक्षित समझा जाता है। ६०० वर्ष से इस मस्जिद में अन्धा मौलवी ही नमाज़ पढ़ाता है।

यह भी खूब रही !

पति—क्या अभी तक खाना तैयार नहीं हुआ ? अच्छी बात है, मैं होटल में ही खाने चला जाता हूँ।

पत्नी, 'क्या दो चार मिनट और प्रतीक्षा नहीं कर ले'गे ?'

पति, 'क्यों क्या दो-चार मिनट में खाना तैयार हो जायेगा।'

पत्नी, 'खाना तो तैयार नहीं होगा, लेकिन हां, मैं तुम्हारे साथ चलने को इतनी देर में जरूर तैयार हो जाऊंगी।'

★

बृटेन के डाक्टरों ने एक नकली दिल बनाया है। और इस विज्ञान ने बिना पिता के मन्तान उत्पत्ति भी सम्भव बना दी है। ऐसे बिना बाप के बच्चों को 'दूधब बेबीज' कहते हैं।

कहानी—

★ कर्तव्य पथ ★

[ले०—कु० सुदर्शन खोसला, जगराओं]

बचपन का मचलना भूल कर वह नये पथ पर आई। सोचा था वहां पुष्पों की मन्द समीर होगी। पर वहां भीषण दुर्गन्ध थी! उसने उसी घुटते वातावरण में श्वास लिये और कांटों पर पग धरती हुई बढ़ती गई, रुकी नहीं। उसको मालूम था कि पीछे जो उपवन वह छोड़ कर आई है, कितना आकर्षक है! कितना मनमोहक है!! कितना शीतल है!!! परन्तु वह वहां क्षण भर टिक सकती है। अपने भीषण कष्ट का परित्याग कर वह माता पिता पर भार स्वरूप नहीं होना चाहती। वह आँचल, जिसे अपने स्वामी से बांध चुकी है, उसकी कठिन परीक्षा का आरम्भ है—सूत का कच्चा धागा नहीं। जीवन की उलझनों में परीक्षा देते २ वह स्वयं उनमें उलझ कर रह गई—“वह कब सफल होगी? यह प्रश्न न जाने कितनी बार अपने हृदय से, मुरझाए पुष्पों, पीले झड़ते हुए पत्तों से और धरती पर अन्तिम अंगड़ाइयां लेती हुई शुष्क डाली से पूछ चुकी है पर सब मौन हैं वह अपने पति की भलाई के लिये सदा आंचल पसारे अपने कच्चे घर को लीप पोत कर स्वर्ग बना देना

चाहती है। मुझे भी उसके जीवन में आने का अवसर पड़ा और इसका प्रमाण वह भयानक अन्धेरी अमावस की रात्रि है। मैं भोजन करके वरामदे में सोने जा रही थी कि माता जी ने कहा—‘देखना! उन घरों के झुरमुटों से कैसी आवाज़ आ रही है?’ मैं ने मुस्कुराते हुए यह कह कर टाल दिया कि कोई लड़ने की तैयारी में होगा। चीख बढ़ती गई, किन्तु मैं तो स्वप्न देश में पहुँच चुकी थी। उषा देवी के पदार्पण के साथ ही उस की पड़ोसिन हमारे घर आई। माता जी ने पूछ ही लिया कि रात को कैसा शोर हो रहा था? जो कुछ उमने बताया उसे लिखते हुए मेरी लेखनी कांप रही है। मेरा स्वर डूब रहा है और आँखों के सन्मुख उसकी भोली डबडबाई आँखें आ रही हैं। कहने लगी—‘उसका नाम है शरणी! उसके पति ने जेठ की गरमी से हांपते हुए कहा कि मेरे स्नान के लिये पानी भर लाओ। उस भीषण अन्धकार में ही शरणी नन्ही बच्ची को छोड़ कुएं पर गई। वह ठोकरें खाती पनघट पर पहुँची और जल्दी २ जल भर लौट पड़ी। एक दीप शिखा कांप कर बुझ

जाना चाहती थी। बच्ची का रुदन सुन कर शरणो के पांव में एक नवीन शक्ति का संचार हुआ। ममता के कठोर हाथों में छटपटाती हुई घर जा पहुँची। पति ने छूटते ही तेज आवाज़ में कहा—‘दुष्टे! मर गई थी क्या वहीं। ज़रा मेरी छड़ी तो देना। शरणो ने जल्दी से घड़ा धर कर छड़ी ला दी और ललाट के पसीने को कांपते हाथों से पोंछ डाला। पति के हाथ की छड़ी तड़ाख से उसकी कोमल कमर पर आ जमी।

वह अनायास चोट से सटपटा गई। फिर एक दो तीन कई प्रहार उस निर्दोष समाज की जीती जागती शव पर पड़े। शरणो ने अपने होंठ काट लिये कि कहीं चीख न निकल जाए परन्तु पीड़ा से उस की चीखें क्रंदन में बदल गईं। उस समय कठोरता को भी दया आती थी उस पर। निद्रा देवी के आँचल में सभी जीव हिलोरे ले रहे थे—पर उस मौन की भंग करते हुये अन्धकार में से किसी की वेदना से लिपटी हुई कराहना शेष थी। इतना कहते २ पड़ोसिन की आँखें सजल हो गईं।

मैं ने आँचस से आँख पोंछे और उसकी भीषण वेदना को शीतल करने के उद्देश्य से उसके नन्हें परन्तु लिपे-पुते सुन्दर घर

में जा पहुँची। वह बर्तन धो रही थी। मुझे देखते ही एक तड़पती, पीड़ित सी मुस्कान उसके अधरों पर फैल गई। मैं ने बैठते हुये धीरे से कहा—‘मुझे तुम्हारे पति के ऐसे कुत्सित कार्य पर खेद है। कहीं अधिक चोट तो नहीं आई?’ उसने अपनी अश्रु-पूर्ण दृष्टि घुमा ली। वह केवल इतना ही कह सकी—‘नहीं, वह मुझे क्यों मारने लगे?’ मेरी आँखें आश्चर्य से खुली ही रह गईं। मैं भावनाओं में वह गई।

‘वह रुकी नहीं—कांटों पर पग धरती हुई बढ़ती गई। मैं उसकी पीड़ित मुस्कान तथा डगमगाते पगों की अश्रुपूर्ण दृष्टि से देर तक देखती रही। हृदय उम पर आर्शीवादों के पुष्प बरसा रहा था और एक कोने से धीरे धीरे एक हूक निकल रही थी ‘न जाने कितनी अबलायें इसी प्रकार कर्त्तव्य पथ पर बढ़ती चली जा रही हैं रुकती नहीं।’

★

१—मास्टर (लड़के से)—आज कौन-कौन नहीं आया?

एक लड़का—मास्टर साहेब, जो लड़का आज नहीं आया उसे खड़ा कर दे।

२—एक आदमी—(डाक्टर से, डाक्टर साहेब मेरा लड़का रैनिसल निगल गया है।

डाक्टर—कोई बात नहीं फौन्टेनपेन से लिख लीजिए।

★ दीवाली पर ★

[ले०—श्री शान्त शास्त्री 'शालिहास']

इक दिन कल्पना मचल उठी,
कुछ लिखने को दीवाली पर ।
लिखने को जब तैयार हुआ,
तो लिख बैठा घर वाली पर ।
सम्पादक जी ! बतलाओ तो,
क्या नहीं हैं गृह लक्ष्मी वे भी ?
श्रीमती, अन्नपूर्णा, चण्डी,
पद्मिनी, लोकजननी (?) देवी ?
'उनका' पूजन लक्ष्मी से क्या,
कुछ कम है जरा विचारो तो ?
हो जाएं यदि 'वे' खुश दिल से,
तो समझो खुश लक्ष्मी देवी ।
ज्यूं ज्यूं 'वे' रंग बदलती हैं,
त्यूं त्यूं मैं ढंग बदलता हूँ ।
'वे' रोज नये फैशन करतीं,
मैं नूतन कविता लिखता हूँ ।
उनको पाकर अपने सन्मुख,
'निर्भरिणी' चलती है फर फर ।
तूफानमेल सी बन जाती कल्पना,
नहीं रुकती है फिर ।
वे रसवन्ती हैं 'सरस्वती',
दर्शन दे देतीं जब मुझ को ।
कविता का फाटक खुल जाता,
रहता न बाध ज्ञान मुझ को ।

मैं अन्तर्मुख योगी सा बन,
कागज पर कलम चलाता हूँ ।
गुन गुन भौरे सा करता हूँ,
और छत से आंख लड़ाता हूँ ।
कमरे में कितनी हैं कड़ियां ?
या उन में जाले हैं कितने ?
दीवारों पर धब्बे काले—
कितने ? जाले हैं जाली पर ?
सब बतला सकता हूँ क्रमशः,
जब लिखता हूँ घर वाली पर ।
* * * *
लो, आ पहुँचीं हैं वे सिर पर,
अब यारो सिर की खैर नहीं ।
उनको फुसलाना बातों में,
चाँदनी चौक की सैर नहीं ।
आओ स्वागत ! गृहलक्ष्मी जी !!
यह भाड़ू कैसी है कर में ?
आंखों के तेवर क्यों बदले ?
सन्नाटा सा है क्यों घर में ?
हैं ! हैं !! न उलटना 'इंकपाट',
यह कागज रही नहीं प्रिये !
है कलम बिचारी का कसर क्या,
कुचल रही क्यों पांव तले ?

सब है कसूर इस किसमत का,
 जो मिले 'लिबारी' तुम मुझ को।
 कुछ घर गृहस्थी की सोच भी है ?
 या यूँ ही सताओगे मुझ को ?
 ऐ तुकड़ जी ! कुछ टुकड़ का भी,
 ख्याल कभी आता है क्या ?
 दीवाली आ गई है सिर पर,
 पूछा है, कभी ? 'लाना है क्या ?'
 धी खत्म हुआ है परसों से,
 लकड़ी भी कल से खत्म हुई।
 आटे के बजट का तो घाटा,
 होता है नहीं पूरा ही कभी।
 लो उठो; उठाओ यह भोला,
 सौदे जो बतलाऊँ-लाओ।
 कुछ चटर पटर मुन्ने को,
 साड़ी से डिल मुझ को दिलवाओ।
 मैदा, सूजी, चीनी, चावल और
 तेल, नमक, लकड़ी, रुई।
 बेसन-हलदी, धनिया, पापड़,
 और दाल मूँग की धुली हुई।
 तस्वीर लक्ष्मी की गणेश मिट्टी का
 खाँड खिलोने भी।
 पकवान डालडा के ताजा,
 कुछ मीठे और सलोने भी।
 जी खोल बताशे मोमवतियाँ,
 'हटरी' दीवे भी लाने हैं।
 मुन्ने का कुर्ता कोट और,

पाजामे भी सिलवाने हैं।
 अब बोलो तो सम्पादक जी !
 क्या गीत लिखूँ दीवाली का।
 घर के घाटे का बजट लिखूँ ?
 या सुनूँ 'रुदन' घर वाली का ?
 मैं साठ रुपए का नौकर,
 'घर गवर्मिन्ट' से क्या कह दूँ ?
 है 'दीवाली' या 'दीवाला',
 यह उत्तर उनको किस तरह दूँ ?
 दो राय मुझे ऐ ! पाठक गण !!
 गाऊँ क्या ? इस दीवाली पर।
 या दीवाले पर रोऊँ फिर,
 या तरस करूँ घर वाली पर।
 'वे गृहलक्ष्मी' यदि रूठ गई,
 तो फिर दीवाली विफल हुई।
 साड़ी सैडिल जो नहीं मिले,
 तो घर वाली भी विकल हुई।
 दीवाली मनाऊँ ? या घर वाली ?
 बतलाओ तो ऐ ! पाठक गण !!
 मैं फंसा हुआ हूँ दुविधा में,
 क्या करूँ भला दीवाली पर।
 रोऊँ अपनी कंगाली पर,
 या गीत लिखूँ दीवाली पर।
 कण्टोल चावलों की ही तरह
 करवा दूँ क्या घर वाली पर ?



चुटकुले

१ वकील-मुंशी जी, ज़रा अपना पैना खाली हो तो दे दीजिये ।

मुंशी-इसमें तो स्याही भरी है ।

२ डाक्टर-(रोगी से) कोई भी हल्की चीज़ खा लेना ।

रोगी-तो क्या रुई खा लूँ ?

३ डाक बाबू-(सेठ जी से) सेठ जी आप का लिफाफा भारी है । इस पर टिकट और लगाइये ।

सेठ जी-टिकट लगाने से तो यह और भी भारी हो जायेगा ।

४-दो आलसी एक बाग में पड़े हुए थे । थोड़ी देर बाद एक सज्जन पुरुष उस बाग में आया । इस पर एक आलसी बोला, 'ओ भाई, ज़रा मेरे मुँह में इस आम का रस, जो मेरी बगल में पड़ा है, निचोड़ दो । इस पर दूसरा आलसी बोला, 'न भाई, ऐसे आदमी की कुछ मदद न करना, यह इतना आलसी है कि कल शाम एक कुत्ता आया और मेरा मुँह चाटने लगा पर इस से इतना नहीं हुआ कि उस कुत्ते को हटा दे ।

५-एक अनपढ़ आदमी कोट पतलून पहने अंग्रेज़ी का अखबार उलटा किए देख रहा था । उस में मोटर का चित्र था ।

किसी आदमी ने पूछा, 'साहेब क्या खबर पढ़ी ?'

उस पर साहेब ने उत्तर दिया—
'सिर्फ एक मोटर उलट गई ।'

६ मालिक-(माली से) क्यों रे क्या बात है कि अब तू आम नहीं लाता ?

माली-हज़ूर तोते रात को आकर कुछ आम खा जाते हैं और बाकी को खराब कर जाते हैं ।

मालिक-तू रात को सोते समय बाग के फाटक लगा दिया कर ।

७ नौकर-साहेब आपसे बाहर कोई अदामी मिलने आया है ।

मालिक-कौन है ?

नौकर-साहेब कोई दाढ़ी वाला है ।

मालिक-उसे जाकर कह दो मुझे दाढ़ी

नहीं चाहिए । ★

अलजीरियन मलिका काहेना, जिसके ४०० पति थे बादशाहों तथा सम्राटों की हज़ारों स्त्रियाँ होती थीं लेकिन आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि एक समय अलजीरिया में काहेना नामक एक रानी राज्य करती थी । इस रानी ने भी अपने महल में एक हरम बनाया हुआ था । उसमें उसके ४०० पति रहते थे । यह रानी पतियों के साथ वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा कि राजा तथा नवाब अपने हरमों की स्त्रियों के साथ किया करते थे ।

Court Notice (ਇਸਤਹਾਰ)

ਅਜ ਅਦਾਲਤ ਸ: ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਾਹਬ
ਸਬ ਜਜ ਬਹਾਦੁਰ ਦਰਜਾ ਅਵਲ ਕਪੂਰਥਲਾ।
ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ, ਫੁਮਨ ਸਿੰਘ, ਪਿਸਰਾਨ
ਦਲੀਪ ਸਿੰਘ ਜਟ ਸਕਨਾ ਪਲਾਹੀ ਤਹਸੀਲ
ਫਗਵਾੜਾ। -ਫਰੀਕ ਅਵਲ

ਬਨਾਮ

੧-ਮੱਲਾ ਸਿੰਘ ਪੁਤ ਦਲੀਪ ਸਿੰਘ ਸਕਨਾ
ਪਲਾਹੀ ਹਾਲ R T, 313×063 A Halt-
vil California.

੨-ਮਸਮਾਤ ਰਾਉ ਬਾਵਾ ਦਲੀਪ ਸਿੰਘ
ਜਾਤ ਜਟ ਸਕਨਾ ਪਹਾਲੀ ਤਹਸੀਲ ਫਗਵਾੜਾ.

੩-ਸਿਰੀਮਤੀ ਕਿਸ਼ਨਦੇਵੀ ਜੋਸ਼ਾ ਪਰੀਤਮ
ਸਿੰਘ ਜਾਤ ਜਟ ਸਕਨਾ ਬਿਰਕ ਡਾਕਖਾਨਾ ਖਾਸ
ਤਹਸੀਲ ਫਲੋਰ ਜ਼ਿਲਾ ਜਾਲੰਧਰ।

੪-ਪਾਲ ਸਿੰਘ (੫) ਦੀਵਾਨ ਸਿੰਘ
ਪਿਸਰਾਨ ਫਤਹ ਸਿੰਘ ਜਟ ਸਕਨਾ ਪਲਾਹੀ
ਤਹਸੀਲ ਫਗਵਾੜਾ। -ਫਰੀਕ ਦੋਇਮ

ਦਰਖਾਸਤ ਸਾਰਟੀਫੀਕੇਟ ਜਾਨਸੀਨੀ
ਜ਼ੋਰ ਦਫਾ 373 Act 39 ਨਿਸਬਤ ਤਰਕਾ
ਦਲੀਪ ਸਿੰਘ ਮਤਵਫੀ।

ਉਪਰੋਕਤ ਮੁਕਦਮਾ ਵਿਚ ਤਾਰੀਖ
ਪੇਸ਼ੀ 4/11/53. ਮੁਕਰਰ ਹੋ ਕਰ ਇਸਤਹਾਰ
ਹਰ ਖਾਸ ਵ ਆਮ ਕੀ ਸੂਚਨਾ ਲਈ ਜਾਰੀ
ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਅਗਰ ਕਿਸੇ ਪੁਰਸ਼ ਨੂੰ
ਸਾਇਲ ਕੇ ਹਕ ਮੇਂ ਸਾਰਟੀਫੀਕੇਟ ਦਿਤਾ
ਜਾਨਤੇ ਕੋਈ ਉਜਰ ਹੋ ਤੇ ਤਾਰੀਖ ਮੁਕਰਰਾ
ਪਰ ਬਵਕਤ 10 ਬਜੇ ਸਵੇਰੇ ਹਾਜ਼ਰ ਅਦਾਲਤ
ਆ ਕਰ ਉਜਰਾਤ ਪੇਸ਼ ਕਰੇ ਵਰਨਾ ਬਾਦ ਮੇਂ
ਕੋਈ ਉਜਰ ਸਮਾਇਤ ਨਹੀ ਹੋਗਾ।

ਮੁਹਰ ਅਦਾਲਤ
ਮਿਤੀ 26-10-53.

ਦ: ਸਬ ਜਜ ਦਰਜਾ
ਅਵਲ ਕਪੂਰਥਲਾ।

★ ਕੂਮਿਏਂ ਤੋ ? ★

ਪਿਤਾ, ਪੁਤ, ਮਾਮਾ, ਮਾਂਜੇ, ਸਾਲੇ, ਬਹਨੋਈ
ਇਸ ਪਹੇਲੀ ਮੇਂ ਐਰ ਨ ਕੋਈ,

ਏਕ ਬਾਰ ਲੁ: ਕਢੇ ਪਕਾਏ।

ਦੋ-ਦੋ ਹਿਸੇ ਸਬਕੇ ਆਏ,

ਬਤਾਓ ਕਿਤਨੇ ਜਨੋਂ ਨੇ ਖਾਏ ॥

(੨)

ਲਾਲਚ ਕੇ ਮੈਂ ਪਹਲੇ ਰਹਤਾ

ਰਹਤਾ ਪੀਛੇ ਕਮਲਾ ਕੇ

ਯਦਿ ਮੇਰਾ ਘਰ ਦੇਖਨਾ ਚਾਹੋ

ਤੋ ਦੇਖੋ ਬੀਚ ਤਾਲਾਬ

(੩)

ਏਕ ਰਮਾਚਾ 'ਮ' ਪਰ ਸਾਰਾ

ਬਾਕੀ ਰਹ ਗਏ ਕਾਨ,

ਲੋਗ ਰਾਤ ਦਿਨ ਸੁਖ ਮੇਂ ਰਹਤੇ,

ਬਤਾਓ ਮੇਰਾ ਕਥਾ ਨਾਮ।

(੪)

ਤੀਨ ਅਚਰ ਕੇ ਨਾਮ ਪਰ,

ਆਖਿਤ ਹੈ ਜਗ ਸਾਰਾ।

ਅਨਤ ਕਾ ਅੰਗ ਕਾਟ ਕਰ,

ਲਗਤਾ ਬਹੁਤ ਪ੍ਧਾਰਾ। ?

(੫)

ਆਜ ਪੈਦਾ ਹੁਆ ਹੂੰ।

ਕਲ ਜਵਾਨ ਹੋ ਜਾਊਂਗਾ।

ਪਰਸੋਂ ਮਰ ਜਾਊਂਗਾ।

ਪਰ ਫਿਰ ਮੀ ਮੁਸਕਰਾਤਾ ਰਹੂੰਗਾ।

केवल एक मास के लिए 12½ % की विशेष रिआयत

हमने अपना वर्तमान स्टॉक समाप्त कर देने के विचार से स्कूलों के लिए खेलों का सामान निम्नलिखित दरों पर 12½ % की रिआयत देने का निश्चय किया है इस अवसर से लाभ उठाने के लिए शीघ्र आर्डर दें। ऐसा न हो कि देर करने से आपको निराश होना पड़े।

* फुटबाल कवर *

1. टी शोप श्वेत कुर्म चमड़ा इङ्गलिश डिजाइन नं० 5 कवर	13-8-0
2. टी शोप कानपुर लैडर	12-8-0
3. उत्तम प्रैक्टिस नं० 5 कवर 13 नग	11-0-0
4. सस्ता प्रैक्टिस नं०	6-8-0
5. टी शोप नं० 4 फुटबाल कवर	11-0-0
6. उत्तम प्रैक्टिस नं० (4) 13 नग	9-0-0
7. चीप (सस्ता) प्रैक्टिस नं० 4	6-0-0
8. टी शोप नं० 3 यूथ फुटबाल कवर	9-0-0
9. उत्तम प्रैक्टिस नं० 3 यूथ,	5-0-0
10. बलैडर नं० 5, 4, 3, फर्स्ट क्वालिटी	2-0-0
11. " " " सैफण्ड "	1-12-0
12. टी शोप थार्न प्रू कुर्म लैडर वाली बाल कवर ...	10-0-0
13. पेटेंट राज कलर वाली वान कवर	9-0-0
14. उत्तम प्रैक्टिस वाली बाल कवर	8-0-0
15. यूथ साइज नं० 3 " "	7-8-0

16. वाली बाल नैट वाटर प्रूफ रेग्युलेशन साइज डबल टेप	9-0-0
17. वाली बाल नैट काटन रेग्युलेशन साइज डबल टेप	8-8-0
18. यूथ साइज वाली बाल नैट काटन	7-8-0
19. इन्फ्लेटर (बहुत बड़ा साइज)	5-8-0
20. " (बड़ा साइज)	5-0-0
21. लैडर लेसिज (प्रति नग)	0-2-0
22. विस्त (ऊँची आवाज)	1-0-0

* हाकियां *

23. 36" फुल साइज इंगलिश रबड़ बाऊंड हाकी स्टिक	8-0-0
24. 36" फुल साइज ओलैम्पिक	7-8-0
25. 33" मिडल साइज इङ्गलिश रबड़ बाऊंड	4-8-0
26. हाकी बाल स्पेशल क्राउन	4-0-0
27. हाकी बाल मैच	3-8-0

* नोट :- 1. इनके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार का खेलों का सामान बास्केट बाल, क्रिकेट बैट, बैड का सामान इत्यादि मिल सकता है, 2. प्रत्येक प्रकार के बूट, शूज, पुल ओवर, मफलर, जुराब भी तैयार होते हैं। 3. वज़न करने की मशीनें और रबड़ की मोहरे भी तैयार होती हैं।

* प्यारा लाल एण्ड सन्ज स्पोर्ट्स डीलर्ज *

जालन्धर शहर (पूर्वी पञ्जाब)

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/12
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	-/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and withdrawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg. Ledger A. & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices
Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना। (२) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाने में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना। (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहां से भेजा जाता है। कारणवश देर से भेजना सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आग्रिम नियत है। बी० पी० से ७॥) है। विदेशों में बी० पी० नहीं जाता। पेशगी १२ शि० भेजें।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥=) के डाक टिकट भेजें।

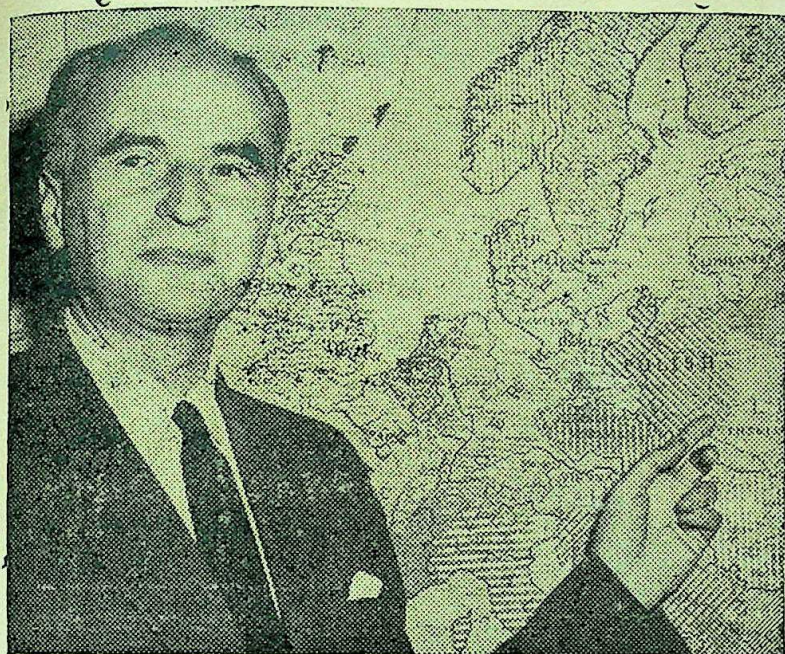
(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमी या वृद्धि की जा सकेगी।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जाने चाहियें। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे ५) रु० ब्लाक के लिए भेजें और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख जौटाये नहीं जाते।

(७) बिज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अक्षरीय न हों और जिन के हाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार है।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)



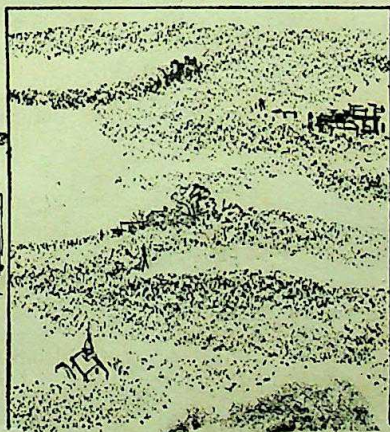
ड० मारेक स्टानिसजा कोरोविज (संयुक्त राष्ट्र संघ में पोलिश डेलीगेशन के स्थानापन्न) ने अमेरिका से शरण मांगी है। चित्र में आप एक मान चित्र (नक्शे) की सहायता से पत्रकारों की सभा में अपने उठाये पग का स्पष्टीकरण करते दिखाई पड़ते हैं। आप काको यूनिवर्सिटी में अन्तर्राष्ट्रीय कानून के प्रोफेसर थे।



आपके जानने योग्य



उत्तर पूर्वी इटली की ब-दरगाह वीनिस 120 छोटे २ टापुओं पर बनी है। इसमें 170 नहरें हैं जिन पर 400 पुल हैं। एक ढाई मील लम्बा पुल इसे शेष देश से मिलाता है।



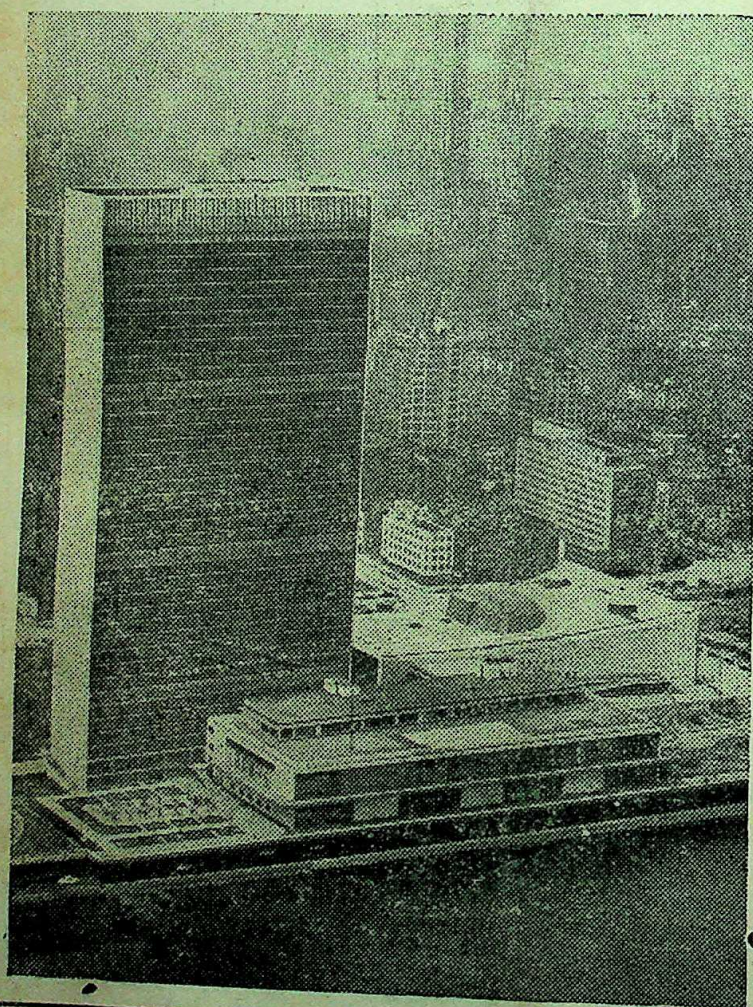
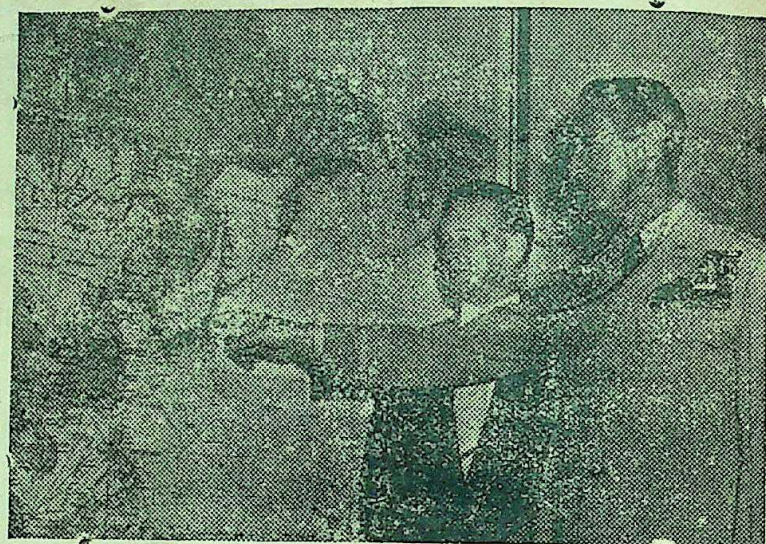
यदि समुद्र का सारा नमक निकाल लिया जाए तो वह पृथ्वी पर 110 फीट गहरा बिछ सकता है।



कोरिया के युद्ध में १७ देशों के दक्षिणी कोरिया की सहायता में ७० हजार सैनिक काम आये।

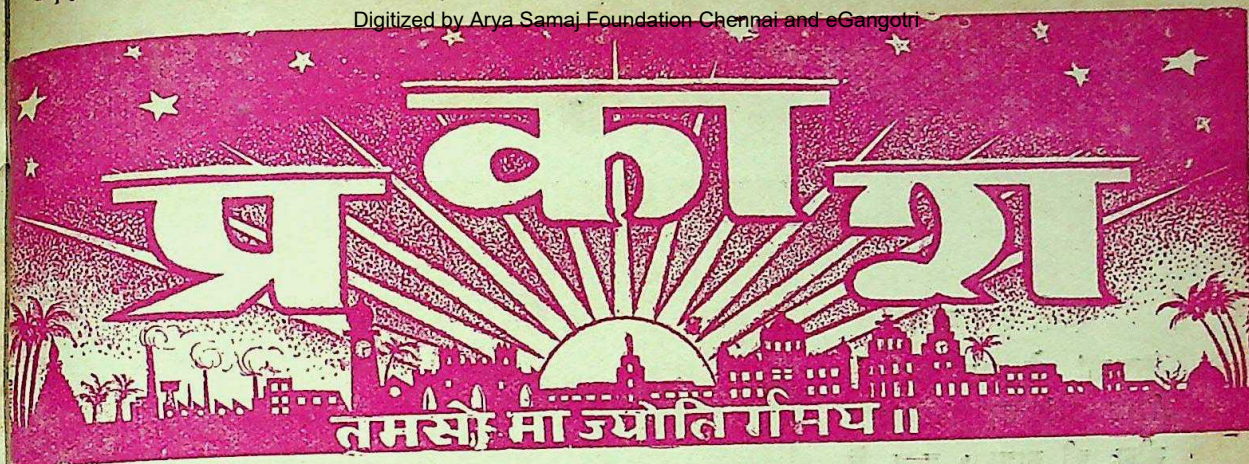


संयुक्त राष्ट्रीय सेनाओं के
सुप्रीम कमांडर जनरल क्लार्क
न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के
मन्त्री दाग हैमस्कजोल्ड को
कोरिया में हुई शान्ति की
रिपोर्ट पेश करते समय सैन्य
स्थिति स्पष्ट करते हुए ।



न्यूयार्क नगर में संयुक्त राष्ट्र
संघ के भव्य कार्यालय का
सुन्दर दृश्य—यह कार्यालय
ईस्टरिवर के किनारे पर स्थित
है। यह भवन ३६ मंजिला है।
इसके निर्माण में १७ देशों के
इंजीनियरों ने भाग लिया था।





वार्षिक मूल्य ७) रु० | पंजाब की एक मात्र शिक्षा पत्रिका | एक प्रति 1/-)



७ दिसम्बर

१९५३



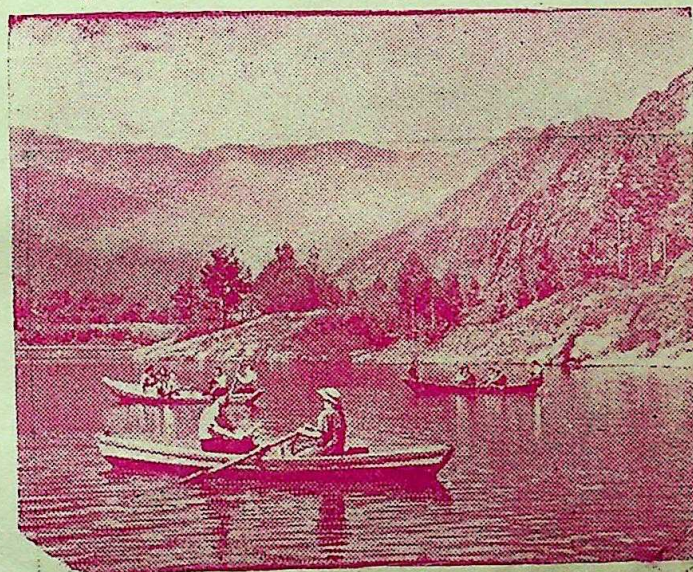
सम्पादक

हितैषी अलावलपुरी



2016
24.12.99

* भील में नौका विहार का मनोरम दृश्य *



यह काश्मीर का नहीं रूस के 'वेशपेक' पर्वत की
ढलान पर स्थित 'चैमल लेक' का है।



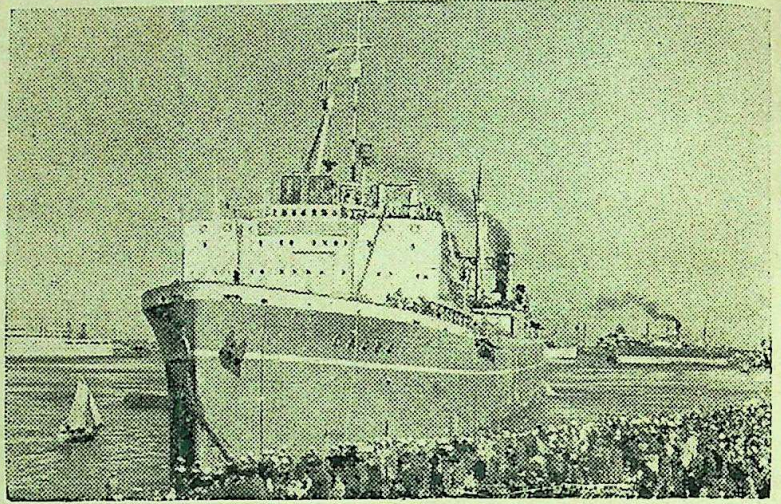
THE "Prakash"

Editor: L.C. HITASHI

JULLUNDUR CITY.

रूसी जल-यान

'स्लावा' ने सात मास में Antractie तक तीस हजार मील की यात्रा ७ मास में पूरी की। चित्र में 'स्लावा' ओडेसा पोर्ट में खड़ा है।



इण्डस्ट्रियल सेफ्टी बूट

एक नई किस्म के बूट तैयार किये गये हैं जिन्हें खानों के मजदूर पहनते हैं इसकी 'टो' पर फौलादी टोपी लगी रहती है। जो मजदूर की दुर्घटनाओं से रक्षा करती है। चित्र में एक मजदूर इसी बूट की 'टो' पर वैनगार्ड कार में बैठी ५ लड़कियों का बोझ थामे हुए है।

व
क

जी
वैसे
पद
जी
पूरा
हे।
स्थ
सह
हुअ
निव
के
सा
को
हे
पर

पूछ
भाष
१.

पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, पैंप्सु, भूपाल और हैदराबाद में स्कूल-लाइब्रेरियों के लिए स्वीकृत ।

प्रकाश

[पंजाब की एक मात्र सचित्र शिक्षा पत्रिका]

वर्ष ४८
क्रमांक ५२

जालन्धर, ७ दिसम्बर १९५३

[भाग ५ अंक ११
हिन्दी]

अपनी बात

एक वर्ष और बीत गया

इस अंक के साथ 'प्रकाश' ने अपने जीवन का एक और वर्ष पूरा कर लिया । वैसे तो यह अगले मास ४९वें वर्ष में पदार्पण करेगा किन्तु अपने नये हिन्दी जीवन का इसने तीसरा वर्ष गत जून में पूरा कर जुलाई से चौथे वर्ष में प्रवेश किया है । हमें प्रसन्नता है कि यह अपना अस्तित्व स्थिर रखने में सफल हुआ है और अन्य सहयोगियों की तरह काल का घास नहीं हुआ । परन्तु इस से यह परिणाम न निकाला जाय कि पंजाब में हिन्दी साहित्य के लिये भूख बढ़ गई है, नहीं । हिन्दी साहित्य के प्रति प्रभियों की उपेक्षा वैसी का वैसी है, इस पर भी 'प्रकाश' जीवित है तो हमारे इस हर हालत में और हरमूल्य पर जीवित रखने के दृढ़ संकल्प के कारण ।

किन्तु क्या हम पञ्जाब निवासियों से पूछ सकते हैं कि उन्होंने अपनी राष्ट्र-भाषा के प्रचार के लिये क्या किया है ?

१. १२. ५३.

—हितैषी

गीत

(१)

कब किसकी जीवन लहरी को पवन वेग अनुकूल मिला ?
कब किसकी अंतर नौका को मन का चाहा कूल मिला ?
कर बंदी आशा ने उर को मधुर जाल में फाँस लिया ।
प्यासे उर की लघु कलिका किस उपवन में फूल खिला ?

(२)

मौन पंथ है राही बढ़ता मंजिल का अरमान लिये,
दीपक राग न गाता कोई, पथ के सारे बुझे दिये,
हृदय दीप में स्नेह आस का कुछ भी तो अब शेष नहीं,
जले दिया फिर कैसे बोलो, कैसे ज्योतिर तिमिर पिये ?

(३)

गीत न फूटे भाव अनेकों, घाव कसक कर रह जाते,
साज हृदय के बजते पर कब गीत किसी के टकराते,
उर के उबार ताल तो देते, पर पायल भंकार कहाँ ?
नर्तन की गति में पिस कर नूपुर के स्वर बह जाते ।

(४)

सुख के लिये सुकोमल उर ने जल जल घातक दुख सहे
जीवन में रंगीत महल बन जाने कितनी बार ढहे,
खिली बहारे बन खुद पतझड़ मधुमासों को लूट रही,
मादक मधु की मधुशाला में आकर प्यासे लौट रहे ।

—विष्णु, खन्ना ।

मनुष्य दा सुभा ए कि
उसनू अपने हाल तों
कदी भी सन्तोष नहीं
हुंदा । कई पुरुष
समझदे ने कि ओन्हां

नालों स्त्रियां मजे चि ने ते ओह पतियां दे सिर
ते मौजां करदियां ने । ओह कई बार कह उठदे
ने, किजां चंगा हुंदा जे किधरे परमात्मा ओन्हां
नूं भी स्त्रियां बना देंदा ! इस तो उल्ट कई
स्त्रियां समझदीयां ने कि पुरुष स्त्रियां नालों
मौज विच ने ते ओह चांहदियां ने कि किधरे
परमात्मा ओन्हां नूं भी पुरुष बना देवे ।

हुन जद तों भगवान ने किसे २ दी अरजी
मन्जूर करनी शुरू कीती ए पुरुष तों स्त्री ते स्त्री
तों पुरुष बनन दी इच्छा बहुत जनियां नूं हो गई
ए । एहो कारण ए कि जिस डाक्टर ने इक २२
सालां दे अमरीकी फौजी 'जोहन' नूं अप्रेशन
करके 'जीन' बनाया सी उसनूं कइयां देसां दे
मुंडियां कुडियां ने अनगिनत चिट्ठियां लिखियां
ने जिन्हों विच मुंडियों कुडियां ते कुडियों मुंडे
बनन दी इच्छा प्रगट कीती ए । ओह डाक्टर ते
खैर ठहरिया दूजा परमात्मा जेहड़ा किसे कुड़ी
नूं मुंडा ते मुंडे नूं कुड़ी बना सकदा ए, सानूं
भी, जिहड़े किमे नूं परमात्मा दा चपड़ासी भी नहीं

—नवां शहर में राधा
कृष्ण आर्य कालेज
की नींव पंडित नेहरू
ने रखी ।

—सरदार साधु सिंह D. I. S. फीरोज़पुर
के प्रयत्न से ३६ स्कूल खोला जा चुके हैं ।

—११ नवंबर को नितवार (आसाम) में
बेसिक सम्मेलन हुआ जिसमें सारे भारत से
एक हज़ार प्रतिनिधि सम्मिलित हुए ।

अपनी धोली च

परमात्मा दे फैसले दी अपील

किस्मत कुड़ी दा पता पुछिया ए । शैद ओह
कुडियां उसतों मुंडा बनन दा नुस्खा पुछना
चांहदियां ने । भर गरीब चन्द्र प्रकाश तों ते
पुछो कि ओस की सुख पाया मुंडा बन के ?
पिंड दे स्कूत 'च' अध्यापिका सो ते तनखाह नाल
अपना ते बुढी माँ दा गुजारा होई जांदा सी ।
मुंडा बनन नाल ओहदी नौकरी जांदी रही ते
सारी उम्र कवारे रह के मर्द होंदे होए रोटी
पका के आप खानी तै मां नूं खवानी पयेगी ।
ओह ते कहंदा होना ए कि हे परमात्मा मैं नूं
तां फेर कुड़ी बना दे ।

पहले परमात्मा दी अपील दूजे परमात्मा
ने सुन लई ते मन्जूर कर लई भर दूजे
परमात्मा दे फैसले दी अपील सुननी हुन
पहले परमात्मा ने भी नहीं ।

★ —भाईया रेलू

—बिहार में तन लड़कों को, जिन्हों ने मैट्रिक
पाए करने से पहले विवाह कर लिया है, कालेजों
में दाखिल नहीं किया जायेगा ।

शिक्षा समाचार

—४-१-५४. को नाग-
पुर में अखिल भारतीय
प्राइमरी शिक्षा सम्मेलन
का उद्घाटन पं०

नेहरू करेंगे ।

—गवर्नमेंट हाई स्कूल सुनाम (पैप्सु) ने
१३-११-५३. को अखिल भारतीय सामाजिक शिक्षा
दिवस मनाया ।

—D. P. I. पैप्सु का बलवन्त सिंह चल बसे !

प्र० पाकिस्तान अमे-
रिका से हवाई अड्डों
के बदले फौजी सहा-
यता लेने की जो बात
चीत कर रहा है उसके
सम्बन्ध में आपकी

क्या सम्मति है ?

उ० पाकिस्तान और अमेरिका दोनों को इस
गठ जोड़ से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होगी ।
पाकिस्तान के पड़ोसी रूस, अफगानिस्तान, भारत
और तुर्की—सब ने इस प्रस्ताव को नापसंद
किया है ।

प्र० काश्मीर में बरूशी सरकार बन जाने से
क्या लाभ हुआ है ?

उ० काश्मीर और भारत का पारस्परिक
सम्बन्ध पहले से कहीं अधिक दृढ़ हो गया है ।—सं०

प्र० अमेरिका और रूस जब दोनों ही
शांति के इच्छुक हैं तो कोरिया के शांति

भारत ४८० रेल इंजन
विदेशों से मंगा
रहा है ।

हेग में अन्तर्राष्ट्रीय
न्यायालय के भारतीय
जज श्री नरसिंह राव का देहावसान हो
गया है ।

—कम्युनिस्टों ने कोरिया शांति सम्मेलन
के लिये नई देहली का सुझाव रखा है । यह
सुझाव संयुक्त राष्ट्रों ने स्वीकार कर लिया है ।

—अमेरिका के वाइस प्रेजिडेंट मिस्टर
निकसन भारत आये हुये हैं ।

—ईरान तेल के भण्डों के सम्बन्ध में
बृटेन से पुनः बात चीत आरम्भ करेगा । भू०
पू० प्रधान मन्त्री डा० मुसद्दक के विरुद्ध
सुकद्दमा चल रहा ।

फूल और कांटे

[पाठकों के प्रश्नों के उत्तर]

—सोम प्रकाश, देहली ।

प्रभुत्व की चिन्ता है । दोनों को एक दूसरे
से भय की है अतः आत्मगौरव इस कार्य में
बाधा डाल रहा है ।

—सं०

प्र० ब्रिटिश गायना के भू० पू० प्रधान मंत्री
भारत आये हुए हैं और भारतायों से सहायता
की अपील कर रहे हैं । क्या भारत का सहायता
देना उचित होगा ? —मोहन लाल, रोहतक ।

उ० भारत सरकारी तौर पर तो कोई सहायता
नहीं दे सकता है । सिद्धान्त रूप में भारत सब
देशों की स्वतन्त्रता का पोषक है अतः इस की
नैतिक सहायता किसी भी देश को प्राप्त हो
सकती है ।

—सं०

—भारत और रूस
में ५ वर्ष के लिये
व्यापार सन्धि हो
गई है ।

—२८ नवम्बर से
शरणाथियों को मुआवजे मिलने आरम्भ हो
गये हैं ।

—पश्चिमी बङ्गाल में बीस लाख शरणा-
थी हैं ।

—१९५४ में गोहूँ पर से सारे देश में कण्ट्रोल
उठा लिया जायेगा ।

—रूस ने पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि
अमेरिका से सैनिक सहायता लेने का अर्थ रूस
के लिये खतरा पैदा करने के बराबर समझा
जायेगा । अफगानिस्तान और भारत ने भी इसका
विरोध किया है ।

—भारत सरकार ने
पढ़े लिखे बेकारों को
काम पर लगाने के
लिये एक योजना
स्वीकार की है जिसके

अन्तर्गत ११ राज्यों में १६ हजार अध्यापक
नये प्राइमरी स्कूलों के लिये भरती किये जाएंगे।
पंजाब में ऐसे १२०० अध्यापक नियुक्त होंगे।
यह कहना तो कठिन है कि १६००० व्यक्तियों
के काम पर लग जाने से पढ़े लिखों में से बेकारी
समाप्त हो जाएगी क्योंकि शिक्षित बेकारों
की संख्या हजारों नहीं लाखों है, हां इस तरह
किसी सीमा तक निरक्षरता निवारण में मदद
अवश्य मिलेगी। बेकारों की समस्या का तो कोई
दूसरा ही हल ढूँढना होगा !

नये प्राइमरी स्कूल

पंजाब में लग भग ६ हजार प्राइमरी
स्कूल पहले से मौजूद हैं और ४ हजार नये
खोलने की तजवीज है। निस्सन्देह स्कूल ग्रामीणों
की एक बड़ी आवश्यकता भी है किन्तु नये
स्कूल खोलने से पूर्व पुराने स्कूलों को स्वावलम्बी
बनाना नितांत आवश्यक है। कहीं ऐसा न हो कि
केवल संख्या बढ़ाने के लिए नये स्कूल तो खोले
जाते रहें और धनाभाव में पुराने स्कूल बन्द
होते जायें।

नागरी लिपि में सुधार

कहा जाता है कि मुद्रण टाईपिंग तथा
शार्ट हैण्ड की दृष्टि से नागरी लिपि में कुछ ऐसे
सुधार करने आवश्यक हैं जिन से इस लिपि का
उपयोग अधिक सुविधापूर्ण हो सके।

अभी हाल ही में लखनऊ में भाषा विशेषज्ञों की
एक बैठक हुई थी जिसमें समय की आवश्यकताओं
के अनुरूप नागरी लिपि में सुधार किए जाने के

सम्पादकीय विचार

* शिक्षित बेकारों की समस्या *

पंजाबी के लिए नागरी लिपि

कहां तो सभी प्रांतीय भाषाओं के लिये
नागरी लिपि अपनाने का सुझाव है और कहां
पंजाबी के लिये भी इसे अपनाने का विरोध
किन्हीं लोगों द्वारा हो रहा है। हालांकि बटवारे
से पूर्व पंजाबी फारसी, नागरी और गुरुमुखी
तीनों लिपियों में लिखी जाती थी और
फारसी लिपि में अब भी लिखी जाती है।
ऐसी अवस्था में नागरी लिपि का विरोध
देशद्रोह नहीं तो क्या है ?

३२ पुत्र छोड़ कर मरा

इब्नसाऊद शाह अरब का पिछले दिनों
देहावसान हो गया। उसके ३२ पुत्र जीवित हैं।
सबसे बड़ा पुत्र उसका उत्तराधिकारी बनाया है।

‘प्रकाश’ बाल संघ की दूसरी बैठक

२० दिसम्बर को दोपहर के २ बजे प्रकाश
कार्यालय में होगी। इसमें सम्मिलित हूजिए
और संघ के सदस्य बनिये।

* सदस्यता का कूपन *

मन्त्री, प्रकाश संघ जालन्धर। जय हिंद,
मैं संघ के नियमों से सहमत हूँ और इन के
पालन की प्रतिज्ञा करता हूँ। कृपया मुझे संघ का
सदस्य बना लें।

भवदीय (नाम).....
आयु.....
श्रेणी.....

कहानी —

★ डूबते स्वप्न ★

(लेखक—श्री राकेश जी, डलहौजी)

निशा की ऊँघती परियों में उस कविरूप ने भी ऊँघ जाना चाहा ।

मन्द समीर के झोंके उस की विकल देह को हौले हौले छू लेने का प्रयास करने लगे । घर में जी जो ऊँघ आया था, इसी लिये वह सरितातीरे आन लेटा था— निद्रा की मधुर गोदी में झूम जाने को मन्द पवन की शीतल लोरियों से मन बहलाने को ।

विधु की बिखरी कौमुदी, सरिता के वल स्थल से लिपटती हुई उस की मुखाकृति तक आन पहुंची थी । पर उस की स्वच्छ प्रभा में ओत प्रोत खारे उदधि अभी तक भी आतुर थे—हां, एकदम आतुर । वे निर्मल जागृति को पाकर भी कुछ और ही पा लेने के लिये भटक रहे थे—भ्रंभा की भान्ति—इस नीरव, निस्तब्ध वात-वरण में । उन में प्रेरण थी किसी अतीत की—और थी—किसी भूले विसरे स्वप्न को आंक लेने की व्यर्थ चेष्टा ।

एक ओर नहीं, चारों ओर इन खारे नयनों से विहंगी अपनी २ उड़ानें बटोरे व्योम-दिशाओं में उड़े, किन्तु भूल भटक कर निज नीड़ों में आ जाना ही उन की अन्वेषणा का यथार्थ रूप बन गया ।

उसके मूक मानस से दीर्घ निश्वास उभर आई और वह वहीं लेटे २ अतीत के सपनिज प्रदेश में विहार करता किसी से बातें करने लगा । वह था कौन—कोई क्या जाने ?

‘दो साल भी नहीं हो लिये मैं ने कविरूप अपनाया था—और कवितारूप को आलिगन में भर लेने के लिये निज हृदय उस के समस्त

रखा था ताकि वह रूप एक बार मुझ में भी भर आये । लग्न जो है मुझे कविरूप से !

जभी तो कविरूप के नाते मैं ने कविता रूप से स्नेह जोड़ा, उसका आदर-सत्कार किया, कहा था—

शीतल समीर के दल बल सी,

पुष्प लता पे मधुप सी ।

इस ओर भी आ जा

कविते, निज रूप दिखा जा,

आ जा ! कविते आ जा !!

एक बार नहीं कई बार उसे मनाने के लिये अनुनय विनय की । कैसे—बिल्कुल ऐसे—

तू रूप है इन लहरों में,

रव भी है उन से कम्पन में,

यह रूप यह रव दे, दे मुझको,

रखा जो, जल सिहरन में,

पर आह, मेरी चेष्टाओं पर निराशा के बिन्दु टपकने लगे—घनघोर घटनाएं मेरे कल्पना नभ पे बिखर गईं । निराशा दीप में मेरे स्वप्न डूबते गये । मैं ने जिस किसी को भी तेरा रूप दिखाया मुझे पागल, उन्मत्त, मति-हीन कितने ही कटु नामों से पुकारा गया—यह मैं ही जानता हूं, तू क्या जाने ? जानने की तुझे आवश्यकता ही क्या पड़ी है ? मैं होता ही कौन हूं तेरा; जो तू मेरे प्रति सहायभूति प्रदर्शित करे ! मेरी व्यथित दशा पर तेरा हृदय पसीज जाए । तू कोई मेरी प्रेमिका थोड़े है, जो मेरा विरह तुझे तनिक मात्र भी न भाए ! तेरे शुष्क

(शेष पृष्ठ १० पर)

★ बच्चों के प्रति माता-पिता का कर्त्तव्य ★

बच्चों को विगड़ने से कैसे बचाया जा सकता है ?

माता पिता का पहला दोष जहां बाल-मनोविज्ञान के प्रति उदासीनता तथा रूढ़ीवादी प्रणाली पर निर्भर रहना है वहां दूसरा दोष यह है कि वे अपने नैतिक जीवन को ही बालक के चरित्र निर्माण के लिये पर्याप्त समझते हैं। यह ठीक है कि उसके विकास के लिये माता-पिता का स्वयं का जीवन सदाचार युक्त होना चाहिये, क्योंकि बालक में अनुकरण की प्रवृत्ति होती है तथा माता पिता उसके आदर्श। यदि माता पिता का स्वयं का ही जीवन दूषित और असामाजिक है तो कोई आश्चर्य नहीं कि बालक के जीवन में भी असामाजिक व्यवहार की प्रवृत्ति आ जाये।

परन्तु माता पिता का नैतिक जीवन ही पर्याप्त नहीं है। यदि माता पिता नैतिक जीवन रखते हुए भी बालक के मित्र न बन सकें, उसका सम्मान न कर सकें, विश्वास को स्थिर न रख सकें, तब भी बालक असामाजिक कार्यों की ओर उन्मुख हो जायेगा। एक नहीं अनेकों ऐसे उदाहरण हैं कि माता पिता का उच्च नैतिक जीवन होते हुए भी उनके बावजूद निकृष्ट जीवनधारी बने। कारण-उन्होंने अपने जीवन को पर्याप्त समझ उनसे उचित सम्बंध स्थापित न करने की भयंकर भूल की।

प्रायः माता पिता शिशु पालन में उनसे व्यवहार करते समय दो उपायों का प्रयोग करते हैं:—(१) भय, दंड और झूठ की नीति तथा (२) उपदेशात्मक तरीका। ये दोनों ही विधियां बालक के लिये पूर्णतया अनुचित हैं।

भय-दण्ड और झूठ की प्रणाली का प्रयोग

प्रायः इसलिये किया जाता है कि यह शीघ्र फलदायिनी है। यथा बालक से कोई काम कराना हो, किसी वस्तु को न छूने देना हो तो माता-पिता उसे धमका डरा कर करा लेते हैं। वह क्यों किसी काम को नहीं करना चाहता, यह जानने की आवश्यकता वे नहीं समझते। प्रायः माताएं बालक को पिता द्वारा पिटवाने की धमकी दे अपना काम करा लेती हैं परन्तु इस भयजनक वातवरण और दण्ड की धमकी की उस पर क्या प्रतिक्रिया होगी, ये वे नहीं समझतीं।

स्मरण रहे इस भय और दण्ड के कारण ही आपका शिशु आपको शत्रुरूप समझने लगता है। आपसे दूर रहने का प्रयत्न करता है। घर में रहता हुआ भी वह अपने को बेगाना समझता है। वह भीरु भी बन जाता है और फिर यह डरा हुआ बालक सब से लड़ने को आता है। कारण, वह सबको ही अपना शत्रु समझने लगता है। भय के कारण उसके मानसिक विकास में विकृति होने के साथ साथ शारीरिक विकास भी नहीं होने पाता। वह ढाठ बन जाता है।

झूठ बोल कर काम कराने की प्रवृत्ति की बड़ी हानि यह है कि बालक का स्वयं अपने माता पिता में ही विश्वास नहीं रहता और जिन माता पिता के प्रति बावजूद का विश्वास ही नहीं रहा, वे उसके अचारनिर्माण में क्या कर सकते हैं, स्वयं ही सोचें। क्या माताएं नहीं देखतीं कि उनके कुछ कहने पर भी बच्चा कान दबाए चला जाता है, कभी कहना नहीं सुनता। यह सब क्यों? इसीलिये न कि आपकी बातों पर उसका कोई

विश्वास नहीं। झूठे प्रलोभन, धमकियों और लोरियों द्वारा आप अपने विश्वास को समाप्त कर चुकी हैं। फिर भला वे आपकी क्यों सुनें ?

दूसरी विधि है उपदेश की। इसको ही लीजिए। माता पिता बालक की मानसिक अवस्था का ध्यान किए बिनाही उपदेश देना आरम्भ कर देते हैं। परन्तु ध्यान रहे 'ऐसा करना चाहिये' 'ऐसा नहीं' यह बालक को रुचिकर नहीं लगता। प्रायः वह इसका यही अर्थ लगाता है कि आप उससे ऐसा काम कराना चाहते हैं जिसे आप चाहते हैं। और जो आप नहीं चाहते उसे करने से उसको रोकते हैं। इसमें वह अपनी स्वयं की इच्छापूर्ति नहीं देखता। इसी लिये वह कर्तव्य के साथ दुःख का संबंध स्थापित कर लेता है। फिर भला क्योंकर कर्तव्य के प्रति उसका प्रेम हो ? अतएव यह विधि तो उसके लिये पूर्णतया अनुपयोगी है।

अतः यदि आप बालक के आचारनिर्माण की आधार-शिला को सुदृढ़ नींव पर रखना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि बाल पालन के लिये अनुपयुक्त इन विधियों का प्रयोग करना छोड़ माता पिता उसके व्यक्तित्व का सम्मान करना सीखें, उसके लिये प्रेमपूर्ण वातावरण उत्पन्न करें, उसकी मांगों, तथा रुचियों की वृत्ति की ओर भी उपयुक्त ध्यान दें। अन्यथा माता पिता के उच्च नैतिक जीवन धारी होते हुए भी बालक इन गलत विधियों द्वारा अपने में असामाजिक प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है।

अर्थ शास्त्र रूसी भाषा में

मास्को के ओरिएंटल इंस्टीट्यूट आव दी अकाडेमी आव साइंस् ने २००० वर्ष प्राचीन भारतीय ग्रंथ अर्थ शास्त्र का रूसी भाषा में अनुवाद कर दिया है। इस से पूर्व रामायण*

* क्यों ? *

(कु० नीलिमा 'अधीर' फर्स्टईयर जालन्धर)

क्यों तू ने मेरी आशा की दुनिया आज मिटाई ?
अभी तो इसमें सुन्दर महल नहीं बनवाये
अभी तो इसमें नयन झरोके नहीं लगाये
अभी तो इस दुनिया को कुछ भी नहीं है भांका
तू ने भी तो इसका मोल नहीं है आंका
पगली ! क्यों फिर पीड़ा की चिंगारी है सुलगाई ?
क्यों तू ने मेरी आशा की दुनिया आज मिटाई ?

अभी तो इसमें चंदा भी नहीं मुस्काया
अभी तो इसमें भंवरा भी नहीं मंडराया
अभी तो मैं ने जलता शलभ नहीं पहचाना
सुन न पाई अभी तक कोई स्नेह का गाना
अभी तो निधुरे ! इसमें मैंने शम्मा नहीं जलाई ?
क्यों तू ने मेरी आशा की दुनिया आज मिटाई ?

अभी तो झिलमिल तारे दूर खड़े मुस्काते
उठते २ भी प्रिय के चरण कमल शरमाते
अभी तो पगली ! अङ्गड़ाई भी न ली है
गहरी निद्रामें 'नीलम' निशा सोई पड़ी है

अभी तो मधुरे ! इसमें कोई कली नहीं मुस्काई ?
क्यों तू ने मेरी आशा की दुनिया आज मिटाई ?

हाराकिरी

जापानी भाषा में आत्महत्या को कहते हैं।
१८६८ में यह प्रथा बन्द कर दी गई थी।
१९११ में एक सैनिक अधिकारी लै० टकियोशी
ने टोकियो में सरकार के सम्भावित रूसी हमलों
के विरुद्ध कोई प्रबन्ध न करने के विरोध में
अपने पूर्वजों की कब्रों के सामने हाराकिरी की थी।
इस प्रथा के बन्द होने से पूर्व १५०० व्यक्ति
प्रतिवर्ष हाराकिरी करते थे।

* तथा महाभारत के रूसी अनुवाद छप चुके हैं।

(पृष्ठ ७ का शेष)

नेत्रों से वियोग अश्रु विकसित हों ! तू रो रो कर मुझे पाने की चेष्ट करे ! तेरे तो कई प्रेमी हैं ! इने गिने हों, तो बताऊँ !

तू उन के लिये अश्रुमयी होती होगी ! तनिक विछोह भी उन का तुझे हताश बना देता होगा ! तू भटकती फिरती होगी— इन बीहड़ मार्गों पर—विजन जंगलों में — निज प्रेमियों को ढूँढ निकलने की खातिर ।

आह; कितना भला होता, यदि तब करुणा—क्रन्दन के समय, मैं भी तुझे देख पाता । तुझ से पूछने को तो होता—‘बता, अब कहाँ हैं वे तेरे प्रेमी ? क्यों नहीं वे ले जाते तुझे आ कर ? बता, बता बोलती क्यों नहीं अब ? मिल गया मजा तुझे हर इक से दिल लगा कर ? और ठुकरायेगी मुझे ?

तुझ में सहानुभूति है कविते ! मैं अवश्य तुझे उस समय सान्त्वना दे कर तेरी विचल भावनाओं को सहमत कर लेता । और तुझे निज हिय में बिठा कर अपनी उदारता का विनीत परिचय देता—काश.....

मुझे सब पागल कहते हैं कविते । जिस किसी को भी मैं अपनी चित्त-वेदना दिखलाने का साहस करता हूँ, वे सब मुझे ठुकरा देते हैं ! कहते हैं—तू पागल है !

कविते, पागल तो मैं तब न था । पागल हू तो अब— तुम्हारे विरह-वियोग में ! किन्तु ..तू इतनी निमम क्यों है मुझे से ? मैं ने क्या विगाड़ा है तेरा ? तेरे वियोग में—तेरे सूनेपन में कितना उद्विग्न हूँ मैं देख तो सही ।

यह बात नहीं कि मैं इतना कुरूप हूँ । नहीं, ऐसा कदाचित्त नहीं है । तो फिर क्यों नहीं तू मुझे उन प्रेमियों के खान पर बिठा देती, जो तेरे लिये प्रवचक सिद्ध हुए हैं ?

मैं भी तो एक प्रेमी ही हूँ, बिल्कुल प्रेमी और प्रेम रूप । मैं भी जानता हूँ कि प्रेम किस तरह होता है । पर एक बार तो मुझे अवसर दे । फिर देख मैं तुझे कितने उच्च आसन पर आरूढ़ कराता हूँ—प्रेमी जो हूँ मैं ?

परन्तु देखना कहीं मुकर न जाना । नहीं तो मैं मर जाऊँगा । आगे ही तेरे विरह में दुबला सा तो गया हूँ । और हाँ, यदि तू ने इनकार कर दिया तो मेरे जीवन— पाप का समस्त उत्तरदायित्व तुझ पर ही होगा । सर्वप्रथम तो तुझे मेरे घर वालों से निपटना होगा और यदि तू उन्हें छल कर निर्दोष निकल आई, तो याद रखना नियति के सामने तू सूँक बनी रहेगी । तुझ से बात तक भी न हो पायेगी । फिर पता है कहाँ धकेली जाओगी—विपैले गर्त में जहाँ तेरी देह गुल सड़ कर नष्ट हो जायेगी । आजमा लेना—तेरे प्रेमी उस समय पोठ दिखला जायेंगे । मैं ही बचाऊँगा तुम्हें मृत्यु काल से । सुना ।

उसके मुँदे नेत्र सहसा खुल गये । दृष्टि सामने शैल मालाओं पर जा अटकी और चान्दनी की छवि में उसे कुछ सुझाई देने लगा ।

“ओह, यही है वह कविता रूप, ।”—वह सम्भल कर बोल लठा । “आ जाओ—आओ मेरी अच्छी कविते ?

कविता रूप सचमुच घाटी की ढलान से धीरे २ उतरने लगी और देखते ही देखते सरिता के इस दूसरे पार आ रुकी ।

नव परिधान में आभूषित वह दुलहिन सदृश लग रही थी । लम्बे २ केश पैरों को चूम रहे थे । आंचल था जो वक्ष पर टिकाए न टिक रहा था ।

वह पुकार उठी—‘प्रेमी, मुझे ले जाओ । मैं तुम्हारे बिना तड़प २ कर मर रही हूँ । भगवान

(शेष पृष्ठ २२ पर)

एकांकी नाटक—

(गतांक से आगे)

★ मिथिला ★

(ले०—डा० कृष्णदत्त जी भारद्वाज, एम० ए० पी-एच्. डी. आचार्य, शास्त्री, साहित्यरत्न)

लक्ष्मण—ओहो, इतनी घोर तपस्या पर भी ब्रह्मा जी ने ब्रह्मर्षि की पदवी नहीं दी ।

विश्वामित्र—नहीं दी । हाँ, तो फिर मैं घोरतर तपस्या में लीन हो गया । उसमें विघ्न डालने के लिये इन्द्र ने रम्भा को भेजा । इन्द्र की इस नीचता से मुझे बड़ा कोप हुआ तो बेचारी रम्भा को मैं ने शाप देकर शिला बना दिया । उस समय मैं ने आत्मपरीक्षण किया तो अपने को काम-क्रोधादि आवेगों से मुक्त नहीं पाया । तब तो मैं ने पूर्व दिशा में जाकर मौन और उपवासी साधना की । तब मुझे शांति का अनुभव बहुत हुआ । उन दिनों के मेरे तेज से त्रस्त होकर देवताओं ने ब्रह्मा जी से मुझे वर देने का आग्रह किया तो ब्रह्मा देव ने मुझे ब्रह्मर्षित्व प्रदान कर अनुगृहीत किया । तदनन्तर वशिष्ठ जी ने भी मुझे ब्रह्मर्षि रूप में अपना लिया । मैं कृतकृत्य हो गया ।

राम—आपकी यह उन्नति त्रिलोकीविश्रुत है, गुरुदेव !

लक्ष्मण—गुरु जी आपकी यह कथा बड़ी ही रोचक है । ऐसा ही एक और प्रसंग सुना दीजिये ।

विश्वामित्र—नहीं, अब शयन बेला है । अब तुम विश्राम करो । देखो कई मुनि तो सो गये हैं । कल शीघ्र उठना है जिस से नित्य नियम से निवृत्त होकर यात्रा में अग्रसर हों । अब तुम भगवान का भजन करो ।

धीरे धीरे ध्यान मन्त्र बोलो ।

राम और लक्ष्मण—(धीरे धीरे)

जो क्षीर सागर, शेष शय्या, भक्त हृदयों में तथा ।
हैं शयन करते, भक्त जन की जितनी हृदयों में तथा ।

श्रीकान्त बे सब दूर करके दीनता के ग्राम को ।
दें शुद्ध मति सद् भक्ति सुख आनन्द औ, विश्रामको
विश्वामित्र—अब तुम सो जाओ ।

राम लक्ष्मण—जो आज्ञा गुरुदेव !

[विश्वामित्र शयन करते हैं । राम और लक्ष्मण गुरु जी के चरण दवाते हैं । फिर स्वयं शयन करते हैं]

तीसरा दृश्य

स्थान—गङ्गा जी के तट पर एक शिविर ।

समय—अपराह्न ।

[शोण से चल कर विश्वामित्र जी मुनि-मण्डली और राम लक्ष्मण के साथ गंगा जी के तट पर आ पहुँचे हैं, वहाँ सब लोग स्नान भोजन से निवृत्त होकर विश्राम पूर्वक यथेच्छ वार्तालाप कर रहे हैं]

विश्वामित्र—वत्स राम ! तुम थके तो नहीं ?

राम—नहीं गुरु जी ! मैं तो अभी और यात्रा कर सकता हूँ । आज की इतनी छोटी यात्रा से तो लक्ष्मण भी नहीं थके होंगे । क्यों लक्ष्मण ?

ले०—मुझे तो यात्रा में ऐसा आनन्द आता है कि मन चाहता है कि यात्रा ही करता रहूँ, यहां भिन्न भिन्न प्रकार के ऐसे २ तरुवर, सरोवर, नद, नदी और पशु पक्षी देखने को मिलते हैं जो नगरों में प्रायः नहीं हैं । उद्यानों और उपवनों की विचित्र छटा भी देखने को मिलती है जिस से चित अत्यन्त प्रसन्न हो जाता है । आज तो हमें पूण्यसलिला भगवती भागीरथी का दर्शन

और स्पर्श मिला है जो कहते हैं कि बड़ा दुर्लभ है।

राम—गंगा को भागीरथी क्यों कहते हैं ? क्या आप इस पर कुछ प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

विश्वामित्र—वत्स ! प्राचीन काल में तुम्हारे ही एक पूर्वज बड़े प्रतापी हो गये हैं। उनका नाम था सगर और अयोध्या ही उनकी राजधानी थी। उनकी रानियां थीं—केशिनी और सुमति। बड़ी रानी का केवल एक पुत्र हुआ असमंजस, और छोटी के अनेक पुत्र थे। असमंजस स्वयं दुराचारी था, किन्तु उसका पुत्र अंशुमान् सदाचारी था।

राम—तो गुरु जी ! महाराज सगर अंशुमान् से बड़े प्रसन्न होंगे।

विश्वामित्र—हां, तुम ठीक कहते हो राम। जब महाराज ने अश्वमेध-यज्ञ किया तब अंशुमान् को ही उसकी रक्षा का भार सौंपा गया।

ल०—महाराज का यज्ञ तो निर्विघ्न पूरा हो गया होगा ?

विश्वा०—नहीं, वह यज्ञ पूरा न हो सका, क्योंकि इन्द्र राक्षस बेष धारण करके उस अश्व को हर कर ले गया।

राम—तब क्या हुआ, गुरुदेव ?

विश्वा०—तब सम्राट सगर ने अपनी छोटी रानी के पुत्रों को आदेश दिया कि तुम सब लोग यज्ञ के घोड़े को ढूँढ कर ले आओ। वे लोग पिता जी की आज्ञा से समस्त भूमण्डल में चकर लगा आये किन्तु घोड़ा न मिला।

ल०—ओहो ! घोड़े को इन्द्र ने कहां छिपा कर रक्खा था। तब क्या हुआ गुरु जी ?

विश्वा०—तब महाराज ने उन कुमारों को दुबारा जाकर सब जगह उस घोड़े को ढूँढ

निकालने की आज्ञा दी। सब राजकुमार एक साथ अपने पिता जी के आदेश अनुसार घूमते घूमते कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचे तो देखते क्या हैं कि वहां घोड़ा बन्धा है और कपिल ध्यान में निमग्न बैठे हैं।

राम—अच्छा हुआ जो उन्हें घोड़ा मिल गया।

विश्वा०—नहीं, अच्छा नहीं हुआ। कुमारों पर बड़ी विपत्ति आ पड़ी।

ल०—विपत्ति कैसे आई, गुरु जी !

विश्वा०—राजकुमारों ने अमवश कपिल मुनि को ही उस घोड़े का चोर समझ लिया और वे उन्हें बुरा-भला कहने लगे। तब तो कपिल मुनि को भी क्रोध आया और हुंकार से उन्होंने उन सभी राजकुमारों को क्षण मात्र में भस्म कर दिया।

राम—यह तो बड़ा अनर्थ हुआ, तब क्या हुआ गुरु जी ?

विश्वा०—जब महाराज सगर को बहुत दिनों तक अपने राजकुमारों का कोई समाचार नहीं मिला तो वे बड़े चिन्तित हुए और अपने पौत्र अंशुमान को उनका पता लगाने के लिये भेजा। अंशुमान ढूँढते ढूँढते उसी स्थान पर जा पहुँचे जहाँ घोड़ा बंधा हुआ था। अपने पितृव्यों की दुर्दशा देख कर उन्हें बहुत शोक हुआ। कपिल जी के आश्रम से उन्होंने घोड़ा ले जाकर महाराज सगर को दे दिया, तत्पश्चात् यज्ञ तो पूरा हो गया, किन्तु उन राजकुमारों के उद्धार का प्रश्न सम्राट के मन में बराबर बना रहा। वे चाहते थे कि स्वर्लोक से किसी प्रकार गंगा जी यदि भूलोक में आ सकें तो उनके सजिल-स्पर्श से राजकुमारों की सद्गत हो जाये।

ल०—क्या महाराज सगर गङ्गा जी को ला सके ?

विश्वा०—नहीं बेदा ! वे न ला सके। अंशुमान भी न ला सके। अंशुमान के पु

दिलीप भी न ला सके । तत्पश्चात् दिलीप के पुत्र महाराज भगीरथ गङ्गा को लाने में कृतकृत्य हो गये ।।

राम...महाराज भगीरथ किस उपाय से गंगा जी को यहां लाये थे ?

विश्वा...महाराज भगीरथ ने गोकर्ण तीर्थ में घोर तपस्या करके लोक पितामह ब्रह्मा जी को प्रसन्न कर लिया । ब्रह्मा जी ने गङ्गा जी से भूलोक पर जाने के लिये कह दिया और भगीरथ को यह सन्मति दी कि तुम भगवान् शङ्कर को गङ्गा धारण के लिये प्रसन्न कर लो ।

ल...तब क्या महाराज ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिये दुबारा तपस्या की ?

विश्वा...हाँ, किन्तु शिवजी शीघ्र ही प्रसन्न हो गये । वे आशुतोष जो ठहरे । गङ्गा जी उतरीं और शिवजी ने उन्हें अपनी जटाओं में धारण कर लिया । फिर भगीरथ का संकल्प पूर्ण करने के लिये शिवजी ने गङ्गा जी को विंदुसरोवर में छोड़ दिया । वहाँ पर गङ्गाजी की सात धाराएँ हो गईं जिन में से तीन तो पूर्व की ओर चली गईं और तीन पश्चिम की ओर । सातवीं धारा महाराज भगीरथ के पीछे पीछे चली ।

राम...यह बड़ी प्रसन्नता की बात है अन्त में महाराज का मनोरथ पूरा हो हो गया ।

विश्वा...आगे आगे महाराज अपने रथ पर चल रहे थे और गङ्गा जी उसी मार्ग से अनुगमन कर रही थीं । चलते चलते महाराज उसी स्थान पर जा पहुँचे जहाँ उनके पूर्वज भस्म रूप में पड़े हुए थे । ज्यों ही पतितपावनी गङ्गा जी ने अपने सुधा मधुर वार राशि से उस स्थान को आप्लावित किया त्यों ही महाराज के वे सभी पूर्वज सद्गति को प्राप्त हो गये । तभी से गंगा

का नाम भागीरथी पड़ा है ।

ल...अहा, गङ्गा जी की यह कथा बड़ी विचित्र है, बड़ी रोचक है । ऐसा प्रतीत होता है कि आज रात में इस कथा के पात्रों का ही स्वप्न में भी दर्शन होगा ।

विश्वा...अच्छा, अब तुम दोनों गङ्गा-स्तव का गान करो ।

राम-लक्ष्मण—(उच्च स्वर में)

जय गंगे प्रोज्ज्वल-जल-शालिनि विलसत्तु ग-तरंगे ।
जय हरि-चरण-नलिन-रस-पूते ब्रह्म कमडलु-संगे ॥
जय हर-जटाजूट-सुविलासिनी कृत-दुरित-प्रज भंगे ।
जय भागीरथि सगरसुतानामुद्धारिणि जय गंगे ॥
जय जय जय गंगे ॥

विश्वा...अब तुम नित्य नियम से निश्चित हो जाओ । कल प्रातः काल नावों के द्वारा गङ्गा जी को पार कर के विशाला चलेंगे । वहाँ एक रात रह कर तब मिथिला के लिये प्रस्थान होगा ।

राम...जो आज्ञा गुरु जी !

[राम और ल० प्रणाम करके शिविर से बाहर जाते हैं]

चौथा दृश्य

स्थान—मिथिला के एक उपवन में एक आश्रम ।

समय—पूर्वाह्न ।

[विश्वामित्र जी राम, लक्ष्मण आदि के साथ मिथिला में घूमते घूमते एक उपवन में पहुँचे । वहाँ एक प्राचीन आश्रम था । उसके सम्बन्ध में चर्चा चल रही है ।]

राम...गुरुदेव ! मिथिलापुरी वास्तव में परम सुन्दरी है ।

ल...क्या मिथिला भी कोई वनिता है जो वह सुन्दरी है ?

राम...भाई, क्या नारियों के लिये ही सुन्दरी

शब्द का प्रयोग होता है ?

ल०—तो क्या उनके अतिरिक्त और किसी के लिये भी होता है ?

राम—मेरी समझ में तो जो कुछ भी सुन्दर हो—चेतन वा अचेतन—उसके लिए सुन्दर-सुन्दरी का प्रयोग होना चाहिए, क्यों गुरु जी ?

विश्वा०—ठीक है। मैं तुम से सहमत हूँ। किन्तु लक्ष्मण के इस अभिप्राय को भी मैं स्वीकार करता हूँ कि नारियों के लिए ही सुन्दरी का शब्द प्रयोग होता है। अस्तु, देखो, सामने के उपवन में यह आश्रम कितना रमणीय है।

राम—हरे वृक्ष, लता और फूलों की तो यहां कमी नहीं दिखाई देती, किन्तु गुरु जी ! यहां कोई रहता नहीं है क्या ? आप तो यहां पहले भी आये होंगे अथवा इसके सम्बन्ध में कुछ सुना होगा। यह किसका आश्रम है ?

विश्वा०—कुमार ! यहां पहले गोतम रहा करते थे।

ल०—क्या वे अब यहां नहीं रहते हैं ?

विश्वा०—नहीं, वे किसी और स्थान को चले गये।

राम—क्यों गुरु जी, यहां क्या उन का मन नहीं लगा ?

विश्वा०—नहीं। एक दिन वे किसी बात पर अपनी पत्नी से अप्रसन्न हो गये तो उन्होंने ने उसे शाप दे दिया कि तू शिवा हो जा। और फिर वे इस आश्रम को त्याग कर हिमालय को चले गये।

ल०—मुनि पत्नी का नाम क्या है गुरुदेव ?

विश्वा०—उनका नाम अहल्या है।

राम—तो क्या अहल्या जी यहां शिला रूप में अभी तक पड़ी हुई हैं ?

विश्वा०—हाँ।

ल०—तो क्या हमलोग उनका दर्शन कर

सकते हैं ?

विश्वा०—हाँ, क्यों नहीं ? चलो आश्रम के भीतर चले।

(तीनों भीतर जाते हैं)

राम—बड़ा शान्त वतावरण है।

विश्वा०—(सामने की ओर अंगुली से बताते हुए) देखो वह सामने अहल्या ही है।

राम—मुनि पत्नी हम लोगों की आदरणीय हैं, अतएव हम दोनों भाई उनको प्रणाम कर ले। [चरण छू कर प्रणाम करते हैं। उसी समय शिलामयी अहल्या सजीव हो जाती है]

अहल्या—आपकी विजय हो। (हाथ जोड़कर) अभिनन्दनीय कौसल्या नन्दन। आप लोगों का आतिथ्य करने से पूर्व मैं आपके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करना चाहती हूँ।

विश्वा०—(आश्चर्य से) यह कैसी विचित्र बात है ! क्या अहल्या बोल सकती है ?

अहल्या—हाँ, अब श्रीराम के यहाँ पदार्पण करने से। मुनि वर ने अपने शाप की सीमा यही बताई थी। मेरा उद्धार हो गया। अब मैं अपने पति की सेवा के योग्य हो गई हूँ। आज मुझे बड़ी प्रसन्नता है। क्षण भर इस कुंज में (एक कुंज की ओर संकेत करती है) विश्राम कीजिये। तब तक मैं स्नान करके आप के आतिथ्य के लिये पत्र, पुष्प, फल और जल ला रही हूँ। [जाती है और सत्कार सामग्री ला कर अतिथियों के सम्मुख सादर प्रस्तुत करती है]

विश्वा०—साध्वि ! आपका आतिथ्य हमें सर्व स्वीकार है। अब आप अपने पति देव की सेवा में पधारे।

राम—हमें भी मिथिलापुरी में जाने के लिये आज्ञा दीजिये।

अहल्या—(हाथ जोड़ कर)

सालुज प्रभु के दर्शन से मैं आपसुक ओ शुद्ध हुई हूँ

पतिसेवामें रहनेको अब शिलाभावसे बुद्ध हुई हूं।
दिव्य चरण यह ये सुन्दर मेरे चित्तसन्ध में
नित्य रहेंगे।

जन्म जन्म के पाप शाप सब क्षण क्षण में फिर
क्यों न बहेंगे ॥

[एक ओर से अहल्या का प्रस्थान और
दूसरी ओर से राम लक्ष्मण सहित विश्वामित्र का]

पांचवां दृश्य

स्थान—मिथिला में विश्वामित्र जी का
विश्रामगृह। समय—सायंकाल।

[विश्वामित्र जी ने राम, लक्ष्मण और मुनि-
मण्डली के साथ एकान्त स्थान में डेरा डाला
है। मिथिलेश को जब विश्वामित्र जी के आने का
समाचार मिला तब वे अपने पुरोहित शतानन्द
तथा अनेक ऋत्विजों को साथ लेकर वहां आयेहुए
हैं। पूजा की सामग्री एक ओर चौकी पर रखी है]

विश्वा०...महाराज ! आपने भक्ति भाव से
हमारी जो पूजा की है, उसे हम ने हसर्प स्वीकार
किया है। हम लोग सिद्ध श्रम से शोण, गंगा और
विशाला होते हुए इधर आये हैं। यहां आने का
हमारा मुख्य उद्देश्य तो आपके यज्ञ में सम्मिलित
होना ही है।

जनक—मेरा अहोभाग्य है महोदय ! जो
आपने मुझे घर बंठे दर्शन दिये। आज मुझे
ऐसी प्रसन्नता हो रही है जैसे मुझे साक्षात्
लोकपितामह ब्रह्मा जी के दर्शन हो रहे हों।

शतानन्द...इस में क्या संदेह है महाराज !
विश्वामित्र जी का अतुल प्रताप है। त्रिशंकु के
लिये आपने ही सृष्टि का आयोजन किया था।
अतः निस्सन्देह आप ब्रह्मा जी के समन्त ही हैं।

सब ऋत्विज...धन्य हो, धन्य हो। ब्रह्मर्षि
विश्वामित्र की विजय हो।

विश्वा०...शतानन्द जी ! आपके लिये एक

विशेष समाचार लाया हूं।

शता०—कहिये महर्षि मेरे आनन्द की वृद्धि
कीजिये।

विश्वा०...सुन कर आप शतानन्द से
सहस्रानन्द हो जायेंगे।

शता०...मैं उत्सुक हूँ।

विश्वा०—अपनी इस यात्रा में हम लोग
आपके पिता गोतम जी के आश्रम में भी गये थे।

शता०...बड़ी कृपा की ऋषिवर !

विश्वा०...वहां इन दोनों बालकों ने (राम
और लक्ष्मण की ओर संकेत करते हैं) आश्रम
के इतिहास को जानना चाहा। मैं ने संक्षेप में
कह सुनाया। तब इनकी इच्छा हुई कि अहल्या
जी का भी दर्शन करते चलें।

शता०...इच्छा तो अच्छी थी, किन्तु हमारी
माता जी तो निश्चेष्ट पड़ी हैं।

विश्वा०...नहीं, निश्चेष्ट नहीं, अब वे सचेष्ट
हो गई हैं।

शतानन्द...(आश्चर्य से परिपूर्ण होकर) ऐं!
क्या कहा ? क्या मेरी माता सचेष्ट ? क्या मैं
स्वप्न देख रहा हूँ ?

विश्वा०...आप जाग रहे हैं शतानन्द जी !
यह सत्य है, और यह वृत्त भी इतना सत्य है
कि आपकी माता जी अब सचेष्ट हो गई है।

एक ऋत्विज...(खड़े होकर) मैं समस्त
ऋत्विज-मण्डली की ओर से आपको इस शुभ
संवाद के उपलक्ष्य में हार्दिक वधाइयां देता हूँ
शतानन्द जी !

शतानन्द...(हाथ जोड़ कर) मुझे स्वीकार है।
(विश्वामित्र के प्रति) मैं वास्तव में सहस्रानन्द हो
गया। यह चमत्कार कैसे हुआ, मुनीन्द्र ?

विश्वा०...आपके आश्रम में कुमार (राम जी
की ओर संकेत करके) के पदार्पण करने से।

(शेष पृष्ठ १८ पर)

गतांक से आगे—

★ श्री गाँधी सतसई ★

[ले०—श्री शान्त शास्त्री 'शालिहास']

(चतुर्थ शतक)

अभय

देवी संपद व्यूह में अभय प्रथम गणनीय ।
 है यह स्थान मिला उसे स्वतः एव वरनीय । ४१।
 बिना अभय सत्संपदा मिलनी है दुवार ।
 बिना अभय के सत्य का शोधन व्यर्थ विचार । ४२।
 और अहिंसा पालना, बिना अभय दुःशक्य ।
 हरि-मग शूरो का वहां कायर कृत्य अतर्क्य । ४३।
 सत्य एव 'हरि' है कहा 'कायर' भीत सशास्त्र ।
 शूर कहा भय मुक्त को जो न रखे कुछ अस्त्र । ४४।
 नहीं शौर्य की द्योति का है तीक्ष्ण तलवार ।
 स्पष्ट भीति की सूचिका है कायर कर वाल । ४५।
 मृत्यु भय धन माल के लुटने का भी भय ।
 परिचारिक भय, रोग भय, मान भीति रण भय । ४६।
 पर पीड़ा भय आदिक नाना भय के रूप ।
 सबसे मुक्ति प्राप्ति है सच्चा अभय स्वरूप । ४७।
 सत्य शोधनार्थी सदा हों सब विधि भय मुक्त ।
 हरिश्चन्द्रवत वे रहें तन धन मोह विमुक्त । ४८।
 सभी आत्म दर्शी सुजन के अनुभव का सार ।
 है संमत सब का तथा देखो करो विचार । ४९।
 हरिश्चन्द्र निदर्शना अभय व्रत का रूप ।
 सोलह आने सत्य है निर्मल युग अनुरूप । ५०।
 भीति मात्र से तो वही हो सकता है मुक्त ।
 किया है जिसने आत्म का साक्षात्कार सदुक्त । ५१।
 निश्चय सतत प्रयत्न से अभय वृद्धि होय ।
 हमें डरावे जगत् का बाह्य भय न कोय । ५२।
 दुश्मन जो अन्दर वसें काम क्रोध मद रूप ।
 उनके भय से तो डरे हैं ये सचमुच कूप । ५३।

अगर जीत ले आन्तरिक शत्रु दल को खूब ।
 स्वयं नष्ट हों बाह्य भी यथा निमूलित दूब । ५४।
 सब भय तनु के हेतु हैं छोड़ो तनु अनुराग ।
 अभय सहज ही प्राप्त हो अरे मनुज ! तू जाग । ५५।
 स्वयं हमारी कल्पना की सृष्टि है भीति ।
 जग से ममता त्याग दो यही अभय की रीति । ५६।
 बदले अपनी ऐषणा औ' जग के सम्बन्ध ।
 ममता त्यागे जगत् से हो जाए निर्वन्ध । ५७।
 है न हमारा कुछ यहां ईश्वर का है सर्व ।
 'मैं भी हूँ उस ईश का' इत्थ बनें अगर्व । ५८।
 मेरा जब कुछ है नहीं भय किस से किस हेतु ।
 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' कहता शास्त्र सहेतु । ५९।
 हम सेवक रक्षक बनें देगा शक्ति ईश ।
 तत्कृपया अभयाष्टि भी होगी 'विस्वा वीस' । ६०।

अस्पृश्यता

आत्मा भी जब एक है ईश्वर भी जब एक ।
 सब सम उसके पुत्र हैं द्वैधभाव, अविशेक । ६१।
 मृत शव भी अस्पृश्य है जैसे अन्य अछूत ।
 छू कर उसको पातकी बनता नहीं मन-पूत । ६२।
 शव को छू कर तैल मल, चौर बना कर या ।
 स्नान कर्म उपयुक्त है आरोग्य दृष्ट्या । ६३।
 ऐसा मानव यदि करे नहीं सलिल से स्नान ।
 गंदा वह कहलाएगा, पर न पातक वान् । ६४।
 मल शोधन करती हुई माता भी अस्पृश्य ।
 तब तक है, वह स्नान जो कर न ले तनु घृण्य । ६५।
 अस्नाता को भी यदि छू ले 'बाल' अज्ञान ।
 होता है न पातकी, 'रुह' न होती मलान । ६६।

तिरस्कार चैत्तिक घृणा करते हैं हम लोग ।
 उन से करते सर्व का मल शोधन जो लोग । ६१
 अनुचित यह वैषम्य है त्याज्य गह्वर है रीति ।
 मानव भेद विधायिनी यह न शास्त्र की नीति । ६२
 माता केवल स्नान कर हो जाती है शुद्ध ।
 पर अछूत होता नहीं गंगा स्नान विशुद्ध । ६३
 यह व्यभिचारी कल्पना हिन्दुत्व कलङ्क ।
 सच्चे मन से त्याग दो इसे त्वरित निश्शंक । ७०
 अस्पृश्यता विनाश का मतलब है बस यह ।
 प्राणिमात्र का मित्र औ' सेवक हो बस वह । ७१
 इस दृष्टि से कृत्य यह होता है सम कर्त्त ।
 अहिंसा व्रत के अतः वरण योग्य हैं पक्ष । ७२
 काले गोरे का तथा धनि निधनि का भेद ।
 अस्पृश्यता विनाश में है संघा तक छेद । ७३
 इन भेदों का नाश भी आवश्यक है कार्य ।
 सब जीवों का मित्र भी बनना है अनिवार्य । ७४
 अहिंसा व्रत धारी का है यह भी कर्त्तव्य ।
 छूत छात से दूर रह, करे कर्म निज नित्य । ७५

श्रम

है अनिवार्य मनुष्य के लिये शरीरी श्रम ।
 गाँधी जी राय में है यह बात निश्चय । ७६
 गीता भी कहती यही बिना यज्ञ जो खाय ।
 चोरी कर खाता है वह यज्ञ श्रम कहलाय । ७७
 कायिक श्रम करता नहीं जो मनुष्य अलसाय ।
 खाने का हक भी लमे है नहीं तर्क बताय । ७८
 देखो कहती 'बायबिल' अपनी रोटी आप ।
 कमा, पसीना स्रवित कर लगे अन्यथा पाप । ७९
 कोटयधीश भी खा नहीं सकता लेकर स्वाद ।
 पड़ा रहे पर्यंक पर निश्चय यदि निर्बाध । ८०
 वे भी व्यायामादि से करते जुद-उद्धाव ।
 हाथ पांव मुख को हिला खाते हैं कर चाव । ८१
 जब भोजन आस्वाद हित करना पड़ता श्रम ।
 धनि निधनि को देह से अवश अधिक या कम । ८२

फिर क्यों न श्रम ही वही करे रोटी के हेत ।
 धनी लोग भी कृषक वत बाहें अपने खेत । ८३
 कोई नहीं किसान को कहता कर व्यायाम ।
 स्वयं खेत कार्य से हो जाता यह काम । ८४
 नब्बे प्रतिशत देश के हैं जब लोग किसान ।
 स्वयं श्रमी, दस फी सदी क्यों न करें अनुमान । ८५
 पढ़े लिखे और धनिक जन खेती हर के साथ ।
 मिलकर यदि कुछ श्रम करें और बढ़ें दो हाथ । ८६
 कितनी सुख सम्पद बढ़े शांति औ' अरोग्य ।
 फैले सारे देश में पावे सब निज भोग्य । ८७
 बुद्धि योग पाकर कृषि सब विघ्नों को पार ।
 कर ले खुद ही सहज में भरे धान्य आगार । ८८
 शारीरिक श्रम का यदि करें सभी सन्मान ।
 भारत में फिर न रहे ऊंच नीच अभिमान । ८९
 मालिक और मजदूर का सर्व व्यापी भेद ।
 प्रश्न अमीर गरीब का मिटे बने नापैद । ९०
 स्वयं श्रमी वेधनिक जन टूटी फिर बन जाएं ।
 जनता सेवा के लिये अपना वित्त लगाएं । ९१
 जिसे अहिंसा पालना और सत्य की साध ।
 करनी है ब्रह्मचर्य की अर्चा भी निर्बाध । ९२
 कायिक श्रम तद हेतु है राम बाण निश्शंक ।
 साधन त्रय की साधना बनती है अकलङ्क । ९३
 सूखा आदि भीत से कृषि से जो घबराएं ।
 करें मजूरी और वे कर पद अङ्ग हिलाएं । ९४
 बढ़ई अरु लुहार का कर सकते वे काम ।
 रुई धुनना कातना बुनना ताना तान । ९५
 मल शोधन का कार्य भी करें स्वयं हम आप ।
 ता' भंगी जन के प्रति मिटे घृणा अरु ताप । ९६
 बचपन से ही भावना मजदूरों की श्रेय ।
 बैठ लें निज हृदय में बने सदा वह प्रेय । ९७
 बच्चे बूढ़े स्त्री पुरुष बिना किसी अपवाद ।
 मेहनत में जुट जाएं तो रहे न भेद औ' वाद । ९८

(क्रमशः)

(पृष्ठ १५ का शेष)

शतानन्द... यह आपको कैसे विदित हुआ ?

विश्वा०—आप की माता जी के कहने से ही।

शतानन्द...माता जी के कहने से ! क्या अब वे बोल भी सकती हैं ?

विश्वा०—हाँ, अब वह बोल भी सकती हैं।

शता०—तब तो मैं लक्ष्मणन्द हो गया। महर्षे !

क्या कहा था मेरी माता जी ने ?

विश्वा०—उनके कहने का आशय यही था कि गोतम जी ने शाप देते समय उसकी अवधि श्रीराम के उस आश्रम में पधारने तक निश्चित कर दी थी।

शता०—बड़ी प्रसन्नता की बात है। माता जी इस समय आश्रम में ही हैं क्या ?

विश्वा०—नहीं, वे महर्षि गोतम की सेवा के लिये हिमालय की ओर चली गई हैं।

शता०—बड़ा हर्ष हो रहा है—मुझे महर्षि, आपके वचनों से।

जनक—महर्षे ! जिन कुमारों की आपने इस समय अभी चर्चा की है, उनका परिचय प्राप्त करने की मुझे उत्कट जिज्ञासा हो रही है।

विश्वा०—(मुस्करा कर) राजर्षे ! क्या ब्रह्म जिज्ञासा का समाधान कर चुकने वाले के भी हृदयमें कोई जिज्ञासा अवशिष्ट रह जाती है ?

जनक—रहती तो नहीं है और न रहनी चाहिये, कारणभावात्। किंतु न जाने जब से मैं ने इतका दर्शन किया है तब से मेरा मन कुछ और सा हो गया है।

विश्वा०—हो गया है कि हो रहा है ?

जनक—हो तो गया ही है, हो भी रहा है। ये कौन हैं ? कहाँ रहते हैं ? किसके पुत्र हैं ?

विश्वा०—(राम की ओर संकेत करके) ये जो इन्दीव, दल-श्यामल छवि वाले नयनाभिराम हैं

इनका नाम राम है, और ये जो (लक्ष्मण की ओर निर्देश करके) शशि-गौर शुभ लक्षण हैं इनका नाम लक्ष्मण है। दोनों ही अयोध्या-नरेश इक्ष्वाकुवंशी महाराज दशरथ के प्रथम और तृतीय नन्दन हैं। [राम और लक्ष्मण उठ कर जनक को अभिवादन करते हैं और जनक उन्हें आशीर्वाद देते हैं]

जनक—सुना है कि महाराज दशरथ के तो चार पुत्र हैं।

विश्वा०—हाँ, उनके द्वितीय और चतुर्थ कुमार उनके ही पास हैं। यहाँ नहीं आये।

जनक...राजकुमारों का वनवासियों के संग निवास मेरे लिये अभी तक पहेली ही बना हुआ है।

विश्वा०...रहने दीजिये पहेली ही। बहुतों के लिये मिथिलेश का याज्ञवल्क्य के निकट निवास भी तो पहेली ही होगा।

जनक...मैं समझ गया महर्षे ! महाराज दशरथ ने अपने इन दोनों सुपुत्रों को आप से विद्याध्ययन करने के लिये आपकी सेवा में रक्खा है।

विश्वा०...आपका विचार अंशतः सत्य है।

जनक...इसको महर्षि पूर्णतः सत्य करने की कृपा करें।

विश्वा०—सिद्धाश्रम में जब मैं यज्ञ-याग क्रिया करता था तब मेरा वह धार्मिक अनुष्ठान निर्बाध नहीं था। कुछ दुर्वृत्त व्यक्ति उस में निरन्तर विग्न डाला करते थे। उनके उस दुर्व्यवहार से उद्विग्न होकर मैं अयोध्या-नरेश से मांग कर इन दोनों कुमारों को अपने यहां ले आया। तब इन्हें मैं ने समयोपयोगी शास्त्राख्य सिखाये, जिससे इन्होंने उन दुर्दान्त दैत्यों का दमन कर डाला।

(शेष अंगले अंक में)

★ भारतीय बाल सभा ★

(बच्चों का भाग)

सम्पादक : हितैषी

अध्यक्ष—दीदी

फुलवाड़ी

(बच्चों के प्रश्न और उनके उत्तर)

प्र० टेलिविज़न भारत में कब आयेगा ?

—सुमति शर्मा, प्रयाग ।

उ० एक समाचार के अनुसार एक दो वर्ष तक यह भारत में आजायेगा और सबसे पहले इसका स्टूडियो बम्बई में बनेगा !—दी०

प्र० स्कूलों में जो नाटक होते हैं उनमें लड़कों का लड़कियां और लड़कियों का लड़के बन कर अभिनय करना उचित है क्या ? —सुमित्रा कुमारी, देहली ।

उ० यदि उन्हें दिया गया पार्ट 'अश्लील' न हो तो क्या हानि है ? हां यह देखना उनका काम है कि ड्रामा हो चुकने के पश्चात उनके सहपाठी छेड़ेंगे तो नहीं ? —दी०

प्र० क्या लड़कियों का लड़कों के साथ हाकी फुटबाल अथवा अन्य खेलों के मैच खेलना ठीक है ? —प्रमिला, मेरठ ।

उ० प्रगति के इस युग में क्या उचित है और क्या अनुचित यह कहना कठिन है

क्योंकि स्त्री पुरुष से स्पर्धा की होड़ ले रही है ।

प्र० आप लेखक लेखिकाओं के चित्र भी छापा करें तो कैसा रहे ?

—कुन्दन लाल अमृतसर,

उ० रहे तो बहुत अच्छा किन्तु कठिनाई है तो यह कि हमारी पत्रिका चित्रों के बनवाये जाने वाले ब्लाकों पर व्यय करने की सामर्थ्य नहीं रखती !

प्र० बृटेन में जाने वाले भारतीय वहां की कौन सी चीज़ अधिक पसंद करते हैं ?

—देशबन्धु, अम्बाला ।

उ० एक भारतीय महिला (जो इन दिनों लन्दन में है) के शब्दों में उसे बृटेन के बच्चे सब चीज़ों से प्रिय लगे हैं क्योंकि उनकी भलाई का सरकार बहुत ध्यान रखती है । निर्धन और धनी दोनों के बच्चों को पालन पोषण की लगभग समान सुविधाएं प्राप्त हैं । —दी०

(सभी छात्र प्रश्न भेज सकते हैं ।)

विश्व का महान आश्चर्य

★ मिस्र के पिरामिड ★

(सुरेशचन्द्र)

विश्व की सात महान आश्चर्य जनक चीजें मनुष्य को सदियों से आश्चर्य विमूढ़ करती रही हैं इन में एक मिस्र के पिरामिड हैं ।

ये पिरामिड मिस्र के बादशाह च्योप ने, जिसे कुहफुह भी कहते थे, बनवाये थे । इस ने ईसा से ४७०० वर्ष पूर्व, ५० वर्ष तक राज्य किया था । संसार आज तक कुहफुह को इन्हीं पिरामिड के कारण याद करता है । पिरामिड संसार का सबसे बड़ा तथा सुव्यवस्थित ढंग पर बना हुआ भवन माना जाता है ।

काहिरा से दस मील दूर गिजी नामक एक छोटा सा गांव है । इसके सामने एक मील चौड़ा रेगिस्तान है । वहीं पर सब पिरामिड तथा बहुत सी कब्रें बनी हुई हैं ।

इन पिरामिडों के रास्तों और कमरों को छोड़ कर और सभी चीजें ठोस पत्थर की बनी हुई हैं । ६ हजार वर्ष से उन पर वर्षा तथा रेत के तूफानों का आक्रमण होता रहा है, लेकिन फिर भी वह आज तक उसी प्रकार बर्ब से सर ऊंचा किये अपना

वैभव दिखा रहे हैं । इन पिरामिडों में सबसे विचित्र बात तो यह है कि इनकी बनानट से जहां अलग २ पत्थर रख कर जोड़ लगाये गए हैं वहां पर किसी प्रकार का भी चूना या मिट्टी दिखाई नहीं देती— पिरामिडों में कहीं भी जोड़ों का चिह्न नहीं है । और उनकी सितह चिकनी और समतल है ।

प्रत्येक परामिड के पूर्व की ओर एक मन्दिर होता था—जिसमें वहां के मृत बादशाहों को वहां के लोग पूजते थे, क्योंकि वहां के धर्म के अनुसार बादशाहों को ही ईश्वर माना जाता था । अब वहां के सब मन्दिर गिर गये हैं । च्योप के पिरामिड के पास काले पत्थर के चबूतरे से ही अनुमान लगाया जाता है कि वहां भी एक मन्दिर था ।

• वहां च्योप का पिरामिड सबसे भव्य है । यह पिरामिड १३ एकड़ ज़मीन पर बना हुआ है । इसकी प्रत्येक दीवार नीचे से ७६४ फिट लम्बी है और इसकी ऊंचाई ४५० फिट है । ख्याल किया जाता है कि इसके बनाने में ७० लाख टन मसाला लगा होगा । इसके अतिरिक्त इसमें २३ लाख पत्थर लगे हैं जिनमें प्रत्येक का वज़न करीब

ढाई टन है। अगर इसकी दीवारों की नीचे की लम्बाई को नापा जाए तो किसी दीवार में भी एक इंच तक का फर्क न मिलेगा। यह उस समय की कारीगरी का परिचय देता है। इन पत्थरों को किस प्रकार उठा कर यहां लाया गया इसका कोई भी वर्णन कहीं नहीं दिया गया। प्रसिद्ध इतिहासकार हिरोडोटस, का मत है कि नील नदी में तीन महीने के लिए बाढ़ आती थी। ये पत्थर शायद उसी समय उसमें तस्तीं पर रख कर यहां लाए जाते थे। पत्थर लाने का यह काम संभवतः एक लाख व्यक्ति करते थे।

हिरोडोटस का यह भी मत है कि शायद चट्टानों से पिरामिड के स्थान तक पथरीला फिगवला कर रास्ता बनाया गया हो और उसी पर से लुढ़का कर ये पत्थर यहां तक लाए गए हों। इस रास्ते को बनाने में करीब दस साल लगे होंगे।

एक लाख कारीगरों के अतिरिक्त करीब, ४००० चतुर कारीगरों ने इसे बनाने में बीस वर्ष तक निरन्तर कार्य किया होगा।

पिरामिड बनाने का उद्देश्य यह होता था कि बादशाह के देहांत के बाद वह उसका मकबरा बन जाये।

मिस्र के लोगों का विश्वास था कि बादशाह साधारण लोगों से दूर गाड़े जायें। उन्हें अकसर इस बात का भी डर रहता था

कि कहीं चोर आकर उसके साथ गाड़े गए खजाने को खोद कर न ले जावें। इस कारण वे मकबरे के बिल्कुल बीचों बीच ज़मीन की सितह से नीचे गाड़े जाते थे। इन मकबरों का दरवाज़ा उत्तर की ओर होता था। अन्दर का हिस्सा इस प्रकार बनाया जाता था कि उसके रिश्तेदारों या पुजारी को ही मालूम होता था। च्योप के पिरामिड में कब्रों तक पहुंचने के लिए पहले ज़मीन से तीन सौ फिट नीचे तक रास्ता जाता है जहां तहखाना है। इस से थोड़ा और नीचे उतर कर फिर एक चढ़ाई आती है। वहां एक साढ़े तीन फिट ऊंचा तथा दस फिट मोटा दरवाज़ा है। इस कमरे में बादशाह की यह कब्र अलग से बना कर रखी गई है। इस कमरे में सिर्फ एक ही दरवाज़ा है और इसकी छत, दीवार, कब्र और फर्श सब लाल पत्थर के बने हैं। कहते हैं पहले च्योप के पिरामिड में लाल पत्थर की कब्र के भीतर लकड़ी का एक बक्स था, जिसमें बादशाह का शव था—लेकिन अब वहां वह बक्स नहीं है। विश्वास किया जाता है कि यह लाल पत्थर की कब्र इस कमरे की छत बनने से पहले यहां रखी गई होगी क्योंकि यह कब्र दरवाज़े से बहुत बड़ी है और इसमें से भीतर नहीं आ सकती। सैंकड़ों वर्ष तक इसके अन्दर जाने का रास्ता न मिल सका

वहां सबके २८ अंगुलियां हैं !

संसार के प्रायः सभी स्थानों पर मनुष्यों के हाथों-पांवों में मिला कर कुल २० अंगुलियां होती हैं किंतु स्पेन के मैड्रिड प्रांत के सरवैराडी बुटरैगो नामक गांव के निवासियों पर संसार का यह नियम लागू नहीं होता। उनके हाथों तथा पांवों की अंगुलियां साधारण व्यक्ति से अधिक होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति के हर हाथ तथा पांव में वहां आम तौर से ७-७ अंगुलियां होती हैं। किंतु एक व्यक्ति को छोड़ कर वहां ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसके प्रत्येक हाथ तथा पांव में ६ अंगुलियों से कम हों।

वह एक व्यक्ति गांव का सबसे बड़ा सिपाही है। यहां हर व्यक्ति के ६ या ७ अंगुलियां होती हैं इस लिये उन्हें इसमें कोई विचित्रता दिखाई नहीं देती। यदि किसी दूसरे देश का निवासी वहां पहुंच जाता है तो वे लोग उसकी अंगुलियों को देख कर आश्चर्य विमूढ़ हो जाते हैं।

इस गांव में विवाह इत्यादि निकट के सम्बन्धियों से ही होते हैं और कोई भी विवाह गांव के बाहर नहीं किया जाता, शायद इसीलिये यहां कई पीढ़ियों से ६ या ७ अंगुलियों वाले व्यक्ति पैदा हो रहे हैं। जब कोई विदेशी इस गांवमें जाता है तो यहां

के निवासी उसकी पांच अंगुलियों को बड़े आश्चर्य से देखते हैं और समझते हैं कि वह विदेशी साधारण मनुष्य नहीं है।



वहां चांद उल्टा दिखाई देता है !

हम इक्वेटर से जितना नीचे जाते हैं, आकाश का दृश्य बदलता जाता है। पृथ्वी के दक्षिणी भाग में जो लोग रहते हैं, उनको तारों की रचना निराली ही दिखलाई देती है। उदाहरण के तौर पर अर्जेन्टाइना के रहनेवालों को ध्रुव तारा दिखाई ही नहीं देता। उनको केवल दक्षिणी तारा ही दिखलाई पड़ता है, और चन्द्रमाँ का दृश्य भी उल्टा होता है।

चन्द्रमा अपनी धुरी पर घूमता है और पृथ्वी के चारों ओर भी चक्कर लगाता है। ये दोनों चीजें मिल जाने से पृथ्वी के प्रत्येक भाग के रहने वालों को चन्द्रमाँ का दृश्य भिन्न २ प्रकार का दिखाई देता है।



(पृष्ठ १० का शेष)

के लिये मुझ पर रहम खाओ प्रेमी ! प्रेमी... ।'

कविरूप उस की पुकार सुन उसे आर्तिगन में भर लेने को आगे हुआ ताकि वह उस के हृदय से चिमट कर जी भर कर रोए।

कोई न समझ सका और डूबते स्वप्न की भांति कविरूप भी डूब गया—हमेशा हमेशा के लिये !!

चाँद सितारों की यह विचित्र दुनिया

(श्री विमल)

नियतिबद्ध प्रत्येक कार्य नियम से चलता है। ब्रह्मांड नियति के कार्यक्रम के अनुसार असंख्य वर्षों से चलता-बदलता आ रहा है। जिसे देख कर हम एक दिन आश्चर्यान्वित हो जाते थे कि यह सूर्य कैसे हमें उष्णता प्रदान करता है, चन्द्र क्यों ढंडा है, ये तारे क्या हैं, बिजली कैसे चमकती है, वर्षा किस प्रकार होती है। वही सब कुछ आज कवियों, ज्योतिषियों, वैज्ञानिकों का खिलौना बना हुआ है।

वैज्ञानिक-युग ने इन नक्षत्रों की खोजबीन करके स्पष्ट कर दिया कि ये अन्य कुछ नहीं केवल हमारी पृथ्वी जैसी भूमियाँ हैं। और मंगल ग्रह में तो हम से भी अधिक विद्वान प्राणियों का वास है। मंगल, बुध, यूरेनस, ध्रुव आदि ग्रह नक्षत्र आपसी आकर्षण शक्ति से यथामार्ग चलते हैं। ऐसा न होता तो सृष्टि में उथल-पुथल मच जाती।

अद्भुत कल्पनाएं

वैज्ञानिकों की दृष्टि में यह निर्विवाद सत्य है कि सूर्य स्थायी है केवल अपनी धुरी पर घूम रहा है। शेष ग्रह उसकी परिक्रमा, स्वयं अपनी धुरी पर घूमते हुए,

करते हैं। केवल चन्द्रमा पृथ्वी का अंश होने से, पृथ्वी ही के चारों ओर घूमता है।

सूर्य की परिक्रमा में पृथ्वी को ३६५ दिन, बुध को तीन महीने (क्योंकि यह सूर्य के निकटतम है), शुक्र को सात महीने, मंगल को दो वर्ष, बृहस्पति को १२ वर्ष, शनि को २९½ वर्ष, यूरेनस को ८४ वर्ष, नेपच्यून को १६५ वर्ष, प्लूटो को २४६ वर्ष लगते हैं।

एक सूर्य में १,३०५,००० पृथ्वियाँ समा सकती हैं।

ध्रुव तारा बहुत ही ऊँचा है और सूर्य बड़ा। यदि उसको सूर्य की जगह रख दिया जाए तो पृथ्वी जल जाए, और सूर्य को ध्रुव की जगह दी जाए, तो यहां से नज़र ही न आये।

बुध तो इतना छोटा है कि अटलांटिक महासागर के उत्तरी भाग में बिना स्थल-भाग को छुए समा सकता है।

यदि बुध ग्रह की स्थिति का अनुमान लगाये तो सूर्य के निकटतम होने से वहां भीषण तापमान रहता होगा।

बादलों का सर्वथा अभाव होगा । कड़कड़ाती धूप में वहां के स्थलों में दरारें पड़ गई होंगी । ज्वालामुखी जैसे उबलते होंगे वहां के खंडहर । तापमान इतना होगा कि सीसा भी पिघल जाए ।

बुध सूर्य के सामने भी कभी कभी आ जाता है, जो उस दिन सूर्य-विम्ब में एक छोटा सा कलंक जैसा लगता है । सन १९४० की १२ नवम्बर को और इससे पहले यह देखा जा चुका है । इसे आगे देखने की लालसा रखने वाले इस वर्ष (१९५३) के नवम्बर की १३ तारीख और ६ नवम्बर १९६० को भी देख सकते हैं ।

शुक्र पर घना वायुमंडल छाया है । अनुमान है कि वहां सूर्य के कभी कभी ही दर्शन हो पाते होंगे । जल भी होगा । अतएव वनस्पति, प्राणी भी हो सकते हैं ।

बुध, शुक्र और पृथ्वी के बाद सारे परिवार में मंगल का चौथा स्थान है । अनुमान है इसमें विकसित जीवन वाले प्राणी रहते हैं, जिन्होंने वहां नहरें खोद रखी हैं । सब कारोबार चलता होगा । इसकी घोषणा, कि मंगल ग्रह में नाले हैं, मग से पहले इटली के ज्योतिषी शायापरेली ने की थी । किन्तु कई वैज्ञानिकों ने इसे केवल भ्रम माना । ज्योतिषी सावेल ने तो इसकी नहरों का नक्शा भी कल्पित किया था, और उसने

एक ही मास में मंगल के विभिन्न चार चित्र भी दूरदर्शक यन्त्र द्वारा लिये थे ।

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी को भी ग्रह माना है । पृथ्वी के केन्द्र स्थल से उसके धरातल तक, जहां हम बसते हैं, चार हजार मील का अन्तर है । यदि किसी तरह हम पृथ्वी तल से चार हजार मील ऊपर जा पहुंचें तो हमारी दूरी पृथ्वी के केन्द्र की दूरी से ८००० मील हो जाएगी । उस समय पृथ्वी का आकर्षण बहुत कम रह जाता है इसी लिये अगर हम उस ऊंचाई पर तुलें हमारा तोल केवल १५ सेर रह जायेगा यदि असली तोल डेढ़ मन हो ।

मत रोको

(कु० सुदर्शन खोसला)

ज्यों ज्यों वीणा के तार हिलें,

इक गान उलझता जाता है ।

वह राग सुनोगे क्या मुझ से,

जो भार बना रह जाता है ।

कहु अनुभव है यह जीवन का,

मत छेड़ो दूटे तारों को ।

क्रंदन भर जाने दो मुझ में,

मत रोको जागे भावों को ।

यह पलके भी तो बोझिल हैं

अब नीर बहा ही जाता है ।

वह राग सुनोगे क्या.....

(शेष पृष्ठ ३० पर)

★ टैलिविज़न द्वारा बच्चों की शिक्षा ★

अमेरिका में ६ वर्ष की आयु से लेकर १६ वर्ष की आयु तक के लड़के तथा लड़कियों के मनोरंजन के लिये टेलिविज़न का जो नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है वह शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकेगा। इस कार्यक्रम में अमेरिका के भूतपूर्व प्रैसिडेण्टों तथा प्रसिद्ध खिलाड़ियों आदि महान् व्यक्तियों को भाग लेने के लिये आमन्त्रित किया जाता है।

यह कार्यक्रम फोर्ड प्रतिष्ठान कार्यालय द्वारा शुरू किया गया है। टेलिविज़न के 'एक्सकर्सन' नामक इन सप्ताहिक कार्यक्रमों में विविध क्षेत्रों के प्रतिभा सम्पन्न विशेषज्ञों द्वारा भूत, वर्तमान तथा भविष्य की भांकी उपस्थित की जाती है। यद्यपि उन कार्यक्रमों का विषय गम्भीर तथा शिक्षणात्मक होता है, पर उसे प्रस्तुत करने का ढंग बहुत ही मनोरंजक है।

यह कार्यक्रम राष्ट्र के सभी भागों में नेशनल ब्राड कास्टिंग कम्पनी के १०० सम्बद्ध टैलिविज़न स्टेशनों से टैलिकास्ट किया जाता है। इस कार्यक्रम में प्रमुख व्यक्ति भाग लेते हैं और मानव जाति से सम्बन्ध रखने वाले अनेक क्षेत्रों-खेल कूद, विज्ञान, नाट्यकला साहित्य तथा इतिहास से सम्बन्ध

रखने वाली घटनाओं का प्रदर्शन किया जाता है।

भूतपूर्व प्रैसिडेण्ट ट्रूमैन, जो इस शृंखला के दूसरे कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं, दो अन्य कार्यक्रमों में उपस्थित होंगे और भूतपूर्व प्रैसिडेण्ड हर्बर्ट हूवर भी बाद में भाषण देंगे। इन्हें उन लोगों का प्रतिनिधि समझा जा सकता है जो बच्चों के सम्मुख जीवन का कार्यक्षेत्र चुनने तथा नागरिक उत्तरदायित्वों के संबन्ध में बातचीत करेंगे। लुइ ब्रोमफील्ड, जो एक उपन्यास-कार, निबन्ध-लेखक तथा भूमि संरक्षण विशेषज्ञ हैं, कृषि को व्यवसाय के रूप में चुनने पर भाषण देंगे।

कार्यक्रम की खेल संबन्धी बातों में प्रतियोगिता की भावना का प्रदर्शन किया जाता है। बहुधा उपस्थित होने वाले इस प्रश्न का समाधान करने के लिये 'क्या एक बेसबाल वास्तव में उस समय मुड़ जाती है जब वह एक बैटर के समीप पहुँचती है' बुकलिन डोजर्स के प्रसिद्ध 'पिचर' (बेसबाल टीम के उत्तम खिलाड़ी) कुछ गेंदें फेंकेंगे और कैमरामैन दर्शकों के लिये विशेष प्रक्रिया से गेंद की गतिविध के चित्र लेंगे।

यह टैलिविज़न का कार्यक्रम हर रविवार को आध घण्टा तक चलता है। आशा है कि भारत में भी इसकी व्यवस्था निकट भविष्य में हो जायेगी।

★ तुकबन्दी सीख गया ★

(ले० - श्री शान्त शास्त्री शालिहास)

मैं यह तुकबन्दी सीख गया ।
 कुछ घर वाली के तानों से,
 कुछ नई तर्ज के गानों से ।
 कुछ इधर उधर के छपे लेख,
 फीचर लैक्चर व्याख्यानों से ।
 था हिन्दी संस्कृत का ज्ञाता,
 नूतन कविता का व्याख्याता ।
 इस लिये सार ले बुद्धि से,
 अवटित घटना आख्यानों से ।
 घर की चख चख से रोज़ रोज़ की,
 मुक्ति का पथ दीख गया ।
 मैं यह तुकबन्दी सीख गया ।
 मैं बैठ गया था छोड़ कलम,
 कविता लेखन में हो असफल ।
 पर बैठ सका न खाली मैं,
 पढ़ कर कविताएं चरल नवल ।
 'वे' भी मिर पर रहतीं सवार,
 उन से भी पिंड छुड़ाने को ।
 हिन्दी के सुने हास्य क्षेत्र में,
 अपनी धाक जमाने को ।
 तुकबन्दी का सीधा सादा,
 यह 'रस्ता' सुझ को दीख गया ।
 मैं यह तुकबन्दी सीख गया ।
 मैं लिख न सका रोमांस कथा,
 'लव' भरी फड़कती मर्म व्यथा ।

आंसू न मगर के बहा सका,
 वीणा के तार हिला न सका ।
 मैं छाया प्रगति रहस्यवाद के,
 सुन्दर गीत बना न सका ।
 जब फीचर गद्यगीत दोनों,
 अड़ गए शिला बन कर आगे ।
 हिन्दी जग में तुककड़ बन कर,
 कवि पद से खुद को लिख गया ।
 मैं यह तुकबन्दी सीख गया ।
 हिन्दी नम पर धीरे धीरे,
 बादल बन कर छा जाऊंगा ।
 तुकबन्दी औ' उनके बल पर,
 अब मान बढ़ाई पाऊंगा ।
 कवि कालिदास सूर तुलसी से,
 पीछे नहीं रहूंगा मैं ।
 बढ़ इन से आगे काव्य क्षेत्र में;
 अपना नाम करूंगा मैं ।
 इतिहासकार भी समझेगा,
 मैं लिख गन्ती तारीख गया ।
 मैं यह तुकबन्दी सीख गया ।
 तुकड़ कहने वालो ! सुन लो,
 क्या रखा है विवताओं में ।
 कोटि कविताएं भरी हुई हैं,
 उनकी नाज़ अदाओं में ।
 (शेष पृष्ठ २७ पर)

कहानी—

★ भूत के आगे मार भागे ★

[ले०—स्वामी शिवहरि मुनि, हसनपुर (गुड़गाँव)]

नन्द गाँव के निकट एक संस्कृत पाठशाला थी। एक मास हुआ पाठशाला में आचार्य मनमोहन अध्यापन कार्य पर नियुक्त हुए।

नवीन अध्यापक प्रारम्भ में अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डालने के लिये प्रायः विद्यार्थियों को अधिक अध्ययन के लिये बाध्य करते हैं। इस पृवृत्ति के अनुसार आचार्य जी ने भी छात्रों के कठोर अनुशासन तथा अधिक अध्ययन पर जोर दिया।

इस अकस्मात् परिवर्तन के कारण विद्यार्थियों का स्वतंत्र जीवन एक बन्धन का अनुभव करने लगा। अब विद्यार्थियों का प्रातः काल उठ कर संस्कृत के सूत्रों को

(पृष्ठ २६ का शेष)

कल्याण लोक के वाशिन्दो !

घर वाली का गुण गान करो।

है 'सरस्वती' घर में जबकि,

क्यों बाहर व्यर्थ हैरान फिरो।

इस लिये तो कोरी कविता क्री,

मैं नहीं मांगने भीख गया।

वस 'उनके' नाजों नखरों से,

मैं यह तुकबन्दी सीख गया !

रटना तथा सायंकालीन भ्रमण को बन्द करके संध्या में मन स्थिर करना पड़ता। मन की दशा थी—

माला तो कर में फिरे,

जीभ फिरे मुख माहिं।

मनुआ तो चहूँ दिश फिरे,

यह तो सुमरिन नाहिं ॥

इस उक्ति के अनुसार चंचल विद्यार्थियों का चंचल मन ईश्वर आराधना में कैसे स्थिर होता ? सच्चे हितैषी गुरु के भाव को विद्यार्थी नहीं पा सके।

(३)

प्रातः काल सात बजे का समय है। पाठशाला लग चुकी है। आचार्य के उपस्थित न होने पर विद्यार्थियों में गप शप चल रही है। अनायास कमल ने खड़े होकर विद्यार्थियों को सम्बोधित कर आज्ञा दी—'मौनम्' (खामोश) सारे छात्र चुप हो गये। कमल पढ़ाई में होशियार तथा खेलने कूदने में सर्व प्रथम रहने वाला विद्यार्थी था। कमल ने कहा—'प्यारे सहपाठियो, हमारे आचार्य जी जब से आये हैं, हमने एक पुस्तक समाप्त कर ली है। प्रातः काल ४ बजे उठना अध्ययन

(शेष पृष्ठ ३० पर)

कहानी —

★ भूला राही ★

(ले०—सुश्री सुदर्शन खोसला)

उषा देवी जोर से खिलखिला पड़ी। कुछ काली लटे सहम कर भूम उठी हवा में—वेणी में गुंधे मोती बिखर गये कुसुमों की सकोमल पंखड़ियों पर। फिर पुष्पों के मौन बोभिल नैन उठ गये ऊपर, अनुकम्पा से भर कर ! उषा के मुखश्री पर एक लहर दौड़ गई—अधर फड़फड़ाये तथा एक गान उलभ कर सरिता की तरल तरंगों पर उछल उछल कर बह चला—दूर तक। इधर-उधर उड़ती हुई काली बदली काजल की रेखा बन कर उषा के कपोलों तक अंकित होकर रह गई। उड़ती हुई पूर्व की लालिमा से उषा की माँग भर गई। पक्षियों के कलरव में सितार की मधुर झंकार भर गई। अन्तिम पायल की रुन भुन में सब कुछ खो गया। फिर कूएँ पर कुछ आहट हुई और जागती जवानी का उभार लिये एक नवयुवती पनघट पर पहुँची। उसकी अलसाई आंखों में दो आंसू चमक रहे थे। जोकि उस धुन्धली आभा में भी स्पष्ट दिख रहे थे। मटकी मुँदरे पर धर कर युवती ने आंचल से कपोलों पर अश्रुओं के चिह्न को मिटाना चाहा। परन्तु एक छाया ने धीरे से उसके कन्धे पर

हाथ रख दिया। उसकी चीख निकल गई। आने वाले ने कहा—‘धराराओ नहीं, बहन ! मैं तुम्हारी दशा से भली भाँति परिचित हूँ। मैं नहीं चाहता कि निरीह आत्मा को कम्पित पत्नी की तरह दो कठोर हाथों से कुचल कर मुस्कराया जाए। मैं तुम्हें आश्रय दूँगा, तुम बहन हो न। दीप (नवयुवती) ने विस्फाटित दृष्टि से अम्बर में फटते बादलों से भाँकती आभा को देखा—वह सिहर गई ‘बहन’ का सम्बोधन सुनकर। स्नेह—हीना दीप को अनोखे आनन्द का आभास हुआ। वह किं कर्त्तव्य-विमूढ़ सो सिहर उठी। वह इतना ही कह सकी ‘रमेश ! तुम भैया...’ तुम मेरे भैया हो... मेरा तो इस दुनिया में कोई नहीं है। इस अभागिन को तो भाग्य ने भी ठोकरें लगाई हैं—और स्वामी ने भी आज वही अन्तिम शब्द भी कह ही दिये कूड़े की भाँति मुझे घर से निकाल दिया।

‘नहीं... नहीं ! तुम क्यों व्यर्थ का भार उठाने निकल पड़े हो ? जाओ चले जाओ। भैया ! भैया !! मैं लोगों के वर्तन मांझ और पानी भर कर जीवन यापन कर लूँगी। सड़े सेब को अपनाने की चेष्टा न करो। तुम भी

कलंकित हो जाओगे ?'। रमेश ने सुनहरी किरणों पर काले धब्बे देखे फिर चिल्ला कर कहा—'बुप रह पगली ! अब मैंसहन नहीं कर सकता । तुम्हारा भाई नहीं है—मैं भी बहन के प्यार से वंचित हूँ ! क्षमा करो । मैं अपनी बहन को इस भयानक तुफान में नहीं छोड़ सकता ।' कहते २ रमेश का गला रुंध गया, 'चलो, मौन क्यों हो दीप ?' रमेश ने अधिकार पूर्ण स्वर में दीप को झकझोर कर कहा ।

दीप का हृदय एक बहन का हृदय बन चुका था । वह पागलों की तरह—'भैया मैं तुम्हारी बहन हूँ ।' कहती हुई रमेश के पांवों में गिर पड़ी । रमेश ने उसे अपने दृढ़ हाथों से उठाया । नये बन्धन की पावक डोर में बन्धते देख कर अम्बर मुस्कुरा पड़ा । प्रकृति ने भौली के पुष्प बिखेर दिये उन पर । दीप के अंगूठे पर एक तीक्ष्ण पत्थर से चोट आ गई थी जिस से रक्त बह रहा था । उस ने रमेश के मस्तक पर अपने पवित्र रक्त से टीका लगा दिया । फीकी रेखायें, स्वर्णिम् किरणों में बदल गईं । जाने वाले दो पथिक पग मिला कर जीवन जोत से अन्धकार मिटाते हुए बढ़ चले—अगम पथ की ओर ।

सागर में चढ़ता जवार भाटा ईर्द गिर्द के मनमोहक दृश्यों का मोल नहीं आंका

करता । उसकी चंचल तरंगें काल के थपेड़े बन कर मिटा देती हैं—तट के सुन्दर फूलों को, पुष्प लदित वृक्षों को तथा नन्हे नन्हे जीवों को भी । उसी प्रकार उभरती लहर ग्राम भर में दौड़ चली । समाज की दीवारें चीख कर फट गईं । दीप का पति उसे खा जाना चाहता था । उसकी रक्त पिपासित आंखें उस हीन अबला को खोजा करती थीं । समय का चप्पू दीप और रमेश को स्नेह सागर के उस मध्य में ले गया जहां से दोनों तट बिन्दु मात्र रह जाते हैं । तट पर खड़ी जनता की आवाज उनके लिये पागल की चीख पुकार सी हो गई ।

एक दिन भयभीत दीप गागर उठाये सांभ के धुन्धले पन का सहारा लिये पनघट को जाती हुई पगडंडी पर चली जा रही थी । वह सोच रही उस उषा के विषय में जिस ने उसको भाई दिया था । परन्तु कहीं यह भयानक सायं बिछुड़न की बेला न बन जाये । वह कांप उठी—इस भावी आशंका से । फटकारने लगी वह अपने इस कुत्सित विचार को, अपनी अन्तर्त्मा को, सूने सायं काल को । हृदय एक काली रेखा से छिन्न भिन्न हो गया । अन्तिम भास्कर की किरण विस्फाटित दृष्टि से मूक दीप के उदासीन मुख पर अड्डहास (शेष पृष्ठ ३४ पर)

(पृष्ठ २७ का शेष)

करना, सात बजे पाठशाला आना फिर सायंकाल भजन करना, सतत परिश्रम हमारे जीवन में चल रहा है ।

पर क्या इतना अध्ययन करने से हमारी आत्मा की शान्ति तथा शरीर की कान्ति बढ़ रही है ?

ऐसा कौन विद्यार्थी है जिस पर गुरु जी की बेत नहीं पड़ी ? मैं गुरु जी की नित्य सेवा करता हूँ । सायंकाल उन के साथ मन्दिर जाता हूँ, वहाँ से दूध लाता हूँ पर फिर भी मैं उनकी बेत से नहीं बच सका । रट लगाये पर भी संस्कृत के कठिन सूत्र हमें याद नहीं रहते । उसका कारण है कि जैसे अधिक खाने से बढ़हजमी होती है । इसी प्रकार पढ़ाई की अति से भी हमें अजीर्ण हो रहा है । कहीं ऐसा न हो कि हम पागल हो जायं ।

कमल बोल ही रहा था कि रमेश बीच में बोल उठा—‘प्यारे साथियो ! मैं ने एक

(पृष्ठ २४ का शेष)

अब रोको मत तुम आहों को,

यह कपटी जगती ताप मिला ।

मनचले वेग को मत थामो,

जब सागर का उफान मिला ।

मैं चीखूँ; तुम मौन रहो,

स्वर शिथिल यहीं रुक जाता है ।

वह राग सुनोमे.....

उपाय सोचा है । मार के आगे भूत भागते हैं । किन्तु मैं भूत के आगे मार को भगा दूँगा.....’ वाक्य पूरा भी न हुआ था कि आचार्य महोदय कमरे में पधारे । सारे विद्यार्थी सहम गये । आदर के लिये उठ खड़े हुए । सादर प्रणाम कर अपने स्थान पर बैठ गये ।

आचार्य ने पूछा—‘रमेश क्या कह रहे थे ? ‘मार और भूत !’ रमेश का तो हाल मानो ‘काटो तो लहू नहीं बदन में’ का हो रहा था । कमल ने बिगड़ी बात सम्भाल ली, कहा—‘गुरु देव ! हमारे गांव में एक भूत ने आदमी को मार दिया ।’ आचार्य तथा सारे लड़के सब एक साथ हंस पड़े । सारा कमरा हंसी से गूँज उठा । आचार्य ने कहा—‘मूर्ख ! भूत नाम की कोई वस्तु नहीं । मनुष्य को भ्रम हो जाता है । भ्रम में रस्सी भी साँप दिखाई देने लगती है । कुत्ता काँच और जल में अपनी परछाईं देख कर भौंकने लगता है । आपने कई कहानियां पढ़ी होंगी । भ्रम में सिंह भी कुएं में अपनी आवाज़ सुन कर कूद पड़ा था । यह भ्रम ही भूत है । अच्छा अब बातें छोड़ो और पढ़ाई शुरू करो ।

(३)

मंगलवार की रात्रि थी । चन्द्रमाँ पूर्ण था आचार्य और कमल मन्दिर से दर्शन

करके जल्दी २ पाठशाला आ रहे थे। पाठशाला और नन्दगांव में फासला एक मील का था। मध्य में थोड़े वृक्षों का समूह अपनी हरियाली लिये खड़ा था। रास्ते के किनारे सब वृक्षों का राजा बड़ अपनी लम्बी चौड़ी काया में घनी छाया से दिन को राहगीरों और विद्यार्थियों को विश्राम देता था।

गुरु जी आगे और कमल पीछे पीछे दूध का लोटा लिये चल रहा था। सहसा कमल जोर से चिल्लाया—‘गुरु जी ! भूत !!’ आचार्य ने सांत्वना दी और पूछा कि कहां है?’ कमल ने बड़ के उस वृक्ष की ओर संकेत किया। गुरु जी ने देखा कि चाँदनी रात में वृक्ष की छाया के नीचे कोई श्वेत वस्तु दोख रही है। देखते २ वह आदमी की छाया के समान हो गई। गुरु जी ने फिर ध्यान से देखा तो वह और अधिक लम्बी होकर बड़ की डालों से जा टकराई। धीरे २ वह छाया आगे बढ़ने लगी। कमल चीख उठा और घबरा कर गिर पड़ा। सम्भला और उठ कर भागा। गुरु जी के पैर भी डगमगा गये। कमल और गुरुजी पाठशाला की ओर भागे। आचार्य ने रात्रि को हनुमान चालीसा का पाठ किया और रास्ते के भूत पर विचार करते हुए सो गये।

प्रातः ५ बजे घण्टी बजी। सभी विद्यार्थी अपनी २ पुस्तक ले कर गुरु जी के

कमरे की ओर आये किन्तु कमरा आज बंद था। आवाज दी गई जिसे सुनकर गुरुजी उठे। कमरे की चिटखनी खोलने जब आगे बढ़े तो कोई वस्तु उनके दाएं पैर से टकराई। इस पर आचार्य के मन में रात के भूत की कल्पना जाग लठी और सण भर में वीलीन हो गई। कमरा खुला। माचिस लेकर जब लैम्प जलाया गया तो कोई चीज उड़ती हुई दिखाई दी। एक कोने में मिट्टी का बर्तन पड़ा दिखाई दिया। इस पर आचार्य महोदय की सभ्रम में आ गया कि यही वस्तु उनके पैर से टकराई होगी। उनका हृदय घृणा और भय से भर गया। उन्होंने विद्यार्थियों को आज्ञा दी कि अपने २ कमरे में जाकर पढ़ें।

प्रातः के ८ बजे हैं। सारे विद्यार्थी चिन्तित तथा मलिन मुख लिए—छात्रावास के चौक में खड़े बात चीत कर कर रहे हैं। सामने गुरुदेव का कमरा खुला पड़ा है। एक कोने में कमल, रमेश तथा दो चार अन्य लड़के गपशप लगा रहे हैं। रमेश सथियों से कह रहा है ‘देखा मैं ने भूत के आगे मार को भगा दिया। भूत क्या था? दो बांसों में तीन चादरें लटकाकर मैं सुकड़कर बैठ गया, शनैः शनैः बांस खड़े कर दिये।’ कमल बोला ‘मैं ने भी कैसी भूत की हड्डियां तोड़ीं।’ इधर गपशप चल रही थी उधर पाठशाला के

क्या जाने ?

(कु० सुरेन्द्र रानी, फोर्थ ईयर जालन्धर)

करुणा से जिसने प्यार किया,

वह उर मुस्काना क्या जाने ?

जब दर्द से नाता जोड़ लिया,

तो गीत वह गाना क्या जाने ?

जो रहा निराशा का साथी,

आशा को पाना क्या जाने ?

रोता ही रहा जो जीवन में,

वह हंसना हंसाना क्या जाने ?

हे जिस को जग ने ठुकराया,

वह प्रीत लगाना क्या जाने ?

मृत्यु को जिसने चाहा हो,

जीने का बहाना क्या जाने ?

कांटे हों जिसके सभी वरफ,

वह पुष्प अपनाना क्या जाने ?

जिसे प्रेम मिला न जीवन में,

वह प्रेम निभाना क्या जाने ?

मैनेजर सेठ चतुर्भुज की कार का हार्न सुनाई दिया । सारे विद्यार्थी गेट पर पहुँच गये । सेठ जी को चपड़ासी द्वारा कमल और रमेश की करतूतों का सारा हाल मालूम हो चुका था । उन्होंने ने आते ही उन्हें निकल जाने की आज्ञा दी और स्वयं आचार्य की खोज में चले । किन्तु अमूल्य निधि हाथ से निकल चुकी थी ।

बूझिये तो

१- एक नारी के ६ टांगे हैं,

फिर भी खड़ी न हो पाती ।

बीच कमर से लटकाते हैं,

फिर तोल सभी को बतलाती ।

२- एक आदमी २० रुपये में २० ही बर्तन खरीदना चाहता है जबकि थाल का मूल्य ४ रुपये, गिलास का मूल्य आठ आना और कटोरी का मूल्य ४ आना है । बताओ वह कौन-कौन से कितने बर्तन खरीदेगा ?

३- बिना पाँव पर्वत चढ़े

बिना मुख भोजन खाये

एक अचम्भो हम सुनो

जल पीवत मर जाये

४- जीव नहीं यह अचरज आवे ।

मरना जीना तुरन्त बतावे ।

५- एक स्त्री ने सिर मुंडाया

सारी दुनियां ने ठाट बनाया

★

रमेश—(टेलिफोन पर हैडमास्टर से)
आज मेरा लड़का मीमार है वह पाठशाला नहीं आ सकता कृपया छुट्टी मंजूर करें ।

हैडमास्टर—जी कौन है ?

रमेश—‘जी मेरे पिता जी ।’

★

चुटकुले

१—औरत (लड़की से) आज मेरा व्रत है मैं तारा देख कर खाना खाऊंगी ।

लड़की—तारा तो सामने खड़ी ही है । उसे देख कर खाना क्यों नहीं खा लेती हो ?

२—रमेश—‘मेरे पिता जी एक हाथ से मोटर रोक लेते हैं ।’

सुरेश—‘फिर तो वह पहलवान होंगे ।’

रमेश—‘नहीं वह पहलवान थोड़े ही हैं, वह तो मिपाही हैं ।’

३—मैजिस्ट्रेट—(अभियुक्त से) क्या तुम कभी पहले जेल गये हो ।

अभियुक्त—जी हां

मैजिस्ट्रेट—किस अपराध में गये थे, चोरी की थी क्या ?

अभियुक्त—जी नहीं ।

मैजिस्ट्रेट—क्या कत्ल किया था ?

अभियुक्त—जी नहीं ।

मैजिस्ट्रेट—क्या डाका डाला था ?

अभियुक्त—जी नहीं ?

मैजिस्ट्रेट—तो किस अपराध में गए थे ?

अभियुक्त—सरकार, जेल की दीवारों पर सफेदी करने गया था ।

४—जज (अपराधी से) क्या यह सच है कि तुम ने इस आदमी को जान से मारा है ?

अपराधी—‘श्रीमान जी ! यह बिल्कुल गलत है, मैं ने तो उसे तलवार से मारा है ।’

५—एक अंग्रेज आफिसर ने अपने नौकर से दर में आने के कारण क्रोधित होकर कहा, ‘उल्लू का बच्चा; कहां रहता है ।’

नौकर ने नम्रता के साथ उत्तर दिया “श्रीमान जी, घोंसले में ।”

६—अध्यापक—(छात्रों से) छात्रो ! लकड़ी पानी में क्यों नहीं डूबती ?

एक लड़का—जनाब लकड़ी पानी में तैरना जानती है ।

७—मोहन ने डाक्टर की दूकान में प्रवेश किया और कहा—

“डाक्टर साहब मेरे कान में इकन्नी घुस गई है, निकाल दीजिये ।”

“कितना समय हुआ है ?”

“कोई दो वर्ष ।”

“तो अब तक निकलवाई क्यों नहीं ।”

“आवश्यकता ही आज पड़ी है क्योंकि

चाट के लिये जेब में इकन्नी तक न थी ।”

८—पत्नी—“यह खड़खड़ की आवाज क्या आ रही है ? देखो घर में कोई चोर तो नहीं घुस बैठा है ?”

पति—अंधेरे में क्या नज़र आएगा दिन निकलने दो, तब देखा जाएगा ।

(पृष्ठ २६ का शेष)

करके आलोप हो गई। एक पत्नी उड़ा और कुछ धूल उड़ा कर दीप के बिखरे वालों पर डाल गया। उसके हृदय की धड़कन तेज होती गई। उसके पग भारी होते गये। अन्धेरा बढ़ चला—एक दीवाना दीप जल उठा—हृदय में सिसकती धड़कन ले कर।

वह पनघट पर पहुँच चुकी थी परन्तु आज पानी खींचा हो नहीं जा रहा था, मानो कई मन का बोझ हो। सहसा एक चीख निकल गई उसकी—वह धड़ाम से गिर पड़ी। उसने अपने पति को यम का भाँति एक छड़ी लिये देखा—‘हूँ!’ अब पड़ी न चित हाँ“हाँ“ हाँ“हाँ।’ वह अट्टहास कर उठा अपनी विजय पर। समाज का अपराधी जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता। निर्दोष अबला काखूनी, ‘हाँ“हाँ आप, क्षमा कीजिये—आप ही ने “नहीं” भैया रमेश!’ दीप ने कराहते हुए कुछ टूटे-फूटे शब्द कहे। वह सूक साधना में लीन हो गई। उसके कांपते हुए हाथ जुड़ गये। उसके अधर फड़क रहे थे—‘भैया... कौन... रमेश!’ उसका पति चिल्ला उठा—‘वह तुम्हारा भाई है। कर्णव्य पथ का अनुगामी। देवी! मौन क्यों हो—मैं अग्राधी हूँ तुम... तुम देवी हो, मुझे दण्ड दो, यह लो छड़ी मुझे सुला दो सदा के लिये, मैं ने पावक प्रेम

को नहीं पहचाना। दीप! दीप! वह अधीर हो उठा। उसके चीत्कार के उत्तर में वृत्तों के पत्नी चौंक कर उड़ गये। एक पत्नी विरही की तरह चीखता रहा—हाहाकार मचाता रहा। ग्राम में एक दीप अन्तिम तड़प लेकर बुझने को था—जिसकी बत्ती के साथ साथ तेल भी जल चुका था। मिट्टी क्योंकर जल उठती। शेष रह ही क्या गया था? समाज की दीवार तो गिरी हो—निर्दोष जीव को तड़प दे गई—चूर चूर कर गई। रमेश अपनी बहन की खोज में निकल पड़ा। उसने वृत्त की ओट से दीप के पति का हाहाकार सुना और देखा पनघट पर किसी राही द्वारा जलाये गए दीप तले अन्धेरा। परवाने के जले हुए चुटकी भर पंख। पर वह नहीं बुझने देगा दीप को। वह दौड़ कर दीप के पास पहुँचा। उसे देखते ही उसका पति फिर चिल्लाया—‘बचा लो इसको, अपनी बहन को बचा लो—ईश्वर के लिये। वह रो रहा था। रमेश देश का दीवाना था, लोगों की सेवा का व्रत ले रखा था उसने। उसने एक डिब्बा खोल कर कुछ चीजें लगा दी दीप के मस्तक पर। दीप ने आँखें खोल दीं, मुस्कुरा दी वह और लिपट गई भैया से। इस पावक मिलन पर पतिदेव हंस पड़े। अम्बर गा उठा और चाँदनी खिलखिला पड़ी। एक भूला पथिक कांटों से निकल कर पुष्प लदित पथ पर आ गया।

हिस्टीरिया

(१) दौरा शनैः
शनैः होता है और
प्रायः दौरे से पूर्व
दिलकी धड़कन

बढ़ जाती है । (२) दौरे के समय
रोगिन जोर २ से चीखती है (३) हिस्टीरिया
के आक्रमण की पानीके छींटोंसे रोका जाता
है । (४) आक्रमण के समय रोगिन का
पेशाब नहीं निकलता (५) इसकी रोगिन
उपयोगी स्थान देखकर गिरती है अतः
जखमी नहीं होती (६) यद्यपि रोगिन
देखने की बेहोश होती है मगर वह देख
भाल करने वालोंकी आवाज़-सुन लेती है
उत्तर नहीं देसकती ! हमला दूर हो जाने
पर वह बेहोशी के समय की सब बातें सुना
देती है (७) बेहोशी के समय मुंह से कफ
नहीं आती (८) रोगिन बार २ पलकें नहीं
भ्रूषकती है (९) चेहरे की रंगत सुर्ख हो
जाती है ।

इलाज

रोगिन की दौरे के समय साफ कपड़े पहना
कर हवादार कमरे में लिटाएं, गले का बटन
खोल दें । राई और नमक को बारीक पीस
करके हाथ पांव पर मलें । मुंह पर ठंडे पानी
के छींटे मारें या ऊंचाई से ठंडे पानी की
धार मुंह पर डालें ताकि पानी मुंह और नाक

स्वास्थ्य सुधार**हिस्टीरिया और उसका इलाज**

पहुँचाएं । बरफ का पानी रहम के अन्दर
पहुँचाएं । यदि हाथ पांव सुकड़ने लगें तो
रोगी का मुंह और नाक कुछ देर के लिये
सखती से बन्द कर दें ताकि वह जोर से
घबरा कर चिन्त्ताये और उसे होश आ
जाये । यदि रोगिन अविवाहित है और वह
विवाह योग्य है तो डाक्टर के
मशिवरे से शीघ्र विवाह कर दें । चूँकि
हिस्टीरिया का रोग जज्बाती होता है अतः
चोरी डाके और कतल के किस्से कहानियां
और समाचार न सुनाएं क्योंकि भावों के
भड़क उठने का भय होता है । कभी २
रोगिन की बच्चादानी के उलट जाने या
अपनी जगह से दूसरी जगह हो जाने पर
हिस्टीरिया का दौरा हो जाता है । यह बात
बच्चा पैदा होने के अनन्तर हुआ करती है
अतः नर्स को बुला कर बच्चादानी ठीक
करवा लेनी चाहिये ।

—मुंह की भाइयों और मुहासों पर
नहाने से पहले दो चार मिनट तक
तारपीन का तेल लगा कर मुंह घोने से
बहुत लाभ होता है ।

पर पढ़ जाये और
रोगिन घबरा कर
मुंह खोल दे ।
गुगल और गंधक
का धूआं नाक में

School Registers & Forms

REVISED PRICE LIST

We can supply the following School Register Series printed according to the latest Code rules on fine paper. The prices are as following :—

1-4 Daily Attendance Register	2/4
5. Teacher's Attendance Reg.	1/12
6. Examination Result "	1/2
7. Pay Bill Register ...	1/12
8. Library Issue Reg. ...	1/12
9. Library Stock Register ...	1/12
10. Class Lib. Issue Note Book	-/12
11. Sports Issue Reg. ...	1/12
12. Sports Stock Register ...	1/12
13. Correspondence Register ...	1/12
14. Admission and withdrawal Reg. (big size)	2/-
15. School Contingencies Reg.	1/12
16. School Property Reg. ...	1/12
17. Headmaster's Order Book	2/12
18. Union Fund Register ...	1/12
19-20 Provident Fund Reg. Ledger A & B.	2/12
21-23 School Discharge Certificate file ...	2/12
24-26 School Admission forms per 100 in Eng. Hdi. & Pbi.	1/12
27. Provincial Certificate forms per 100 ...	2/12
28. Log Book ...	2/12
29. Statistical Register ...	2/12
30. Cash Book ...	2/12
31. Grant-in-aid forms per set	2/12
32. Fee Account Register ...	2/12
33. Fund Register ...	2/12
34. Letters Despatched Reg.	1/12
35. Letters Received "	1/12
36. Stock Register ...	1/12

For other items write to us.

Note :- 50 % surcharge will be charged on each item on a/c of rise in paper prices

Manager the Prakash Printing Press,
137 Chaharbagh, JULLUNDUR CITY.

प्रकाश के उद्देश्य तथा नियम

उद्देश्य: १ विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि पैदा करना और उनकी रचनाओं को प्रकाशित कर प्रोत्साहन देना (१) पंजाब में निरक्षरता को दूर कर साक्षरता का प्रचार करना। (३) शिक्षा को ठीक मार्ग पर चलाते में सहयोग देना। (४) अध्यापकों और छात्रों में सहयोग और प्रेम पैदा करना। (५) अध्यापकों और छात्रों के हितों की रक्षा करना। (६) शिक्षा सुधार-विशेषतः स्त्री शिक्षा में, के लिए आवाज उठाना। (७) प्रगतिशील साहित्य की उत्पत्ति।

नियम (१) प्रकाश प्रतिमास के प्रथम सोमवार को यहां से भेजा जाता है। कारणवश देर से भेजना सम्भव है।

(२) वार्षिक मूल्य भारत में ७) रु० आग्रिम नियत है। वी० पी० से ७॥) है। विदेशों में वी० पी० नहीं जाता। पेशगी १५ सि० भेजे।

(३) नमूना मुफ्त नहीं भेजा जाता इसके लिए ॥= के डाक टिकट भेजे।

(४) पृष्ठ संख्या बढ़ाने या घटाने की अवस्था में मूल्य में भी कमा या घुट्टी की जा सकती।

(५) लेख कविता कहानी आदि जो ऊपर लिखित उद्देश्यों के अन्तर्गत हों, प्रतिमास के अन्त तक आ जाने चाहिए। जो अपना फोटो भी साथ छपवाना चाहें वे

५) रु० ब्याक के लिए भेजे और अपना फोटो भी।

(६) अप्रकाशित लेख लौटाये नहीं जाते।

(७) बिज्ञापन केवल वही छपेंगे जो अक्षरी न हों और जिन के नाम पेशगी आ जायेंगे। रेट निम्न प्रकार है।

	१ पृष्ठ	१/२ पृष्ठ	१/४ पृष्ठ
एक बार	३०) रु०	१७) रु०	१०)
३ बार	८०)	४३)	२६)
६ बार	१५०)	८०)	५०)
१ वर्ष	२५०)	१७५)	१००)

यम
करना
न देना
प्रचार
सहयोग
और प्रेम
तों की
शिक्षा
शील
ममवार
सवेर
नियत
नहीं

चमड़े के कपड़े

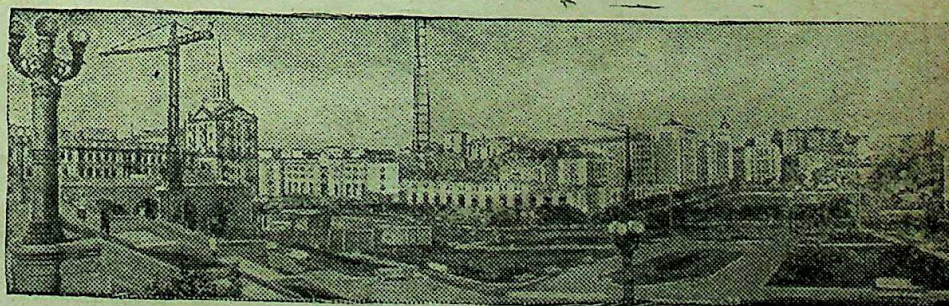
सूती, ऊनी और रेशमी कपड़े तो आपने देखे और पहने हैं किन्तु काँच और चमड़े के कपड़े पहने तो क्या होंगे सुने भी नहीं होंगे। लीजिये सामने रही लण्डन की एक सुन्दरी चमड़े के 'ईवनिंग गाउन' में। आप भी इसे ३५० गिनी में प्राप्त कर सकते हैं।



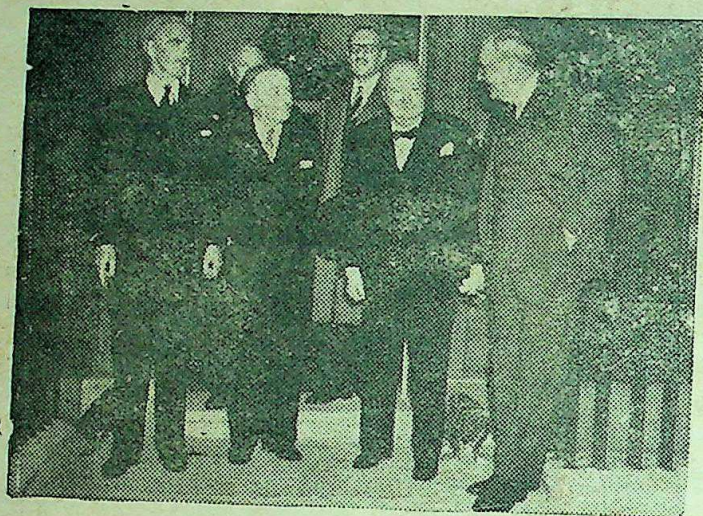
नीचे

प्रगति की ओर

यह चित्र है रूसी नगर कीव में बन रहे सरकारी भवनों के एक दृश्य का।
कहिये पसंद है आपको ?



॥=)
में
खित
जाने
हैं वे
नी।
हों
नमन
छ



अमेरिका के विदेश मंत्री मि० डुलेस तथा मि० विडाल्ट (फ्रांस के प्रधान मंत्री) को मि० चर्चिल ने अमेरिका और फ्रांस के राजदूतों सहित १० डाऊनिंग स्ट्रीट में निमंत्रित किया। ये 'तीन बड़ों' के सम्मेलन के सम्बन्ध में पधारे थे।

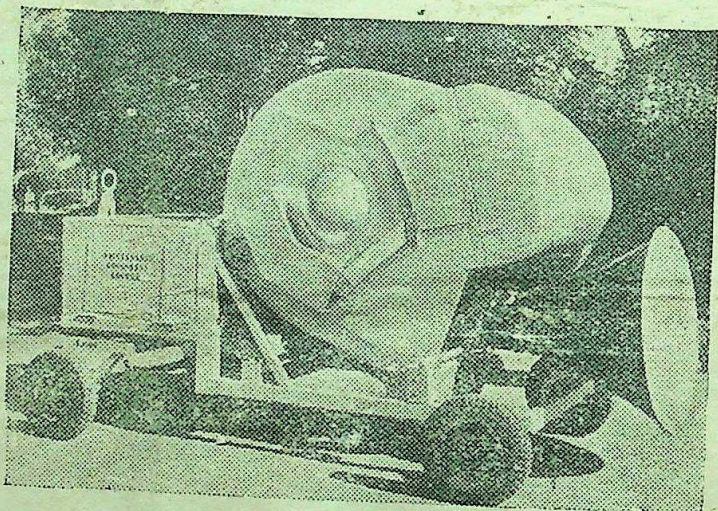
★

यह चित्र है इस **Hose Reel Unit** का जिसे बमवर्षक वायु-यान के बम टैंक में फिट कर दिया जाता है। इस की सहायता से दूसरे वायुयान को उड़ते २ तेल पहुँच सकता है।

★

नीचे

फार्नब्रो (ब्रुटेन) में अभी हाल ही में वायुयानों की प्रदर्शनी हुई थी। उसमें निम्न नवीनतम वायुयान प्रदर्शित किये गये थे चित्र में **De-Havilland 110** और **GI-oster Javelin** देख रहे हैं। —



हुलेस
धान
रिका
१०
ये
य में

CC-0

151469

ARCHIVES DATA BASE
2011-12

